www.myGKstudy.com

अनुक्रम

क्र.सं. अध्याय | पृष्ठ संख्या

प्राचीन भारत का इतिहास (ANCIENT HISTORY OF INDIA)

1. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History) 1-3
2. आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto Historic History) 4-8
3. ऐतिहासिक काल (Historical Period) 9-15
4. जैन धर्म (Jainism) 16-18
5. बौद्ध धर्म (Buddhism) 19-22
6. भारत के प्रमुख धर्म (Indian's Religion) 23-26
7. महाजनपद (Mahajanpad) 27-30
8. मौर्य वंश (Mauryan Dynasty) 31-37
9. ब्राह्मण साम्राज्य (Brahmin Dynasty) 38-39
10. मौर्योत्तर काल (Mauryottar Period) 40-42
11. गुप्त काल (Gupta Period) 43-46
12. दक्षिण भारत (South india) 47-53
13. मूर्ति एवं मंदिर स्थापत्यकला (Sculpture and Temple Architecture) 54-57
14. भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement) 58-62
15. राजपूत वंश (Rajput Dynasty) 63-63

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

अनुक्रम

क्र.सं. अध्याय | पृष्ठ संख्या

मध्यकालीन भारत का इतिहास (MEDIEVAL HISTORY OF INDIA)

16. भारत पर मुस्लिम आक्रमण (Muslim invasion of India) 65-67
17. दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate) 68-77
18. विजयनगर साम्राज्य (Vijaynagar Empire) 78-82
19. मुगल काल (Mughal Period) 83-98
20. मराठा साम्राज्य (Maratha Empire) 99-102

आधुनिक भारत का इतिहास (MODERN HISTORY OF INDIA)

21. यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Arrival of European Companies) 104-106
23. नवीन राज्यों का उदय (Rise of New Kingdoms) 107-110
23. 1857 की क्रांति (Revolution of 1857) 111-112
24. क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary Movement) 113-116
25. सामाजिक सुधार संगठन (Social Reform Organization) 117-123
26. गांधी युग (Gandhi Era) 124-131
27. प्रमुख प्रस्ताव एवं सम्मेलन (Major Proposals and Conferences) 132-148
28. दिल्ली दरबार (Delhi Darabar) 149-149
29. नेहरू काल (Nehru Period) 150-152
30. विश्व का इतिहास (History of the World) 153-161
31. प्रमुख ग्रंथ/पुस्तक एवं रचनाकार/लेखक (Major Books & Authors) 162-163

www.myGKstudy.com

प्राचीन इतिहास
(Ancient History)

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

01. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)

इतिहास (History)

- प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric Period)
  1. पाषाण काल (Stone age)
     - पुरा पाषाण काल Palaeolithic Period
     - मध्य पाषाण काल Mesolithic Period
     - नवपाषाण काल Neolithic Period
  2. ताम्र पाषाण काल Chalcolithic Period
- आद्य ऐतिहासिक काल (Protohistoric Period)
  - सिंधु सभ्यता Indus valley civilization
- ऐतिहासिक काल (Historical Period)
  - प्राचीन काल (Ancient Period)
  - मध्यकाल (Medieval Period)
  - आधुनिक काल (Modern Period)
    - नेहरू काल (Nehru Period)
    - विश्व (World)

- अतीत का अध्ययन **इतिहास** कहलाता है।
- इतिहास के जनक **हेरोडोटस** को कहते हैं।
- मानवजाति का पालना **अफ्रीका महादेश** को कहते हैं।
- जबकि सभ्यता का पालना **एशिया महादेश** को कहते हैं।

इतिहास को 3 खण्डों में बाँटते हैं–

1. प्रागैतिहासिक काल (Prehistoric History)

- इतिहास का वह समय जिसमें मानव लिखना पढ़ना नहीं जानता था। इसकी जानकारी केवल पुरातात्विक साक्ष्य से मिली है। इसके अंतर्गत पाषाण काल को रखते हैं।

1. पाषाण काल (Stone Age)

- वह समय जब मानव पत्थर के औजार एवं हथियार का उपयोग करता था, पाषाण काल कहलाता है।
- भारत में सर्वप्रथम 1863 ई० में **रार्बट ब्रुस फ्रुट** ने पाषाणकालीन सभ्यता की खोज की।
- भारतीय पुरातत्व का पिता सर **अलेक्जेंडर कनिंघम** को माना जाता है।
- भारत के पुरातात्विक संग्रहालय **इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय** (भोपाल) है जो संस्कृति मंत्रालय के अधीन है।
- मिलने वाले धातु के आधार पर इतिहास का नामकरण **क्रिश्चयन थॉमस** ने किया।
- लिखावट के आधार पर नामकरण **जॉन ब्रूस** ने किया।

➤ **पाषाण काल को 3 भागों में बाँटा गया है–**

1. पुरापाषाण काल (Palaeolithic Period) (20 लाख ई०पू० से 12,000 ई०पू० तक)

- यह इतिहास का सबसे प्रारम्भिक समय था। इस समय के मानव को आदि मानव कहा जाता है। इस समय का मानव खानाबदोश (खाद्य संग्राहक) अर्थात् उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य जानवरों की भाँति ही अपना पेट भरना था। इस समय के मानव की सबसे बड़ी उपलब्धी आग की खोज थी।
- इस समय मानव पत्थर के बड़े-बड़े औजारों का इस्तेमाल शिकार करने के लिए करते थे। इसी समय मानव ने चित्रकारी करना प्रारंभ किया।
- भीमबेटका के गुफाओं में **पुरा पाषाण काल** के चित्र देखने को मिलते हैं। जो मध्यप्रदेश के अब्दुलागंज (रायसेन) में स्थित है।

2. मध्यपाषाण काल (Mesolithic Period) (12,000 ई०पू० से 10,000 ई०पू० तक)

- इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी **कार्ललाइल** ने 1867 ई० में दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- यह पुरापाषाण के बाद का काल था। इस समय मानव के हथियार छोटे आकार के थे, इसलिए इन्हें **माइक्रोलिथ** कहते हैं। इस समय के मानव की सबसे प्रमुख कार्य अंत्येष्टि (अंतिम संस्कार) कार्यक्रम था।
- इसी काल में कश्मीर के बुर्ज होम से मानव के साथ-साथ कुत्ता को भी दफनाने का साक्ष्य मिला है।
- इसी काल में मानव के अस्थिपंजर का सबसे पहला अवशेष i zk x<+(UP) के **सराय नाहर** तथा **महदहां** नामक स्थान से प्राप्त हुआ।

3. नव या उत्तरपाषाण काल (Neolithic Period) (10,000 ई०पू० से 3000 ई०पू० तक)–

- इस काल के बारे में सर्वप्रथम जानकारी सर जॉन लुबाक ने 1865 ई० में प्रस्तुत किया।
- इस काल में मानव ने स्थायी आवास बना लिया था। साथ ही कृषि तथा पशुपालन भी प्रारम्भ कर दिया। मानव ने इस काल में **पहिया** तथा **मनका (घड़ा)** की खोज की।
- कर्नाटक के मैसूर के पास संगनकल्लू नामक नवपाषाण कालीन पुरास्थल से **राख के टीले** प्राप्त हुए हैं।
- पशुपालन का साक्ष्य भारत में आदमगढ़ (MP) तथा बागौर (राजस्थान) से प्राप्त हुआ है।
- मानव द्वारा पाला गया पहला पशु **'कुत्ता'** था।

Note :–

1. **मेहरगढ़–** यह पाकिस्तान के ब्लूचिस्तान में स्थित है। यहाँ से सर्वप्रथम 7000 ई० पू० सुलेमान और किरथर पहाड़ियों के बीच कृषि के साक्ष्य जौ एवं गेहूँ मिली थी।
2. **बुर्जहोम–** यह कश्मीर में अवस्थित है। यहाँ गर्तावास का प्रमाण मिला है। यहाँ से मालिक के साथ कुत्ते को दफनाने का साक्ष्य मिला है।
3. **गुफकराल–** यहाँ से मृदभांड का पहला प्रमाण प्राप्त हुआ।
4. **कोल्डीहवा–** यह उत्तरप्रदेश के बेलनघाटी में स्थित है। यहाँ पर चावल का प्राचीनतम साक्ष्य (6000 ई० पू०) मिला है।
5. **चिरांद–** यह बिहार के सारण जिले में स्थित है। यहाँ से प्रचुर मात्रा में हड्डी के उपकरण प्राप्त हुए।
6. **लहुरादेव–** यहाँ से सबसे नवीनतम प्राचीन चावल का साक्ष्य (9000 ई० पू०-7000 ई० के बीच) प्राप्त हुआ।
7. **दमदमा–** यहाँ एक ही कब्र से तीन मानव कंकाल मिले हैं।

2. ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Period)

- यह पाषाण काल का अंतिम समय था। इस समय तांबे की खोज हुई थी। जिस कारण औद्योगिकीरण शुरू हो गया। इस। औद्योगिकीकरण का विकसित रूप सिंधु सभ्यता में देखने को मिलता है।
- ताम्रपाषाण के लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय बनाकर रहते थे।
- अहार एवं गिलुंद पुरास्थल राजस्थान के बनास घाटी क्षेत्र में फैले हुए ताम्रपाषाण बस्तियाँ है।
- अहार का प्राचीन नाम तांबवती अर्थात् तांबा वाली जगह है।
- मालवा मृदभांड ताम्रपाषाण युग का सर्वोत्तम मृदभांड माना गया है।
- बिहार में सेनुवार, चिरांदपुर और ताराडीह तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में खैराडीह और नरहन ताम्रपाषाण कालीन है।
- महिष दल पश्चिम बंगाल के ताम्रपाषाण बस्तियाँ हैं।
- नवदाटोली मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक पुरास्थल है जिसकी उत्खनन एच.डी. संकालिया ने कराया था।
- इनामगांव ताम्रपाषाण युग की सबसे बड़ी बस्ती थी।
- इनामगांव के लोग विशेषकर मातृदेवी की पूजा करते थे।
- मानव द्वारा खोजी गई पहली धातु तांबा थी।
- बच्चों के गलों में ताँबे के मनकों का हार पहनाकर उन्हें दफनाने का साक्ष्य महाराष्ट्र के चंदोली और नेवासा बस्तियाँ में पाया गया है।
- स्टेटाइट और कार्नेलियन ताम्रपाषाण की प्रमुख कीमती पत्थरों में से एक थे, जिनके पास ये वस्तुएँ होती थी वे धनी कहलाते थे।
- चित्रित मृदभांड का सबसे पहले इस्तेमाल ताम्रपाषाण में हुआ था।
- सर्वप्रथम ताम्रपाषाण लोगों ने ही प्रायद्वीप भारत में बड़े-बड़े गाँव बसाये थे।
- ताम्रपाषाण युग के लोग लिखने की कला नहीं जानते थे और ना ही वे नगरों में रहते थे जबकि काँस्य युग के लोग नगरवासी हो गए थे।
- सबसे बड़ी ताम्र उपकरण मध्य प्रदेश के गुंगेरिया से प्राप्त हुई है।

जोर्वे संस्कृति

- यह महाराष्ट्र में प्रचलित था।
- यह एक ग्रामीण संस्कृति थी।
- इस संस्कृति के अंतर्गत निम्नलिखित पुरास्थल आते हैं– इनामगाँव, नासिक, नेवासा, दैमाबाद आदि।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

युग	स्थान	प्रमुख साक्ष्य
पाषाण युग	बोरी (मुंबई)	कुल्हाड़ी खंडक (चोपर) के प्रारंभिक उपयोग के साक्ष्य
	सोहन घाटी (पाकिस्तान का पंजाब प्रांत)	यहाँ चौपर-चौपिंग संस्कृति दिखाई पड़ती है। **Note :– चौपर –** एक तरफा धार वाला उपकरण **चैपिंग –** दोहरी धार वाला काटने का औजार
	भीमबेटिका (रायसेन, मध्य प्रदेश)	देश की शैली चित्रकारी का सबसे बड़ा खजना।
	चौतरा (मंडी, हिमाचल प्रदेश)	यह सोहन संस्कृति से संबंधित है।
	अतिरंपक्कम (चेन्नई, तमिलनडु)	यहाँ मिश्रित एबीवेली तथा ऐशुली उपकरण प्राप्त हुए हैं।
	पल्लवरम (चेन्नई, तमिलनाडु)	ब्रिटिश पुरातत्वशास्त्री रावर्ट ब्रुस फ्रुट ने 1864 [illegible] पुरापाषाणकालीन औजारों की खोज की थी।
	बेलन घाटी (मिर्जापुर, यूपी)	आरंभिक पुरापाषाणकालीन औजार
मध्यपाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा, राजस्थान)	• मध्यपाषाण काल का सबसे बड़ा स्थल • पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
	सराय नाहर राय (प्रतापगढ़, यूपी)	शवों को आवासीय क्षेत्रों में ही दफनाने के साक्ष्य।
	महादहा दमदमा (प्रतापगढ़, यूपी)	पुरुष-स्त्री दोहरा शवाधान के साक्ष्य।
	आदमगढ़ (होशंगाबाद, मध्यप्रदेश)	बागोर की तरह यहाँ से भी पशुपालन के आरंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
नवपाषाण काल	बुर्जहोम (श्रीनगर)	• गर्तावास और कब्रों में मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य। • अस्थि उपकरणों की साक्ष्य
	गुफकराल(पुलवामा,जम्मू-कश्मीर)	यहां के लोग कृषि और पशुपालन दोनों कार्य करते थे।
	मेहरगढ़ (बलूचिस्तन प्रांत)	• भारत में सर्वप्रथम गेहूँ व जौ की खेती का स्थल है। • मानव के साथ बकरी दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।
	चिरांद (छपरा, बिहार)	• भारत में नवपाषाण काल का पहला ज्ञात स्थान • अस्थि उपकरणों की साक्ष्य।
	दाओजली हैडिंग (असम)	पॉलिश पत्थर के औजार, चीनी मिट्टी तथा बड़ी संख्या में घरेलु बर्त्तन के साक्ष्य।
	कोल्डिहवा (इलाहाबाद, यूपी)	6000 ई.पू. चावल का साक्ष्य। हस्तनिर्मित मृदाभांड तथा निवास के लिए झोपड़ी।
	बरूडीह (सिंहभूमि, झारखंड)	उपकरण।

❐❐❐

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

02. आद्य-ऐतिहासिक काल (Proto Historic History)

- इस काल में मानव द्वारा लिखी गई लिपि को पढ़ा नहीं जा सकता है, किन्तु लिखित साक्ष्य मिले हैं। इस काल के जानकारी के स्रोत भी पुरातात्विक साक्ष्य ही है। इसमें सिंधु सभ्यता को रखते हैं।

सिंधु सभ्यता (Indus Valley Civilization)

- यह सभ्यता सिंधु नदी के तट पर मिली थी, इसलिए इसे सिंधु सभ्यता कहते हैं।
- इसका विकास **2500 ई० पूर्व** से **1750 ई० पूर्व** तक हुआ।
- सिन्धु सभ्यता का आकार त्रिभुजाकार था।
- इसका क्षेत्र **13 लाख वर्ग किमी** में फैला था।
- सिन्धु सभ्यता में कुल **350 स्थल** मिले है जिसमें से **200 स्थल** केवल **गुजरात** में है।
- सिन्धु सभ्यता विश्व की पहली नगरीय (शहरी) सभ्यता थी जबकि विश्व की पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी जो ग्रामीण सभ्यता थी।
- सिंधु सभ्यता की जानकारी सबसे पहले **चार्ल्स मैसन ने** (1826 ई०) दिया था।
- सिंधु सभ्यता का सर्वेक्षण **जेम्स कनिंघम ने** (185[illegible] ई०) किया।
- **लॉर्ड कर्जन** ने 1904 ई० में पुरातत्व विभाग की स्थापना किया था। जिसके महानिर्देशक सर जॉन मार्शल थे।
- सिंधु सभ्यता की पहली खुदाई **दयाराम साहनी** ने की।
- इसकी जानकारी के लिए पहली खुदाई हड़प्पा में (1921 ई०) हुई थी। अत: इसे हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।
- सिंधु सभ्यता का नामकरण **जॉन मार्शल** ने किया था।
- इस सभ्यता को कॉंस्ययुगीन सभ्यता भी कहते है क्योंकि इसी समय कॉंसे की खोज हुई थी।

सिन्धु सभ्यता का विस्तार

1. इसकी उत्तरी सीमा कश्मीर के मांडा में चिनाब नदी के तट पर थी। इसकी खुदाई जगपति जोशी ने 1982 ई० में किया।
2. इसकी पूर्वी सीमा उत्तर-प्रदेश के आलमगीरपुर में थी। जो हिण्डन नदी के किनारे थी। यज्ञदत्त शर्मा के नेतृत्व में इसका उत्खनन हुआ।
3. इसकी दक्षिणी सीमा महाराष्ट्र के दैमाबाद में प्रवरा नदी के तट पर थी। यहाँ से धातु का एक रथ (इक्का गाड़ी) का प्रमाण मिला है।
4. इसकी पश्चिमी सीमा पाकिस्तान के सुत्कागेंडोर में थी, जो दाश्क नदी के तट पर थी।

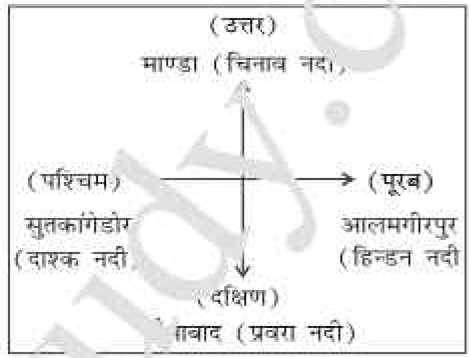

Trick :- सम = AD
डच = है पर (भारत में नहीं)

सभ = AD	डच हैं पर ~~भारत में नहीं~~
स – सुतकांगेडोर	ड – दास्क
म – माण्डा	च – चिनाव
A – आलमीगीर	है – हिण्डन
D – दैमाबाद	पर – प्रवरा

हड़प्पा (1921)

- इसकी खुदाई दयाराम साहनी ने की। यह रावी नदी के तट पर पाकिस्तान के ''माऊण्ट गोमरी'' जिला में स्थित है।
- पिग्गट ने हड़प्पा और मोहनजोदड़ों को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा।

➢ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) कुम्हार का चाक
(ii) श्रमिक आवास
(iii) अन्नागार
(iv) मातृदेवी की मूर्ति
(v) लकड़ी की ओखली
(vi) लकड़ी का ताबूत
(vii) R.H. 37 कब्रिस्तान
(viii) एक सिंग वाला जानवर
(ix) हाथी का कपाल
(x) स्वास्तिक चिन्ह

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

(xi) स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (जिसे उर्वरता की देवी माना गया है)

Note :– चाँदी का सर्वप्रथम प्रयोग हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने ही किए थे।

मोहनजोदड़ो (1922)

- इसकी खुदाई सन् 1922 ई. में राखलदास बनर्जी ने की। यह पाकिस्तान के लरकाना जिले में स्थित है। यह सिंधु नदी के तट पर है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा शहर है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी सड़कें थी जो सीधी दिशा में एक-दूसरे को समकोण (ग्रीड पद्धति) पर काटती हुई नगर को वर्गाकार अथवा चतुर्भुजाकार खंडों में विभाजित करती थी।

➤ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) सूती वस्त्र
(ii) पुरोहित आवास
(iii) स्नानागार
(iv) अन्नागार (सबसे बड़ा)
(v) सबसे चौड़ी सड़क
(vi) सभागार
(vii) पशुपति शिव
(viii) काँसे की नर्तकी
(ix) ताँबे का ढ़ेर
(x) घर में कुआँ।

Note :– मोहनजोदड़ों का अर्थ होता है। मृतकों का टीला किन्तु यहाँ से कब्रिस्तान नहीं मिला है बल्कि एक ही स्थान पर कंकाल का ढेर मिला है। यह कंकाल क्षतविक्षत हैं जो बाह्य आक्रमण को दर्शाता है।

Note :– मोहनजोदड़ों का विशाल अन्नागार सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा भवन या इमारत है।

Remark :– सर्वाधिक स्वास्तिक मुहर मोहनजोदड़ों से मिला है। जिसका निर्माण सेलखड़ी से हुआ था।

सुत्कागेंडोर (1927)

- इसकी खुदाई आर.एन. स्टाइन ने किया। यह सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे है यहाँ से बंदरगाह मिले हैं।

चन्हुदड़ों (1931)

- इसका खुदाई सन् 1931 ई. में गोपाल मजूमदार ने की।
- यह पाकिस्तान में सिंधु नदी के तट पर स्थित है।
- यह एक मात्र शहर है, जो दुर्ग रहित है।
- यह एक औद्योगिक शहर है।
- यह एक मात्र पुरास्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।

➤ **यहाँ से निम्नलिखित वस्तुएँ मिली हैं–**

(i) सौंदर्य सामग्रियाँ
(ii) मनका
(iii) गुड़िया
(iv) सुई-धागा
(v) बिल्ली का पीछा करता हुआ कुत्ता का पद चिह्न
(vi) अलंकृत ईंट

Note :– दड़ो या कोट शब्द वाले स्थान पाकिस्तान में पाये गए।

Ex :– चन्हुदड़ों — बालाकोट
मोहनजोदड़ों — डाबर कोट
जुरिद जोदड़ों — कोट दीजी

रोपड़ (1953)

- इसकी खुदाई यज्ञदत्त शर्मा ने 1953 ई. में की । यह पंजाब के सतलज नदी के किनारे स्थित है।
- इसका आधुनिक नाम रूपनगर है।
- यहाँ मानव के साथ-साथ उसके पालतू जानवरों (कुत्ता) का भी साक्ष्य मिला है।

Note : ऐसा ही शव नव-पाषाण काल में जम्मू-कश्मीर के बुर्जहोम में मिला था।

बनावली (1973)

- इसकी खुदाई 1973 ई. में रविन्द्र सिंह ने किया। यह हरियाणा में स्थित है। इसके समीप रंगोई नदी है। यहाँ जल-निकासी की व्यवस्था नहीं थी जिस कारण यहाँ नाली न मिलकर घरों में ही सोख्ता व्यवस्था मिला है।
- यहाँ की सड़के टेढ़ी-मेढ़ी थी अर्थात् सड़कें नगर को तारांकित (Star Shaped) भागों में विभाजित करती है।

कुणाल

- यह हरियाणा के फतेहबाद जिला में स्थित है।
- यहाँ से चांदी के दो मुकूट मिला है।

कालीबंगा

- इसका अर्थ होता है "काले रंग की चुड़ियाँ"।
- यहाँ से अलंकृत ईंट, चूड़ी, जोता हुआ खेत, हल एवं हवन कुँड मिले है।
- यह राजस्थान में सरस्वती (घग्गर) नदी के किनारे हनुमानगढ़ जिले में स्थित है।
- इसकी खोज अलमानंद घोष द्वारा की गई।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- कालीबंगा के लोग एक साथ दो फसल उगाते थे। वहाँ एक ही खेत में चना और सरसों उपजाने का विवरण मिला है।
- इसकी खुदाई बी.के. थापड़ तथा बी.बी. लाल ने की।

धौलावीरा

- यह गुजरात में स्थित है।
- यह सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- इसकी खुदाई सर्वप्रथम जे.पी जोशी (1967) ने किया एवं पुनः इसकी खुदाई रविन्द्र सिंह बिस्ट द्वारा (1990-91) किया गया ।
- यह गुजरात तथा पाकिस्तान दोनों में फैला हुआ है।
- भारत में स्थित सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी था जो हरियाणा में है।

सुरकोटदा

- यह गुजरात में स्थित है।
- इसकी खुदाई जगपति जोशी ने करवाया।
- यहाँ से कलश शवाधान तथा घोड़े की हड्डी मिली है।
- यहाँ छोटे बंदरगाह भी मिले हैं।

लोथल

- इसकी खुदाई रंगनाथ राव ने भोगवा नदी के किनारे अहमदाबाद (गुजरात) में किया।
- यह सिंधु सभ्यता का बंदरगाह स्थल है।
- यहाँ से गोदीवाड़ा (Dock-yard) का साक्ष्य मिला है।
- यहाँ फारस की मुहर मिली है, जो विदेशी व्यापार को दर्शाता है।
- यहाँ से माप-तौल के समान भी मिले हैं।
- यहाँ से दिशा मापक यंत्र मिला है।
- यह एक औद्योगिक शहर था। इस शहर में घर के दरवाजें सड़कों की ओर खुलते थे।
- यहाँ से युगल शवाधान (जोड़े में लाश) के साक्ष्य मिले है, जिससे सतीप्रथा का आभास मिलता है।

रंगपुर

- यह गुजरात में स्थित है।
- यहाँ से धान की भूसी मिली है।

सिंधु सभ्यता की विशेषताएँ

- सिंधु सभ्यता एक नगरीय (शहरी) सभ्यता थी।
- यहाँ की सड़क एक-दूसरे को समकोण पर काटती है तथा ये पूरब-पश्चिम दिशा में थी, जिससे हवा द्वारा सड़क स्वतः साफ हो जाती थी।
- नगर नियोजन तथा जल निकास इसकी सबसे बड़ी व्यवस्था थी।
- इसकी नालियाँ ढ़की हुई थी तथा सड़क सीधी थी।
- अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- इसका व्यापार विदेशों (अंतर्राष्ट्रीय) से होता था।
- इनकी भाषा भावचित्रात्मक थी।
- इनकी समाज मातृसतात्मक थी।
- इनकी लिपि दाएं से बाएं की ओर लिखा जाता था।
- हड़प्पा लिपि के प्रमाण से सबसे ज्यादा चित्र U आकार तथा मछली का चित्र देखने को मिलता है।
- इनके मुहरों पर सर्वाधिक एक सींग वाले जानवर का चित्र था।
- इनके मुहरों पर गाय तथा सिंह का चित्र नहीं मिला है।
- हड़प्पा सभ्यता के मुहरों में शेलखड़ी का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया था।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लोहे से परिचित नहीं थे जबकि अन्य धातु जैसे- सोना, चाँदी, ताँबा, टीन, काँसा इत्यादि से परिचित थे।
- यहाँ माप-तौल के लिए न्यूनतम बाट 16 kg का था जो दशमलव प्रणाली के सूचक हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग युद्ध या तलवार से परिचित नहीं थे।
- सिंधु सभ्यता में मिट्टी के बर्तनों में लाल रंग का उपयोग होता था।
- सिंधुवासी विश्व में कपास के प्रथम उत्पादक थे।
- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कृषि भी करते थे, पशुपालन भी करते थे परंतु उनका मुख्य व्यवसाय व्यापार था।
- यहाँ के लोग मनोरंजन के लिए चौपर और पासा खेलते थे।
- सबसे प्रिय देवता – शिव
- इनका पसंदीदा वृक्ष – पीपल
- इनका पसंदीदा जानवर – सांड़ तथा वृषभ (बसहा बैल)
- इनका पंसदीदा पक्षी – बत्तख
- इनका आदरणीय नदी – सिन्धु

➢ सिंधु सभ्यता का समाज 4 वर्गों में बँटा हुआ था–

1. विद्वान
2. योद्धा
3. व्यापारी एवं शिल्पकार
4. श्रमिक

वस्तुओं का आयात	किस प्रदेश से?	वस्तुओं का आयात	किस प्रदेश से?
सोना	अफगानिस्तान, ईरान, कर्नाटक	गोमेद	सौराष्ट्र
चाँदी	अफगानिस्तान, ईरान	लाजवर्द	मोसोपोटामिया
ताँबा	ब्लूचिस्तान, खेतड़ी, ओमान	सीसा	ईरान
टिन	ईरान, अफगानिस्तान		

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

> **सिन्धु सभ्यता के पतन के कारण–**

- सिंधु सभ्यता के विनाश का सबसे बड़ा कारण बाढ़ को माना जाता है।
- वर्तमान में हुए उत्खनन से आईआईटी खड़गपुर को सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित कुछ प्रमाण मिला जिस आधार पर कहा जा रहा है कि इसके पतन का महत्वपूर्ण कारण जलवायु परिवर्तन है।

विद्वान	पतन के कारण
गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर	बाह्य एवं आर्यों के आक्रमण
जॉन मार्शल अर्नेस्ट एवं एस.आर.राव	बाढ़
आरेल स्टेइन, अमलानंद घोष	जलवायु परिवर्तन
एम.आर. साहनी	भूतात्विक परिवर्तन (जलप्लावन)
जॉन मार्शल	प्रशासनिक [illegible]
के.यू.आर. कनेडी	प्राकृतिक आपदा (मलेरिया, [illegible])

सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल

	प्रमुख स्थल	अवस्थित	उत्खननकर्ता	उत्खनन वर्ष	नदी
1.	हड़प्पा	मोंटगोमरी जिला, पंजाब (पाकिस्तान)	दयाराम साहनी और माधोस्वरूप वत्स	1921 ई०	रावी
2.	मोहनजोदड़ो	लरकाना जिला, सिंध प्रांत (पाकिस्तान)	राखालदास बनर्जी	1922 ई०	सिन्धु
3.	कालीबंगा/कालीबंगन	हनुमानगढ़ जिला, राजस्थान (भारत)	बी०बी० लाल और बी०के० थापर	1961-69 ई०	घग्गर (सरस्वती)
4.	धौलावीरा	कच्छ जिला, गुजरात (भारत)	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1990-91 ई०	लूनी
5.	चन्हूदड़ों	सिंध प्रांत (पाकिस्तान)	गोपाल मजुमदार	1931 ई०	सिन्धु
6.	लोथल	अहमदाबाद जिला, गुजरात (भारत)	रंगनाथ राव	1955 ई०/1962 ई०	भोगवा
7.	कोटदीजी	सिंध प्रांत का खैरपुर स्थान (पाकिस्तान)	फजल अहमद खान	1955 ई०, 1957 ई०	सिन्धु
8.	बनावली	हिसार जिला, हरियाणा (भारत)	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1974 ई०	सरस्वती (रंगोई)
9.	रोपड़	रोपड़ जिला, पंजाब (भारत)	यज्ञदत्त शर्मा	1953-56 ई०	सतलज
10.	रंगपुर	काठियावाड़ जिला, गुजरात, अहमदाबाद (भारत)	रंगनाथ राव	1953-54 ई०	भादर
11.	आलमगीरपुर	मेरठ जिला, उत्तर प्रदेश (भारत)	यज्ञदत्त शर्मा	1958 ई०	हिन्डन
12.	सुतकांगेडोर	मकरान में समुद्र तट के किनारे (पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में)	ऑरेल स्टाईन (आर०एल०स्टाइन)	1927 ई०	दाश्क
13.	सुत्काकोह	मकरान के समुद्र तट पर (पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में)	जॉर्ज डेल्स	1962 ई०	शादीकोर

मेसोपोटामिया की सभ्यता (10,000 ई.पू.)

- इसका विकास इराक में टिगरीज एवं यूफ्रेटस (दजला-फरात) नदियों के मध्य में हुआ है।
- यहाँ की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ थी। यह सभ्यता ग्रामीण थी। इसके अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- इस समय के मंदिरों को जिगुरद कहा जाता था।

> **मेसोपोटामिया की सभ्यता के 4 भाग थे–**

(i) सुमेरिया की सभ्यता
(ii) बेबीलोन की सभ्यता
(iii) सीरिया की सभ्यता
(iv) कैल्डिया की सभ्यता

- **झूलता हुआ बगीचा** बेबीलोन में स्थित है।
- सिकंदर ने इस सभ्यता का विनाश कर दिया और इसके स्थान पर ग्रीक सभ्यता को थोप दिया।
- विश्व की सबसे पहली सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता थी। जबकि विश्व की पहली नगरीय सभ्यता सिंधु सभ्यता थी।

> **पीली नदी की सभ्यता**

- यह चीन में 5000 ई.पू. विकसित हुई थी। ह्वांगहो नदी के तट पर इसका विस्तार था। यह सभ्यता अपने उपजाऊ भूमि के लिए प्रसिद्ध थी।

मिस्त्र की सभ्यता (2100 ई.पू.)

- यह मिस्त्र के रेगिस्तानों में स्थित थी।
- इसे नील नदी की देन कहते है।
- इस सभ्यता की विकास फिरौन के नेतृत्व में किया गया था।
- इस सभ्यता में पिरामिड, सूर्य कैलेण्डर तथा ममी का विकास हुआ था। अर्थात् इस सभ्यता का रसायन शास्त्र सुदृढ़ था।
- गिजा का पिरामीड सबसे प्रसिद्ध है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

रोम की सभ्यता (600 ई.पू.)

- इसका विकास इटली में हुआ था।
- इन्होंने पूरे भू-मध्यसागर पर अधिकार कर लिया था।
- प्राचीन सभ्यता के यह सबसे विकसित सभ्यता थी। आज भी इस सभ्यता के अवशेष सुरक्षित बचे हुए हैं। जो पर्यटन का आकर्षण केन्द्र हैं।
- इस सभ्यता के दो सबसे बड़े राजा जुलियस सीजर एवं आगस्टस थे।

  Note :– जूलियस सीजर की हत्या धोखे से उसके मंत्रिमंडल द्वारा कर दी गई।

- जुलियस सीजर नामक नाटक William Shakespeare ने लिखा है।

फारस की सभ्यता (500 ई.पू.)

- यह वर्तमान में ईरान में है। इस सभ्यता का विकास [illegible] से हुआ था। इन्होंने पूरे अरब प्रायद्वीप पर अधिकार कर लिया था।
- इनकी भाषा फारसी थी तथा पारसी धर्म को मानते थे।
- सिकंदर ने इस धर्म का अंत कर दिया।

स्पाटा

- स्पाटा अपने बहादुर सैनिकों के लिए विख्यात है। यह ग्रीस के पास का एक छोटा सा क्षेत्र था।
- स्पाटा के मात्र 300 सैनिकों ने लियोनाइड्स के नेतृत्व में ग्रीस के 20000 सैनिकों को मात दे दी थी।
- ग्रीस की विशाल सेना का नेतृत्व जर्कसीज कर रहा था।
- जर्कसीज ने धोखे से Spartans को हरा दिया।

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

03. ऐतिहासिक काल (Historical Period)

➤ **ऐतिहासिक काल :** इसके बारे में लिखित स्रोत उपलब्ध है, और इसे पढ़ा भी जा सका है। इसके अंतर्गत वैदिक काल से लेकर अभी तक का समय आता है।

प्राचीन भारत का इतिहास: स्रोत

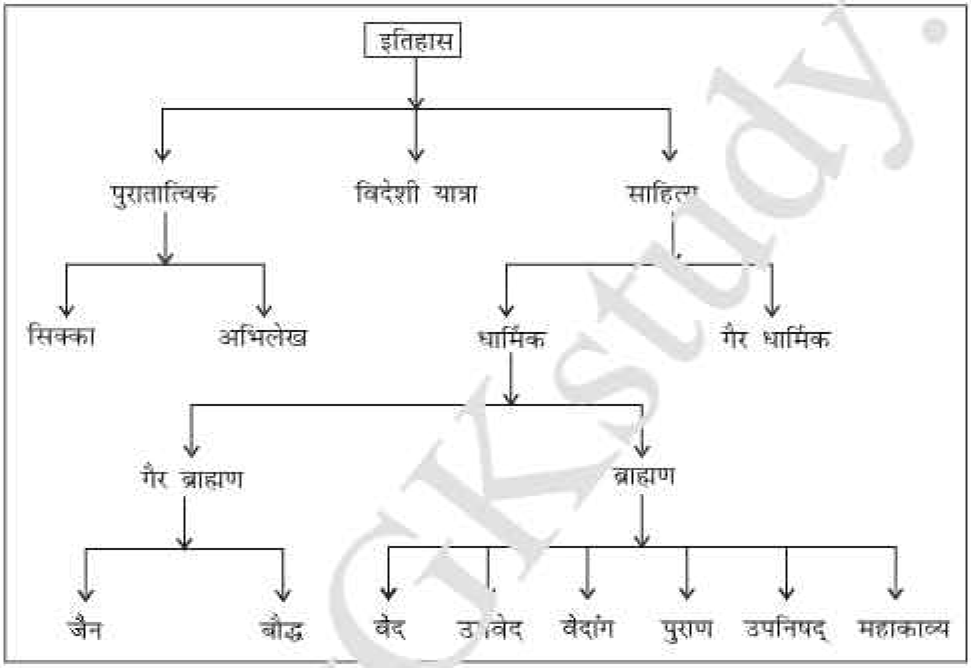

सिक्का (Coins)

☞ सिक्के का अध्ययन न्यूमेसमेटिक्स कहलाता है।
☞ टेराकोटा का सिक्का मिट्टी का बना होता था। यह सिंधु सभ्यता में बना था।
☞ मौर्य काल के समय आहत या पंचमार्क सिक्के का प्रयोग होता था। आहत् सिक्कों पर लिखावट नहीं होती थी। केवल चित्र बने होते थे। यह पहला धातु का सिक्का था।
☞ पण चाँदी के सिक्के थे जो मौर्य काल में प्रचलित थे।
☞ सीसा का सिक्का सातवाहन काल में प्रचलित था।
☞ पहली बार सोने का सिक्का यूनानी शासकों द्वारा प्रचलित किया गया।
☞ शुद्ध सोने का सिक्का कुषाण शासको द्वारा प्रचलित किया गया।
☞ सर्वाधिक मात्रा में तथा सबसे अधिक अशुद्ध सोने का सिक्का गुप्त काल में प्रयोग हुआ। इस समय शासक स्कन्दगुप्त था।
☞ चांदी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-II विक्रमादित्य के समय प्रचलित हुआ।
☞ राजा-रानी का सिक्का गुप्त काल में चन्द्रगुप्त-I के समय प्रचलित हुआ।
☞ मयूर शैली की सिक्का गुप्त काल में समुद्र गुप्त के समय प्रयोग में लाया गया। इस सिक्के का सर्वाधिक प्रचलन गुप्त काल में था।
☞ कौड़ी का प्रयोग भी गुप्त काल में ही हुआ।
☞ चमड़े का सिक्का हुमायूं के शासन काल में शिहाबुद्दीन ने प्रारम्भ करवाया था।
☞ चांदी के रुपये का प्रारंभ शेरशाह सूरी ने किया।
☞ तांबे के दाम का प्रारम्भ शेरशाह सूरी ने ही किया।
☞ सोने की अशर्फी का प्रारम्भ भी शेरशाह सूरी ने ही किया।

अभिलेख (Epigraph/Inscriptions)

☞ पत्थरों को खोदकर लिखना अभिलेख कहलाता है।
☞ विश्व में अभिलेख लिखने का प्रारम्भ ईरान के शासक डेरियस ने किया था तथा भारत में अभिलेख का जनक अशोक को कहा जाता है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- पहला अभिलेख बोगजगोई से मिला जो तुर्की या एशिया माइनर में है।
- अभिलेखों का अध्ययन एपिग्राफी कहलाता है।

अभिलेख के प्रकार

अभिलेख

↓ **शिलालेख** ↓ **स्तंभलेख** ↓ **भित्तिलेख** ↓ **गुफालेख**

- छोटे पत्थरों पर लिखना शिलालेख कहलाता था।
- सर्वाधिक प्रचलन शिलालेख का था।
- स्तंभलेख दूर से आकर्षित दिखते थे।
- स्तम्भ के समान ऊँचे पत्थरों पर लिखना स्तम्भ लेख कहलाता है।

  Ex. – हाथीगुफा अभिलेख (उड़ीसा)– इसे कलिंग राजा खारवेल द्वारा लिखवाया गया था। इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है। युद्ध के समय कलिंग का राजा नंदराज था। (गंगवंश)

  Ex. – हेलियोडोटस/गरुड़ध्वज स्तम्मलेख (मध्यप्रदेश)– इसमें भागभद्र ने भागवत् धर्म की जानकारी दी है।

विदेशी यात्रियों द्वारा भारत का वर्णन

- **हेरोडोटस**– हिस्टोरिका
- **टॉलमी**– ज्योग्राफिका
- **प्लिनी**– नेचुरल हिस्ट्री
- **मेगास्थनीज**– इण्डिका
- **Periplus of the Erythraean Sea**– अज्ञात
- **अलबेरूनी**– किताबुल-हिन्द/तहकीक -ए-हिन्द
- **मार्कोपोलो**– द बुक ऑफ सर मारको पोलो (काकतीया वंश)
- **फाह्यान**– फो-क्यु-की (चन्द्रगुप्त-II)
- **ह्वेनसांग**– सी-यू-की (हर्षवर्धन)
- **तारानाथ**– कंग्युर, तंग्युर

➤ **फाह्यान (399 ई.)**– "फो-क्यु-की" (पुस्तक) यह चन्द्रगुप्त-II (विक्रमादित्य) के दरबार में आया था। इसमें उस समय के भवन तथा सड़कों की चर्चा है।

➤ **संयुगन (518 ई.)**– (चीन) इसने अपने तीन वर्ष की यात्रा में बौद्ध धर्म की प्रतियाँ एकत्रित की।

➤ **ह्वेनसांग (629 ई.)**– सी-यू-की यह हर्षवर्धन के दरबार में आया।

- इसने नालंदा विश्व विद्यालय में अध्ययन तथा अध्यापन दोनों किया। इसे यात्रियों का राजकुमार कहते हैं।

➤ **इत्सिंग (673 ई.)**– यह चीनी यात्री था। यह त्रिपिटक की 400 प्रतियाँ (Photocopy) अपने साथ चीन लेकर गया था।

साहित्यिक स्रोत

- लिखित स्रोत को साहित्यिक स्रोत कहते हैं। प्राचीन इतिहास की जानकारी का यह सबसे बड़ा स्रोत है।

➤ **गैर धार्मिक स्रोत**– इसका संबंध किसी भी धर्म से नहीं रहता है।

1. **मनुस्मृति** - इसकी रचना मनु ने किया। यह राजनीति से संबंधित पहली पुस्तक है। इसमें महिला एवं दलितों को नीचे दिखाया गया है।
2. **अर्थशास्त्र**- इसका संबंध राजनीति से है। इसकी रचना चाणक्य ने किया। अर्थशास्त्र मैक्यावेली की रचना The Prince के समान है। चाणक्य को भारत का मैकियावेली कहते है। अर्थशास्त्र का प्रकाशन सामशास्त्री द्वारा किया गया। इसमें 15 अधिकरण है।
3. **पंचतंत्र**- विष्णुशर्मा की पुस्तक पंचतंत्र को 15 भारतीय तथा 40 विदेशी भाषा में अनुवादित किया गया है।

➤ **धार्मिक स्रोत**– ऐसी पुस्तक जिसका संबंध किसी-न-किसी धर्म से रहता है उसे धार्मिक स्रोत कहते है।

➤ **गैर-ब्राह्मण**– वैसे स्रोत जिसका संबंध हिन्दु धर्म से नहीं रहता, उसे गैर-ब्राह्मण कहते हैं।

➤ **जैन-साहित्य**– यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

उदाहरण– 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।

➤ **बौद्ध साहित्य**– इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं।

उदाहरण– जातक, ललित विस्तार, अंगुत्तर निकाय, त्रिपिटक।

➤ **ब्राह्मण ग्रंथ**– वैसा ग्रंथ जिसका संबंध हिंदु धर्म से है उसे ब्राह्मण ग्रंथ कहते है।

- सभी ब्राह्मण ग्रंथों में सबसे विशाल शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ है।

Note :– वैदिक काल में जौ को यव, गेहूँ को गोधून तथा चावल को व्रीही कहा जाता था।

वेद

- वेद का शाब्दिक अर्थ 'ज्ञान' होता है। यह सबसे प्रमुख ब्राह्मण ग्रंथ है।

	वेद	ज्ञानी	ब्राह्मण ग्रन्थ	उपवेद	ज्ञानी
1.	ऋग्वेद	होतृ	कौशतकीय, एतरेय	आयुर्वेद	प्रजापति
2.	यजुर्वेद	अध्वर्यु	तैतरेय, शतपथ	धनुर्वेद	विश्वामित्र
3.	सामवेद	उद्गाता	पंचवीश	गंधर्ववेद,	नारद
4.	अथर्ववेद	ब्रह्मा	गोपथ	शिल्पवेद	विश्वकर्मा

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- वेद-वेदों की रचना ईश्वर ने की है। अत: वेद को अपौरूषेय कहा जाता है।
- गुप्तकाल में कृष्ण द्वैवायन व्यास ने वेदों का संकलन (Collection) किया।
- प्रारम्भ में वेदों की संख्या- 3 (ऋग्वेद, यजुर्ववेद तथा सामवेद) थी, अत: वेद को त्रयी कहा जाता है।
- अथर्ववेद को बाद में शामिल किया गया इसलिए इसे वेदत्रैयी में नहीं रखते हैं।

1. ऋग्वेद

- इसका शाब्दिक अर्थ मंत्रों/ऋचाओं का संग्रह होता है। इसमें 10 मंडल, 1028 सुक्त तथा 10,580 ऋचाएँ हैं। ऋचाओं की अधिकता के कारण ही इसे ऋग्वेद कहते हैं।
- यह सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा वेद है। इसमें गायत्री मंत्र की चर्चा है, जो सूर्य भगवान को समर्पित है।
- पहली बार शूद्र का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ।
- ऋग्वेद का पहला तथा 10वां मंडल बाद में लिखा गया है जबकि सबसे पहले 7वाँ मंडल लिखा गया है।
- 9वें मंडल में सोम देवता की चर्चा है। यह जंगल के देवता थे।
- ऋग्वेद के ज्ञानी को होतृ कहते हैं।
- ऋग्वेद का उपवेद 'आयुर्वेद' है। जिसमें चिकित्सा की चर्चा है। इसके ज्ञानी को प्रजापति कहते हैं।
- इसमें दसराज्ञ युद्ध की चर्चा है।

2. यजुर्वेद

- इसमें 1990 मंत्र हैं। इसमें युद्ध एवं कर्म-कांड की चर्चा है।
- यह एकमात्र वेद है जो गद्य और पद्य दोनों में है।
- **इसे 2 भाग में बाँटते हैं–**
  (i) कृष्ण यजुर्वेद (गद्य)
  (ii) शुक्ल यजुर्वेद (पद्य)
- इसके ज्ञानी को अध्वर्यु कहते हैं। यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। धनुर्वेद के ज्ञानी को विश्वामित्र कहते हैं।

3. सामवेद

- साम का शाब्दिक अर्थ 'गान' होता है। इसमें 1549 मंत्र हैं। किन्तु वास्तव में 75 मंत्र ही सामवेद के हैं। बाकी मंत्रों को ऋग्वेद से ग्रहण किया गया है।
- सामवेद में भारतीय संगीत के सात स्वर सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी की चर्चा है।
- ये संगीत यज्ञ के समय गाये जाते हैं।
- सामवेद के ज्ञानी को 'उद्गाता' कहते हैं।
- सामवेद का उपवेद 'गंधर्ववेद' है।
- गंधर्ववेद के ज्ञानी को 'नारद' कहते हैं।
- भारतीय संगीत का जन्म 'सामवेद' से हुआ है।

4 अथर्ववेद

- इसकी रचना सबसे बाद में उत्तर वैदिक काल में हुई। इसमें 5849 मंत्र तथा 731 सूक्त हैं।
- इसमें जादू-टोना, वशीकरण, रोग-निवारक औषधि, इत्यादि की चर्चा है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिल्पवेद है।
- अथर्ववेद के ज्ञानी को ब्रह्मा कहा जाता है।
- अथर्वा ऋषि ने इस वेद को लिखा है।
- अथर्ववेद में ही सर्वप्रथम मगध, अंग और ... परि...त के बारे में उल्लेख किया गया है।

उपवेद

- वेदों को अच्छी तरह से समझने के लिए उपवेद की रचना किया गया। सभी वेद के अपने-अपने उपवेद है।
  1. **आयुर्वेद**- ऋग्वेद का उपवेद है।
  2. **धनुर्वेद**- यजुर्वेद का उपवेद है।
  3. **गंधर्ववेद**- सामवेद का उपवेद है।
  4. **शिल्पवेद**- अथर्ववेद का उपवेद है।

> **आरण्यक**

- वैदिक पुस्तक जिसकी रचना जंगल में की गई हो, आरण्यक कहलाता है। इसकी संख्या 7 है।
- ...वेद को छोड़कर सभी पुस्तक आरण्यक हैं।

वेदांग

- वेदों को भलि-भाँति समझने के लिए वेदांग की रचना की गई।

> **वेदांग की संख्या 6 हैं–**

व्याजो → व्याकरण, ज्योतिष
निशि → निरूक्त, शिक्षा
कछ → कल्प, छंद

व्याकरण = व्याकरण (वेद के मुख)
ज्योतिष = खगोल विज्ञान (वेद की आंखे)
निरूक्त = निरूक्त शास्त्र (वेदों का कान) = शब्द उत्पति
शिक्षा = शिक्षा शास्त्र (वेद का मस्तिष्क)= उच्चारण का विज्ञान
कल्प = कल्प शास्त्र (कर्मकांड का प्रतिपादन/यज्ञ)
छंद = छंद शास्त्र (वेद मंत्र)

- व्याकरण की पहली पुस्तक पाणिनी की अष्टाध्यायी थी।
- ज्योतिष की सबसे बड़ी पुस्तक महाभाष्य है।
- निरूक्त की रचना यास्क महोदय ने किया। जिसका अर्थ निर्वचन होता है अर्थात् वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझना ही निरूक्त का प्रयोजन है।
- गौतम ऋषि ने कल्प की रचना किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- वेद-वेदांग पढ़ाने वाले अध्यापक को उपाध्याय कहते हैं।

पुराण

- इसकी रचना महर्षि लोमहर्ष तथा इनके पुत्र उग्रश्रवा ने किया। इसकी संख्या 18 है।
- इसे पाँचवा वेद या वेदों का वेद कहते है।
- इससे प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है।
- स्त्री और शूद्र को इसे पढ़ने की अनुमति नहीं थी। वे इसे सुन सकते थे।

➤ **विष्णु पुराण–** इससे मौर्य वंश की जानकारी मिलती है।

➤ **मत्स्य पुराण–** इससे सातवाहन वंश की जानकारी मिलती है। इसमें विष्णु भगवान के 10 अवतारों की चर्चा है।

➤ **वायु पुराण–** इसमें गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। इसमें लिखा है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा तीन समुद्र का पानी पीता था।

उपनिषद्

- इसका अर्थ होता है, गुरू के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। यह ब्राह्मणों के विरुद्ध राजपूतों की एक प्रक्रिया मानी जाती है।
- उपनिषद् 108 हैं, किन्तु 13 उपनिषद् को ही मान्यता प्राप्त है।

➤ **वृहद् नारायण उपनिषद्–** यह सबसे बड़ा तथा प्राचीन है।

➤ **कठोपनिषद–** इसमें यम एवं नचिकेता की चर्चा है। इस 'ऊँ' शब्द के महत्व को दर्शाया गया है।

➤ **मुंडकोपनिषद्–** इसमें 'सत्यमेव जयते' की चर्चा है।

➤ **श्वेताश्वरूपनिषद्–** इसमें सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् की चर्चा है।

➤ **जबालोपनिषद्–** इसमें ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश अर्थात् त्रिमूर्ति की चर्चा है। सर्वप्रथम 4 आश्रमों के बारे में उल्लेख इसी उपनिषद् में किया गया है।

➤ **अलोपनिषद्–** यह सबसे बाद का उपनिषद् है। इसकी रचना अकबर के काल में हुई।

Note : - उपनिषद् मूलतः दर्शन पर आधारित है।

- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद्- काठोपनिषद्, मैत्रायत्री और श्वेताश्वरूपनिषद्
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद्- छांदोग्य तथा जैमिनीय।
- अथर्ववेद के प्रमुख उपनिषद्- मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् तथा मांडक्योपनिषद्।

प्रमुख साहित्य

- स्मृति साहित्य में प्राचीन राजवंशों की जानकारी मिलती है। स्मृति साहित्य की संख्या 36 हैं जिनमें से विष्णु स्मृति तथा नारद स्मृति से गुप्त काल की जानकारी मिलती है।
- मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति से मौर्य काल की जानकारी मिलती है।
- याज्ञवल्क्य स्मृति में जुआ खेलने को उचित बताया गया।
- मनुस्मृति को धर्म शास्त्र कहते हैं। इसमें ऊँची जाति को वरीयता दी गई है। दलित तथा महिला को नीचे दिखाया गया है।
- इसमें विवाह के लिए पुरुष की आयु 24 वर्ष तथा लड़की की आयु 12 वर्ष बताया गया है।
- इसमें 8 प्रकार के विवाह की चर्चा है।
- संस्कार की संख्या 16 होती है।
- गर्भाधान प्रथम संस्कार होता है।
- अंत्येष्टि (दाह संस्कार) अंतिम संस्कार होता है।

➤ **ऋण तीन प्रकार के होते हैं–**

(i) देवऋण– धार्मिक अनुष्ठान कर इससे मुक्ति मिलती थी।

(ii) ऋषिऋण– अपने पुत्र को शिक्षित कर इससे मुक्ति मिलती थी।

(iii) पितृऋण– संतान उत्पन्न कर इस ऋण से छुटकारा पाया जा सकता था।

➤ **पुरुषार्थ 4 प्रकार के होते हैं–**

(i) धर्म– सामाजिक नियम व्यवस्था

(ii) अर्थ– आर्थिक संसाधन

(iii) काम– शारीरिक सुख-भोग

(iv) मोक्ष– आत्मा का उद्धार

महाकाव्य

➤ **महाकाव्य की संख्या 2 है–**

1. रामायण
2. महाभारत

1. रामायण

- इसकी रचना महर्षि वाल्मिकि ने की। प्रारम्भ में इसमें 12000 श्लोक थे, किन्तु वर्तमान में 24000 श्लोक हैं। इसे गुप्तकाल में पुरा किया गया था। इसमें 7 कांड हैं।
- अकबर के समय रामायण को फारसी भाषा में अनुवाद बदायूनी ने किया।
- इसे आदिकाव्य की संज्ञा दी जाती है।
- रामायाण महाकाव्य महाभारत की अपेक्षा अधिक ठोस है।

2. महाभारत

- यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है। इसकी रचना वेदव्यास ने की। इसका प्रारम्भिक नाम जयसंहिता था। प्रारंभ में 8800 श्लोक थे।
- वर्तमान में एक लाख श्लोक है अब इसे शतसाहस्री संहिता अर्थात् महाभारत कहते हैं।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- महाभारत में कथोप कथाओं के साथ उपदेश भी हैं।
- महाभारत के खंडों को पर्व कहा जाता है। इसमें कुल 18 पर्व है। सबसे महत्वपूर्ण पर्व भीष्म पर्व है। जिसमें अर्जुन तथा कृष्ण के वार्तालाप की चर्चा है। भीष्म-पर्व को भागवत् गीता या गीता कहा जाता है।
- अकबर के समय महाभारत को फारसी भाषा में रज्जनामा के नाम से अनुवाद किया गया था।

वैदिक काल

- इस काल में वेदों की रचना की गई। अत: इसे वैदिक काल कहा गया। यह पूर्णत: ग्रामीण सभ्यता थी।
- वैदिक काल 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक था।

➤ **संक्रमण काल**- सिंधु सभ्यता का पतन 1750 ई. तक हो गया। इसके बाद अगले 250 साल में धीरे-धीरे वैदिक सभ्यता का विकास प्रारंभ हुआ। इसी 250 साल को संक्रमण काल कहते है।

➤ **वैदिक काल को 2 भागों में बाँटते हैं-**

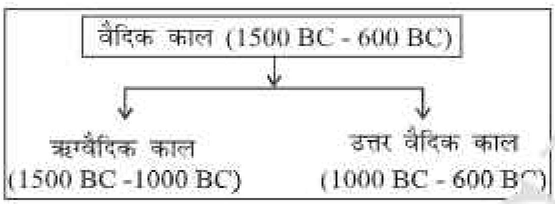

➤ **ऋग्वैदिक काल**- इस समय जाति का निर्धारण कर्म के आधार पर किया जाता था। यह काल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक था।

➤ **उत्तर वैदिक काल**- इसका विकास 1000-600 ई. पू. तक हुआ। इस काल में जाति का निर्धारण वंश के आधार पर होने लगा।

- उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हुई।
- भारत में लोहे का प्रचलन पहली बार 1000 ई. पूर्व में आरम्भ माना जाता है।
- वर्तमान में भारत में लोहे का पहला साक्ष्य अतिरंजीखेड़ा में देखने को मिलता है।
- वैदिक समाज के निर्माता आर्य थे।
- आर्य मध्य एशिया (मैक्समूलर) से आए थे और भारत में सप्त सैंधव प्रदेश में (सात नदियों का प्रदेश या पंजाब, हरियाणा) बस गए।
- आर्यों की भाषा संस्कृत थी जो देवताओं की भाषा थी, जिस कारण आर्य स्वयं को श्रेष्ठ कहते थे। जिन्हें संस्कृत नहीं आती थी, अर्थात् भारत में मूल निवासियों को अनार्य या निम्न कहा जाता था।
- दक्षिण भारत का आर्यीकरण अगस्त ऋषि ने किया।
- उत्तर भारत का आर्यीकरण राजा विदेह के पुरोहित (पंडित) गौतम राहूगण ने किया। किन्तु ये गंगा नदी को पार करके पटना नहीं पहुँच पाए जिस कारण अथर्ववेद में पाटलिपुत्र को अछूतों की भूमि कही गई है और यहाँ के गंगा जल को पवित्र नहीं माना गया है।
- इस समय सबसे प्रिय पशु गाय थी। जो समृद्धि का संकेत थी। गाय की हत्या करने पर मृत्युदंड दिया जाता था।
- राजा का मुख्य कार्य गाय के लिए युद्ध करना (गविष्टि) था। उस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था।
- पुरुष्णी नदी (रावी) के तट पर आर्य और अनार्य राजाओं के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में आर्य विजयी हुए। इस युद्ध को दशराज्ञ का युद्ध भी कहते हैं। इसकी चर्चा ऋग्वेद के 7वें मंडल में है।
- आर्यों के विजयी होने के कारण ही इस क्षेत्र का नाम आर्यावर्त पड़ा। आर्यों में सबसे महान राजा भरत था। जिसके नाम पर आर्यावर्त का नाम भारत रखा गया।

वैदिक काल की वर्ण व्यवस्था

➤ **वैदिक काल में समाज को चार वर्गों में बांटा गया–**

1. **ब्राह्मण–** ये पूजा-पाठ तथा शिक्षा-दीक्षा का कार्य करते थे। इनकी संख्या सबसे कम थी।
2. **क्षत्रिय**- ये रक्षा का कार्य करते थे अर्थात् सैनिक होते थे। इनकी संख्या वैश्य से कम थी।
3. **वैश्य (व्यवसाय)–** ये व्यवसाय करते थे। इनकी संख्या शूद्र से कम थी।
4. **शूद्र–** ये दूसरों के यहाँ सेवा करते थे अर्थात् नौकरी करते थे। इनकी संख्या सर्वाधिक थी।

वैदिक काल की सामाजिक जीवन

- वैदिक काल में जीवन को चार आश्रमों (अवस्थाओं) में बांटा गया था।
- जन्म से 5 वर्ष की अवस्था को बाल्यावस्था या शिशु अवस्था कहा गया। इसके बाद जीवन की चार अवस्थाएं प्रारंभ हुई।

➤ **चार आश्रम–**

1. **ब्रह्मचर्य (5-25 वर्ष)** - यह विद्यार्थी अवस्था था। इसमें जंगल में गुरु से शिक्षा ली जाती थी। विद्यार्थी गुरु के साथ ही रहता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

2. **गृहस्थ जीवन (25-50 वर्ष)**- इसमें विवाह तथा पारिवारिक जीवन का निर्वहन किया जाता था।
3. **वानप्रस्थ (50-75 वर्ष)**- इसमें सामाजिक दायित्वों का निर्वहन किया जाता था।
4. **सन्यासी (75 वर्ष)**- यह 75 वर्ष के बाद की अवस्था थी। इसमें धार्मिक क्रियाकलापों को किया जाता था।

वैदिक काल की नदियाँ

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
सिन्धु	सिन्धु
वितस्ता	झेलम
आस्किनी	चिनाब
पुरुष्णी	रावी
शतुद्री	सतलज
विपाशा	व्यास
सदानीरा	गंडक

☛ वैदिक साहित्य में सर्वाधिक चर्चा सिंधु नदी की है क्योंकि यह सबसे महत्वपूर्ण नदी थी।

वैदिक काल के देवता

(i) **इन्द्र–** यह सबसे महत्वपूर्ण थे। इसकी चर्चा 250 बार हुई है। इन्हें युद्ध तथा वर्षा का देवता कहते हैं। इन्हें पुरंदर भी कहते हैं।

(ii) **अग्नि–** इसकी चर्चा 200 बार की गइ है।

(iii) **वरूण–** वायु के देवता।

(iv) **सोम–** जंगल के देवता।

(v) **मारूत–** तूफान के देवता।

(vi) **रुद्र–** यह सबसे क्रोध वाले देवता थे। इन्हें पशुओं की देवता कहते हैं।

(vii) **विष्णु–** संरक्षक एवं पालनकर्ता।

➤ **गविष्टि का अर्थ होता है–** गाय के लिए किया गया युद्ध।

➤ **सीता का अर्थ होता है–** हल से जोती गई जमीन पर पड़ा निशान।

वैदिक काल की प्रमुख देवी

(i) **ऊषा–** प्रभात की देवी

(ii) **अरण्यणी–** जंगल की देवी

(iii) **इला–** संकट हरने वाली

(iv) **अदिति–** सभी देवताओं की देवी

वैदिक काल की सामाजिक व्यवस्था

☛ इस समय सबसे बड़ा पद राजा का होता था। जिसे जनता चुनती थी। राजा किसी भी निर्णय को लेने से पहले विभिन्न समितियों में बैठकर इसकी चर्चा करता था।

➤ **वैदिक काल में तीन प्रमुख संगठन थी–**

(i) **सभा–** यह निम्न साधारण लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 8 बार की गई है।

(ii) **समिति–** यह उच्च वर्ग के लोगों का संगठन था। इसकी चर्चा 9 बार हुई है।

(iii) **विद्थ–** यह सबसे महत्वपूर्ण संगठन था। इसकी चर्चा 122 बार हुई है।

Note :– सभा तथा विद्थ में भाग लेने की अनुमति महिलाओं को था।

☛ वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जिसके मालिक को ग्रामिक कहते थे।

☛ सबसे बड़ी इकाई जन होती थी, जिसके मालिक को राजन कहते थे।

➤ **इस समय घड़ा, मनका, या मृदभांड 4 प्रकार के होते थे–**

1. धूसर मृद्भांड
2. काला मृद्भांड
3. लाल मृद्भांड
4. मिश्रित मृद्भांड

☛ सर्वाधिक प्रचलन धूसर मृद्भांड का था। जिस पर चित्र बने होते थे, जिसके कारण इसे चित्रित धूसर मृद्भांड भी कहते हैं।

☛ मिश्रित मृद्भांड लाल एवं काला दोनों का मिश्रण होता था।

➤ **इस समय 3 प्रकार के यज्ञ का प्रचलन था–**

(i) **अवश्मेघ यज्ञ–** इसमें घोड़ा को यज्ञ करके छोड़ दिया जाता था। जहाँ तक घोड़ा जाता था वहाँ तक का क्षेत्र राजा ले लेता था। घोड़ा को रोकने वाले व्यक्ति को राजा से युद्ध करना पड़ता था।

(ii) **वाजपेय यज्ञ–** यह राजा के शक्ति प्रदर्शन के लिए होता था। इसमें रथों की रेस लगायी जाती थी।

(iii) **राजसूय यज्ञ–** राज्याभिषेक के समय इस यज्ञ को किया जाता था।

➤ **वैदिक काल में षष्ठ् दर्शन दिए गए–**

(i) **सांख्यदर्शन** – कपिल

(ii) **न्याय दर्शन** – गौतम

(iii) **योग दर्शन** – पतंजलि

(iv) **वैशेषिक दर्शन** – कणाद

(v) **उत्तर मीमांसा** – बादरायण

(vi) **पूर्वी मीमांसा** – जैमिनी

Note :– गौतम बुद्ध के अधिकतर उपदेश सांख्यदर्शन से लिए गए हैं।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

> **सिंधु सभ्यता तथा वैदिक संस्कृति में अंतर–**

सिंधु/हड़प्पा सभ्यता	वैदिक संस्कृति
1. नगरीय थी	ग्रामीण थी
2. मातृ सतात्मक	पितृ सतात्मक
3. प्रमुख पशु बैल	प्रमुख पशु गाय
4. नियोजन	सामाजिक नियोजन
5. युद्ध से परिचित नहीं थे	गाय के लिए युद्ध होता था
6. कांसे की खोज	लोहे की खोज
7. कृषि + व्यापार	कृषि + पशुपालन
8. शिव तथा मातृदेवी की पूजा	इन्द्र महत्वपूर्ण देवता

- उत्तर वैदिक काल में लोहे की खोज हो जाने के कारण कृषि तथा अर्थव्यवस्था में तेजी से परिवर्तन होने लगा और समाज धीरे-धीरे ग्रामीण सभ्यता से नगरीय सभ्यता की ओर अग्रसर होने लगा। जन का आकार बढ़कर जनपद हो गया और यह जनपद आगे चलकर महाजनपद का रूप ले लिया।
- उत्तर वैदिक काल में जब अतिरंजीखेड़ा से लोहे की खोज हुई, तो उत्तर वैदिक काल की अर्थव्यवस्था पशुपालन के स्थान से कृषि पर आधारित हो गई।
- महाजनपद का काल सिन्धु सभ्यता के बाद दूसरी नगरीय सभ्यता थी।
- भारत में कुल 16 महाजनपद हुए हैं जिसकी चर्चा बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में है।
- 16 महाजनपद में सबसे समृद्ध तथा सबसे शक्तिशाली महाजनपद, मगध था।
- वैदिक काल म[illegible] को बलि च[illegible]ते थे, जबकि देवताओं को खुश करने के लिए [illegible] बलि [illegible] जाती थी।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

04. जैन धर्म (Jainism)

- 6वीं शताब्दी ई.पू. में, भारत में कुल 72 संप्रदायों का विकास हुआ, जिसमें जैन धर्म, बौद्ध धर्म, आजीवक संप्रदाय, लिंगायत, कापालिक, शैव धर्म और वैष्णव धर्म प्रमुख हैं।
- जैन शब्द संस्कृत के 'जीन' शब्द से बना है। जिसका अर्थ विजेता होता है।
- जैन धर्म का मुख्य केन्द्र बिन्दु 'अहिंसा' था।
- इस धर्म के संस्थापक ऋषभदेव थे।
- जैन धर्म के प्रवर्तक को तीर्थंकर कहा जाता है।
- तीर्थंकर का अर्थ होता है, दु:ख से परे संसार रूप सागर को पार कराने वाला।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर माने जाते हैं जिन्होंने समय-समय पर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किए।
- ऋषभदेव जैन धर्म के पहले तीर्थंकर थे।
- ऋषभदेव हिमालय पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त किए थे।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर तथा बाइसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमी का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे।
- इनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन के यहाँ हुआ था जो इच्छ्वाकु वंश से संबंधित थे।
- इन्हें झारखण्ड के सम्मेद शिखर पर ज्ञान की प्राप्ति हुई, जिस कारण सम्मेद शिखर का नाम पारसनाथ की चोटी हो गया।

> **ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने चतुरायाम धर्म दिया जो निम्नलिखित है–**

(i) झूठ न बोलना। (Non Lying) = सत्य
(ii) धन संग्रह न करना। (Non Possession) = अपरिग्रह
(iii) चोरी न करना। Astey (Non Stealing) = अस्तेय
(iv) हिंसा न करना। (Non Injury) = अहिंसा

- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर एवं अंतिम तीर्थंकर **महावीर स्वामी** हैं। इन्हें जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- इनके पिता सिद्धार्थ थे जो ज्ञातृक कुल के राजा थे।
- इनकी माता त्रिशला थी। जो लिच्छिवी नरेश चेतक की बहन थी। इनके बड़े भाई नंदिवर्धन थे।
- इनके बचपन का नाम वर्धमान था।
- इनका जन्म 540 ई.पू. वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ था।
- इनकी पत्नी यशोदा तथा इनकी बेटी प्रियदर्शनी (अन्नोज्जा) एवं दामाद जमालि था।
- 30 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने बड़े भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर गृह त्याग दिए।
- 12 वर्ष के कठोर तपस्या के बाद जाम्भिक ग्राम में एक साल वृक्ष (बरगद) के नीचे ऋजुपालिका नदी के तट पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति को "कैवल्य" कहते हैं।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें कैवलीन, जिन, निग्रोध कहा गया। जीन का अर्थ होता है, विजेता जबकि निग्रोध का अर्थ होता है, बंधन से मुक्ति।
- वर्तमान में जाम्भिक ग्राम की पहचान हजारीबाग के समीप पारसनाथ की पहाड़ी तथा ऋजुपालिका नदी की पहचान दामोदर नदी की सहायक नदी बराकर नदी के रूप में किया जाता है।
- इन्होंने पहला उपदेश राजगीर में बितुलाचल पहाड़ी पर बराकर नदी के तट पर प्राकृत (अर्द्धमगही) भाषा में दिया था। जबकि अंतिम उपदेश पावापुरी में दिया।
- महावीर स्वामी का पहला भिक्षु उनका दामाद जमाली बना।
- प्रथम जैन भिक्षुणी चम्पा थी। जो राजा दधिवाहन की बहन थी।

> **ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्होंने पारसनाथ द्वारा प्रारंभ चतुरायन धर्म में ब्रह्मचर्य शब्द जोड़कर पंचायन धर्म दिया जो निम्नलिखित हैं–**

जैन धर्म के पंचायन धर्म

1.	अहिंसा	जान-बूझकर या अनजाने में भी किसी प्रकार की हिंसा नहीं करना।
2.	सत्य	सदा सत्य बोलना।
3.	अस्तेय	किसी व्यक्ति की कोई वस्तु बिना उसकी इच्छा के ग्रहण नहीं करना न ऐसी कोई इच्छा करना।
4.	अपरिग्रह	किसी प्रकार का संग्रह नहीं करना।
5.	ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य व्रत का सख्ती से पालन करना।

जैन धर्म की पाँच श्रेणियाँ

1.	तीर्थंकर	वह जिसने मोक्ष की प्राप्ति की हो।
2.	अर्हत	वह जो निर्वाण की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।
3.	आचार्य	जैन-भिक्षुओं के समूह का प्रमुख
4.	उपाध्याय	जैन धर्म का शिक्षक
5.	साधु	सारे जैन-भिक्षु

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

➢ **महावीर स्वामी ने त्रिरत्न दिए जो निम्नलिखित हैं–**

(i) सम्यक् ज्ञान (Right knowledge)

(ii) सम्यक् दर्शन (Right believe)

(iii) सम्यक् आचरण (Right action)

- भगवान महावीर ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने मतों के प्रचार-प्रसार के लिए एक संघ की स्थापना किए जिसमें 11 अनुयायी थे।
- महावीर स्वामी ने ईश्वर के अस्तित्व को नहीं माना जिस कारण वे मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध किए। अत: इन्हें अनेश्वरवादी भी कहा जाता है।
- इन्होंने पुनर्जन्म को माना और पुनर्जन्म का सबसे बड़ा कारण आत्मा को बताया। आत्मा को सताने के लिए इन्होंने कहा कि मोक्ष प्राप्ति के बाद पुनर्जन्म से मुक्ति मिल जाएगी।
- महावीर स्वामी ने अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया, जिस कारण उन्होंने कृषि तथा युद्ध पर प्रतिबंध लगा दिए।
- 72 वर्ष की अवस्था में 468 ई.पू. पावापुरी में मल्ल राजा सृष्टिपाल के दरबार में इनकी मृत्यु (निर्वाण) हो गई।
- पावापुरी उस समय मल्ल गणराज्य के अधीन था। जिसका शासक सृष्टिपाल था।
- महावीर स्वामी के दिए गए उपदेशों को चौदह पूर्वी नामक पुस्तक में रखा गया जो जैन धर्म की सबसे प्राचीन पुस्तक है।
- महावीर स्वामी ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में दिए।
- महावीर ने अपने उपदेश में अनेकांतवाद की चर्चा की।
- महावीर स्वामी के बाद प्रथम उपदेश देने वाला आर्यसुधर्मा को घोषित किया गया था।
- भद्रबाहु तथा स्थूलभद्र इनके दो सबसे प्रिय अनुयायी थे।
- मौर्य काल में मगध में 12 वर्षीय भीषण अकाल पड़ा जिस कारण भद्रबाहु अपने अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत में कर्नाटक चले गए। इन्हीं के साथ चन्द्रगुप्त मौर्य भी आये थे। जिसने कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में सल्लेखना (संथारा) से प्रथा से प्राण त्याग दिये।
- इस भीषण अकाल में भी स्थूलबाहु तथा उसके अनुयायी मगध में ही रूके रहे। जब अकाल खतम हो गया तो भद्रबाहु मगध लौट आया। किन्तु इन दोनों में विवाद हो गया।
- भद्रबाहु के नेतृत्व वाले लोग निर्वस्त्र रहते थे, जिन्हें दिगम्बर कहा गया।
- जबकि स्थूलभद्र के नेतृत्व वाले लोग श्वेत वस्त्र धारण करने लगे। जिसे श्वेताम्बर कहा गया।
- जैन धर्म के विस्तृत प्रचार के लिए 2 जैन संगीतियाँ हुई हैं।

➢ **पहली जैन संगीति**

- यह 300 ई.पू. पाटलीपुत्र में हुई जिसकी अध्यक्षता स्थूलभद्र ने किया। उसी में भद्रबाहु ने 12 अंग नामक पुस्तक की रचना की।

Note :– दक्षिणी जैन दिगम्बर ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया।

➢ **द्वितीय जैन संगीति**

- यह छठी शताब्दी में गुजरात के वल्लभी में हुई। उसकी अध्यक्षता देवाधिक्षमाश्रमण ने किया। उसी संगीति में 12 उपांग की रचना की गई।
- जैन भिक्षु के निवास को बसदे कहा गया है।
- अनुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- स्यादवाद, अनेकांतवाद, सप्तभृंगी ज्ञान, जैन, निग्रंथ, तीर्थंकर, कैवल्य सभी का संबंध जैन धर्म से है।
- महावीर के संकालीन शासक बिम्बिसार, चन्द्रप्रद्योत, अजातशत्रु, दधिवाहन तथा चेटक थे।
- जैन धर्म मानने वाला प्रमुख राजा– अजातशत्रु, उदयिन, वादराज, चंद्रगुप्त मौर्य, खारवेल, राष्ट्रकूट, अमोघवर्ष, चंदेल शासक।
- जैन मंदिर हाथी सिंह गुजरात राज्य में स्थित है।
- प्रसिद्ध जैनी जल मंदिर बिहार राज्य के पावापुरी में स्थित है।
- मथुरा कला का संबंध जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिंदू धर्म से है।
- जैन धर्म सर्वाधिक व्यापारी वर्ग के बीच फैला था।
- महावीर के अनुयायियों को निग्रंथ के रूप में जाना जाता था।
- महावीर के मुख्य शिष्य को गंधर/गंधर्व कहा जाता था।
- जियो और जीने दो महावीर स्वामी का कथन है।
- जैन धर्म को अन्तिम राजकीय संरक्षण गुजरात के चालुक्य वंश के राजाओं ने दिया था।
- महावीर एक गाँव में एक दिन से अधिक तथा एक शहर में 5 दिन से अधिक नहीं रहते थे।

➢ **जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथ**

- यह प्राकृत भाषा में मिले हैं, इन्हें आगम कहते हैं।

उदाहरण– 12 अंग, 12 उपांग, अचरांग सूत्र, भगवति सूत्र, कल्पसूत्र, आदि-पुराण।

➢ **अचरांग सूत्र**

- इनमें जैन भिक्षुओं के आचार नियम व विधि निषेधों का विवरण।

➢ **भगवति सूत्र**

- इसमें महावीर के जीवन तथा 16 महाजनपद की चर्चा है।

➢ **न्यायधम्मकहा सूत्र**

- महावीर के शिक्षाओं का संग्रह।
- जैन साहित्य को आगम कहते हैं।
- जैन तीर्थकरों की जीवनी भद्रबाहु द्वारा रचित कल्पसूत्र में है। जो संस्कृत भाषा में है।

प्रमुख जैन मंदिर

1. मौर्यकाल में मथुरा जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था।
2. कर्नाटक में चामुंड शासकों ने गोमतेश्वर का जैन मंदिर बनवाया जिसे बाहुबली का मंदिर कहते हैं।
3. मध्यप्रदेश में चंदेल शासकों ने खजुराहों में जैन मंदिर बनवाया। जिसमें बाहुबली की मूर्ति (गोमतेश्वर की मूर्ति) है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

Note :– खजुराहों हिन्दु और जैन दोनों का पवित्र स्थल है। जबकि अजंता बौद्ध, जैन और हिन्दु तीनों का पवित्र स्थल है।

4. राजस्थान में माऊंट आबु पहाड़ी पर दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर, विमलशाह के सामंत (अधिकारी) वस्तुपाल तथा तेजपाल के द्वारा बनाया गया है।

➤ **श्वेतांबर एवं दिगम्बर में अन्तर**

श्वेताम्बर	दिगम्बर
1. इसे स्थूलभद्र ने प्रारम्भ किया	इसे भद्रबाहु ने प्रारम्भ किया।
2. ये सफेद वस्त्र पहनते थे	ये निर्वस्त्र रहते थे
3. महिलाओं को मोक्ष मिल सकता है	महिलाओं को मोक्ष नहीं मिल सकता है।
4. 19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ महिला थी।	19वें तीर्थंकर मल्लिनाथ पुरुष थे।
5. इसके अनुसार महावीर स्वामी विवाहित थे।	इसके अनुसार महावीर स्वामी अविवाहित थे।

➤ **जैन धर्म के लोकप्रिय न होने के कारण–**

(1) जनभाषा की जगह कठिन भाषा का प्रयोग
(2) कठोर नियम – कानून
(3) महिलाओं को बराबरी का दर्जा न देना
(4) राजाओं का संरक्षण प्राप्त न होना
(5) निर्वस्त्र रहना
(6) ब्रह्मचर्य का पालन करना

➤ **प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिह्न**

क्र.सं.	प्रमुख जैन तीर्थंकर	चिह्न
1.	ऋषभदेव	बैल
2.	अजीतनाथ	हाथी
3.	संभवनाथ	अश्व
6.	पद्मप्रभु	कमल
7.	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
19.	मल्लिनाथ	कलश
21.	नमिनाथ	नीलकमल
22.	अरिष्टनेमि	शंख
23.	पारसनाथ	सर्प
24.	महावीर स्वामी	सिंह

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

05. बौद्ध धर्म (Buddhism)

- बौद्ध धर्म का प्रारंभ महात्मा बुद्ध ने किया था।
- महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था।
- इनका जन्म 563 ई.पू. में नेपाल के लुम्बनी (कपिलवस्तु) में हुआ।
- इनके पिता सुद्धोधन क्षत्रिय (शाक्य गण के प्रधान) थे।
- इनकी माता महामाया कोलीय वंश की थी।
- जन्म के सात दिन बाद महामाया की मृत्यु हो गई।
- इनकी मौसी गौतमी ने इनका पालन पोषण किया। गौतमी इनकी सौतेली माँ भी थी।
- इनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा (गोपा/ बिम्बा/ भदकच्छना) नामक अति सुंदर स्त्री से हुआ।
- इनके पुत्र का नाम राहुल था।
- सिद्धार्थ को तथागत, कनकमुनि, शाक्यमुनि भी कहते है।
- इन्हें एशिया का ज्योतिपुंज (Light of Asia) भी कहा जाता है।
- एक दिन इन्होंने अपने राज्य में नगर भ्रमण के दौरान वे चार अवस्थाओं- बीमार व्यक्ति, वृद्ध व्यक्ति, शव तथा एक सन्यासी को देखा। जिसके कारण इनके मन में वैराग्य (गृह त्याग) की इच्छा उत्पन्न हो गई और ये 29 वर्ष की आयु में अपना गृह त्याग दिए। जिसे बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया।
- इन्होंने अलारकलाम से सांख्य दर्शन (वैशाली में) तथा रूद्रकराम (राजगृह में) से योग दर्शन की शिक्षा ग्रहण किए।
- महात्मा बुद्ध अपने पाँच मित्रों के साथ सारनाथ के मृगदाव वन में तपस्या करने लगे। 6 वर्ष तक कठोर तपस्या किए।
- वहां एक कन्या ने इनसे कहा कि - वीणा को इतना न खींचो कि वह टूट जाए और इतना कम भी न खींचो कि वह बजे ही नहीं। इस बात को सुनकर महात्मा बुद्ध सारनाथ से गया (उरुबेला) चले आए और तपस्या करने लगे।
- यहाँ इन्हें निरंजना (फल्गु) नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे वैशाख पूर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद वह वृक्ष महाबोधि वृक्ष कहलाया तथा यह स्थान बोधगया कहलाया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद इन्हें महात्मा बुद्ध कहा गया।
- बुद्ध का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान संपन्न व्यक्ति" होता है।
- इन्होंने अपना पहला उपदेश सारनाथ में अपने मित्रों को दिया। जिसे बौद्ध धर्म में महाधर्म चक्रप्रवर्तन कहते हैं।
- इन्होंने सर्वाधिक उपदेश कौशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिया जोकि पाली भाषा में दिया था।
- इन्होंने श्रावस्ती में अंगुलीमाल नामक डाकू को शिक्षा दी।
- महात्मा बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्य आनंद तथा उपालि थे।
- आनंद के कहने पर महात्मा बुद्ध ने महिलाओं को बौद्ध संघ में प्रवेश की अनुमति वैशाली में दिया तथा उन्होंने कहा कि अब बौद्ध धर्म ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा।
- बौद्ध धर्म अपनाने वाली पहली महिला गौतमी और दूसरी महिला आम्रपाली थी।
- बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला पुरुष तपस्सु तथा मल्लि था।
- महात्मा बुद्ध ने कहा कि मेरे उपदेशों को अंधविश्वास के रूप में मत मानो बल्कि इस तर्क के आधार पर अपनाओं।

महात्मा बुद्ध के चार सत्य वचन

1. संसार दुःखों से भरा है।
2. संसार के दुखों का कोई न कोई कारण अवश्य है।
3. दुःख का सबसे बड़ा कारण इच्छा है।
4. इच्छा पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

- महात्मा बुद्ध ने इच्छा पर नियंत्रण पाने के लिए अष्टांगिक मार्ग (मध्य मार्ग, बीच का रास्ता) दिया और कहा कि व्यक्ति की इच्छा इतनी बड़ी नहीं होनी चाहिए कि वह पूरी नहीं हो सके और इच्छा इतनी भी छोटी नहीं होनी चाहिए कि पूरा होने पर भी संतुष्टि न हो।

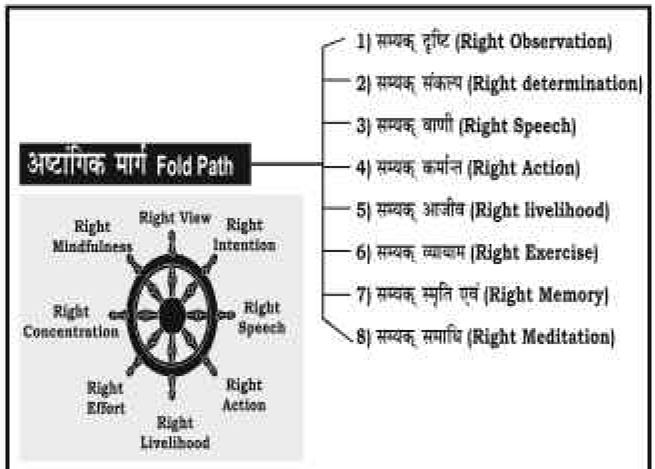

- महात्मा बुद्ध ने कहा कि यदि कोई इच्छा अधूरी रहेगी तो वह पुर्नजन्म का कारण बनेगी।
- पुर्नजन्म से छुटकारा पाने के लिए इच्छा को मारना पड़ेगा। इस क्रिया को उन्होंने मोक्ष कहा।
- महात्मा बुद्ध अपना उपदेश पाली भाषा में देते थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने हेतु 10 शीलों पर बल दिया जो निम्न हैं–

दस शील Ten Precepts

1) अहिंसा (Ahimsa)
2) सत्य (Truth)
3) अस्तेय (चोरी न करना) Asthe (Not Stealing)
4) अपरिग्रह (किसी प्रकार की सम्पत्ति न रखना) Aparigraha (Not possessing any kind of property)
5) मद्य-सेवन न करना (Non Drinking)
6) असमय भोजन न करना (Non-Stop eating)
7) सुखप्रद बिस्तर पर नहीं सोना (Not sleeping on a soothing bed)
8) धन-संचय न करना (Non-accumulation of wealth)
9) स्त्रियों से दूर रहना (Stay away from women)
10) नृत्य-गान आदि से दूर रहना (Abstain from dancing)

- मगध के राजा बिम्बिसार ने बुद्ध के निवास के लिए बेलुवन नामक महाविहार बनवाया।
- लिच्छवियों ने बुद्ध के निवास के लिए कुटाग्रशाला का निर्माण करवाया।
- गौतम बुद्ध उदायिन के शासन काल में कौशाम्बी आए थे।

बुद्ध के अनुयायी दो भागों में विभाजित थे–

1. **भिक्षुक–** बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु सन्यास ग्रहण करने वाले व्यक्ति भिक्षुक कहलाए।
2. **उपासक–** गृहस्थ जीवन जीते हुए भी बौद्ध धर्म अपनाने वाले व्यक्ति उपासक कहलाए।

महात्मा बुद्ध ने 3 दर्शन दिए–

1. **अनीश्वरवाद–** अर्थात् ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं।
2. **शून्यवाद–** कोई भी व्यक्ति सर्वोपरी नहीं [illegible] सर्वशक्तिमान है।
3. **क्षणिकवाद–** संसार की सभी वस्तुएं कुछ ही समय के लिए है। इनका विनाश निश्चित है अर्थात् सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं।

बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख सिद्धांतों को त्रिरत्न कहते है–

1. बुद्ध
2. संघ
3. धम्म

- महात्मा बुद्ध का सबसे पहले शिक्षा का संकलन त्रिपिटक में किया गया।

बौद्ध धर्म के त्रिपिटक

1. विनयपिटक
2. सुत्तपिटक
3. अभिधम्म पिटक

- त्रिपिटक का अर्थ- ज्ञान भरा टोकरी होता है।
- त्रिपिटक श्रीलंका में सिंहली भाषा में लिखा गया।

बौद्ध साहित्य

- इन ग्रंथों का संबंध बौद्ध धर्म से है। बौद्ध साहित्य पाली भाषा में मिले हैं। जातक ग्रन्थ में महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की 200 कहानियाँ हैं।
- ललित विस्तार में महात्मा बुद्ध की पूरी जीवनी है।
- अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपद की चर्चा है।
- बौद्ध धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक त्रिपिटक हैं, जो 3 पुस्तकों का समूह है।
  1. **सुत्तपिटक–** यह सबसे बड़ा पिटक है। इसे बौद्ध धर्म का इंसाइक्लोपिडिया कहते हैं।
  2. **विनयपिटक–** यह सबसे छोटा पिटक है। इसमें बौद्ध धर्म के प्रवेश की चर्चा है।
  3. **अभिधम्मपिटक–** इसमें महात्मा बुद्ध के दार्शनिक विचारों की चर्चा है।
- बौद्ध धर्म का रामायण अश्वघोष की पुस्तक बुद्धचरितम् को माना जाता है।
- बौद्ध धर्म में प्रवेश की न्यूनतम आयु 15 वर्ष थी।
- बुद्ध अपने जीवन काल में ही संघ का प्रमुख देवदत्त को बनाना चाहते थे।
- महात्मा बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश कुशीनगर में सुभद्द को दिया।
- महात्मा बुद्ध उपदेश देते हुए पावापुरी पहुंच गए जहाँ एक जैन भिक्षु चन्द्र ने इन्हें सुकरमास (जहरीली मशरूम) खिला दिया।
- महात्मा बुद्ध की तबियत बिगड़ने लगी और उन्हें डायरिया हो गया।
- उत्तरप्रदेश के मल्ल महाजनपद में स्थित कुशीनगर में उनकी मृत्यु हो गई जिसे महापरिनिर्वाण के नाम से जानते हैं।
- इनका अंतिम संस्कार मल्ल महाजनपद के राजाओं ने धूम-धाम से किया।
- महात्मा बुद्ध के मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों को 8 अलग-अलग स्थानों पर दफनाया गया। जिन्हें अष्ट् महास्थान कहते है।
- गौतम बुद्ध ने अपने जीवन की अंतिम वर्षा ऋतु वैशाली में बिताया।
- महात्मा बुद्ध के समकालीन शासक बिम्बसार, उदयन, प्रसेनजीत तथा प्रद्योत थे।
- महात्मा बुद्ध की मृत्यु 483 ई.पू. में हुई और इनके मृत्यु के बाद बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए चार बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

संगिति	वर्ष	स्थान	राजा	पुरोहित
I.	483 BC	राजगीर	आजातशत्रु	महाकश्यप
II.	383 BC	वैशाली	कालाशोक	सावकमीर
III.	255 BC	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत्त तिस्स
IV.	प्रथम शताब्दी 72 ई.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क (II अशोक)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

> **चौथी बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बँट गया–**

1. हीनयान

- ये महात्मा बुद्ध के उपदेशों में कोई परिवर्तन नहीं किए।
- हीनयान मुर्ति पूजा और भक्ति में विश्वास नहीं करता था।
- इस सम्प्रदाय का ग्रंथ पाली भाषा में था।
- आगे चलकर हीनयान दो भाग में विभक्त हो गया।
  1. वैभाषिक
  2. सौतांत्रिक
- हीनयान का आदर्श है अहर्त पद की प्राप्ति।
- हीनयान के भारत के दक्षिणी भाग में, श्रीलंका, जावा, वर्मा, आदि देश में फैला हुआ है।
- हीनयान अवस्था का विशालतम एवं सर्वाधिक विकसित शैल्यकृति चैत्य गृह कार्ले (पुणे) में स्थित है।

2. महायान

- ये महात्मा बुद्ध के उपदेशों में परिवर्तन करके उसे आधुनिक रूप दे दिए।
- बुद्ध को ईश्वर मानकर उनकी उपासना भी करते थे तथा मुर्ति पूजा भी करते थे।
- इस सम्प्रदाय का ग्रंथ संस्कृत भाषा में था।
- महायान आगे जाकर वज्रयान शाखा में टूट गया।
- वज्रयान शाखा ही बौद्ध धर्म के विनाश का कारण ब... क्योंकि इन लोगों ने मूर्ति पूजा, मध्यपान, वेश्या...ि को अपना लिया।
- इस सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ ग्रह्य समाज तथा मंजुश्री मुलकल्प है।
- चीन तथा थाइलैंड में वज्रयान शाखा की अधिकता है।
- बिहार के भागलपुर स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय में वज्रयान शाखा की शिक्षा दी जाती थी। इसे धर्मपाल ने बनवाया था।
- नालंदा विश्वविद्यालय में महायान की शिक्षा दी जाती थी। जिसके संस्थापक कुमारगुप्त थे। जिसे बख्तियार खिलजी ने ध्वस्त कर दिया।
- ओदंतपुरी विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के महायान से संबंधित है। जिसके संस्थापक ... थे।
- कान्हेरी की शै... गुफा में 11 सिर और 4 भुजाओं के बोधिसत्व का अंकन मिलता है।
- सारनाथ ... भूमि स्पर्श मुद्रा वाले बुद्ध की प्रतिमा गुप्तकाल में बनाई गई थी।
- बुद्ध की खड़ा प्रतिमा कुषाण काल में बनाई गई थी।
- गौतम बुद्ध को देवता का स्थान कनिष्क के समय में दिया गया।
- भारत में सबसे पहले जिस मानव प्रतिमा की पूजा किया गया वह बुद्ध की प्रतिमा थी और इसी के साथ मूर्ति पूजा की नींव रखी गयी।
- बुद्ध की 80 फूट की प्रतिमा जो बोधगया में है उसे जापानियों द्वारा निर्मित की गयी है।
- 30 फीट ऊँचा और 10 फीट लम्बा गौतम बुद्ध का श... में मूर्ति बोधगया में बन रहा है।
- बुद्ध की प्रथम मूर्ति शैली मथुरा शैली थी।
- बुद्ध का सर्वाधिक मूर्ति गांधार शैली में मिला।
- धार्मिक जुलूस का प्रारंभ बौद्ध धर्म से हुआ।
- भारत तथा एशिया का सबसे बड़ा मठ त...ंगमठ अरूणाचल प्रदेश में है जो विश्व का दूसरा सबसे बड़ा बौद्ध मठ है।
- विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध ... पोतालामहल, लहासा (तिब्बत) में है।
- बौद्ध धर्म का शब्दकोश (Dictionary) महाविभाष्य सूत्र को कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म को अपनाने वाले शासक- अशोक, कनिष्क (महायान), नागार्जुन, अश्वघोष, वसुमित्र थे।
- अशोक बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था।

बौद्ध धर्म से जुड़े चिन्ह

(i) गर्भ	–	हाथी
(ii) जन्म	–	कमल
(iii) गृहत्याग	–	घोड़ा (महाभिनिष्क्रमण)
(iv) युवा अवस्था	–	सांड
(v) ज्ञान प्राप्ति	–	पीपल (बौद्ध वृक्ष)
(vi) प्रथम उपदेश	–	चक्र (धर्मचक्र प्रवर्तन)
(vii) समृद्धि	–	शेर
(viii) निर्वाण	–	पद्चिह्न
(ix) मृत्यु	–	स्तूप (महापरिनिर्वाण)

Note :– महात्मा बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति तथा मृत्यु वैशाख (अप्रैल) महीनें में पूर्णिमा के दिन हुई। वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा कहते हैं।

बौद्ध तथा जैन धर्म में समानता

- दोनों ने मोक्ष प्राप्ति तथा पुर्नजन्म में विश्वास किया।
- दोनों ने मूर्तिपूजा तथा भगवान के अस्तित्व का विरोध किया।
- दोनों ने कर्मकाण्ड का विरोध किए।
- दोनों ही हिन्दु धर्म से टूटे थे।

बौद्ध तथा जैन धर्म में अन्तर

- जैन धर्म ने पुर्नजन्म का कारण आत्मा को बताया जबकि बौद्ध धर्म ने इच्छा को बताया।
- जैन धर्म ने मोक्ष प्राप्ति के लिए संलेखना विधि अपनाया जबकि बौद्ध धर्म ने अष्टांगिक मार्ग अपनाया।
- जैन धर्म में ज्ञानप्राप्ति को कैवल्य कहा गया जबकि बौद्ध धर्म में मोक्ष कहा गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

बौद्ध धर्म के लोकप्रिय होने के कारण

1. जैन धर्म की भाषा प्राकृत थी, जो बहुत ही कठिन थी। जबकि बौद्ध धर्म की भाषा पाली थी, जो उस समय की सबसे लोकप्रिय भाषा थी।
2. जैन धर्म में बहुत की कठोर नियम थे। जबकि बौद्ध धर्म के नियम सरल थे।
3. जैन धर्म में महिलाओं को सम्मान नहीं दिया गया जबकि बौद्ध धर्म में महिलाओं को बराबरी का अधिकार दिया गया।
4. जैन धर्म में ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया जबकि बौद्ध धर्म ने इस पर मध्यम मार्ग अपनाया।
5. जैन धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान था, जो असभ्य प्रतीत होता था, जबकि बौद्ध धर्म में निर्वस्त्र रहने का प्रावधान नहीं था।
6. जैन धर्म में केवल दो ही संगीतियाँ हुई, और वो भी 900 वर्ष के अंतराल पर, जबकि बौद्ध धर्म में चार संगितियां हुई वो भी 100 वर्ष के अंतराल पर।
7. जैन धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का समर्थन नहीं मिल सका। जैन धर्म को मानने वाला प्रमुख राजा चन्द्रगुप्त मौर्य तथा खारवेल थे, जबकि बौद्ध धर्म को बड़े-बड़े राजाओं का संरक्षण मिला। बौद्ध धर्म अपनाने वाले प्रमुख राजा थे– अशोक, कनिष्क तथा पालवंश के कुछ शासक। अशोक के कारण बौद्ध धर्म श्रीलंका, चीन तथा पूर्वी एशिया में लोकप्रिय हुआ।

जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म दोनों के पिछड़ने के कारण

- दोनों ही धर्म हिन्दु धर्म के कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाकर आगे बढ़े हुए थे। इन लोगों ने मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड का विरोध किया। किन्तु कालान्तर में इन लोगों में भी कुरीतियाँ आ गई। इन लोगों ने भी मूर्तिपूजा तथा कर्मकांड प्रारम्भ कर दिये।
- दोनों धर्मों ने हिन्दु धर्म के वर्ण (जाति) प्रथा का विरोध किया, किन्तु कालांतर में इनमें भी जाति व्यवस्था आ गई।
- बौद्ध तथा जैन मठों के मठाधीश धार्मिक बिन्दुओं पर कम ध्यान देने लगे तथा भोग-विलास में लग गए।
- जैन तथा बौद्ध धर्म की कमजोर स्थिति का फायदा उठाकर शंकराचार्य ने हिन्दु लोगों को जागरूक किया साथ ही गुप्त काल के राजाओं ने हिन्दु धर्म में अनेक त्योहार इत्यादि जोड़कर हिन्दुओं को एकत्रित कर दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

06. भारत के प्रमुख धर्म (Major Religions of India)

आजीवक सम्प्रदाय

- इस संप्रदाय के संस्थापक मक्खलिपुत्र गोसाल थे।
- अशोक के पिता बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानते थे। अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को बहुत से गुफा (नागार्जुन या बराबर पहाड़ी के गुफा, सुदामा गुफा, दशरथ गुफा कर्ण गुफा, चौपाड़ गुफा, विश्व झोपड़ी) दान में दिया था।

भागवत धर्म

- इसके संस्थापक/प्रवर्तक वासुदेव (कृष्ण) थे। इस धर्म में सबसे अधिक जोर भक्ति पर दिया गया। भागवत संप्रदाय वाले बलि, कर्मकाण्ड तथा पशु हत्या के विरोध में थे।
- जैन परम्परा के अनुसार वासुदेव कृष्ण जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के समकालिन थे।
- इस धर्म में मुख्य रूप से कृष्ण की पूजा होती है।
- इस धर्म का सबसे लोकप्रिय स्वरूप 'वैष्णव धर्म' है।
- इनका निवास स्थान मथुरा है।
- इस धर्म का उदय मौर्योत्तर काल में हुआ था। इसकी प्रारंभिक जानकारी उपनिषद में मिलती है। परंतु मेगास्थनीज द्वारा रचित इंडिका नामक पुस्तक में बताया गया है कि मौर्य काल में भागवत धर्म का प्रचलन था। उन्होंने इंडिका में लिखा है कि सू... मथूरा के लोग हेराक्लीज (कृष्ण) के उपासक थे।
- हेराक्लीज कृष्ण का यूनानी रूपान्तरण था।
- शुंग वंश के नौवें शासक भागभद्र के ... में हेलियोडोरस आया था और वह भागवत धर्म ... लिया। हेलियोडोरस भगवान विष्णु के सम्मान में मध्य प्रदेश के विदिशा (बेसनगर) में एक स्तम्भ लेख का निर्माण करा... जिसे गरुड़स्तम्भ लेख कहा गया।
- इस स्तम्भ लेख पर उसने "ओम नमो भगवते वासुदेवाय" लिखवाया।
- इस धर्म का वर्णन सबसे पहले छन्द्रोग्य उपनिषद में देवकीपुत्र एवं अंगीरस के शिष्य के रूप में कृष्ण का वर्णन मिलता है।
- भागवत ... के सिद्धांत श्रीमदभागवत गीता में लिखा गया है। भागवतगीता के रचयिता वेदव्यास है।
- श्रीमद्भगवत गीता में मोक्ष प्राप्ति के लिए जन्म, कर्म, तथा भक्ति को समान महत्व दिया गया है। भागवतगीता की मुख्य शिक्षा निष्काय कर्मयोग (कर्म करो फल की चिन्ता मत करो) को बताया गया है।
- भागवत सम्प्रदायों में भक्ति के रूपों की संख्या ... है।
- कृष्ण के समर्थक को भागवत कहा जाता है।
- पंचरात्र, व्यूहवाद एवं चतुर्व्यूह सिद्धान्त भागवत धर्म से संबद्ध थे।

शैव धर्म

- शिव को मानने वाले को शैव धर्म कहा जाता है और उसके उपासक को शैव कहा जाता है।
- इसमें भगवान शिव की उपासना की जाती है। इसमें शिवलिंग की पूजा की जाती है।
- शिवलिंग का पहला साक्ष्य सिंधु सभ्यता में मिला है, किन्तु यह प्रमाणित नहीं है।
- शिवलिंग का पहला प्रमाणिक साक्ष्य मत्स्य पुराण में मिलता है।
- शैव धर्म को दक्षिण भारत में मानने वाले अधिक है।
- शैव धर्म को मानने वाले लोकप्रिय वंश- पल्लव वंश, चोल वंश, राष्ट्रकूट वंश तथा चालुक्य वंश थे।
- गुप्तकाल में शैव धर्म अपने चर्मोत्कर्ष पर थे।
- शैव धर्म में परमात्मा, जीवात्मा और बंधन के परिकल्पना की गई है।
- नयनारों ने पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार किया था।
- शैव सिद्धांत के चार पद - विद्या, योग, कर्म और चर्चा।
- शैव सिद्धांत के तीन पदार्थ - पशु, पाश और पति।

➢ **शैव धर्म का प्रमाण–**

1. प्रारंभिक प्रमाण- हड़प्पा सस्कृति
2. ऋग्वेद में शिव को रूद्र (शिव) कहा गया।
3. अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति एवं भूपति कहा गया।
4. मत्स्य पुराण में लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन है।
5. तैतरेय अरण्यक में रूद्र की पत्नी पार्वती को पद्मा, उमा, गौरी एवं भैरवी कहा गया।

- दक्षिण भारत में शैव आंदोलन 63 नयनार संतों ने चलाया था।
- मेगास्थनीज ने अपनी यात्रा वृत्तांत में डायनोसिस नाम से शिव का उल्लेख करते हुए भारत में शिव पूजा का विवरण दिया है।

➢ **वामन पुराण के अनुसार शैव धर्म को मुख्यत: 4 भागों में बांटते हैं–**

1. **पशुपतिक**

- ये शैव धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। इन्हें पंचार्थीक भी कहते है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- पशुपतिक संप्रदाय के संस्थापक लकुलिश थे। इसमें शिव के 18 अवतार का वर्णन मिलता है।
- लकुलिश को शिव भगवान के 18 अवतारों में से एक माना जाता है।
- पशुपत संप्रदाय का प्रमुख सैद्धांतिक ग्रंथ पशुपत सूत्र है।

2. कापालिक

- ये नर खोपड़ी में भोजन तथा जल ग्रहण करते है। ये मदिरापान करते हैं।
- अस्थि के भस्म को पूरे शरीर में लगाते हैं।
- कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव भैरव माने जाते है।
- इस संप्रदाय का मुख्य केन्द्र श्रीशैल नामक स्थान था। जैसे– नागा साधु कापालिक होते हैं।

3. लिंगायत

- शैव धर्म की इस शाखा का विकास कर्नाटक में अधिक हुआ।
- इसका प्रारम्भ अल्लभ प्रभु तथा उनके शिष्य वासव ने किया।
- इसमें शिव की उपासना की जाती है।
- ये शिवलिंग की पूजा करते हैं। इस शाखा के लोग शव को जलाते नहीं थे, बल्कि दफनाते थे।
- लिंगायत संप्रदाय दक्षिण भारत में बहुत लोकप्रिय था।
- लिंगायत संप्रदाय को जंगम/विरशिव संप्रदाय भी कहा जाता है।

3. कालामुख

- शिव महापुराण में कालामुख संप्रदाय के मतावलंबियों को महाव्रतधर कहकर पुकारा गया है।
- महाव्रत लोग अपने शरीर पर चिता की भस्म लपेटकर रहा करते थे।
- दसवीं शताब्दी में मत्स्येन्द्र नाथ ने नाथ संप्रदाय की स्थापना की।
- इस संप्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार बाबा गोरखनाथ ने किया।
- शुद्ध संप्रदाय के संस्थापक श्रीवल्लभाचार्य थे।
- राष्ट्रकूटों ने ऐलोरा में स्थित शैवों के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- प्रसिद्ध राजराजेश्वर शैव मंदिर तंजौर में स्थित है। इसे वृहदेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण चोल शासक राजराज प्रथम ने करवाया था।
- शिव के महान उपासक कुषाण राजा ने सर्वप्रथम अपने राजमुद्रा पर शिव एवं नंदी का अंकन करवाया था।

वैष्णव धर्म

- भागवत धर्म से ही वैष्णव धर्म का विकास छठी शताब्दी में हुआ था।
- इसमें भगवान विष्णु का अधिक महत्व है। इसकी चर्चा पुराणों तथा उपनिषदों में मिलती है।
- इसके उपासक को पंचरात्र कहते है।
- विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में एतरेय ब्राह्मण में किया गया है।
- भगवान विष्णु को अपना ईष्ट देव मानने वाले उपासकों को वैष्णव के रूप में जाना जाता है।

➢ **मत्स्य पुराण में भगवान विष्णु के 10 अवतारों की चर्चा की गई है–**

1. मत्स्य	2. कूर्म
3. वराह	4. नृसिंह
5. वामन	6. परशुराम
7. राम	8. बलराम
9. बुद्ध	10. कल्कि।

- परशुराम, कृष्ण तथा राम विष्णु के प्रमुख अवतार थे।
- विष्णु के अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय वराह अवतार है। जिसका प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में है।
- वायु पुराण में कृष्ण सहित वृष्णि वीरों का भी उल्लेख है।

वृष्णि वीर	
1. वासुदेव कृष्ण	देवकी के पुत्र
2. संकर्षण	रोहिणी पुत्र
3. प्रद्युम्न	रूक्मिणी पुत्र
4. अनिरुद्ध	प्रद्युम्न पुत्र
5. साम्ब	जाम्बवती पुत्र

- इस धर्म को अवतारवाद भी कहते हैं। इसे मानने वाले पूर्णत: शाकाहारी होते थे।
- अवतारवाद का सर्वप्रथम उल्लेख श्रीमदभगवत गीता में मिलता है।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भक्ति को बताया गया है।
- वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, रामानन्द, कबीर दास, रामानुजाचार्य आदि वैष्णव धर्म के प्रसिद्ध भक्त थे।
- स्कंदगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख की शुरूआत भगवान विष्णु के स्तुति से होती है।
- देवगढ़ के दशावतार मंदिर का निर्माण गुप्त काल में भगवान विष्णु के सम्मान में किया गया।
- कालांतर में कृष्ण को विष्णु का रूप महाभारत काल में माने जाने के कारण भागवत् धर्म वैष्णव धर्म में परिवर्तित हो गया।
- वैष्णव धर्म का सर्वाधिक विकास गुप्त काल में चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में हुआ। इनके दरवार में नौ विद्वान रहते थे। जिसे नवरत्न कहा जाता था।
- गुप्तकाल में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार जोरो पर था। यहाँ तक कि इण्डोनेशिया, मलाया, कम्बोडिया दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्द-चीन जैसे विदेशी स्थलों पर भी इस धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हुआ।
- वैष्णव धर्म का विकास दक्षिण भारत में बहुत तेजी से हुआ। दक्षिण भारत में इस धर्म को मानने वाले को अलवर कहा गया। दक्षिण भारत में 12 अलवार संतो का विवरण मिलता है।
- भारत में वैष्णव धर्म का केन्द्र तमिल प्रदेश था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इन सब में तिरूमंगई सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं अंडाल एक मात्र महिला संत थी।

प्रमुख सम्प्रदाय, मत व उनके आचार्य

प्रमुख सम्प्रदाय	मत	आचार्य
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैतवाद	मध्वाचार्य
रूद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्काचार्य

यहुदी धर्म

- **संस्थापक–** मुसा (अब्राह्म)
- **प्रमुख केन्द्र–** जेरूसेलम
- एकमात्र यहुदियों का देश- इजरायल है।
- यह विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक माना जाता है।
- इसे दुनिया का प्रथम एकेश्वरवादी धर्म माना जाता है।
- इस धर्म की उत्पत्ति स्थान फिलिस्तीन है।
- इसके धार्मिक स्थल को सिनेगार कहते है।
- इसे इब्राह्ममी धर्म भी कहा जाता है।
- **प्रमुख धार्मिक पुस्तक**
- तोरह/ओल्डटेस्टामेंट या मुसा संहिता

ईसाई धर्म

- इस धर्म के संस्थापक ईसा मसीह थे।
- इनका जन्म बेंथलेहम नामक गांव में हुआ था, जो [illegible] में पड़ता है। इनके पिता जोसेफ तथा माता मैरी थी।
- ईसा मसीह को जीसस भी कहा जाता था।
- मसीहा का शाब्दिक अर्थ- परमपिता का पुत्र होता है।
- प्रमुख धार्मिक ग्रंथ → बाइबिल
- प्रमुख धार्मिक पूजा स्थल → चर्च या गिरजाघर
- प्रमुख शिष्य → एड्रूस और पिटर (कुआरा)
- जाति → बढ़ई/Carpenter
- पूरे विश्व में ईसाई धर्म के मानने वाले की संख्या सबसे अधिक है। इस धर्म की उत्पत्ति फिलिस्तीन में हुई।
- इसका प्रमुख दिन रविवार होता है।
- ईसा मसीह का शिष्य सेंट टॉमस भारत के केरल में आकर ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार किया था।
- इसाई धर्म के धार्मिक नेता या प्रमुख को पोप या पादरी कहा जाता है।
- पोप के कार्यालय को पापेसी कहा जाता है।
- पोप का निवास स्थल रोम (इटली) में है।
- ईसा मसीह द्वारा चुने गए 12 अनुयायियों को देवदूत माना गया।
- इस धर्म की दो मुख्य शाखाएँ है- कैथोलिक और प्रोटेस्ट।
- इनके मृत्यु तथा पुनर्जन्म को ईस्टर के रूप में मनाया जाता है।
- इनके जन्म दिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है तथा मृत्यु पर Good friday मनाया जाता है।
- **बाईबिल को दो भागों में बांटा गया है–**
  1. ओल्ड टेस्टामेंट - यह यहुदी इतिहास से संबंधित है।
  2. न्यू टेस्टामेंट - इसमें ईसाइयों का धर्म संबंधित विचार है।
- इनका प्रतीक चिन्ह क्रॉस है।
- इनको शूली पर चढ़ाने वाला रोमन गवर्नर पॉंटियस (33 ई०) था।

इस्लाम धर्म

- इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ अल्लाह को समर्पण होता है।
- इनके धार्मिक स्थान को मस्जिद कहा जाता है।
- इस धर्म के संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब को माना जाता है।
- इनका जन्म 570 ई० में मक्का में हुआ था।
- इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह तथा माता का नाम अमीना था।
- इनकी पत्नी का नाम खदीजा, पुत्री का नाम फातिमा थी। इनको ज्ञान की प्राप्ति 610 ई० में हीरा नामक गुफा में हुआ था, जो मक्का में स्थित है।
- मक्का से मदीना के यात्रा को ही मुस्लिम संवत् के नाम से जाना जाता है। जो 622 ई० में प्रारंभ हुआ। इसे हिजरी संवत् भी कहते है।
- हिजरी संवत् के एक वर्ष में 354 दिन होता है और 12 महीना होता है।
- इनके द्वारा कुरान की शिक्षा का उपदेश दिया गया, जो इस धर्म की सबसे प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है।
- इनकी मृत्यु 632 ई० में मदीना में हुई और वही इनको दफना दिया गया।
- मक्का और मदीना दोनों धार्मिक स्थल सऊदी अरब में स्थित है।
- अली मुहम्मद साहब के दामाद थे, जो मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी थे, जिनकी हत्या 661 ई० में कर दी गई।
- अली के बेटे हासन हुसैन की हत्या करबला (ईरान) में 680 ई० कर दी गई।
- मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी को खलीफा कहा जाता था।
- खलीफा का पद 1924 तक रहा। खलीफा पद 1925 ई० में तुर्की के शासक मुस्तफा कमाल पासा द्वारा समाप्त कर दिया गया।
- मुहम्मद साहब का जीवन चरित्र इब्न ईशाक द्वारा लिखा गया।
- इनके जन्म दिवस को **ईद ए मिलाद उन नवी** के नाम से मनाया जाता है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इनका प्रमुख दिन शुक्रवार होता है।
- कुरान मूल रूप से अरबी भाषा में लिखा गया था।
- मुहम्मद साहब के मृत्यु के बाद इस्लाम दो भागों में बँट गया सुन्नी और शिया।
- सुन्नी मुहम्मद साहब के विश्वास पर आधारित था तथा शिया उनके दामाद अली के शिक्षा पर विश्वास करता था।
- मक्का की ओर की दिशा को किबला कहा जाता है। जो नमाज पढ़ने के समय पश्चिम दिशा की ओर खड़े होते है।
- भारत में मुस्लिम पश्चिम दिशा में पूजा करते है। उसका कारण है कि भारत के पश्चिम में मक्का और मदीना है।
- भारत में मुस्लिम धर्म का प्रवेश अरबों द्वारा 712 ई० में हुआ जब अरबो ने सिंध पर आक्रमण किया था। वहां का शासक राजा दाहिर था। जो मुहम्मद बिन कासिम द्वारा आक्रमण किया गया था और उसी समय से इस धर्म का प्रचार प्रसार हुआ और मजबूती के साथ फैलता गया।

➢ **इस धर्म के मानने वालों को 5 अनिवार्य कर्तव्य मानना पड़ता है–**

1. बकरीद के अवसर पर बकरे की कुर्बानी देना चाहिए।
2. प्रतिदिन पाँचों वक्त (फजर, जुहर, असर, मगरीब, ईसा) नमाज पढ़ना चाहिए।
3. जरूरतमंदों को दान (जकात) देना चाहिए।
4. रमजान के महीने में सूर्योदय के पहले से लेकर सूर्यास्त तक रोजा (उपवास) रखना चाहिए।
5. हर मुसलमान को जीवन में कम-से-कम ए... हज करना चाहिए यानी मक्का स्थित काबा व... यात्रा क... चाहिए।

पारसी धर्म

- पारसी धर्म के पैगम्बर जर थुस्ट्र ...रानी) थे।
- इनका पवित्र धार्मिक ग्रंथ जेन्दा अवेस्ता है।
- इनके अनुयायी को अग्निपू...क कह... जाता है।
- इनके देवता ... अहु... ...ना है।
- इनका धार्मिक स्... ...ग्निमंदिर ...ोता है।
- पारसी मंदिरों ... आतिश ...हरा... कहा जाता है।
- इनपर अर... ...ारा ... ...ग कर जबरन मजबूर करके जरथुस्ट्र को इस्...म धर्म ...ीकार करने पर मजबूर कर दिया गया जि... कारण ... से आदमी भागकर भारत आकर गुजरात में बस ग...
- पार... धर्म की उत्पत्ति ईरान में हुआ था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

07. महाजनपद (Mahajanapad)

- 6वीं शताब्दी ई.पू. में, भारत में द्वितीय नगरीकरण प्रारम्भ हो गया, जिसे दौरान अनेक महाजनपदों का निर्माण हुआ।
- प्राचीन भारत में राज्य के प्रशासनिक इकाईयों को महाजनपद कहा जाता है।
- कुछ जनपदों का वर्णन उत्तरवैदिक काल से मिलता है।
- इसका समय अवधि 600 ई.पू. से 340 ई.पू. तक माना जाता है।
- इसकी प्रमुख भाषा संस्कृत एवं प्राकृत है।
- इसका शासन व्यवस्था गणराज्य राज्यतंत्र था।
- इस समय पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक प्रयोग होने से बड़े-बड़े प्रदेशिक या जनपद राज्यों के निर्माण के लिए उपयुक्त परिस्थिति बन गई।
- लोहे के हथियारों के कारण योद्धा वर्ग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगे।
- खेती के नये औजार और उपकरणों से किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा करने लगे। अब राजा अपने सैनिक और प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए इस अति[illegible]त अनाज को एकत्रित करवा सकते थे।
- लोगों की जो प्रवल निष्ठा अपने जन या कबीले के प्रति [illegible] वह अब अपने जनपद या महाजनपद के प्रति [illegible] गए।

> **वर्तमान में 16 [illegible]पदों की स्थिति–**

उत्तरप्रदेश	8 महाजनपद
बिहार	3 महाजनपद
राज[illegible]	1 महाजनपद
म[illegible]प्रदेश	1 महाजनपद
[illegible] भारत	1 महाजनपद
भा[illegible]त के बाहर	2 महाजनपद

> **बौद्ध ग्रंथ अंगुतर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में 16 महाजनपद की चर्चा है, जो निम्नलिखित हैं–**

क्र. सं.	महाजनपद	राजधानी	महत्वपूर्ण नगर ([illegible]धुनिक न[illegible] के अनुसार)
1.	गान्धार	तक्षशिला	रावलपिं[illegible] व पेशावर (पाकिस्तान)
2.	कम्बोज	हाटक/राजपुर	राजौरी व [illegible]ारा क्षेत्र ([illegible]श्मीर) (पाकिस्तान)
3.	मत्स्य/मच्छ	विराटनगर	जयपुर का स[illegible] क्षेत्र (राजस्थान)
4.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	दिल्ली, मेरठ [illegible]ौर हरियाणा के आस-पास का [illegible]
5.	शूरसेन	म[illegible]	[illegible] (उत्तर प्रदेश)
6.	कोशल	श्रावस्ती	फैजाबा[illegible] गोंडा, बहराइच (उत्तर प्रदेश)
7.	पांचाल	अहि[illegible]त्र, का[illegible]	बरेली [illegible]ायूँ, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)
8.	चेदि	शक्ति[illegible]	बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश)
9.	वत्स या वंश	[illegible]म्बी	इलाहाबाद एवं मिर्जापुर जिला (उत्तर प्रदेश)
10.	काशी	वाराण[illegible]	वाराणसी के आसपास के क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)
11.	मल्ल[illegible]	[illegible]/कुशीनारा	देवरिया (उत्तर प्रदेश)
12.	अस्मक [illegible]श्मक	पाटन/पोतन	गोदावरी नदी का दक्षिणी क्षेत्र (दक्षिण भारत का एकमात्र जनपद)
13.	[illegible]	उज्जैन/महिष्मति	मालवा (मध्य प्रदेश)
14.	वज्जि/वजि	वैशाली/विदेह/मिथिला	वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा (बिहार)
15.	अंग	चम्पा	भागलपुर, मुंगेर (बिहार)
[illegible]	[illegible]	गिरिव्रज (राजगृह)	पटना, गया, नालंदा (बिहार)

- गंधार महाजनपद पाकिस्तान में था। इसकी राजधानी तक्षशिला विश्व की प्राचीनतम विश्वविद्यालय का केन्द्र था।
- अस्मक दक्षिण भारत का एकमात्र महाजनपद था, जो गोदावरी नदी के तट पर था।
- उत्तरप्रदेश का मल्ल महाजनपद गणराज्य था।
- बिहार का वज्जि महाजनपद एक गणराज्य था।
- वज्जि की राजधानी वैशाली में लिच्छिवी गणराज्य का शासन था। जो पूरे विश्व का सबसे पुराना गणराज्य था। यह 8 कुलों का एक संघ था।
- सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध महाजनपद था। इसके दक्षिण में विंध्याचल पर्वत/पश्चिमी में सोन नदी, उत्तर में गंगा तथा पूरब में फल्गू जैसी नदियाँ इस महाजनपद के प्राकृतिक दुर्ग का कार्य करती है।
- राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र में स्थित एक मात्र महाजनपद मत्स्य था।
- महाभारत तथा पुराणों में चंपा का प्राचीनतम नाम मालिनी था।
- महात्मा बुद्ध ने अपना सर्वाधिक उपदेश कौशल की राजधानी श्रावस्ती में दिये।
- मल्ल की राजधानी कुशीनगर में महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ।
- कान्यकुब्ज (कन्नौज) पांचाल राज्य के अंतर्गत ही आता था।
- अंग की पहली चर्चा अर्थववेद में किया गया है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

मगध

- 16 महाजनपदों में मगध जनपद प्रारंभ में तो छोटा था। जो पाटलीपुत्रा से राजगीर तक फैला हुआ था, किन्तु मगध के शासकों ने मगध के सीमा को बंगाल से लेकर अफगानिस्तान तक तथा हिमालय से लेकर सतपुड़ा तक फैला दिया।
- इसका विस्तार उत्तर में गंगा नदी से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में चंपा से पश्चिम में सोन नदी तक विस्तृत था।
- मगध महाजनपद पर कुल 7 राजवंशों ने शासन किया।

Trick:-

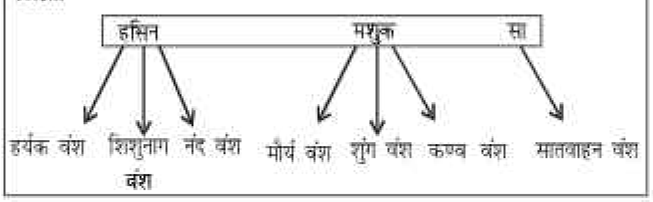

हर्यकं वंश (544-412 ई.पू.)

- महाभारत एवं पुराण में यह जानकारी मिलती है कि मगध पर सबसे पहले **वृहद्रथ वंश** का शासन था। जिसके संस्थापक **वृहद्रथ** थे।
- इसकी राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **जरासंध** था।
- जरासंध अपना साम्राज्य विस्तार पूरे उत्तर भारत में करना चाहता था, पर **पाण्डव** और **कृष्ण** के विरोध में उसे अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली।
- भीम के हाथों **मल्ल युद्ध** में **जरासंध** मारा गया। जरासंध का पुत्र उसके बाद मगध का शासक बना।
- रिपुंजय वृहद्रथ वंश का अंतिम शासक था। इसकी हत्या उसके मंत्री **कुलीक** ने कर दी और अपने पुत्र को शासक बना दिया।
- घाटिया नामक सामंत ने कुलीक के पुत्र की हत्या कर अपने पुत्र बिम्बिसार को **मगध की गद्दी** पर बैठा दिया।
- किन्तु इस वंश के बारे में ऐतिहासिक **साक्ष्य** बहुत ही कम है। अतः **हर्यक वंश** को ही पहला **ऐतिहासिक वंश** मानते हैं।

बिम्बिसार (544-492 ई.पू.)

- इस वंश के संस्थापक बिम्बिसार थे। यह पहला ऐतिहासिक राजवंश था।
- इसकी राजधानी **राजगृह** या **गिरिव्रज** थी।
- बिम्बिसार 52 वर्षों तक मगध पर राज्य किया। यह प्रथम राजा था जिसने प्रशासनिक राज्य पर बल दिया। यह स्थायी सेना रखता था।
- बिम्बिसार बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- बिम्बिसार ने **अंग राज्य** के शासक **ब्रह्मदत्त** को हराकर अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक बना दिया।
- बिम्बिसार ने विवाह के माध्यम से दहेज के रूप में लिए गए क्षेत्र से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- बिम्बिसार की पहली पत्नी महाकोशला थी। जो कोशल नरेश की पुत्री और प्रसेनजीत की बहन थी। इनके साथ दहेज में काशी प्रांत मिला था। जिससे एक लाख की वार्षिक आय आती थी।
- बिम्बिसार की दूसरी पत्नी वैशाली (लिच्छवी) नरेश चेतक की पुत्री राजकुमारी चेल्लना थी। जिससे अजातशत्रु का जन्म हुआ था।
- बिम्बिसार की तीसरी पत्नी पंजाब के मद्र कुल की राजकुमारी क्षेमा थी।
- बिम्बिसार की चौथी पत्नी आम्रपाली थी, जो वैशाली की गणिका थी।
- बिम्बिसार अपनी रानी **चेल्लना** से प्रवाहित होकर **जैन धर्म** अपना लिया था।
- यह जैन तथा बौद्ध धर्मों के समकालीन थे।
- बिम्बिसार के पिता का नाम **भाट्टीया** था।
- पुराण में बिम्बिसार को **श्रेणिक** कहा जाता है।
- इसके समय अवन्ति के राजा **चन्द्रप्रद्योत** को एक असाध्य रोग (लाइलाज बीमारी) हो गई। अतः इन्हें ठीक करने के लिए बिम्बिसार ने अपने राज **वैद्य जीवक** को भेजा। जीवक के इलाज से **चन्द्रप्रद्योत** स्वस्थ हो गए। उन्होंने अवन्ति को मगध के अधीन कर दिया और अंग राज्य को जीतकर **मगध सम्राज्य** का विस्तार किया।
- बिम्बिसार छोटे राज्यों को युद्ध करके जीत लेता था। इसने वैशाली पर भी आक्रमण किया था, किन्तु सफल नहीं हो पाया।
- इसकी हत्या इसी के पुत्र **अजातशत्रु** ने 492 ई. पू. में कर दी।

अजातशत्रु (492-460 ई.पू.)

- इसका अर्थ होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला। इसे कुणिक भी कहते हैं। इसने अपनी पिता की हत्या कर दी थी। अतः इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- यह अपने मामा प्रसेनजीत की पुत्री **वजीरा** से प्रेम करता था।
- इसने सुरक्षा की दृष्टि से राजगीर की किलाबंदी करा दी थी।
- राजगीर पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
- इसके समय सबसे बड़ी घटना **महात्मा बुद्ध** की मृत्यु थी।
- अजातशत्रु के काल में ही **सप्तपर्णी गुफा** में राजगीर से **पहली बौद्ध संगीति** हुई।
- इसने अपने सहयोगी **वर्षकार** के सहयोग से वैशाली पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया।
- इस युद्ध में उसने दो नए हथियार **रथमूसल** तथा **महाशिला कंटक** का प्रयोग किया।
- जैन धर्म के पहले उपांग में **महावीर** और **अजातशत्रु** के रिश्ते के बारे में बताया गया है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इसने प्रारंभ में जैन तथा बाद में बौद्ध धर्म को अपना लिया।
- इसने 16 वर्ष तक मगध पर शासन किया था।
- इसके दो पुत्र **उदयभद्र** तथा **उदायिन** था।
- इसके पुत्र **उदायिन** ने इसकी हत्या कर दी।

उदायिन (460-444 ई.पू.)

- इसने अपनी राजधानी **कुसुमपुर (पुरुषपुर)** बनाया था। यही कुसुमपुर (पुरुषपुर) आगे चलकर **पाटलीपुत्र** कहलाया था।
- इनकी माता का नाम **पद्मावती** था।
- इसने अपने पिता की हत्या की थी। इसलिए बौद्ध धर्म में इसे **पितृहन्ता** कहते हैं।
- इसका अन्य नाम **उदायी** या **उदयभद्र** था। यह चंपा का उप राजा था।
- पुराणों एवं जैन ग्रंथों में के अनुसार उदायिन ने गंगा एवं सोन के संगम के समीप एक शहर की स्थापना की, जिसका नाम **पाटलीपुत्र** रखा। इसके पुत्र ने पाटलीपुत्र को **पटना** रख दिया।
- इसने अपने राजधानी में **जैन चैत्य** का निर्माण करवाया था।
- इसकी हत्या किसी अनजान व्यक्ति द्वारा **चाकू से गोदकर** कर दी।
- उदायिन का पुत्र **नागदशक** एक **आयोग्य शासक** था। इसकी हत्या इसी के सेनापति **शिशुनाग** ने कर दी और एक **नया वंश शिशुनांग वंश** की स्थापना किया।

शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

> **शिशुनाग (412- 394 ई.पू.)**

- इस वंश के संस्थापक **शिशुनाग** थे।
- इन्होंने **अबंती तथा वत्सराज** पर अधिकार कर उस मगध साम्राज्य में मिलाया।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीग्राम से हटाकर **वैशाली** को बनाया।
- इसके शासन के समय मगध साम्राज्य के अंतर्गत **बंगाल** से लेकर **मालवा** तक का क्षेत्र था।
- इस वंश का अगला शासक **कालाशोक** था।

> **कालाशोक (394-366 ई.पू.)**

- शिशुनाग के मृत्यु के पश्चात् **कालाशोक** मगध की गद्दी पर बैठा।
- इसका नाम पुराण एवं दिव्यावदान में **काक वर्ण** मिलता है।
- इसने वैशाली के स्थान पर **पाटलीपुत्र** को पुन: अपना राजधानी बनाया।
- इसके समय द्वितीय **बौद्ध संगीति** वैशाली में हुई थी।
- यह **ब्राह्मण वंश** का प्रथम संस्थापक माना जाता था।
- पुराण के अनुसार यह **क्षत्रिय** था।
- इस वंश का अंतिम शासक **नंदिवर्धन** था, जिसकी हत्या **महापद्म नंद** ने कर दी और **शिशुनाग वंश** के स्थान पर **नंद वंश** की स्थापना किया।

नंद वंश (344-323 ई.पू.)

- इस वंश का सर्वाधिक महाशक्तिशाली संस्थापक **महापद्म नंद** थे। जो जाति के शूद्र थे। इन्होंने राजपूतों का विनाश करके **सर्वक्षत्रांतक (क्षत्रियों का नाश करने वाला)** की उपाधि धारण कर ली।
- महापद्म नंद को **भार्गव (दूसरा परशुराम का अवतार)** भी कहा जाता था।
- इस वंश की जाति नाई (नापिथ) थी।
- राजानंद के प्रधानमंत्री का नाम राक्षस था।
- राक्षस का असली नाम विष्णुगप्त था।
- केंद्रीय शासन पद्धति का जनक या पिता महापद्म नंद को माना जाता है।
- इस वंश के धन दौलत का में वर्णन चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा की गई थी।
- व्याकरण के आचार्य पाणिनी महापद्म नंद के परम् मित्र थे।
- इस वंश के शासनकाल में उपवर्ष, वर्ष, रूचि, वर, कात्यायन जैसे विद्वान जन्म लिया था।
- इसी वंश के शासक ने एकराष्ट्र की विचार-धारा दिया था।
- इस वंश की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- इस वंश के समय मगध राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली साम्राज्य बन गया।
- सम्राट महापद्म नंद पहले शासक थे। जिन्होंने गंगा घाटी की सीमाओं का अतिक्रमण कर विंध्य पर्वत के दक्षिण तक विजय पताका लहराई थी।
- इसने कलिंग जीतकर **एकराट** तथा **एकक्षत्र** की उपाधि हासिल की।
- यह कलिंग जीतकर पूरी तरह मगध में नहीं मिला पाया।
- इस वंश का द्वितीय शासक पण्डुक था।
- इस वंश का अगला शासक **घनानंद** था। यह बहुत ही क्रूर शासक था। इसने कलिंग में नहर निर्माण का कार्य किया था।
- इस वंश का सबसे लालची एवं धनसंग्रही शासक में घनानंद को गिना जाता था।
- जब सिकंदर भारत पर आक्रमण किया उस समय नंद वंश का अंतिम शासक घनानंद था।
- विश्व विजेता सिकंदर के भारत पर आक्रमण के समय सम्राट घनानंद की विशालतम सेना देखकर के हौसला पस्त हो गया। इतनी विशालतम शक्ति के सामने सिकंदर जैसे महान विश्व विजेता भी नतमस्तक होकर वापस लौटने में ही अपनी भलाई समझी।
- सिकंदर के भारत से जाने के बाद मगध साम्राज्य में अव्यवस्था और अशांति फैल गई। प्रजा घनानंद के अत्याचार से ग्रस्त थी। पूरे राज्य में अराजकता फैली हुई थी।
- इसने अपने दरबार से चाणक्य को अपमानित करके निकाल दिया, जिस कारण चाणक्य अपने प्रिय शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य के सहयोग से मगध में फैली अराजकता और विस्फोटक स्थिति का लाभ उठाकर घनानंद की हत्या कर दी और मौर्य वंश की स्थापना कर दी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

मौर्य वंश की स्थापना से पूर्व भारत पर विदेशी आक्रमण (फारसी आक्रमण)

- भारत के पूर्वी क्षेत्र में मगध एक शक्तिशाली राज्य था।
- ये अगल-बगल के छोटे राजाओं को हराकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में राजनीतिक स्थिरता ला दी थी। किन्तु भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र (पंजाब) में छोटे-छोटे राजाओं का शासक था, जो कमजोर शासक थे। जिस कारण विदेशी आक्रमणकारी पश्चिमोत्तर क्षेत्र पर ही आक्रमण किया।
- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान (फारस) के हखमनी वंश के राजा ने किया। हखमनी वंश के संस्थापक साइरस-II थे।
- इस वंश का शासक डेरियस-I (दायबर) ने भारत पर आक्रमण करने वाला पहला विदेशी राजा था। इसने गांधार तथा कम्बोज के शासक को हरा दिया।
- इसने भारत में फारसी शासन का विस्तार किया।

मकदूनिया/यूनानी आक्रमण

- ईरान आक्रमण के बाद भारत पर दूसरा महत्वपूर्ण आक्रमण यूनानियों का हुआ।
- यूनान के राजा फिलिप द्वितीय का पुत्र सिकन्दर था।
- इनके माता का नाम ओलम्पिया था।
- यह अपने पति को जहर देकर हत्या कर दी थी।
- सिकन्दर का मूल नाम एलेक्जेंडर मेसेडोनियन था।
- इसका जन्म मेसिडोनिया (पेला) में 356 ई.पू. में हुआ।
- इसकी पत्नी रूखसाना/रेक्सोना थी। रूखसाना के पिता फारसी शासक शाहदारा थे।
- इसके घोड़े का नाम बुफेकराल/ब्यूसेफेलरू/बरूकेफला था।
- इसके गुरू का नाम अरस्तु था। जिसके नाम पर उसने झेलम नदी के तट पर एक नगर भी बसाया था।
- अरस्तु के गुरू प्लेटो थे, जिनको अफलातून कहा जाता था।
- प्लेटों के गुरू सुकरात थे, जिन्हें जहर का प्याला देकर मार दिया गया।
- भारत में सिकन्दर का सबसे पहला सामना तक्षशिला के राजकुमार आम्भिक से हुआ था। वहां के राजा आम्भिक ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार ली। गांधार की राजधानी तक्षशिला थी।
- 328 ई.पू. में सिकन्दर ने ईरान और अफगानिस्तान पर विजय प्राप्त किया।
- पंजाब के राजा पोरस (पुरु) और सिकन्दर के बीच झेलम नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- इस युद्ध में पोरस हार गए, किन्तु पोरस की वीरता को देखकर सिकन्दर ने उन्हें मित्र बना लिया, और सिकन्दर की पत्नी रेक्सोना ने पोरस की कलाई पर राखी बांधी।
- 326 ई.पू. में हुए इस युद्ध को झेलम, वितस्ता या हाइडेस्पीज का युद्ध कहते हैं।
- सिकन्दर स्थल मार्ग से 325 ई० में वह अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया था।
- 323 ई.पू. में ईराक के बेबिलोन में (डायरिया) होने के कारण सिकन्दर की 33 वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गई।
- सिकन्दर का मकबरा बेबीलोन में है।
- बेबीलोन का झूलता हुआ बगीचा 7 अजूबों में से एक है।
- सिकन्दर भारत से कुछ नहीं प्राप्त करना चाहता था।
- सिकन्दर भारत में 19 महीने तक रहा था।
- सिकन्दर के साथ भारत आनेवाला लेखक निर्याकस, आनेसिक्रेटस, अरिस्टोबुलस थे।
- सिकन्दर हिन्दकुश पर्वत (खैबर दर्रा) को पार करके भारत आया था।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी (हाईफेनिया) को पार करने से मना कर दिया।
- सिकन्दर अपनी सेना को नदी पार करने के लिए बहुत प्रेरित किया, लेकिन उसकी सेना ने व्यास नदी के रौद्र रूप को देख कर भारत से युद्ध के लिए आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। अतः स्थल मार्ग से 325 ई० पू० सिकन्दर अपनी सेना के साथ भारत से लौट गया।
- सिकन्दर का थल सेना के सेनापति सेल्युकस निकेटर था। जबकि जल सेना का सेनापति निर्याकस था।
- सिकन्दर का पुत्र सिकंदर चतुर्थ था जो पत्नी रूखसाना का पुत्र था।
- सिकन्दर लड़ाई में खुद सेना से आगे होकर लड़ने लगता था जिससे सेना का मनोबल और बढ़ जाता था।
- सिकन्दर को विश्व विजेता इसलिए कहा जाता है कि उस समय यूनान के लोगों को विश्व की जितनी जानकारी थी उन सभी क्षेत्रों को जीत लिया था।
- सिकन्दर पूरी दुनिया के 60% भाग को जीत लिया था।
- सिकन्दर ने एशिया माईनर (तुर्की), सीरिया, मिश्र, इराक, इरान, सिन्ध, गंधार, कंबोज जीत लिया था।
- सिकन्दर को पूरी दुनिया जीतने का सपना उसके गुरू अरस्तु ने दिखाया था।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

08. मौर्य वंश (Maurya Dynasty)

➤ **मौर्य वंश के बारे में जानकारी के कई स्रोत हैं–**

1. **पुरातात्विक स्रोत :** जूनागढ़ अभिलेख, साहगौर अभिलेख, अशोक के अभिलेख, भवन स्तूप एवं गुफा, मुद्रा (आहत/पंचमार्क), मृदभांड (काली पॉलिश वाले)।
2. **विदेशी यात्री का विवरण :** इण्डिका (मेगास्थनीज), आस्टिन और जस्टिन।
3. **साहित्यिक स्रोत :** पुराण, अर्थशास्त्र, राजतरंगिणी, मुद्रा-राक्षस (विशाखदत्त), जैन तथा बौद्ध ग्रन्थ, कथा सरिता सागर, वृहत्तकथा मंजरी (जैन ग्रंथ), कल्पसूत्र।

चन्द्रगुप्त मौर्य (322 - 298 ई.पू.)

- प्राचीन भारत का राजवंश जिसने 137 वर्ष तक भारत में राज्य किया। इसके स्थापना का श्रेय चंद्रगुप्त मौर्य और उसके प्रधानमंत्री चाणक्य (कौटिल्य) को दिया जाता है। जिन्होंने नंद वंश के राजा घनानंद को पराजित किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरू और प्रधानमंत्री चाणक्य थे।
- इन्होंने अपना राजधानी पाटलीपुत्र को बनाया।
- 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा।
- इनकी माता का नाम मोरा था। जिसका संस्कृत में अर्थ मौय होता है इसलिए इस वंश का नाम मौर्य वंश प...
- इनकी शिक्षा तक्षशिला में हुई थी।
- मौर्यकाल में शिक्षा का सबसे प्रसिद्ध के... ...ला था।
- विशाखदत्त ने चंद्रगुप्त मौर्य के लिए ...षल (निम्न जाति) शब्द का प्रयोग किया।
- चंद्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर में क...ीर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक (मैसूर) तक तथ... उत्तर-पश्चिम में इरान (फारस) से लेकर पूरब में बंगाल ...क फैला था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य जब मगध का शासक था तब यूनानी आक्रमणकारी सेलयुकस निकेटर न... ई.पू. में) आक्रमण कर दिया, किन्तु चन्द्रगुप्त म... ...से पराजित कर दिया और उसकी बेटी कॉर्नेलिया (हेलेना) से विवाह कर लिया और दहेज में एरिया (...) आराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (बलू...) तथा पेरिपनिसडाई (काबुल) ले लिया।
- इस बात का उल्लेख एप्पियानस नामक यूनानी ही देता है।
- ...गुप्त मौर्य ने भी सेल्युकस निकेटर को 500 हाथी उपहार में दिए थे।
- भारतीय इतिहास का प्रथम महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य को कहा जाता है।
- सेल्युकस निकेटर ने अपना एक राज...त मेगा...नीज को चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा। ... पाटलीपुत्र को पोलीब्रोथा कहते थे।
- विशाखदत्त की पुस्तक मुद्राराक्षस ... ...श के पतन तथा मौर्य वंश के उदय की च...ा है।
- इनके अनुसार चाणक्य के सहयोग से चन्द्रगुप्त मौर्य ने घनानन्द का ... कर दिया ... घनानंद की पुत्री दुर्धरा से विवाह कर लिया।
- मेगास्थनीज की पुस्तक ...डका से मौर्य वंश की जानकारी मिलती है। ...िका ... लिखा है कि मौर्य काल में समाज 7 भागों में बंटा था।

  1. ...र्शनिक ... ...हीर (पशुपालक) 3. सैनिक 4. किसान 5. निरीक्ष... ... कारीगर तथा 7. सभासद (मंत्री)।
- इन... सर्वाधिक संख्या किसानों की थी तथा भारतीयों को लिखने में रूचि नहीं थी।
- चाणक्य ने **अर्थशास्त्र** नामक ग्रंथ की रचना की है। इससे हमें मौर्य साम्राज्य के राजनितिक गतिविधि की जानकारी मिलती है।
- मौर्य वंश के बारे में सर्वाधिक जानकारी चाणक्य की पुस्तक अर्थशास्त्र से मिलती है। जो एक राजनैतिक एवं प्रशासनिक पुस्तक है। इस पुस्तक के 15 अधिकरण (Lesson) है। इस पुस्तक में राजा के राजत्व सिद्धांत की चर्चा है, और कहा गया है कि एक मजबूत राजा को साप्तांग सिद्धांत पालन करना होगा।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने बंगाल अभियान भी किया था, जिसकी जानकारी महास्थान अभिलेख से मिलती है।
- चंद्रगुप्त मौर्य के दक्षिण विजय के बारे में जानकारी तमिलग्रंथ 'अहनानूर' एवं 'मूरनानूर' तथा अशोक के अभिलेख से मिलती है।
- गोरखपुर में स्थित साहगौर ताम्र अभिलेख से अकाल के दौरान चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा किए गए राहत कार्यों की चर्चा है।
- जैन ग्रंथ रजावली में उल्लेख मिलता है कि चंद्रगुप्त मौर्य अपने पुत्र बिन्दुसार को गद्दी सौंप दिया था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को जैन धर्म की शिक्षा भद्रबाहु के नेतृत्व से मिली थी। भद्रबाहु के साथ ही चन्द्रगुप्त मौर्य कर्नाटक के श्रवण बेलगोला चला गया। जहाँ 298 ई.पू. संलेखना (संथारा) विधि से प्राण त्याग दिया।
- रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख (गिरनार) गुजरात से जानकारी मिलती है, कि चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यपाल पुष्यगुप्त ने सरकारी खर्च से गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवायी थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस अभिलेख ने चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिमी विस्तार की जानकारी मिलती है।

➢ **शरीर के अंगों के समान राज्य के 7 अंग होते हैं। जो निम्नलिखित हैं–**

(i) राजा → स्वामी → शीर्ष (Head)
(ii) मंत्री → अमात्य → आँख (Eye)
(iii) जनपद → क्षेत्र और जनसंख्या → पैर (Leg)
(iv) दुर्ग → किला → बांह (Arm)
(v) कोष → धन → मुख (Mouth)
(vi) दंड/सेना → न्याय → मस्तिष्क (Brain)
(vii) मित्र → सहयोगी → कान (Ear)

- चाणक्य को विष्णुगुप्त या कौटिल्य भी कहते है। यह तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे।
- महावंश टीका में उल्लेख मिलता है कि चाणक्य तक्षशिला के एक ब्राह्मण थे।
- चाणक्य को भारत का **मैक्यावेली** कहा जाता है।
- इसके पिता का नाम गुणी था।
- जस्टिन ने भी चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए सेण्ड्रेकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- विलियम जोंस ने यह पहचान कराया कि सेण्ड्रेकोटस ही चन्द्रगुप्त मौर्य हैं।
- प्लूटार्क ने चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए ऐंड्रोकोटस शब्द का प्रयोग किया है।
- प्लूटार्क के अनुसार चंन्द्रगुप्त मौर्य ने 6 लाख की सेना लेकर चाणक्य की सहायता से संपूर्ण भारत को रौंद डाला था।

बिन्दुसार (298-269 BC)

- यह चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी था।
- इसकी माता दुर्धरा थी।
- इसके राज्य का संचालन चाणक्य करते थे।
- इसके पत्नी का नाम चारूमित्रा और शुभद्रांगी थी।
- इसके पुत्र का नाम सुशीम, अशोक और तिष्य था।
- इसके दरबार में सीरिया के नरेश एण्टियोकस ने अपना राजदूत डायमेकस को भेजा।
- इसे मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- स्ट्रैबो के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के नरेश से अंजीर मीठी शराब तथा दार्शनिक मांगा था।
- वहाँ के शासक एण्टिओकस प्रथम ने अंजीर तथा मीठी शराब दिया किन्तु दार्शनिक देने से मना कर दिया क्योंकि सीरिया में दार्शनिक का व्यापार नहीं होता था।
- बिन्दुसार के दरबार में मिस्र के राजा टॉलमी द्वितीय ने अपना राजदूत डायनोसियस को भेजा।
- बिन्दुसार के समय तक्षशिला (कश्मीर) में दो बार विद्रोह हुए।
- उस समय तक्षशिला का राजकुमार बिन्दुसार का बड़ा बेटा सुशीम था, जो इस विद्रोह को दबाने में असफल रहा।
- बिन्दुसार ने अपने छोटे पुत्र अशोक, जो उस समय अवन्ति का राज्यपाल था, उसे विद्रोह दबाने के लिए तक्षशिला भेजा।
- अशोक ने क्रूरता पूर्वक विद्रोह को दबा दिया।
- बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानने वाला था। जिसकी स्थापना मोखलीपुत्र गोशाल ने किया था।
- बिन्दुसार को **अमित्रघात** एवं **शत्रुविनाशक** भी कहते हैं।
- वायु पुराण में इसे **भद्रसार** भी कहा गया है।
- जैन धर्म में इसे **सिंहसेन** कहा गया है।
- यह अपने शासनकाल में कोई नया प्रदेश नहीं जीता था।
- भारतीय इतिहास में इसको **पिता का पुत्र** और **पुत्र का पिता** की उपमा से जाना जाता है।

सम्राट अशोक (269-232 BC)

- इसका जन्म 304 ई.पू. में पाटलीपुत्र में हुआ।
- इसके पिता का नाम **बिन्दुसार** तथा माता का नाम **शुभद्रांगी** था जिसे **धर्मा** के नाम से जाना जाता था।
- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार अशोक ने राजा बनने के लिए अपने **99** **भाईयों** की हत्या करके एक कुआँ में डाल दी थी, वह कुआँ आज भी पटना में अगमकुआँ नामक स्थान पर स्थित है।
- **269 ई.पू.** में अशोक ने अपना **राज्याभिषेक** कराया।
- राज्याभिषेक के **8वें** वर्ष अर्थात् **261 ई.पू.** में अशोक ने **कलिंग** पर आक्रमण किया तथा कलिंग की राजधानी **तोसली** पर अधिकार कर लिया।
- कलिंग आक्रमण की जानकारी खारवेल के **हाथीगुफा** अभिलेख से मिलती है।
- इस अभिलेख के अनुसार कलिंग आक्रमण के समय कलिंग का राजा **नंद राज** था।
- कलिंग में हुए **भीषण नरसंहार** को देखकर अशोक का **हृदय परिवर्तित** हो गया और अशोक ने युद्ध नीति को सदा के लिए त्याग दिया और **भेरीघोष** के स्थान पर **धम्मघोष** की स्थापना किया।
- ऐसा माना जाता है कि अशोक ने **हाथियों** को प्राप्त करने के लिए **कलिंग** पर आक्रमण किया था।
- कलिंग आक्रमण के बाद अशोक ने **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- इसे बौद्ध धर्म अपनाने की प्रेरणा इसके **भतीजे निग्रोध** से मिली जबकि **बौद्ध धर्म** की शिक्षा उपगुप्त ने दी थी।
- अशोक शुरूआत में **ब्राह्मण धर्म** मानता था। परंतु बाद में **बौद्ध धर्म** अपना लिया।
- अशोक का बौद्ध धर्म उसका **व्यक्तिगत धर्म** था। उसने कभी भी बौद्ध धर्म को राजकीय धर्म घोषित नहीं किया। किन्तु अशोक बौद्ध धर्म को संरक्षण देता था।
- अशोक ने **बौद्ध धर्म** के प्रचार के लिए अपने बेटे **महेन्द्र** एवं बेटी **संघमित्रा** को **श्रीलंका** भेजा।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

अशोक द्वारा भेजे गए धर्मप्रचारक	
धर्मप्रचारक	**देश**
महेन्द्र और संघमित्रा	श्रीलंका
महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
सोना तथा उत्तरा	सुवर्ण भूमि(म्यांमार)
महारक्षित	यवन देश
महादेव	मैसूर
मज्झिम	हिमालयी क्षेत्र
मज्झान्तिक	काश्मीर एवं गंधार

- बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष से ही धर्म यात्रा प्रारंभ की जिसका क्रम इस प्रकार है– बोधगया, कुशीनगर, लुम्बिनी, कपिलवस्तु, सारनाथ तथा श्रावस्ती।
- अशोक ने अपने शासन के दसवें वर्ष सर्वप्रथम बोध गया की यात्रा की। उसके बाद बीसवें वर्ष लुम्बिनी नामक ग्राम की यात्रा की और कर (Tax) घटा कर केवल 1/8 भाग लेने की घोषणा की।
- अशोक के काल में तीसरी बौद्ध संगीति 255 ई.पू. में पाटलीपुत्र में हुई थी। जिसका अध्यक्ष **मोग्गलीपुत्त तिस्स** था।
- श्रीलंका के राजा ने सिंहली संप्रदाय को छोड़कर बौद्ध धर्म अपना लिया। अशोक धार्मिक रूप से सहिष्णु था अर्थात् वह किसी भी धर्म के साथ भेद-भाव नहीं करता था।

Note :– श्रीलंका का राजा, अशोक के उपदेशों का पालन करते थे, किन्तु श्रीलंका अशोक के अधीन नहीं था।

- अशोक के समय मुद्राएं सोने (स्वर्ण), चाँदी (कार्षापण) एवं ताँबें (काकणी) आदि के होते थे।

> **अशोक ने आजीवक संप्रदाय के लोगों को गया में स्थित बराबर की पहाड़ियों में 4 गुफा दान में दिया-**
>
> (i) सुदामा
> (ii) कर्ण
> (iii) चोपड़
> (iv) विश्व झोपड़ी

- आजीवकों के लिए नागार्जुन गुफा दशरथ द्वारा प्रदान किया गया था। इसका उत्तराधिकारी कुणाल था।
- अशोक की 5 पत्नियाँ (असाधिता, देवी, कारुवाकी, पदमावती, नित्यारक्षक) थी, जिनमें अशोक पर सर्वाधिक प्रभाव **कारूवाकी** का था।
- **कारूवाकी** के कहने पर ही अशोक ने युद्ध त्याग दिया था।
- कल्हण की पुस्तक राजतरंगिनी से पता चलता है कि उसका अधिकार काश्मीर पर भी था। अशोक ने काश्मीर में झेलम नदी के तट पर श्रीनगर की स्थापना किया तथा नेपाल में ललितपत्तनम्/ देवपतनम् नामक नगर बसाया था।
- अशोक भारत का पहला ऐसा शासक था, जिसने अपने संदेशों को अभिलेख के माध्यम से जनता तक पहुंचाया।
- अशोक को अभिलेख लिखने की प्रेरणा ईराक के राजा डेरियस (दारा) या दायबाहु से मिली।

> **अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत थी, जिसे 4 लिपियों में लिखा गया था-**
>
> **(i) ब्राह्मी लिपि :** यह सर्वाधिक भारत में मिले हैं। जो बाईं से दाईं ओर लिखा जाता था।
> **(ii) खरोष्ठी लिपि :** यह पाकिस्तान के उत्तर पश्चिम में मिले हैं। इसे दाईं से बाईं ओर लिखा जाता था।
> **(iii) आरमाइक लिपि :** यह अफगानिस्तान से मिली हैं।
> **(iv) ग्रीक लिपि :** यह अफगानिस्तान के उत्तरी सीमा से मिली है।

- अशोक के शिलालेख को पहली बार टी. फेन्थैलर ने 1750 ई. में खोजा।
- अशोक के अभिलेख को पढ़ने और समझने की पहली सफलता 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप को मिली।
- अशोक ने अपने अधिकतर अभिलेखों में अपना नाम देवनाम प्रियदर्शी (देवताओं को पसंद) लिखा है।
- मध्य प्रदेश के गुर्जरा तथा कर्नाटक की मास्की, नेट्टूर तथा उदगोलन अभिलेखों में अशोक का स्पष्ट नाम अशोक लिखा हुआ है।
- भाब्रू अभिलेख में अशोक के लिए मगध सम्राट नाम का प्रयोग हुआ।
- असम से अशोक का कोई भी साक्ष्य नहीं मिला है, जिससे यह पता चलता है कि यह क्षेत्र अशोक के सम्राज्य से बाहर था।
- अशोक ने 84000 स्तूपों का निर्माण कराया था।

> **अशोक के शिलालेखों को 3 भागों में बांटा गया है–**
>
> **(1) शिलालेख–** इसे वृहदशिलालेख तथा लघुशिलालेख में विभाजित किया गया हैं।
> **(2) स्तंभलेख–** इसमें दीर्घ स्तम्भलेख एवं लघुस्तम्भलेख में विभाजित किया गया है।
> **(3) गुहालेख–** ये गुफाओं में लिखे जाते थे।

अशोक के चतुर्दश शिलालेख

1. **प्रथम शिलालेख :** अहिंसा पर बल, पशुबलि पर रोक, सभी मनुष्य मेरे बच्चे के समान।
2. **द्वितीय शिलालेख :** इसमें पशु चिकित्सा की चर्चा है साथ ही दक्षिण भारतीय राज्य जैसे- चेर, पाड्य, श्रीलंका, केरलपुत्र, सतियपुत्र की चर्चा है, किन्तु चोल वंश की चर्चा नहीं है।
3. **तृतीय शिलालेख :** इसमें अशोक ने 3 अधिकारी राजुक, युक्तक तथा प्रदेशिक का चर्चा किया है, जो धम्म के प्रचार के लिए थे। अशोक ने इस शिलालेख में राजकीय अधिकारियों को आदेश जारी किया कि वे हर पांचवें वर्ष दौरे पर जाय। इसमें धर्म संबंधित कुछ नियम भी निर्देशित हैं।
4. **चतुर्थ शिलालेख :** इसमें भेरीघोष (युद्ध) के स्थान पर धम्मघोष (बौद्ध) के नीति का चर्चा है।
5. **5वाँ शिलालेख :** इसमें धम्म महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है, जो धार्मिक जीवन की देख-रेख करता है। इसमें समाज तथा वर्ण व्यवस्था उल्लेख है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

6. **6वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने कहा है कि मेरे अधिकारी जनकल्याण के लिए जब चाहे मुझसे मिल सकते हैं। इसमें आत्म नियंत्रण संबंधित शिक्षा दी गई है।
7. **7वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने विभिन्न धर्मों के आपसी समन्वय की बात कही है। यह सबसे बड़ा शिलालेख है। इसमें तीर्थ यात्रा की चर्चा है।
8. **8वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक के धर्म यात्रा की चर्चा है, जो इसके राजाभिषेक से 8वें वर्ष से प्रारंभ होती है। बोध गया के भ्रमण का उल्लेख।
   राज्याभिषेक के 10वें वर्ष - गया
   राज्याभिषेक के 20वें वर्ष - लुम्बिनी।
9. **9वाँ शिलालेख :** इसमें अशोक ने छोटे-मोटे त्योहारों पर प्रतिबंध लगा दिया। इस शिलालेख में सच्ची शिष्टाचार और सच्ची भेंट का उल्लेख है।
10. **10वाँ शिलालेख :** इसमें धम्म के महत्व के बारे में चर्चा है। इसमें सम्राट अशोक ने आदेश जारी किया कि राजा तथा उच्च राज्य अधिकारी हमेशा ही प्रजा के हित के बारे में सोंचे। इसमें धम्म नीति का व्याख्या की चर्चा की गई है।
11. **11वाँ शिलालेख :** अशोक ने कहा है, कि मेरे अधिकारी ब्राह्मणों को न सताएं।
12. **12वाँ शिलालेख :** इसमें स्त्रियों के स्थिति में सुधार के लिए स्त्री महामात्र नामक अधिकारी की चर्चा है एवं हर प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
13. **13वाँ शिलालेख :** इसमें कलिंग युद्ध की चर्चा है तथा साथ ही सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की बात भी वर्णित है। साथ ही पड़ोसी राजाओं के संबंध का भी उल्लेख है।
14. **14वाँ शिलालेख :** अशोक ने कहा है, कि मैं ऊपर लिखे गए शिलालेख के अतिरिक्त बहुत से काम किए हैं, जो इसमें नहीं लिखे गए हैं। इसके लिए लिखने वाला जिम्मेदार है मैं नहीं। इसमें जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया गया है।

	शिलालेख	लिपि	स्थान
1.	शाहबाजगढ़ी	खरोष्ठी	पेशावर (पाकिस्तान)
2.	मनसेहरा	खरोष्ठी	हजारा जिला (पाकिस्तान)
3.	सासाराम	ब्राह्मी	रोहतास जिला (बिहार, भारत)
4.	धौली	ब्राह्मी	पुरी (उड़ीसा)
5.	येरागुड़ी	ब्राह्मी	चितल दुर्ग (मैसूर)
6.	पालिकगुण्डु	ब्राह्मी	गाविमठ (कर्नाटक)
7.	वैराट (भाब्रू)	ब्राह्मी	जयपुर (राजस्थान)
8.	कलसी	ब्राह्मी	देहरादून (उत्तरांचल)
9.	गिरिनार	ब्राह्मी	जूनागढ़ के पास काठियावाड़ (गुजरात)
10.	धौली	ब्राह्मी	पुरी (उड़ीसा)
11.	सोपारा	ब्राह्मी	थाने के पास (महाराष्ट्र)
12.	जौगढ़	ब्राह्मी	गंजाम जिला (उड़ीसा)
13.	रूपनाथ	ब्राह्मी	जबलपुर (मध्य प्रदेश)
14.	एर्रागुडी	ब्राह्मी	कुर्नूल (आन्ध्र प्रदेश)

अशोक के स्तंभलेख (लघु अभिलेख)

➤ **भाब्रू अभिलेख**

☛ राजस्थान के भाब्रू अभिलेख में अशोक ने खुद को मगध का सम्राट बताया है।

☛ भाब्रू अभिलेख में इसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धम्म और संघ की चर्चा है।

➤ **अशोक के 7 स्तंभलेख (लघु अभिलेख) मिले हैं–**

(i) रूमनदेई अभिलेख (नेपाल) : यह नेपाल के लुम्बिनी में है। यह आरमाईक लिपि में है। यह सबसे छोटा अभिलेख है। यह एक मात्र अभिलख है जिसमें अशोक ने प्रशासनिक चर्चा न करके आर्थिक क्रियाकलाप की चर्चा की है।

(ii) कौशाम्बी अभिलेख (उत्तरप्रदेश) : इसमें अशोक ने अपनी पत्नी कारूवाकी द्वारा दिए गए दान की चर्चा की है। अतः इसे रानी का अभिलेख भी कहते हैं। अकबर ने इसे इलाहाबाद स्थापित कर दिया।

(iii) टोपरा अभिलेख (हरियाणा) : फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित करा दिया।

(iv) मेरठ अभिलेख (उत्तरप्रदेश) : पहले यह मेरठ में था। फिरोजशाह तुगलक ने इसे दिल्ली के तुगलकाबाद में स्थापित कर दिया।

(v) रामपूवा अभिलेख : यह बिहार के चंपारण में है। इसकी खोज 1872 ई. में कारलायल ने की।

(vi) लौरिया नंदन गढ़ : यह बिहार के चंपारण में है।

(vii) लौरिया अरराज : यह बिहार के चंपारण में है।

➤ **निगाली सागर स्तंभलेख (नेपाल)**

☛ इस स्तंभलेख से पता चलता है कि अशोक अपने राज्याभिषेक के बारहवें वर्ष निगाली सागर आया तथा यहाँ कनकमुनि के स्तूप का संवर्धन किया।

➤ **सर-ए-कुना अभिलेख**

☛ यह अफगानिस्तान के कांधार से मिला है। जो ग्रीक तथा अरमाईक भाषा में है।

☛ कलिंग अभिलेख में अशोक ने कहा है, कि संसार के सभी मानव मेरी संतान (पुत्र) हैं। मैं एक माँ की भांति उसके सांसारिक तथा प्रलौकिक जीवन की कामना करता हूँ। अशोक ने कहा है, कि जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को योगाधाम को देकर निश्चित हो जाती है। उसी प्रकार मैं भी समाज की देख-रेख के लिए राजूक को नियुक्त किया है।

☛ राजूक अच्छे व्यक्ति को पुरस्कृत कर सकते हैं और गलत व्यक्ति को दँडित कर सकते हैं।

☛ अशोक के गुहालेखों की संख्या 3 हैं। जो बिहार में गया के निकट बराबर की पहाड़ी की गुफा में स्थित है। यहां 3 गुफाएं हैं। इनमें स्थित गुहालेखों में आजीवकों को दिए गए दान का उल्लेख मिलता है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- अशोक ने अपने अभिलेखों के लिए जिन पत्थरों का इस्तेमाल किया, वे उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले से मंगाया गया।

अशोक की धम्म यात्रा

- अशोक ने लोगों को नैतिकता सिखाने के लिए जो नियम कानून की सँहिता बनाई उसे ही धम्म कहते हैं। अशोक का धम्म स्वनियंत्रण पर आधारित था।
- अशोक की धम्म की परिभाषा राहुलोवादसुत्र से ली गई है।
- अपने आप को नियंत्रित करना धम्म नीति का मूल सिद्धांत है।
- अशोक ने अपने दूसरे एवं सातवें स्तम्भ लेखों में धम्म के गुणों (सत्यवादिता, पवित्रता, साधुता, मृदुता, दान, दया, कल्याण) को बताया है।
- अशोक ने कहा है कि व्यक्ति अपने माता-पिता की आज्ञा मानें। व्यक्ति ब्राह्मण तथा भिक्षुक का आदर करें।
- व्यक्ति-दास तथा सेवकों के प्रति उदार रहें।
- व्यक्ति को जिओ-और-जीने-दो का पालन करना चाहिए।

मौर्यकालीन आर्थिक व्यवस्था

- इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि, पशुपालन तथा कारखाना था।
- सरकारी भूमि को सीता भूमि कहा जाता था।
- भूमि माप वाले कर को रज्जू कहा जाता था।
- बलि एक प्रकार का अतिरिक्त उपज 'कर' था।
- चारागाह कर को विवीत कहा जाता था।
- अकाल के समय कोई कर नहीं लिया जाता था।

मौर्यकालीन मुद्राएँ

- मुद्राओं का परीक्षण करने वाले अधिकारी को **रूपदर्शक** कहा जाता था।
- मौर्यकाल की राजकीय मुद्रा **पण** थी, जो चांदी का सिक्का हुआ करता था। इस काल में मुद्रा के रूप में **आहत मुद्रा** का प्रचलन रहा था।
- इस समय चांदी के मुद्रा को कार्षापण कहा जाता था।
- इस समय सोने के सिक्के को निष्क कहा जाता था।
- तांबे के सिक्के को इस समय माषक या काकनी कहा जाता था।

मौर्यकालीन संगठन

(i) **श्रेणी :** यह शिल्पकारों का संगठन था।

(ii) **निगम :** यह व्यापारियों का संगठन था।

(iii) **सार्थवाह :** यह कारवां (काफिला) का संगठन था।

मौर्यकालीन सैन्य व्यवस्था

- मौर्य कालीन सैन्य व्यवस्था बहुत ही विशाल थी। यह नन्द वंशों की सेना से 3 गुनी अधिक थी। इस समय स्थायी तथा अस्थायी दो प्रकार के सैनिक रहते थे।
- युद्ध क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी नायक होता था।

> **कौटिल्य ने सेना को तीन श्रेणियों में बांटा था–**

1. पुश्तैनी सेना
2. भाटक सेना
3. नगरपालिका सेना।

- जस्टिन ने कहा है, कि मौर्यों की सेना डाकुओं का एक गिरोह था

प्रशासनिक व्यवस्था

- मौर्यकालीन प्रशासन एक केन्द्रीकृत शासन था। राजा को सलाह देने के लिए मंत्री परिषद् होता था।
- उच्च अधिकारियों को तीर्थ या महामात्र अथवा अमात्य कहा जाता था। इनकी संख्या 18 थी। जासूसों के लिए चर शब्द का प्रयोग किया गया था।

अर्थशास्त्र में उल्लेखित तीर्थ (शीर्षस्थ अधिकारी)		
1.	अमात्य	प्रधानमंत्री
2.	पुरोहित	धर्म एवं दान विभाग का प्रधान
3.	सेनापति	सैन्य विभाग का प्रधान
4.	युवराज	राजपुत्र
5.	दौवारिक	राजदरबार/राजकीय द्वार-रक्षक
6.	अन्तर्वेदिक	अन्त:पुर का अध्यक्ष
7.	समाहर्ता	आय का संग्रहकर्ता
8.	सन्निधाता	राजकीय कोष का अध्यक्ष
9.	प्रशास्ता	कारगार का अध्यक्ष
10.	प्रदेष्ट्रि	कमिश्नर
11.	पौर/नागरक	नगर का कोतवाल
12.	व्यावहारिक	प्रमुख न्यायाधीश
13.	नायक	नगर रक्षा का अध्यक्ष
14.	कर्मान्तिक	उद्योगों और कारखानों का अध्यक्ष
15.	मन्त्रिपरिषद्	अध्यक्ष
16.	दण्डपाल	सैन्य सामग्री एकत्रित करनेवाला
17.	दुर्गपाल	राजकीय दुर्ग रक्षक
18.	अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक

- मुख्यमंत्री और पुरोहित की नियुक्ति के पहले इनके चरित्र को जांचा या परखा जाता था उसे ही उपधा परीक्षण कहा जाता था।
- अशोक के समय प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। ग्रामों के मुखिया ग्रामिक कहलाते थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

प्रशासनिक अधिकारियों को अध्यक्ष कहा जाता था। इनकी संख्या 26 थी–

(i) सीताध्यक्ष	:	कृषि विभाग
(ii) अकाराध्यक्ष	:	खनन विभाग
(iii) लक्ष्मणाध्यक्ष	:	मुद्रा विभाग
(iv) राक्षिन	:	पुलिस विभाग
(v) धर्मस्थली	:	दीवानी न्यायालय (धन)
(vi) कन्टक शोधन	:	फौजदारी न्यायालय (अपराध)
(vii) गुढ़ पुरुष	:	गुप्तचर
(vii) संस्था	:	स्थाई गुप्तचर
(ix) संचार	:	चलायमान गुप्तचर
(x) आंटविक	:	जंगल का अधिकारी
(xi) समाहर्ता	:	Tax या कर
(xii) सन्निधाता	:	कोषाध्यक्ष

- समाहर्ता के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मंडल चलाता था। यह मंडल 6 समितियों में विभक्त होता था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

न्याय व्यवस्था

- मौर्य काल में सम्राट ही सर्वोच्च न्यायालय, अंतिम न्यायालय तथा न्यायाधीश था। राजा का फैसला ही अंतिम एवं सर्वमान्य होता था।
- ग्राम सभा सबसे छोटा न्यायालय था। जहाँ वृद्ध जन ... निर्णय लेते थे।
- सर्वोच्च न्यायालय राजधानी में स्थित होता था।
- मुख्य न्यायाधीश को धर्माधिकारी कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य में दो प्रकार के न्यायालय होते थे।

1. **धर्मस्थीय (दीवानी)–** इसके द्वारा दीवानी तथा विवाह संबंधित विवादो का निपटारा किया जाता था।
2. **कंटक शोधन (फौजदारी)–** इसके द्वारा फौजदारी तथा मारपीट जैसे समस्याओं का निपटारा होता था।

- अशोक के काल में जनपदीय न्यायालय के न्यायाधीशों को राजूक कहा जाता था।

गुप्तचर व्यवस्था

- मौर्य काल में गुप्तचर विभाग के प्रधान को महामात्यापसर्प कहा जाता था।
- अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को गुढ़पुरुष तथा इसके प्रमुख अधिकारी को सर्पमहामात्य कहा जाता था।

➢ **संचार**

- इसमें व्यक्ति जगह-जगह जाकर गुप्तचरी करता था।

➢ **संस्था**

- एक समूह संगठित होकर गुप्तचरी करना।
- गुप्तचर के अलावा शांति व्यवस्था बनाये रखने तथा अपराधों की रोकथाम के लिए पुलिस भी थी, जिसे अर्थशास्त्र में आरक्षिण कहा गया है।

मौर्यकालीन वास्तुकला

- मौर्यकाल में लकड़ी के भवन हुआ करते थे, जो वर्तमान में पटना के कुम्हरार से मिले हैं। मौर्यकाल में पत्थर के कुशल कारीगर थे।
- अशोक ने मध्य प्रदेश में साँची का स्तूप बनवाया है। जो सबसे बड़ा स्तूप है।
- अशोक ने उत्तरप्रदेश के सारनाथ में अशोक स्तंभ बनवाया। जिस पर 4 पत्थर के शेरों को एक ही जगह ... जो अहिंसा का सूचक हैं। यही भारत का राष्ट्रीय चिह्न भी है।
- मौर्यकाल में पत्थर की बनी सबसे ... कलाकृति पटना के दीदारगंज से मिला यक्ष एवं यक्षिणी की मूर्ति है।

- अशोक के अभिलेख विभिन्न क्षेत्रों से मिले हैं, किन्तु पाटलिपुत्र से एक भी अभिलेख नहीं मिला है।

➢ **स्तूप की संरचना**

स्तूप एक अर्द्धवृत्ताकार संरचना है जिसे अण्ड कहा जाता है। अण्ड के ऊपर एक छज्जे जैसे संरचना होती है। जिसे हर्मिका कहते हैं। हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे 'यष्टि' कहते हैं। यष्टि पर तीन छत्रियाँ लगी होती थी। उपरोक्त संरचना के चारों तरफ घुमने के लिए प्रदक्षिणापथ होता है। इस संपूर्ण संरचना के चारों ओर एक वेदिका होती थी जहाँ तोरणद्वार (प्रवेश द्वार) बनाया जाता था।

➢ **स्तूप के विभिन्न अंगों का अर्थ–**

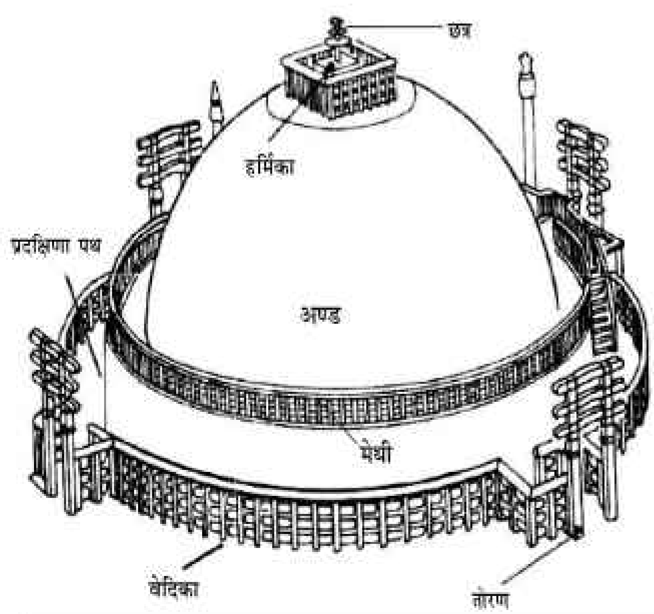

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

1. **तोरण द्वार–** स्तूपों के चारों ओर प्रवेश द्वार बने होते थे जो चारों दिशाओं में बुद्ध के संदेशों के फैलने का प्रतीक है।
2. **वेदिका–** स्तूपों के चारों तरफ एक घेरा बनाया जाता था जिसे वेदिका/रेलिंग कहा जाता था। जो पत्थरों के विभिन्न स्तरों/पट्टिकाओं का बना होता था। यह पवित्र भूमि का प्रतीक है, जो पवित्र स्थल को सामान्य दुनिया से अलग करती है।
3. **'अण्ड'–** 'शांति' का प्रतीक।
4. **'हार्मिका'–** देवताओं के घर अथवा पवित्रता का प्रतीक है।
5. **'छत्र'–** बुद्ध के विचारों/भिक्षाओं का प्रतीक है। जैसे– श्रद्धा, सम्मान एवं उदारता।

सामाजिक जीवन

- अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना लिया किन्तु यह दूसरे धर्मों का भी आदर करता था। हिन्दु धर्म त्यागने के बाद भी अशोक ने अपने नाम में देवनाम प्रियदर्शी जोड़ा, जो संस्कृत भाषा का शब्द है।
- अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को गया में 4 गुफा प्रदान की।
- अशोक ने पशुबली पर पूर्णत: प्रतिबंध लगा दिया। यज्ञ तथा कर्मकांड पर रोक लगा दिया जिस कारण ब्राह्मणों की आय में बहुत कमी आ गई।
- मौर्य काल में दास प्रथा का प्रचलन था।
- इस समय स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। स्त्रियाँ पुनर्विवाह कर सकती थी। इस समय जो विधवा स्वतंत्रत रूप से जीवन यापन करती थी, उसे छन्दवासिनी कहा जाता था।
- स्वतंत्रत रूप से वेश्यावृत्ति करने वाली महिलाएँ रूपाजीवा कहलाती थी। इनके कार्यों का देख-रेख गणिकाध्यक्ष करते थे।
- इस समय तलाक को मोक्ष कहा जाता था।
- इस वंश में प्रथम बार लोगों के जन्म एवं मृत्यु का पंजीयन किया गया था।
- इस काल में पाटलिपुत्र नगर को विश्व के नगरों की रानी कहा गया है।
- इस काल में सड़क निर्माण अधिकारी को एग्रोनोमाई कहा जाता था।

प्रशासनिक ढाँचा

- मौर्यकाल में सबसे बड़ा पद राजा का होता था, उसके नीचे युवराज होता था।
- प्रांत का प्रमुख प्रांतपति के पास था।
- विशं (जिला), विशपति के नियंत्रण में रहता था।
- ग्रामों का छोटा मालिक या गोप होता था। जो प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव हुआ करती थी। जो ग्रामीण (मुखिया) के नियंत्रण में रहती थी।
- इस समय न्यायाधीश को राजूक कहा जाता था।

➤ **मौर्यकाल में प्रांतों की संख्या 4 थी, लेकिन अशोक के समय 5 हो गई, जो निम्नलिखित हैं–**

अशोककालीन मौर्य साम्राज्य के 5 प्रांत			
	प्रांत/चक्र	राजधानी	प्रमुख स्थल
1.	कलिंग	तोसली (धौली)	कलिंग
2.	अवंति राष्ट्र	उज्जयिनी	मालवा, राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़
3.	प्राशी (पूर्वी प्रांत)	पाटलिपुत्र	बिहार-बंगाल के और उत्तर प्रदेश के क्षेत्र
4.	उत्तरापथ	तक्षशिला	गांधार, कंबोज, कश्मीर और अफगानिस्तान
5.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि	विन्ध्य के दक्षिण का क्षेत्र

- इसके समय प्रांतों को चक्र कहकर संबोधित किया जाता था।
- प्रांतों के प्रशासकों को कुमार या आर्यपुत्र अथवा राष्ट्रिक कहा जाता था।
- प्रांतों के विभाजन विषयों में होता था। जो विषयपति के अधीन होता था।

अशोक के उत्तराधिकारी

- 232 ई.पू. (BC) पाटलीपुत्र में अशोक की मृत्यु हो गई।
- इसके बाद मगध की गद्दी पर अशोक का पुत्र कुणाल बैठा।
- अशोक के पौत्र दशरथ ने आठ वर्षों तक शासन किया। अशोक की भांति उन्होंने देवनामप्रिय की उपाधि धारण किया तथा आजीवक संप्रदाय के साधुओं के लिए गया जिले में नागार्जुन पहाड़ी पर 3 गुफाओं का निर्माण कराया।
- अशोक का कोई भी उत्तराधिकारी योग्य नहीं था। मौर्य वंश का अंतिम शासक वृहदथ था। जो एक कमजोर तथा अयोग्य शासक था।
- इसके शासन काल में कलिंग नरेश खारवेल ने कलिंग को मगध से स्वतंत्र कर लिया।
- वृहदथ का सेनापति पुष्यमित्र शुंग था जिसने सेना के निरीक्षण के दौरान वृहदथ की हत्या कर दी और मौर्य वंश के स्थान पर शुंग वंश की स्थापना कर दी।

मौर्य वंश के पतन के कारण

- अशोक का युद्ध नीति त्याग देना।
- अशोक का बौद्ध धर्म के प्रति अत्यधिक झुकाव होना।
- अशोक ने बौद्ध भिक्षुकों को इतना दान दिया कि आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया।
- पतन का सबसे बड़ा कारण अशोक के उतराधिकारी का अयोग्य होना था। साथ ही विभिन्न अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हो गए।

Note : मौर्यकाल में वर्ष की शुरूआत आषाढ़ (जुलाई) महीनें से होती थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

09. ब्राह्मण सम्राज्य (Brahmin Empire)

शुंग वंश (185-73 BC)

- मगध पर शासन करने वाला यह पहला गैर क्षेत्रीय राजवंश था।
- इस वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र बनाई जबकि द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया। विदिशा का पुराना नाम बेसनगर (मध्यप्रदेश) था।
- पुष्यमित्र शुंग एक कट्टर ब्राह्मण था। यह 36 वर्षों तक शासन किया। जबकि इस वंश का शासन 112 वर्षों तक चला।
- भारत में पुन: वैदिक धर्म की स्थापना करने का श्रेय पुष्यमित्र शुंग को जाता है।
- पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का विरोधी शासक माना जाता है। इसका प्रमाण दिव्यावदान से प्राप्त होता है। हालांकि इनके काल में कई बौद्ध विहार का भी निर्माण हुआ।
- इसने बहुत सारे बौद्ध स्तूपों तथा मठों को ध्वस्त करा दिया।
- पुष्यमित्र शुंग ने मध्यप्रदेश के साँची स्तूप की खिड़कियों को तांबे का कराया जबकि भरहुत (मध्यप्रदेश) स्तूप की खिड़कियों को पत्थर का करवाया।
- पुष्यमित्र शुंग के काल में अशोक द्वारा निर्मित सांची एवं भरहुत स्तूप का आकार दुगुना करवाया गया था। वर्तमान में सांची के स्तूप का जो स्वरूप है वह पुष्यमित्र शुंग के काल का ही देन है।
- बौद्ध चैत्य भवन का निर्माण इसी वंश के समय हुआ था।
- इसके समय बौद्ध पुस्तक जातक ग्रंथ की रचना हुई।
- पाणिनी ने अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) लिखा।
- मनु ने मनुस्मृति लिखा। गार्गी ने गार्गी संहिता लिखा।
- जिनसेन ने हरिवंश की रचना किया।

> **इनके काल में कुल मिलाकर दो युद्ध किए गए थे–**

1. विदर्भ का युद्ध
2. यवन आक्रमणकारी का युद्ध

- विदर्भ (बरार) में हुए उत्तराधिकारी के युद्ध का लाभ उठाकर पुष्यमित्र शुंग ने अग्निमित्र के नेतृत्व में सेना भेजा। जिसमें अग्निमित्र विजयी हुए थे। इसकी जानकारी कालीदास की रचना मालविकाग्निमित्र से मिलती है।

Note:– कालीदास की पुस्तक **मालविकाग्निमित्र में अग्निमित्र** एवं **मालविका** के प्रेम-प्रसंग की चर्चा है।

- इसके समय दो यमन विदेशी आक्रमण हुए। दोनों ही यमन आक्रमण को पुष्यमित्र शुंग ने अपने बेटे अग्निमित्र द्वारा विफल कर दिया।
- इन दोनों ही आक्रमण के समय पुष्यमित्र शुंग विजयी हुए और इस अवसर पर पुष्यमित्र शुंग ने पतंजलि के नेतृत्व में दो अश्वमेध यज्ञ करवाया एवं अपने राजधानी पाटलीपुत्र स्थानांतरित करके विदिशा को बनाया।
- पहले आक्रमण का नेतृत्व डेमेट्रियस ने किया।
- दूसरे आक्रमण का नेतृत्व मिनाण्डर (मिलिंद) ने किया।
- मिलिंद (मिनाण्डर) को बौद्ध भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जिससे उसने बौद्ध धर्म अपना लिया।
- कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर दिया था।
- इस वंश में कुल 10 शासक थे। पहला शासक पुष्यमित्र शुंग, नौवां शासक भागभद्र एवं दसवां शासक देवभुति था।
- इस वंश के शासक भागभद्र के दरबार में यवन (विदेशी) राजदूत हेलियोडोटस आया था। जो भागवद् धर्म अपना लिया।
- इसने भगवान विष्णु के सम्मान में विदिशा या वेसनगर (मध्यप्रदेश) में गरूड़ध्वज अभिलेख का निर्माण कराया था। इसने उसपर भगवान विष्णु के लिए देवदेवश्य शब्द का प्रयोग किया।
- शुंग राजवंश का शिलालेख जालंधर (पंजाब) से मिलता है।
- इस काल में संस्कृत भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ।
- शुंग वंश के काल की अर्थव्यवस्था जातक ग्रंथ एवं मिलिन्दपन्हो नामक पुस्तक से मिलता है।
- इस वंश के 10वें एवं अंतिम शासक देवभूति थे जिनकी हत्या उन्हीं के मंत्री वासुदेव ने कर दी और इसके स्थान पर कण्व वंश की स्थापना कर दी।

कण्व वंश (73-30 BC)

- इस वंश के संस्थापक वासुदेव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विदिशा को बनाया।

> **इस वंश में कुल 4 शासक हुए–**

(1) वासुदेव, (2) भूमिपुत्र, (3) नारायण एवं (4) सुशर्मा।

- इस वंश का दूसरा नाम कणवायांग था।
- यह वंश 43 वर्षों तक शासन किया।
- कण्व राजा को पुराण में शुंग मित्र के नाम से पुकारा जाता था।
- कण्व साम्राज्य पर पहला आक्रमण शकों का हुआ। ये ब्राह्मण जाति के थे।
- इस वंश में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला शासक भूमिपुत्र था जो 14 वर्ष तक शासन किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस वंश का अंतिम अयोग्य एवं दुर्बल शासक सुशर्मा था। जिसकी हत्या उसके मंत्री सिमुक (आंध्र राजा) ने 30 ई.पू. में कर दी और इसके स्थान पर सातवाहन वंश की स्थापना कर दी।

सातवाहन वंश (प्रतिष्ठान) [30 BC-250 AD]

- इस वंश के संस्थापक **सिमुक** थे। जिसकी राजधानी **तगर** थी।
- प्रारम्भ में यह वंश महाराष्ट्र के क्षेत्र में था, किन्तु शक राजाओं ने इन्हें महाराष्ट्र छोड़ने पर विवश कर दिया।
- सातवाहन वंश को आंध्रप्रदेश में स्थानान्तरित होना पड़ा। जिस कारण पुराण में इन्हें आंध्र सातवाहन भी कहते हैं।
- सातवाहन की राजधानी प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) थी जो गोदावरी नदी के तट पर स्थित था।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत तथा लिपि ब्राह्मी थी।
- सातवाहन वंश किसी न किसी रूप में तीन शताब्दियों तक बने रहें। जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है।
- शातकर्णी-I सातवाहन वंश का पहला शासक था। जिसकी जानकारी नानाघाट अभिलेख (पूणे) से मिलती है। जो उसकी पत्नी नागनिका या नयनिका द्वारा बनवाया गया था।
- शातकर्णी प्रथम ने दक्षिणापथपति तथा अप्रतिहत् चक्र की उपाधि धारण किया।
- शातकर्णी प्रथम शासक का नाम सांची स्तूप के प्रवेश द्वार पर अंकित है।
- शातकर्णी प्रथम द्वारा दो अश्वमेघ यज्ञ और एक राजसूय यज्ञ करवाया गया था।
- सातवाहन वंश का सबसे योग्य शासक **हाल** था।
- हाल ने प्राकृत भाषा में गाथासप्तशती की रचना किया था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गौमतीपुत्र शातकर्णी था। इसके समय नासिक के शक शासक नहपान ने आक्रमण कर दिया, किन्तु गौतमीपुत्र शातकर्णी ने उसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी महाराष्ट्र के नासिक जोगलथंबी से मिले सिक्कों से मिलती है। जिसके एक ओर गौतमी पुत्र शातकर्णी एवं दूसरी ओर नहपान का नाम और चित्र अंकित है।
- जिससे पता चलता है कि गौतमीपुत्र शातकर्णी ने शक शासक नहपान को हराया था।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने बौद्ध संघ को अजकालकीय तथा कार्ले के भिक्षु संघ को कर्जक नामक ग्राम दान में दिया।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने सातवाहन वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन: लौटाया।
- इस वंश का अगला शासक वशिष्ठ पुत्र पुलुमावी था।
- इसके समय पुन: उज्जैन के शक ने आक्रमण किया। इस बार शक वंश की ओर से आक्रमण का नेतृत्व रूद्रदामन कर रहा था।
- रूद्रदामन ने वशिष्ठ पुत्र पुलुमावी को पराजित कर दिया, किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित हुए।
- इन्होंने आंध्रप्रदेश पर विजय प्राप्त कर प्रथम आंध्र सम्राट की उपाधि धारण किया।
- पुल्लुमावी ने अमरावती स्थित बौद्ध स्तूप की किलेबंदी करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक यज्ञश्री शातकर्णी था। इनके सिक्के पर जहाज का चित्र आंकत था।
- सातवाहन वंश ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का काम किया।
- ब्राह्मणों को सबसे पहले भू-दान सातवाहनों ने देना प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक भूदान गुप्त शासकों ने दिया।
- वेतन के बदले भूमि देने की सामंती व्यवस्था सातवाहन ने शुरू किया, किन्तु सर्वाधिक प्रयोग गुप्त राजाओं ने किया।
- इस वंश के समय गांव के प्रधान को गौल्मिक कहा जाता था।
- इस वंश में दक्कन के क्षेत्र में कपास फसल उगाया जाता था।
- सातवाहन समाज मातृसतात्मक था।
- यहाँ नाम के पहले माता का नाम लिखा जाता था, किन्तु राजा पुरूष ही होता था।
- इस समय सीसा के सिक्का का प्रयोग होता था।
- चाँदी के सिक्के को काषापर्ण तथा सोने के सिक्के को सुवर्ण कहते थे।
- सातवाहन साम्राज्य के भूमि गोदावरी नदी घाटी में थी, जिस कारण यह अत्यधिक उपजाऊ थी।
- ऐसा कहा जाता है कि सातवाहन काल की भूमि उस समय के सबसे उपजाऊ भूमि थी।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

10. मौर्योत्तर काल (Post Mauryan Period)

- मौर्यकाल के पतन के बाद मगध छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, और कोई भी योग्य शासक नहीं रहा। जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत एक अवसर की तरह दिखने लगा।
- मौर्योतर काल के बाद भारत पर 4 विदेशी आक्रमण हुए। जो निम्नलिखित हैं–

  I – Indo Greek (हिन्द यवन)

  S – शक् (सीथियन)

  P – पहलव (पार्थियन)

  K – कुषाण

Indo Greek (हिन्द यूनानी)

- इनका क्षेत्र हिन्दकुश पर्वत के समीप का बैक्ट्रिया प्रांत था। अत: इन्हें बैक्टेरियन शासक भी कहते हैं।
- हिन्द यूनानी भारत में दो चरण में आए थे–

> **प्रथम चरण**

- डेमोंट्रियस ने लगभग 183 ई.पू. में पश्चिमयोत्तर भारत पर आक्रमण करते हुए, पंजाब एवं सिन्ध प्रांतों को जीत लिया और अपने जीते गये क्षेत्र की राजधानी शाकल (स्यालकोट) को बनाया और 'डेमोंट्रियस वंश' की स्थापना किया।
- डेमोंट्रियस ने शुंग राजा, पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- अगला शासक मिनाण्डर बना। इसने भी शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- इसे (मिनाण्डर) बौद्ध-भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला विदेशी था।
- नागसेन एवं मिनाण्डर (मिलिन्द) के वार्तालाप की चर्चा नागसेन की पुस्तक मिलिन्दपन्हों में है।

> **''द्वितीय चरण''**

- इसमें युक्रेटाइडिस ने तक्षशिला में युक्रेटाइडिस वंश की स्थापना की।
- इस वंश के शासक एन्टियाल ने अपने राजदूत हेलियोडोरस को शुंग राजा भागवत के दरबार में मित्रवत् संबंध स्थापित करने के लिए भेजा।
- हेलियोडोरस भागवत धर्म (विष्णु भगवान) से प्रभावित होकर इस धर्म को अपना लिया और इस धर्म के सम्मान में विदिशा (बेसनगर) में गरूडध्वज अभिलेख बनवाया।
- यह किसी राजदूत का एक मात्र व्यक्तिगत अभिलेख है।
- यूक्रेटाइडिस वंश के अंतिम शासक हर्मिस थे।

हिन्द यूनानी की विशेषता

- ये यवन से आकर भारत में बस गए अत: इन्हें हिन्द यूनानी कहते हैं।
- इन्हें काली मिर्च बहुत पसंद था। अत: काली मिर्च को यवन प्रिय कहा गया।
- भारत में पहली बार चित्रयुक्त एवं लेखयुक्त सोने के सिक्के यूनानियों ने चलाया। जिसे ड्रम कहा जाता था। यह खरोष्टी भाषा में लिखा गया है।
- यूनानियों ने भारत में खगोल, ज्योतिष, गणित तथा समय का गणना प्रारंभ किया।
- भारतीय नाटक का विकास यूनानियों के द्वारा हुआ है। भारतीय नाटक में पर्दा के लिए यूनानियों के द्वारा यवनिका शब्द का प्रयोग किया गया।
- इण्डोग्रीक शासन में मुर्ति निर्माण के क्षेत्र में एक नयी शैली गंधार शैली का विकास हुआ और इसी शैली में निर्मित प्रथम मुर्ति महात्मा बुद्ध की बनाई गयी।

'शक वंश'/सिथियन वंश (90BC)

- मौर्योत्तर काल में भारत पर आक्रमण करने वाला दूसरा आक्रमणकारी शक या सिथियन थे।
- ये बोलन-दर्रा पार करके भारत आये थे।
- शक् मध्य एशिया के रहने वाले थे।
- इन्हें युची वंश (काबिला) वालों ने मध्य एशिया से भगा दिया था।
- शक् राजाओं को क्षत्रप कहा जाता था।
- शकों के शासन व्यवस्था क्षत्रप शासक व्यवस्था थे।
- शकों ने भारत में उत्तर एवं पश्चिम दिशा में अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

> **ये भारत में आकर पांच जगहों पर बसे थे–**

  (i) कंधार (अफगानिस्तान)

  (ii) तक्षशिला (पाकिस्तान)

  (iii) मथुरा (उत्तरप्रदेश)

  (iv) उज्जैन (मध्यप्रदेश)

  (v) नासिक (महाराष्ट्र)

- तक्षशिला में शक वंश की स्थापना मेउस के द्वारा किया गया था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- मथुरा में शक वंश की स्थापना राजुल के द्वारा किया गया था।
- उज्जैन में शक वंश की स्थापना चेस्टक या यशोमति के द्वारा किया गया था।
- नासिक में शक वंश की स्थापना भूमक के द्वारा किया गया था।
- मथुरा के शक शासक राजुल को मालवा के शासक ने 57BC में पराजित कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर लिया। इस उपलक्ष्य में उसने 57 ई.पू. विक्रम संवत् नामक Calendar चलाया।
- भारतीय संविधान का यह मूल Calendar था, किन्तु 1957 में शक् संवत् को अपना लिया गया।
- नासिक के शक् शासक नहपान ने सातवाहन शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हो गया।
- इसकी जानकारी नासिक के जोगल थंबी से मिले सिक्कों से मिलती है।
- इन सिक्कों पर एक तरफ नहपान की आकृति तथा दूसरी तरफ गौतमी पुत्र शातकर्णी की थी।
- सबसे प्रतापी शक् शासक उज्जैन का रूद्रदामन था।
- रूद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्टि पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया।
- रूद्रदामन का गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में गिरनार पहाड़ी पर जूनागढ़ अभिलेख मिला है।
- यह संस्कृत भाषा में लिखा भारत का पहला अभिलेख है। इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च पर गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया था।
- यह अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिम में विस्तार की जानकारी देता है।
- रूद्रदामन ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण (जीर्णोद्धार) अपने अधिकारी सुविशाख द्वारा करवाया।
- गुप्त शासक सकंदगुप्त ने भी इस झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- अंतिम शक् शासक रूद्रसिंह-III थे।
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों का सर्वनाश कर दिया और इस उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया। और चांदी के सिक्के चलाए। इस सिक्के को रूपक कहा जाता था।
- शक् शासकों ने 78 ई. में प्रारम्भ किए गए कनिष्क के Calendar का इतना अधिक प्रयोग किया कि इसे शक् संवत कहते हैं।

ग्रेगोरियन कैलेंडर

- यह सूर्य पर अधारित है।
- ईसा मसीह के जन्म से प्रारम्भ होता है।
- इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है।

> **विक्रम संवत्**– इसे मालवा शासक विक्रमादित्य-IV ने 57 ई. पू. प्रारम्भ किया था।

- यह ग्रेगोरियन Calendar से 57 वर्ष आगे है अर्थात् विक्रम संवत में तिथि ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 57 जोड़ दिया जाता है।
- इसी कारण संविधान लागू होने की तिथि 1949 को विक्रम संवत् में (1949 + 57) = 2006 कहलाता है।

> **शक् संवत**

- इसे कनिष्क ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के साथ प्रारम्भ किया था।
- यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 ई. बाद आया। अतः यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 वर्ष पीछे है।
- 22 मार्च, 1957 ई. से राष्ट्रीय पंचाग के रूप में शक् संवत को अपनाया गया था।
- शक् संवत में तिथि ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 78 वर्ष घटा दिया जाता है।
- शक् संवत एवं विक्रम संवत के बीच 135 वर्ष के अंतर है।
- विक्रम संवत्, शक संवत्, हिजरी Calendar (मुस्लिम Calendar) चन्द्रमा पर आधारित है। अतः इनका त्योहार भी हर एक वर्ष 11 दिन पीछे हो जाता है। किन्तु 3 साल बाद शक् संवत में एक अतिरिक्त महीना जोड़ दिया जाता है।

पहलव/पार्थियन वंश

- मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर आक्रमण करने वाला तीसरा वंश पार्थियन या पहलव थे।
- ये ईरान/फारस/पर्सिया के थे, जिस कारण इन्हें पार्शियन कहा जाता है।
- इन्होंने अपनी राजधानी पुरूषपुर (पेशावर) को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक मिथ्रेडेटस थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक गोन्दोफर्निस थे जिनका उल्लेख पाकिस्तान के ''तख्त-ए-बही'' अभिलेख में मिला है। यह खरोष्ठी लिपि में है। इनके समय में पुर्तगाल का इसाई धर्म प्रचारक 'सेन्ट थामस' भारत आया था। यह भारत आने वाला पहला ईसाई धर्म प्रचारक था।

कुषाण वंश

- मौर्योत्तर काल में भारत में आक्रमण करने वाला अंतिम शासक कुषाण वंश थे।
- ये मध्य एशिया के निवासी थे।
- मध्य एशिया में यूची कबीला 5 भागों में बंटा था। इसी 5 में से 1 भाग कुषाण था।
- कुषाण वंश का क्षेत्र मध्य एशिया के आनुदरिया नदी से लेकर गंगा के क्षेत्र तक था।
- कुषाण वंश के संस्थापक 'कुजुलकडफिसस' थे।
- इन्होंने तांबे का सिक्का चलाया था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- ये शैव धर्म को मानते थे। जिसका प्रमाण उनके सिक्के से मिले हैं। इन सिक्को पर एक तरफ कुजुलकडफिसस तथा दूसरी तरफ नंदी बैल की आकृति थी।
- अगला शासक विम-कडफिसस बना, जो इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। यह शैव धर्म को मानता था।
- इन्होंने महेश्वर की उपाधि धारण किया।
- इनके सिक्के पर एक तरफ खरोष्ठी लिपि में इनका नाम लिखा हुआ था तथा दूसरी तरफ शिव पार्वती एवं त्रिशुल की आकृति बनी हुई थी।
- कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक "कनिष्क" था। इसने 78 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया। और इस अवसर पर शक् संवत् प्रारम्भ किया।
- इसने अपनी राजनीतिक राजधानी पेशावर को बनाया जबकि सांस्कृतिक राजधानी तक्षशिला को बनाया बाद में सांस्कृतिक राजधानी मथुरा (मंधूसा) को बनाया।
- कनिष्क ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया और महात्मा बुद्ध का "भिक्षा-पात्र" तथा यहाँ के दार्शनिक अश्व-घोष को अपने साथ लेता गया। इसी अश्वघोष को कनिष्क ने अपने राज कवि का दर्जा दिया।
- कनिष्क बौद्ध विद्वान पार्श्व के कहने पर कश्मीर के कुंडल वन में चतुर्थ बौद्ध सम्मेलन का आयोजन प्रथम सदी में करवाया था। इस बौद्ध सम्मेलन में अध्यक्ष के साथ साथ उपाध्यक्ष की भी व्यवस्था की गई। अध्यक्ष पद पर वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष पद पर अश्वघोष को बैठाया गया।

> **इस सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो शाखा में बंट गया है–**

1. हीनयान
2. महायान।

- कनिष्क महायान शाखा को मानता था।
- महायान बौद्ध धर्म की एक सरल शाखा थी जिसमें भिक्षुक सोने के आभूषण धारण कर सकते थे तथा मांस खा सकते थे।
- कनिष्क के प्रयास से ही बौद्ध धर्म का महायान शाखा का प्रचार मध्य एशिया और चीन में हुआ।
- कनिष्क के दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष नागार्जुन तथा चरक नामक विद्वान रहते थे।
- अश्वघोष ने बुद्ध-चरित्र लिखा।
- चरक ने चरक-संहिता लिखा। ये वैद्य (डॉक्टर) थे।
- नागार्जुन ने माध्यमिक सूत्र म सापेक्षता के सिद्धांत की चर्चा की है। अत: इन्हें भारत का आईंस्टिन कहते हैं।
- नागार्जुन बौद्ध धर्म के 'शून्य वाद' को जानते थे।
- वसुमित्र नामक विद्वान ने महाविभाष सूत्र के रचना किया। जिसे बौद्ध धर्म का विश्वकोष कहा जाता है।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कनिष्क के शासन काल में जारी किए गए। इन्हें सोना की प्राप्ति पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वत के बीच अलताई पहाड़ियों से होता था।
- कनिष्क के समय तांबे के सिक्के को काकिणी कहा जाता था।
- मथुरा से कनिष्क के सिक्को का एक ढ़ेर मिला है। जिसमें कनिष्क को एक सैनिक वेश-भूषा में दिखाया गया है।
- कनिष्क के समय स्थल तथा समुद्र दोनों मार्ग से व्यापार होते थे।
- कनिष्क के समय उत्तर भारत में बंगाल का ताम्रलिप्ति बंदरगाह तथा दक्षिण भारत में महाराष्ट्र का सोपारा एवं कल्याण बंदरगाह प्रमुख थे।
- अज्ञात की रचना "पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी" (POAS) से यह जानकारी मिलती है कि कनिष्क का सर्वाधिक व्यापार रोम से होता था।
- कनिष्क के समय ही पहली बार नासपाती की खेती प्रारम्भ हुई। इसी के समय यूनान नाविक हिप्पालस ने मानसून की खोज की। मानसून अरबी भाषा का शब्द मौसीम से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ है मौसम के अनुरूप पवन की दिशा।
- कनिष्क के शासन काल में मूर्ति निर्माण कला में काफी विकास हुआ।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरूषपुर के समीप एक विशाल संघारामबिहार का निर्माण करवाया था।
- कनिष्क को द्वितीय अशोक कहा जाता है।
- 105 ई. (लगभग) में कनिष्क की मृत्यु हो गई।
- इसके उत्तराधिकारी योग्य नहीं थे, जिस कारण इसके छोटे-छोटे सामंत अलग होने लगे।
- इस वंश के अंतिम शासक के रूप में वासुदेव की चर्चा मिलती है।
- इसी वंश के सामंतों ने आगे चलकर गुप्त वंश की स्थापना कर दी।

रेशम मार्ग (Silk Rout)

- यह चीन के रेशम व्यापार को यूरोप, फारस तथा मध्य एशिया से जोड़ता था।
- इस मार्ग का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर से गुजरता था। जबकि उत्तरी भाग कश्मीर तथा हिन्दुकुश पर्वत को पार करके गुजरता था।
- कनिष्क ने रेशम मार्ग पर अधिकार कर लिया था। यह मार्ग चीन के क्षेत्राधिकार में आता था।
- कौशेय शब्द का प्रयोग रेशम के लिए किया गया है।
- रेशम मार्ग आम तौर पर वह स्थलीय मार्ग कहलाता है जिसे चीन के हान राजवंश के महान यात्री यांगछयान ने खोला था। जो हान वंश की राजधानी छागआन से पश्चिम में रोम तक जाता था।
- रेशम मार्ग के होने वाले व्यापार पर कनिष्क कर (Tax) लेता था। जो उसके अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत था।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

11. गुप्त काल (Gupta Period)

- इस वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- गुप्त शासक वैश्य थे। यह विष्णु उपासक थे।
- ऐसा माना जाता है कि ये कुषाण शासकों के सामंत थे।
- इस वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- इन्होंने बिहार के स्थान पर उत्तरप्रदेश को अधिक वरीयता दिया।
- इन्होंने अपनी राजधानी उत्तरप्रदेश के कौशाम्बी को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक घटोत्कच था।
- इन दोनों शासकों ने सामंत के रूप में ही शासन किया। अत: इन्हें वास्तविक संस्थापक नहीं माना जाता है।
- इस वंश का वास्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने "राजा-रानी" प्रकार का सिक्का चलाया।
- इस वंश में गरूड़ मुद्राएँ सर्वाधिक लोकप्रिय थी।
- इस वंश में सोने के मुद्रा को दीनार तथा चांदी के रुपए को रूपयक कहा जाता था।
- महाराजाधिराज की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक चंद्रगुप्त-I था।
- गुप्त संवत् का प्रारंभ 319-20 ई. में चंद्रगुप्त-I ने चलाया था।
- इस समय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र उज्जैन था।
- इसी वंश के समय महिला को समाज में स्थान देना शुरू कर दिया गया।
- इस वंश का दरबारी भाषा संस्कृत थी।
- इसी वंश में बाल-विवाह की प्रथा प्रारंभ हुआ।
- प्रभावती गुप्त के पूना स्थित ताम्र पत्र अभिलेख में श्रीगुप्त का वर्णन मिलता है।
- पारा का आविष्कार भी इसी वंश के समय हुआ।
- इस काल में गुजरात, बंगाल एवं तमिलनाडु वस्त्र उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- इसी काल में शतरंज का खेल प्रारंभ हुआ। जिसे चतुरंग कहा जाता था।
- हुणों का आक्रमण गुप्तवंश के शासक स्कंदगुप्त के समय हुआ था।
- सती प्रथा का वर्णन 510 ई. में एरण अभिलेख से मिलता है। उस समय शासक भानुगुप्त था।
- इस वंश के कुमारगुप्त शासक ने अश्वमेघ यज्ञ करवाया था।

समुद्रगुप्त

- यह चंद्रगुप्त-I का पुत्र था।
- इसे प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है।
- यह कुमार देवी का पुत्र था। अत: यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- इसके बचपन का नाम कांच था।
- समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तारवादी थी। अत: यह अशोक के विपरीत था।
- इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- जबकि दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे कर वसूलता रहा।
- इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त की तुलना "नेपोलियन" से की जाती है। इसलिए वी.ए. स्मिथ द्वारा समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा गया। जो Early History of India की पुस्तक में लिखा हुआ है।
- समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी "प्रयाग प्रशास्ति" अभिलेख (इलाहाबाद) से मिलती है।
- प्रयाग स्तंभ लेख में मुगल शासक जहांगीर का वर्णन मिलता है।
- यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विग्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा समुद्र तीन का पानी पीता था, अर्थात समस्त दक्षिण भारत समुद्रगुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- इन्होंने अश्वमेघ यज्ञ करवाया और अश्वमेघ कर्ता की उपाधि धारण किया।
- इन्होंने विक्रमांक की उपाधि धारण किया था और इसे कविराज भी कहा जाता था।
- इसके समय बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण दिया गया था।
- इसने आर्यावर्त में दिग्विजय तथा दक्षिण भारत में धर्म विजय का कार्य किया।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा और अनुमति मांगी।
- समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दिया।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित्र पुस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।
- इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक "वेश-भूषा" में दिखाया गया है।
- समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- यह एक अयोग्य शासक था।
- इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच कर खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुस्तक "देवी चंद्रगुप्तम्" में मिलती है।

चंद्रगुप्त-II

- इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- विक्रमादित्य का अर्थ होता है, शूरवीर।
- इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- इसे शक विजेता भी कहा जाता था।
- इसे देवगुप्त के नाम से भी जाना जाता था।
- परम भागवत् का उपाधि इसी शासक द्वारा धारण किया गया था।
- इसके समय व्याघ्र शैली के सिक्के मिले है।
- इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें "नवरत्न" कहा जाता था।
- नवरत्न में सबसे प्रमुख कालिदास (संस्कृत लेखक), अमरसिंह (कवि), वराहमिहिर (खगोलविद्), धनवंतरि (आयुर्वेदाचार्य) आदि दरबार में थे।
- चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाह्यान भारत आया।
- इसने अपनी यात्रा विवरण "फो-क्यू-की" है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- इसे महायान शाखा का **ऑक्सफोर्ड** कहा जाता है।
- विश्व का पहला विश्वविद्यालय 'तक्षशिला' विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- यह वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- विश्व का पहला छात्रावास की सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय 'नालंदा विश्वविद्यालय' था।
- 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।
- कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।
- स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुणों के आक्रमण को असफल कर दिया।
- इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- भानु गुप्त के 'एरण' अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- इस वंश के विनाश का कारण हुणों का आक्रमण था।
- हुण आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्यभूति था।

गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था जो न्याय का भी सर्वोच्च था।
- शासन की सबसे छोटे इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- इस समय सबसे प्रमुख अधिकारी कुमार अमात्य था। जो वर्तमान में जिलाधिकारी (D.M.) के समान था।
- फाह्यान के अनुसार इस समय अस्पृश्यता (छूआ-छूत) प्रचलित थी।
- निम्न जाति के लोगों को चांडाल या अंत्यज्ञ कहा जाता था।
- इस समय स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था और वे देवदासी भी हो सकती थी।
- इस समय बाल-विवाह, पदा प्रथा तथा सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- इस समय वेश्यावृत्ति का प्रचलन था।
- वैश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं को गणिका या कुट्टनी कहा जाता था।
- इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- अजंता की गुफा बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गई।
- गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आंतकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

गुप्तकालीन स्थापत्य कला

- इस काल में वास्तु, स्थापत्य, चित्रकला एवं मूर्त्ति कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।
- इस काल में चैत्य और विहार की जगह मंदिर निर्माण पर विशेष बल दिया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

➤ **गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर–**

1. विष्णु मंदिर – तिगवा (जबलपुर, मध्य प्रदेश)
2. शिव मंदिर – भूमरा (सतना, मध्य प्रदेश)
3. पार्वती मंदिर – नचनाकुठार, (मध्य प्रदेश)
4. भीतरगाँव मंदिर – भीतरगाँव (कानपुर, उत्तर प्रदेश)
5. दशावतार मंदिर – देवगढ़ (ललितपुर, उत्तर प्रदेश)
6. लक्ष्मण मंदिर – सिरपुर (ईंटों से निर्मित)
7. विष्णु मंदिर – उदयगिरि (मध्य प्रदेश)
8. शिव मंदिर – खोह (मध्य प्रदेश)

गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था

- गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी।
- बाणभट्ट ने सिंचाई के क्षेत्र में इस काल में घंटीयंत्र के प्रयोग का विवरण दिया है।
- अमर सिंह द्वारा रचित अमरकोष से पता चलता है कि इस काल में 12 प्रकार की भूमि थी।
- इस समय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत भू-राजस्व था।
- भू-राजस्व कर को नगद या मेय (अनाज) के रूप में दिया जाता था। जो 1/4 भाग से लेकर 1/6 भाग तक हो सकता था।
- इस काल में कर को **भाग** कहा जाता था।
  1. **उद्रंग–** स्थाई काश्तकारों पर लगाया जाने वाला यह एक भूमि कर था।
  2. **उपरिकर–** यह अस्थाई कृषकों पर लगने वाला कर था।

➤ **गुप्तकालीन भूमि के प्रकार निम्न हैं–**

- **क्षेत्र–** कृषि करने योग्य भूमि।
- **वास्तु–** वास करने योग्य भूमि।
- **गोचर/चारागाह–** पशुओं के चारा योग्य भूमि।
- **सिल–** जो भूमि जोतने योग्य नहीं होती थी।
- **अप्रहत–** बिना जोती हुई जंगली भूमि।

गुप्तकालीन साहित्य

- गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है।
- गुप्तकाल की दरबारी भाषा संस्कृत थी।
- काशी, मथुरा, पाटलिपुत्र एवं वल्लभी आदि। इस काल के प्रमुख शैक्षणिक केन्द्र थे।
- नालंदा महाविहार की स्थापना भी इसी समय हुई जो विश्वविख्यात शैक्षणिक स्थल था।

➤ **गुप्तकालीन साहित्य एवं लेखक–**

गुप्तकालीन साहित्य	लेखक
मच्छकटिकम्	– शुद्रक
मुद्राराक्षस, देवीचंद्रगुप्त् (नाटक)	– विशाखदत्त
पंचतंत्र	– विष्णु शर्मा
नीतिसार	– कामदंक
कामसूत्र	– वात्स्यसायन
कुमारसंभव, मेघदूत, रघुवंशम, ऋतुसंहार, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशयम, अभिज्ञान	– कालिदास – शाकुंतलम्
स्वप्नवासवदत्ता	– भास
महाभारत	– वेदव्यास
सूर्यसिद्धांत	– आर्यभट्ट
मालती माधव	– भवभूति
गणित सार	– श्रीधर
निघन्टु	– धनवंतरि

सुदर्शन झील

क्र. सं.	राजा	कार्य	राज्यपाल
1.	चंद्रगुप्त मौर्य	निर्माण	पुष्यमित्र वैश्य
2.	अशोक	जीर्णोद्धार	तुसास्प
3.	रुद्रदामन	जीर्णोद्धार	सुविशाख
4.	स्कंदगुप्त	जीर्णोद्धार	पर्णदत्त

हुण

- हुण का क्षेत्र फारस (इरान से अफगानिस्तान तक) था।
- इनकी राजधानी अफगानिस्तान के बामियान में थी।
- तारामाण तथा मिहिरकुल दो प्रमुख हुण आक्रमणकारी थे।
- मिहिरकुल बौद्ध विरोधी तथा मूर्तिभंजक (तोड़ने वाला) था।
- स्कंदगुप्त का जूनागढ़ स्थित अभिलेख से हुण आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- इसमें हुणों के लिए मलेच्छ शब्द का प्रयोग किया गया है।
- जब हूण भारत पर आक्रमण किया उस समय गुप्तवंश का शासक स्कंदगुप्त था।
- यह मध्य एशिया का रहने वाला था। जो एक बर्बर एवं खानाबदोश थे।

➤ **हुण की दो शाखाएँ–**

1. पश्चिमी
2. पूर्वी था।

- भारत पर जिस हुण ने आक्रमण ने किया वह पूर्वी शाखा था।
- चीनी साहित्य में हुण को हुंग-नू कहा जाता था।
- यह एक जाति समूह था जिसका कोई धर्म नहीं था।

पुष्यभूति वंश/वर्धन वंश

- इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी हरियाणा के थानेश्वर को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक प्रभाकर वर्धन थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- प्रभाकर वर्धन की पत्नी का नाम यशोमति था।
- इन्होंने परम भट्टारक और महाराजाधिराज का उपाधि धारण किया था।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक प्रभाकर वर्धन था।

➢ **प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थीं–**
1. राजवर्धन 2. हर्षवर्धन एवं 3. राजश्री।

- राजश्री का विवाह कन्नौज के राजा गृहवर्मन से हुआ।
- मालवा के शासक देवगुप्त ने गृहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
- राजवर्धन ने देवगुप्त की हत्या कर दी।
- गौड़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दिया। साथ ही इसने बोधि वृक्ष को भी कटवा दिया।
- वर्तमान बोधि वृक्ष छठी पीढ़ी की है।
- शशांक शैव धर्म का अनुयायी था।
- हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।

➢ **हर्षवर्धन के सामने 2 चुनौती थी–**
1. राजश्री का पता लगाना
2. साम्राज्य को संभालना।

- हर्षवधन ने दिवाकर नामक बौद्ध भिक्षुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
- हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अप साम्राज्य को संभालने लगा।
- हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज को राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।

➢ **हर्षवर्धन साहित्य प्रेमी था। इसने 3 पुस्तकों की रचना की–**
1. नागानंद
2. रत्नावली
3. प्रियदर्शिका।

- हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाण भट्ट थे।

➢ **इन्होंने 2 पुस्तकों की रचना की–**
1. कादम्बरी
2. हर्षचरित्र।

- हर्षवर्धन को शिलादित्य कहा जाता था।
- हषर्वर्धन को भारत का अंतिम हिंदु सम्राट माना जाता है।
- इसके काल में चोर तथा डाकुओं का बोल-बाला था।
- इसके समय मथुरा सूती वस्त्र का प्रमुख केन्द्र था।
- इसके समय चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत की यात्रा किया।
- 629 ई. में जब ह्वेनसांग भारत आया था तब नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित तथा शाक्य मुनि कहा जाता है।
- 'सी-यू-की' की रचना ह्वेनसांग द्वारा किया गया था।
- इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन (Student) तथा अध्यापन (Teacher) का कार्य किया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय के लिए 100 गांव की आय हर्षवर्धन ने दान के रूप में दिया।
- ह्वेनसांग की विद्वता को देखकर हर्षवर्धन ने प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयाग में होने वाले महामोक्ष परिषद् का अध्यक्ष ह्वेनसांग को बना दिया, जिस कारण ब्राह्मणों ने हर्षवर्धन का विरोध किया।
- कुम्भ मेला का प्रारंभ हर्षवर्धन के द्वारा ही माना जाता है।
- हर्षवर्धन हिन्दू था किन्तु वह बौद्ध धर्म के महायान शाखा से प्रभावित था।
- हषवर्धन के समय उत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण शहर कन्नौज था।
- इसके समय कन्नौज में बहुत बड़े बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसे 5वीं बौद्ध संगीति भी कहते हैं।
- हर्षवर्धन समस्त उत्तर भारत को जीत लिया था, किन्तु कश्मीर को अपने क्षेत्र में नहीं मिला पाया।
- हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत का अभियान प्रारंभ किया किन्तु नर्मदा नदी के तट पर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी पुलकेशिन द्वितीय का कर्नाटक में स्थित 'एहोल' अभिलेख से मिलती है।
- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- हर्षवर्धन की कोई संतान नहीं थी, जिस कारण वर्धन वंश का पतन हो गया।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक शून्य (सन्नाटा) की स्थिति में आ गई।
- इतिहास में हर्षवर्धन के मृत्यु को ''युग-परिवर्तन'' का काल कहते हैं।
- हर्षवर्धन अंतिम बौद्ध राजा था जो संस्कृत का महान विद्वान था।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर यशोवर्मन का शासन हुआ।

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

12. दक्षिण भारत (South India)

संगम काल

- 100 ई. से 250 ई. के मध्य दक्षिण भारत में पांड्य राजाओं के संरक्षण के कवियों के 3 विशाल सम्मेलन बुलाए गए। इन सम्मेलन को ही तमिल भाषा में संगम कहते हैं।
- इन्हीं कवियों के द्वारा सभा में कई तमिल साहित्य की रचना की गई। इन्हीं तमिल साहित्य को संगम साहित्य भी कहा जाता है।

➢ **इतिहास में 3 संगमों का वर्णन मिलता है–**

1. प्रथम संगम

- यह दक्षिणी मदुरै में आयोजित हुआ था।
- इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की।
- इस सम्मेलन में 89 राजाओं ने भाग लिया।
- वर्तमान में दक्षिणी मदुरै जलमग्न हो गया है। जिस कारण इस संगम में लिखे गए साहित्य की कोई जानकारी नहीं है।

2. द्वितीय संगम

- यह कपाटपूरम (अलैव) में आयोजित हुआ था।
- प्रारंभ में इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की किन्तु बाद मे "तोलकापिय्यर" ने की।
- इसी सम्मेलन में "तोलकापिय्यर" ने "तोलकापि यम" नामक तमिल साहित्य की रचना की।
- इस संगम में 59 राजाओं ने हिस्सा लिया।

3. तृतीय संगम–

- इसकी अध्यक्षता "नक्किरर" ने किया।
- इसमें 49 राजाओं ने हिस्सा लिया।
- इस संगम में लिखे गए साहित्य क. भ. कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।
- यह उत्तरी मदुरै में आयोजित हुआ था।

Note :–

1. तीनों ही सम्मेलन ... नाडु में किए गए हैं।

2. अगस्त्य ऋषि ...) बनारस के रहने वाले थे जो तमिलनाडु में बस गए।

- अगस्त्य ऋ... तमिल साहित्य का जनक माना जाता है।
- पांड्य ...ओं के द्वारा इन संगमो को शाही संरक्षण प्रदान किया गया।

संगम काल के राज्य

- कृष्णा नदी के दक्षिण में अर्थात् भारत के सुदूर दक्षिण में 3 राज्यों का उदय हुआ।

1. चोल
2. चेर
3. पांड्य।

चोल वंश

- संगम काल के वंशों में सबसे प्राचीन चोल था।
- इसके बारे में प्रथम जानकारी पा...नी की रचना अष्टाध्यायी से मिलती है।
- चोल साम्राज्य तमिलनाडु के पूर्वी भाग में था।
- इसकी प्रथम राजधानी 'उरई–ऊर' थी।
- इसकी मुख्य राजधानी तंजौर (तमिलनाडु) में स्थित था।
- इस ... की दूसरी राजधानी कांचीपुरम् (तमिलनाडु) में बनाई गयी थी।
- ... राजकीय चिन्ह बाघ था।
- उरई–ऊर सूती वस्त्र के लिए विश्व प्रसिद्ध था।
- ... कहा जाता है कि इस समय के सूती वस्त्र साँप की केंचुली (पोआ) से भी पतले होते थे।
- चोल साम्राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ मैदान में था। जिस कारण कहा जाता है कि जितने क्षेत्र पर एक हाथी सोता था, उतने ही क्षेत्र पर उतना अनाज उगाया जा सकता है जिससे 1 वर्ष तक 7 लोगों का पेट भरा जा सकता है।
- चोल वंश का पहला शासक "विजयालय" था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक करिकाल था। इसने श्रीलंका को जीत लिया और वहाँ से 12,000 द्वार लाया और कावेरी नदी पर 160 m लंबा बाँध बनवाया।
- यह भारत का पहला बाँध था। इसे Grand बाँध कहते है।
- करिकाल ने पुहार नामक बंदरगाह बनवाया जिसे "कावेरी पटनम्" कहते हैं।
- एलोरा तथा पेरूनरकिल्ली इस वंश के अन्य शासक थे।
- चोल वंश 5वीं सदी आते-आते अत्यंत कमजोर हो गया और सामंती जीवन जीने लगा।
- 8वीं सदी में पुनः चोलों का उदय हुआ।

चेर वंश

- ऐतरैय ब्राह्मण ग्रंथ में इसे चेरापद कहा गया है।
- अशोक के द्वितीय शिलालेख में इसे केरलपुत्र कहा गया है।
- इनका क्षेत्र केरल (मालाबार) में था।
- चेर वंश का प्रथम शासक उदियन जेरल था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- यह केरल का प्राचीन नाम था।
- इनकी राजधानी बंजी/करूर थी।
- इनका राज्य चिह्न धनुष था।
- उदियन जेरल ने महाभारत युद्ध के सैनिकों के लिए भोज करवाया था।
- अगला शासक शेनगुट्टवन था, इसे लाल-चेर भी कहते हैं।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शेनगुट्टवन था।
- शेनगुट्टवन ने पत्नीपूजा (कण्णगी पूजा) प्रारंभ किया। इस पूजा में उसने श्रीलंका तथा पड़ोस के राजाओं को भी आमंत्रित किया।
- इस वंश का अगला शासक आदीगमान था, जिसने गन्ने की खेती प्रारंभ की।
- चेर वंश का अंतिम शासक कुडक्कईय्यल जेरल था। जिसे हाथी की आँख वाला कहा जाता था।
- इसी शासक के समय पेरून जेरल पिरपोरई विद्वानों का संरक्षक था।
- इस वंश का प्रमुख बंदरगाह मुजरिस (रोमन व्यापार केन्द्र) था।
- दूसरी सदी के अंत में (190 ई.) चेर वंश समाप्त हो गया।

पांड्य वंश

- इसकी राजभाषा तमिल थी।
- यह मातृ सत्तात्मक था तथा मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- पांड्य राजाओं ने ही तीनों संगम का अयोजन करवाया था।
- पांड्य वंश की प्रथम जानकारी मेगास्थनीज की पुस्तक 'इण्डिका' से मिलती है।
- पांड्य वंश का क्षेत्र तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में था।
- इनकी राजधानी मदुरै थी।
- इनका राजकीय चिन्ह मछली (कार्प) था।
- पांड्य वंश का प्रथम शासक नोडियोन था।
- इसने समुद्र पूजा प्रारंभ की।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक नेडुन्जेलियन था।
- इसने 290 ई. में हुए 'तलैयालंगानम' के युद्ध में चेर, चोल तथा 5 अन्य राजाओं को एक साथ पराजित कर दिया।
- इस वंश का अंतिम शासक नल्लि ... ेडन (मरावर्मन राजसिम्हा तृतीय) था।
- 5वीं सदी आते-आते पाण्ड्य वंश अस्तित्व विहिन हो गया।
- पांड्य वंश के राजाओं ... के राजा से अच्छा संबंध था। इन्होंने अपने दूत ... राजा आगस्टसा के दरबार में भेजा था।
- पांड्य वंश की राजधानी मदुरै को त्योहारों का शहर कहते हैं।
- यहाँ का ... मंदिर विश्व-प्रसिद्ध हैं।
- अशोक के शिलालेख, महाभारत एवं रामायण से इस वंश की जानकारी मिलता है।
- मेगास्थनीज ने इस वंश को माबर नाम से वर्णन किया है।
- श्रीमार श्रीवल्लभा अपने शासन काल में कई सिचाई परियोजनाएँ शुरू करवायी थी तथा इसके निर्माण में ईंट और ग्रेनाइट का प्रयोग किया गया था।
- मरावर्मन राजसिह्मा तृतीय एक ऐसा पाण्डय शासक था जिसने कुडम्बलूर में तंजावूर के चोल राजा का विरोध किया था।
- शिल्पादिकारम् पुस्तक में नेदुन्जेलियन प्रथम का वर्णन मिलता है। यह पुस्तक तमिल साहित्य के प्रथम महाकाव्य के रूप में जाना जाता है।

➢ संगम कालीन बंदरगाह

संगमकाल के तीनों ही वंश के पास अपने-अपने बंदरगाह थे–

(i) चेर-बंदरगाह → बंदर-चेर एवं मुजरिस
(ii) चोल-बंदरगाह → पुहार तथा उरई
(iii) पांड्य-बंदरगाह → शालीयूर एवं कोरकाय

➢ संगम कालीन साहित्य

- संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गए।
- इन्हें तमिलकम या ... साहित्य भी कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं।
  - **(i) तोलकाप्पियम–** इसका संबंध व्याकरण से है। इसकी रचना तोलकाप्पियर ने की थी।
  - **(ii) तिरुक्कुरल या कुराल–** इसे तमिल साहित्य का बाइबिल (एंजिल) कहते हैं।
  - **(iii) जीवक चिन्तामणि–** इसका संबंध जैन धर्म से है। इसकी रचना तिरूत्क्कदेवर ने की है।
  - **(iv) शिल्पादिकारम–** इसका संबंध जैन धर्म से है। इसमें नुपूर (पायल) की कहानी है। इसे तमिल काव्य का इलियट भी कहा जाता है। इसकी रचना इलांगोआदिगल ने की थी।
- राजा कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माध्वी नामक नर्तकी के प्रेम में फंस जाता है और अपने धन को लुटाने के बाद उसे पश्चाताप होता है और अपनी पत्नी के पास लौटता है। उसकी पत्नी कन्नगी ने उसे अपना एक पायल दिया, जिसे बेचकर वे मदुरै में व्यापार प्रारंभ किया, किन्तु कोवलन पर मदुरै की रानी की पायल चुराने का आरोप लगा दिया गया और उसे फांसी दे दी गई।
- कोवलन की पत्नी कन्नगी ने श्राप दे दिया, जिससे मदुरै शहर नष्ट हो गया।
  - **(v) मणिमेखले–** इसका संबंध भी बौद्ध धर्म से है। इसमें कोलवन तथा माध्वी से उत्पन्न संतान मणिमेखलम् की चर्चा है, जिसने अंततः बौद्ध धर्म अपना लिया था। इसकी रचना शीतलैशत्नार द्वारा किया गया था। इसे तमिल काव्य की ओडिशी भी कहा जाता है।

वाकाटक वंश

- इस वंश की स्थापना विंध्य शक्ति (255 ई०) ने किया था।
- सातवाहन वंश के अंत के बाद उनके क्षेत्र पर वाकाटक वंश का आगमन हुआ।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इन्होंने अपनी राजधानी बरार को बनाया था।
- ये ब्राह्मण धर्म को मानते थे। (ये शैव सम्प्रदाय के थे।)
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक प्रवरसेन प्रथम थे। इन्होंने 4 अश्वमेघ यज्ञ तथा 1 वाजपेय यज्ञ का आयोजन किया।
- इस वंश के शासक रूद्रसेन का विवाह प्रभावती से हुआ।
- प्रभावती, चंद्रगुप्त-II तथा देवी की पुत्री थी।
- इस विवाह के कारण गुप्त तथा वाकाटक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।
- समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से वाकाटक की जानकारी नहीं मिलती है, क्योंकि इस अभिलेख में केवल जीते गए क्षेत्र की चर्चा है।
- वाकाटक वंश का अंतिम शासक पृथ्वी सेन द्वितीय था।
- वाकाटक की शक्ति धीरे-धीरे कमजोर हो गई और इनके स्थान पर चालूक्य वंश का उदय हो गया।

चालुक्य वंश (550 ई.-757 ई.)

> **सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थी–**
>
> (i) वातापी/बादामी, (ii) कल्याणी एवं (iii) बेंगी।

चालुक्य (वातापी/बादामी)

- वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
- यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
- इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।
- इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे। जिसके बारे में जानकारी कैरा ताम्रपत्र अभिलेख से प्राप्त होता है।
- इसने सामंत के रूप में शासन किया। क्योंकि यह स्वतंत्र शासक नहीं थे।
- इन्होंने वातापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
- पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी और महान शासक था। जिसके बारे में जानकारी एहोल अभिलेख से मिलती है।
- इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
- इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर कांचीकोंड की उपाधि धारण कर लिया।
- पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीतकर वातापीकोंड की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशिन-II की हत्या कर दी।
- इसके अतिरिक्त इन्होंने वातापी में स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर के दीवार पर अपना एक अभिलेख खुदवाया।
- पुलकेशिन-II के दरबार में 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था।
- पुलकेशिन-II ने ईरान के राजा खुसरो-II के दरबार में अपना एक दूत मंडल भेजा था।
- पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ति था।
- इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिवर्मन-II था।
- कीर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।

कल्याणी का चालुक्य

- चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- इस वंश को पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है।
- कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक तैलप–II था। इसकी राजधानी मानखेट थी।
- इस वंश का अगला शासक सोमेश्वर था। जिसने अपनी राजधानी मानखेट से कल्याणी स्थानान्तरित किया, जिस कारण इस वंश का नाम कल्याणी का चालुक्य हो गया।
- सोमेश्वर प्रथम ने अपने जीवनकाल में केवल चोलों पर विजय हासिल नहीं कर पाया और चोल शासक राजेन्द्र चोल से हारकर सोमेश्वर प्रथम ने करूवती के पास तुंगभद्रा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली।
- इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।
- इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- इन्होंने विक्रमांकदेव चरित नामक पुस्तक लिखी।
- इसके दरबार में मिताक्षर के लेखक विज्ञानेश्वर रहते थे। मिताक्षरा का संबंध हिन्दू कानून से था।
- इस वंश का राजचिन्ह् वाराह (सुअर) था।
- इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर–IV थे।

बेंगी का चालुक्य

- यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बेंगी में थी।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- इस वंश की राजधानी बेंगी (आंध्रप्रदेश) थी।
- इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

पल्लव वंश

- इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- सिंह विष्णु को अवनि सिंह भी कहा जाता है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस वंश की राजधानी कांची थी।
- यह दक्षिण भारत में कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच का प्रदेश था।
- इस वंश की प्रथम जानकारी हरिसेन की प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग की यात्रा से मिलती है।
- इसका प्रारंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में एवं बाद में संस्कृत भाषा में मिले है।
- इसके दरबार में भारवि नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने किरातार्जुनीयम नामक पुस्तक लिखी है।
- इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुन: पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- इसके दरबार में दण्डी नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दासकुमार चरितम् नामक पुस्तक संस्कृत भाषा में लिखी।
- इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।

चोल वंश (९वीं सदी) तंजौर

- चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं। इन्होंने नर केसरी की उपाधि धारण की थी।
- चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- इन्होंने अपनी राजधानी तंजौर/तंजावुर को बनाया।
- ९वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया। इन्होंने कोदंडराम की उपाधि धारण किया था।
- चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदूरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली। इसकी जानकारी उतरमेरूर अभिलेख से मिलती है।
- परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-III ने तक्कोलम् के युद्ध में पराजित कर दिया।
- चोल वंश का अगला शासक राजाराज बना। इनका मूल नाम अरिमोलवर्मन था।
- इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामूडी चोल की उपाधि धारण कर ली। किन्तु इन्होंने श्रीलंका को चोल साम्राज्य में शामिल नहीं किया।
- इसने अपनी राजधानी तंजौर में ''वृहदेश्वर'' मंदिर का निर्माण करवाया। ये शैव धर्म को मानते थे। इसने शिवपाद शेखर की उपाधि धारण किया।
- राजाराज अपने अंतिम दिनों में मालदीव पर भी अधिकार कर लिया और एक दूत मंडल को चीन भेजा।
- अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।
- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया और गंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया।
- इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- अपनी राजधानी के पास में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम कहते हैं।
- राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया। राजेन्द्र प्रथम अरब सागर में स्थित सदिमन्तिक नामक द्वीप पर भी अधिकार कर लिया।
- राजेन्द्र प्रथम चोल वंश का पहला शासक था जिसने 72 सदस्यीय दूत मंडल चीन भेजा था।
- इसी वंश के शासक कोलोतुंग द्वितीय था। जिसने चिदम्बरम् मंदिर में स्थापित गोविंदराज (विष्णु) की मूर्ति को मंदिर से हटवाकर समुद्र में फेंकवा दिया था। जिसे रामानुजाचार्य ने समुद्र से निकलवाकर तिरुपति मंदिर में स्थापित करवाया।
- इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- चोल काल की स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है।
- चोल काल में आय का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था।
- चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।
- चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- द्रविड़ शैली को विमानम् शैली भी कहते हैं।
- विमानम् शैली का प्रथम उपयोग तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर में किया गया।
- चोल काल में निर्मित नटराज प्रतिमा सांस्कृतिक धरोहर था।
- चोल काल को तमिल भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- तमिल साहित्य के त्रिरत्न के रूप में कंबन, ओट्टकुट्टन एवं पुगलेन्दी थे।
- कंबन ने तमिल रामायण की रचना किए।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

राष्ट्रकूट वंश (7वीं-9वीं)

- इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन-II को हराकर राष्ट्रकूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।
- दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेत (मालखण्ड) को बनाया।
- दंतिदुर्ग ने महाधिराज, परमेश्वर और परम्भट्टारक उपाधियाँ धारण की।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-I था। जिसने महाराष्ट्र में एलोरा के कैलाश मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- इस वंश का अगला शासक अमोघवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसने कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी तथा जिनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।
- इसके दरबार में कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- शांतिपुराण की रचना पोन्न द्वारा किया गया था।
- इस वंश का अगला शासक इन्द्र-III बना। इसके दरबार में अलमसूदी नामक अरब यात्री आया था।
- अलमसूदी ने ही पहली बार मानसून का वर्णन किया।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-III बना। इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक-I को पराजित किया।
- इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुन: स्थापना कर दी।
- तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी के चालुक्य कहलाया।

पाल वंश (7वीं-12वीं)

- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे।
- पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के अनुयायी थे।
- पाल वंश बिहार-बंगाल के क्षेत्र में था।
- पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
- उन्होंने बिहारशरीफ (नालंदा) में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- पाल वंश का अगला शासक धर्मपाल था।
- इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रूक गया।
- धर्मपाल ने भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
- उत्तरापथ स्वामी का उपाधि धर्मपाल ने धारण किया और इस उपाधि से गुजराती कवि सोड्ढल ने संबोधित किया था।
- अगला शासक देवपाल बना। इसी ने राजधानी मुंगेर को बनाया था। इसके दरबार में अरबयात्री सुलेमान आया था। इसने बंगाल को रूहमा शब्द से संबोधित किया था।
- इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
- महिपाल ने पाल वंश का विकास पुन: प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- इसने आदि दीपंकर नामक बौद्ध भिक्षुक के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में वज्रयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया। जिस कारण पाल वंश बिखर गया।
- पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल थे। इनके मृत्यु के बाद पाल वंश का अंत हो गया।
- पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

सेन वंश

- इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे।
- सेन वंश की राजधानी लखनौती (नदिया), बंगाल में थीं।
- इस वंश का अगला शासक विजय सेन था।
- विजय सेन को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- विजयसेन शैव धर्म का अनुयायी था।
- विजयसेन ने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधियाँ धारण की थी।
- विजयसेन का उत्तराधिकारी वल्लाल सेन था।
- वल्लाल सेन विद्वान तथा समाज सुधारक था।
- दानसागर एवं अद्भुत सागर ग्रंथ की रचना वल्लाल सेन ने की थी।
- अद्भुत सागर की रचना के दौरान ही इनकी मृत्यु हो गई जिसके बाद लक्ष्मण सेन ने इसको पूरा किया था।
- इनके दरबार में जयदेव नामक विद्वान रहते थे।
- जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।
- लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- परमभागवत् की उपाधि लक्ष्मण सेन ने धारण की थी।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहार वंश की उत्पत्ति गुजरात व दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में हुई थी।
- इस वंश के संस्थापक नागभट्ट-I थे।
- नागभट्ट-I ने मालबा के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- प्रतिहारों के अभिलेख में इन्हें श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है।
- पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है।
- इस वंश का दूसरा सबसे प्रभावशाली शासक वत्सराज था और इसी ने कन्नौज के लिए त्रिस्तरीय संघर्ष में भाग लिया और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
- इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दीं।
- मिहिरभोज के उपलब्धियों की चर्चा उसके ग्वालियर प्रशस्ति अभिलेख में की गई है।
- मिहिरभोज ने गुर्जरों की शक्ति पराकाष्ठा पर पहुँचा दी थी।
- मिहिरभोज के पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल शासक बना। इन्होंने राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय को पराजित किया।
- महेन्द्रपाल के दरबार में प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर रहते थे। जिन्होंने कर्पूरीमंजरी, काव्यमीमांसा, बालरामायण आदि ग्रंथों की रचना किए।
- स्कंद पुराण में इस वंश को गुर्जर कहा गया।
- इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।

चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जेजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है।
- इस वंश के संस्थापक नन्नुक थे।
- चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली) को जन्म दिया।
- बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी है।
- इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।
- प्रारंभ में इसकी राजधानी कालिंजर (महोबा) थी। किन्तु बाद में इसे खजुराहो स्थानांतरित किया गया।
- इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- इस वंश का अगला शासक ''धंग'' था। यह शिव को मानता था।
- इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसे कंदरिया महादेव के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर के प्रांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की प्रतिमा है।
- राजा धंग ने जिननाथ, विश्वनाथ और वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक **राज्यपाल** की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर से भाग गया।
- विद्याधर अकेला ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- इस वंश का अंतिम शासक परमर्दिदेव था, जिसे पृथ्वीराज चौहान-III ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को छीन लिया।
- आल्हा रूदल दोनों भाई परमर्दिदेव का सेनापति था। जो पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करते समय उनकी मृत्यु हो गई।
- परमर्दिदेव ने कुतुबद्दीन ऐबक की अधिनता स्वीकार कर ली जिसके कारण उसके मंत्री अजयदेव ने उनकी हत्या कर दी थी।
- अंतत: कुतुबद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

कुछ छोटे राजवंश

1. मैत्रक वंश

- इसके संस्थापक भट्टारक थे। यह वंश गुजरात के सौराष्ट्र में था।
- इसकी राजधानी वल्लभी थी, जो जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी।
- ये गुप्तों के अंतर्गत थे।

2. कल्चूरी वंश (चेदि वंश)

- यह मध्यप्रदेश के त्रिपुरी के क्षेत्र में था।
- इस वंश के संस्थापक कोक्कल-I थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी त्रिपुरी को बनाया।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गंगेय देव था।
- इन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया।

3. गौड़ वंश

- यह बंगाल के क्षेत्र में था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक था।
- इसने राजवर्धन की हत्या कर दी तथा महाबोधि वृक्ष को कटवाकर इसके जड़ों में आग लगा दिया।
- इसकी हत्या हर्षवर्धन ने कर दी, जिसके बाद यह वंश स्वत: ही धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

4. पूर्वी गंग वंश

- यह उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
- इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पूरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
- इस वंश के शासक नरसिंह-I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
- इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

काकतिया वंश (तेलंगाना)

- यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- इसके संस्थापक बीटा प्रथम थे।
- इस वंश का अगला शासक प्रतापरूद्र देव था, जिसके शासन काल में मलिक काफूर ने आक्रमण किया।
- इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन खिलजी के दरबार में भेंट किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इसके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- इस वंश पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

यादव वंश

- यह महाराष्ट्र के देवगिरि के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक भिल्लम-V थे।
- इसकी राजधानी देवगिरि थी।
- इस वंश के शासक रामचंद्र देव को मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया किन्तु इसकी वीरता को देखकर अल्लाउद्दीन खिलजी ने इसे देवगिरि का जागीरदार बना दिया।

होयशल वंश

- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्मन थे।
- ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेविड) को बनाया।
- इन्होंने वेल्लूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक वीरवल्लाल तृतीय था। जिसे मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।
- अलाउद्दीन खलजी ने द्वारसमुद्र को नहीं जीत पाया था।

कश्मीर का इतिहास

- कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी संस्कृत के कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।

➤ **राजतरंगिणी**

➤ यह ऐसा संस्कृत साहित्य है जिसमें क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लिखने का पहली बार प्रयास किया गया।

- यह ग्रंथ ऐतिहासिक रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कल्हण ने पक्षपात रहित होकर राजा के गुण और पाप का वर्णन किया है।

➤ **इसमें तीन वंशों की जानकारी हैं–**

(i) कार्कोट वंश
(ii) उत्पल वंश
(iii) लोहार वंश

(i) कार्कोट वंश (59[illegible] ई.-855 ई.)

- इस वंश के संस्थापक दुर्लभवर्धन थे। इसके दरबार में ह्वेनसांग (कश्मीर) आया था।
- इस वंश का शासक [illegible]ड सबसे क्रूर शासक था।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक "ललितादित्य मुक्तापिड" था। जिसने म[illegible] चंदेल शासक यशोवर्मन को पराजित कर दिया।
- कश्मीर में सूर्य का प्रसिद्ध मार्तण्ड मन्दिर ललितादित्य द्वारा बनवाया गया था।
- इस वंश का अंतिम शासक उत्पलापीड को मंत्री ने राज्यच्युत करके अवंतिवर्मन को गद्दी पर बैठाया और कार्कोट वंश का अंत हुआ।

(ii) उत्पल वंश

- इस वंश का संस्थापक अवन्तिवर्मन थे। इन्होंने अवन्तिपुर नामक नगर बनवाई।
- रत्नाकार एवं आनंदवर्धन नामक कवि अवन्तिवर्मन के दरबार में रहा करते थे।
- अवन्तिवर्मन का योग्य मंत्री शूर था
- अवन्तिवर्मन की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी सुगंधा ने शासन की।
- इनकी मृत्यु के बाद इस वंश की बागडोर संग्रामराज के हाथ में आई। किन्तु संग्रामराज इस वंश का अंत करके लोहार वंश की स्थापना कर दी।

(iii) लोहार वंश

- इस वंश के संस्थापक संग्रामराज थे।
- इस वंश का शासक 'हर्ष' एक योग्य शासक था।
- इसके समय कश्मीर में भीषण अकाल पड़ा। इसने नोरों की उणाध[illegible]ण की।
- हर्ष स्वयं एक कवि था और कई भाषाओं एवं विद्याओं का ज्ञाता भी था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने राजतंरगिणी पुस्तक की रचना की थी
- इस वंश का अंतिम शासक जयसिंह था।
- इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।
- यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनूल-आबे-दीन' थे।
- इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

वर्मन वंश (कामरूप असम)

- असम का प्राचीन नाम कामरूप था।
- इस वंश का संस्थापक पुष्यवर्मन था। यह समुद्रगुप्त के समकालीन था।
- असम को पहले प्रयागज्योतिषपुर भी कहा जाता था। यह पुष्यपुर की राजधानी थी।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक भूतिवर्मन था।
- इस वंश का अंतिम शासक भास्करवर्मन था।
- पुष्यभूति वंश के हर्षवर्धन ने समस्त कामरूप के साथ बंगाल के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया और इसी के साथ कामरूप के वर्मन वंश का अंत हो गया।
- अंत में कामरूप पालवंश का अंग बन गया।

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

13. मूर्ति एवं मंदिर स्थापत्यकला (Sculpture and Temple Architecture)

मूर्तिकला तथा मंदिर निर्माण की शैली

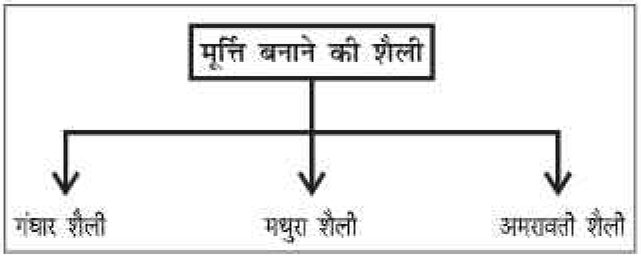

(i) गंधार शैली

- इस शैली का विकास कुषाण वंश के प्रमुख शासक कनिष्क के शासन काल में हुआ था।

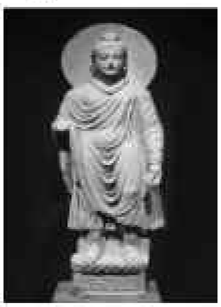

- सबसे पहले इस शैली में मुर्त्ति मिट्टी, चुना और प्लास्टर को मिलाकर बनाई जाती थी लेकिन इस प्रकार की मूर्त्ति बहुत कमजोर होती थी इसलिए बाद में ये काले और भूरे रंग के पत्थर से बनाए जाने लगे।
- ये मुर्त्तियाँ मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर भारत में बनाई जाती थी। जिसका प्रमुख केन्द्र तक्षशिला था।
- इस शैली की 95% मूर्त्तियाँ महात्मा बुद्ध की बनी थी।
- इस शैली में महात्मा बुद्ध के बहुत बड़े घुंघराले बाल दिखाए गए हैं।
- इस शैली में महात्मा बुद्ध को बहुत बलशाली, बलिष्ट शरीर (गठिला), योग करते हुए, ध्यान की मुद्रा में और युवा अवस्था में दिखाया गया है।
- इसमें महात्मा बुद्ध के पीछे होलोमंडल या प्रभामंडल सेप दिखाई गई है। कपड़े को दोनों ओर से लपेटकर पूरा शरीर ढका गया है।
- इस शैली का उल्लेख वैदिक एवं सांस्कृतिक साहित्य में है। यह कला युनान से प्रभावित है। इसलिए इसे ग्रीक इंडियन कला भी कहा जाता है।
- इस कला में मूर्त्ति बैठी, खड़ी, आँखे बंद, योग और ध्यान मुद्रा में बनाई गई है।
- यह शैली अपोलो देवता से प्रभावित है।

(ii) मथुरा शैली

- मथुरा शैली का विकास मुख्यत: उत्तर भारत में हुए थे।

- मथुरा, वाराणसी और कौशाम्बी इसके प्रमुख केन्द्र थे। इसकी शुरूआत मथुरा से हुई इसलिए इसे मथुरा शैली कहा जाता था।
- इस शैली में चौड़ा सीना, बालविहिन और नग्न मूत्तियाँ भी थी। ज्यादातर मुत्तियों में बायां हाथ आस्नस्थ है और दाहिने हाथ को अभय मुद्रा (आशिर्वाद) में उठाये हुए हैं और कपड़े बाएं कंधे पर पड़े हुए हैं।

➤ **इस शैली में तीन धर्म की मूर्त्तियाँ मिलती है–**
बौद्ध, जैन एवं हिन्दू।

- यह शैली पूर्णत: भारतीय शैली थी। इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग हुआ है।

(iii) अमरावती शैली

- इस शैली का विस्तार मुख्यत: दक्षिण भारत में हुई थी।

- इस शैली में पूजा और योग को दिखलाकर कहानियों को बताया गया है।
- इसमें कई मुत्तियाँ एक साथ बनाई गई थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस शैली की मुत्तियाँ मुख्यत: सफेद संगमरमर की बनाई जाती थी।
- इस कला की मुर्तियाँ जातक कथाओं की है और इसे चित्रण के माध्यम से बनाया गया है।
- ये दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के अमरावती नामक स्थान पर विकास हुआ। इसलिए इसे अमरावती शैली कहा जाता था।

शैली	जगह	रंग	वंश	धर्म	अवस्था	संकेत
गंधार	पश्चिम भारत	काला	कुषाण	बौद्ध	योग	चिंता
मथुरा	उत्तर भारत	लाल	कुषाण	बौद्ध + जैन + हिन्दू	आशिर्वाद	प्रसन्नता
अमरावती	दक्षिण भारत	सफेद	सातवाहन	बौद्ध	ग्रुप	कहानी

स्थापत्य कला

- भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।
- भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपने चरम पर होती है।
- मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

मंदिर निर्माण की शैली
- नागर शैली
- विमानन शैली (द्रविड़ शैली)
- बे... शैली

(i) नागर शैली

- नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखन क... ...ते हैं।

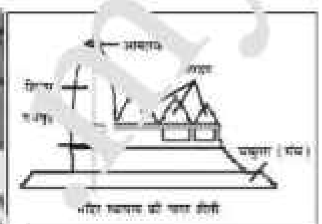

- यह उत्तर भारत में हिम...लय से लेकर विंध्याचल पर्वत तक मिलते हैं।
- इसके शिख... ऊँचे नहीं होते हैं। शिखर के नीचे भगवान की मूर्त्ति रखी जाती है जहाँ भगवान की मूर्त्ति रखी जाती है उसे गर्भ गृह कहत... ।
- ... मंदिर का सबसे प्रमुख जगह गर्भ गृह ही होता है।
- गर्भ गृह में ज्यादा भीड़ न हो इसलिए उसमें कई मंडप बने होते हैं ...ी वहाँ लोग प्रतिक्षा कर सके।
- गर्भ गृह के दरवाजे पर गंगा और यमुना की मूर्त्ति की लगी होती थी।
- इस शैली की मंदिरो में दो प्रकार की सीढ़ी होती थी शुरूआत की जो सीढ़ी होती थी उसे जगती, चबुतरा जबकि अगली सीढ़ी को पिठ कहा जाता था।
- नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं हो... ...ि इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए ...े पंचाय...न शैली भी कहा जाता था।
- इस मंदिर के चारों ओर चारदीवारी नहीं रह... थी। य... किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि ...र ... ...ं नदियों की कोई कमी नहीं है और मंदिर में को... भव्य द्वा... नहीं होता था।
- इस शैली की कई विशेषता थी जो उ... में है उसे उड़िया शैली कहते है। इसकी एक ...खा मध्य प्रदेश में है जो कंदरिया महादेव खजुराहो का मं...र है।
- एक शाखा गुजरा... ...ं भी है जि... सोलंकी शैली कहते हैं।

(ii) विमानन शै...ी/द्रा... शैली

- द्रविड़ शैली ... वि... ...चोल और पल्लव काल में हुए थे।

- ये मंदिर हमें दक्षिण भारत में देखने को मिलती हैं।
- दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी इसलिए इस शैली में निर्मित मंदिर के आस-पास तालाब होते थे।
- यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पूरे दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मुख्य द्वार होते थे। जिसे हमलोग गोपुरम या गोपुरा कहते थे।
- मुख्य द्वार के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी।
- यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था।
- मंदिर बीच में रहती थी इस शैली की मंदिर सीढ़ीनुमा होती थी और सीढ़ीनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था।
- विमानन शैली में मंडप और गर्भ गृह सटा नहीं रहता है। उसमें अंतराल रहता है क्योंकि यही पर परिक्रमा किया जाता है।
- गर्भ गृह के बाहर दरवाजे पर यक्ष और यक्षीणी की मूर्त्ति लगी रहती है।

(iii) बेसर शैली

- यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- यह शैली विंध्य से लेखकर कृष्णा नदी तक मिलता है।
- इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसज्जित होता है।

➢ **कुछ प्रमुख शैली के उदाहरण–**

- नागर शैली – मीनाक्षी मंदिर (मदुरै)
- विजयनगर शैली – विट्ठल स्वामी मंदिर (विजयनगर), लोटस महल (हम्पी)
- होयशल शैली – सोमनाथपुर में केशव मंदिर (विष्णु को समर्पित)
- पाल शैली – चित्रकला

कुछ प्रमुख मंदिर और उसकी शैली

नागर शैली	
प्रमुख मंदिर	**शैली**
भितरगांव मंदिर	कानपुर
दशावतार मंदिर	झांसी
लक्ष्मण मंदिर	सिहपुर
कन्दरिया महादेव मंदिर	खजुराहो (एम.पी.)
लिंगराज मंदिर	भुवनेश्वर (उड़ीसा)
जगन्नाथ मंदिर	पुरी (उड़ीसा)
सूर्यमंदिर	कोणार्क उड़ीसा
द्रविड़ शैली	
प्रमुख मंदिर	**शैली**
वृहदेवश्वर मंदिर	तंजावुर
शिवमंदिर	गंगै कोंडचोलपुरम
महावलीपुरम रथ मंदिर	महावलिपुरम
बेसर शैली	
प्रमुख मंदिर	**शैली**
डोडा बसप्पा	दम्बल
रामी के मन्दिर	

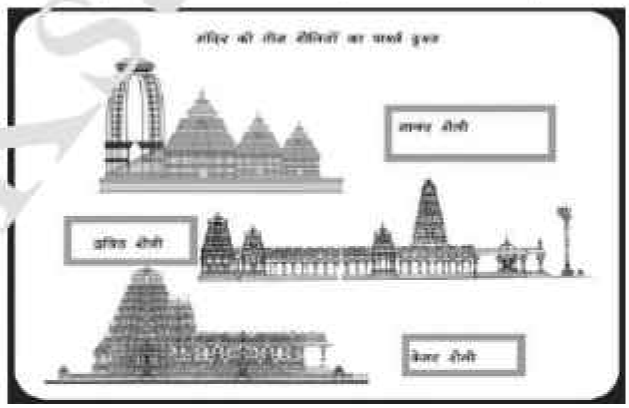

भारत के प्रमुख मंदिर

क्र.सं.	मंदिर	शासक	राज्य एवं स्थान
1.	कोणार्क सूर्य मंदिर	नरसिंह देव-I	पुरी (ओडिशा)
2.	जगन्नाथ मंदिर	गंगा देव	पुरी (ओडिशा)
3.	वृहदेश्वर मंदिर	राज राज चोल	पुरी (ओडिशा)
4.	विरूपाक्ष मंदिर	चालुक्य विक्रमादित्य-II	पुरी (ओडिशा)
5.	लिंगराज मंदिर	ययाति केशरी	भूवनेश्वर (ओडिशा)
6.	विट्ठल मंदिर	राजादेव राव-II	कर्नाटक
7.	सबरीमाला मंदिर	राजा राजशेखर	कर्नाटक
8.	पदमनाभ स्वामी	मार्तण्ड वर्मा	केरल
9.	मुक्तेश्वर मंदिर	नंदीवर्मन	कांचीपूरम (तमिलनाडु)
10.	वेंकटेश्वर मंदिर	श्रीकृष्ण देवराय	तिरूपति (आंध्र प्रदेश)
11.	लेपाक्षी मंदिर	विरूपन्ना & वीरन्ना भाई	अनंतपुर (आंध्र प्रदेश)
12.	सिद्धि विनायक मंदिर	देउबाई पाटिल	मुंबई (महाराष्ट्र)
13.	त्र्यंबकेश्वर मंदिर	नाना साहब पेशवा	नासिक (महाराष्ट्र)

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

क्र.सं. मंदिर	शासक	राज्य एवं स्थान
14. एलौरा का कैलाश मंदिर	राजराज-I	सम्भाजी नगर (महाराष्ट्र)
15. सोमनाथ मंदिर	चंद्रदेव सोमराज	गिर (गुजरात)
16. द्वारकाधीश मंदिर	वज्रनाथ	द्वारका (गुजरात)
17. एकाश्म मंदिर	नरसिंहवर्मन-I	महाबलिपुरम (तमिलनाडु)
18. कैलाश नाथ मंदिर	नरसिंहवर्मन-I	काँची (तमिलनाडु)
19. चौंसठ योगनी मंदिर	देवपाल	खजुराहो (मध्यप्रदेश)
20. लक्ष्मण मंदिर	यशोवर्मन	दतरपुर (मध्यप्रदेश)
21. महाकालेश्वर मंदिर	कुमार सेन	उज्जैन (मध्यप्रदेश)
22. कामाख्या मंदिर	नर नारायण	गुहावटी (असम)
23. दक्षिणेश्वर काली मंदिर	रानी राश मोनी	कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
24. बेलूर मठ	स्वामी विवेकानन्द	कोलकाता (पश्चिम बंगाल)
25. वैद्यनाथ मंदिर	राजा पूरनमल	देवघर (झारंखड)
26. महाबोधि मंदिर	अशोक	गया (बिहार)
27. विष्णुपद मंदिर	रानी अहिल्याबाई	गया (बहार)
28. लक्ष्मी नारायण	बिरला परिवार	दिल्ली
29. काशी विश्वनाथ	अहिल्याबाई बेल्कर	वाराणसी (उत्तरप्रदेश)
30. वैष्णो माता मंदिर	श्रीधर	कटरा (जम्मू कश्मीर)
31. तारा मंदिर	बलवीर सेन	लद्दाख
32. बद्रीनाथ मंदिर	शंकराचार्य	उत्तराखण्ड
33. केदारनाथ मंदिर	पांडव राजा जनमेजय	उत्तराखण्ड
34. अंकोरवाट मंदिर	सूर्यवर्मन-II	कंबोडिया
35. पशुपति नाथ मंदिर	पशुप्रेक्ष	काठमाण्डु (नेपाल)

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

14. भक्ति आंदोलन (Bhakti Movement)

भक्ति आन्दोलन 600–800 AD

- पूर्व मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन, दक्षिण भारत में वर्ण व्यवस्था तथा छूआछूत के कारण अत्यधिक फैल गयी। यहां से भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ। भक्ति आन्दोलन की शुरुआत सर्वप्रथम नयनार सन्तों ने किया। इस आन्दोलन की शुरुआत करने का श्रेय अलवार सन्तों को भी जाता है।
- नयनार, शैव धर्म के अनुयायी थे वहीं अलवार, वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- भक्ति आन्दोलन का एक सुदृढ़-स्वरूप देने का श्रेय शंकराचार्य को जाता है।

➢ **शंकराचार्य**

- शंकराचार्य को भक्ति आंदोलन का प्रथम संत माना जाता है। उनका जन्म केरल के कलाडी में 788 ई. में हुआ था।
- इनके दर्शन का आधार वेदांत अथवा उपनिषद् था।
- शंकराचार्य ने दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को बौद्ध तथा जैन धर्म के प्रभाव को कम करने के लिए किया।
- 820 ई. में हिमालय की तलहटी में स्थित केदारनाथ में मात्र 32 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गई।
- इन्होंने अपने विचार के प्रसार के लिए भारत के चारों दिशा में पीठ (मठ) का निर्माण कराया।

1.	उत्तर	→	ज्योतिष पीठ (बद्रीनाथ) उत्तराखण्ड
2.	दक्षिण	→	श्रृंगेरी पीठ (मैसूर) कर्नाटक
3.	पूरब	→	गोवर्धन पीठ (पुरी) ओडिशा
4.	पश्चिम	→	शारदा पीठ (द्वारका) गुजरात

- शंकराचार्य ने अद्वैतवाद का मत दिया और कहा कि यह संसार झूठा है। ब्रह्म सत्य है। इन्होंने स्मृति-सम्प्रदाय की स्थापना किया।

Note :– 12वीं सदी में शंकराचार्य के मत को कई विद्वान ने काट दिया।

1. माधवाचार्य ने द्वैतवाद का मत दिया और ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना किया।
2. निम्बाकाचार्य ने द्वैता द्वैतवाद का मत दिया और सनक सम्प्रदाय की स्थापना किया।
3. बल्लभाचार्य ने शुद्ध द्वैतवाद का मत दिया और पुष्टि सम्प्रदाय की स्थापना किया।
4. रामानुजाचार्य ने विशिष्टता द्वैतवाद का मत दिया और श्री सम्प्रदाय की स्थापना किया।

- प्रारम्भ में भक्ति आन्दोलन दक्षिण भारत तक सीमित था। भक्ति आन्दोलन को उत्तर भारत में लाने का श्रेय रामानंद को जाता है। रामानन्द ने अपना उपदेश हिन्दी में देना प्रारम्भ किया।
- 16वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई।
- उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन उच्च-नीच तथा छुआ-छुत के विरुद्ध था। उत्तर भारत का भक्ति आंदोलन दो भागों में बंट गया।

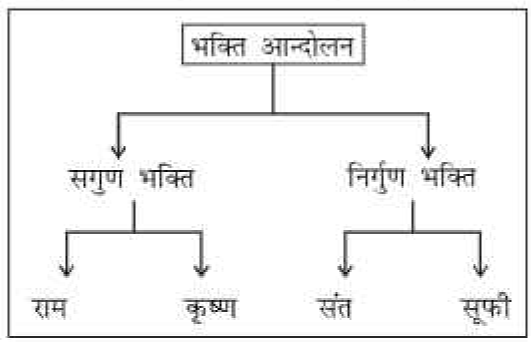

सगुण भक्ति

- इस भक्ति के भक्त भगवान को एक विशेष रूप देते हैं। वे भगवान की मूर्ति या चित्र बनाते हैं और उसकी पूजा करते हैं। सगुण भक्ति दो भागों में बटा-रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति।
- यह अवतारवाद को मानते थे।

राम-भक्ति

- इस शाखा के भक्त-भगवान राम की अराधना करते थे। इस शाखा के सबसे प्रमुख भक्त तुलसीदास थे। जिन्होंने अवधी भाषा में रामचरितमानस की स्थापना की। उनकी अन्य प्रमुख रचना कवितावली, दोहावली, विनयपत्रिका है। ये अकबर के समकालीन थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- अकबर ने इन्हें नवरत्न में शामिल होने का प्रस्ताव दिया। लेकिन उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
- दक्षिण भारत में रामभक्ति को फैलाने का कार्य त्यागराज ने किया।

प्रमुख संत– रामानंद, रामानुजाचार्य, गोस्वामी तुलसी दास, धन्ना, रैदास, रामदास, एकनाथ आदि।

कृष्ण-भक्ति

- इस शाखा के सारे भक्त भगवान कृष्ण की अराधना करते थे। कृष्ण भक्ति में सबसे प्रमुख संत विट्ठल-स्वामी थे। इन्होंने आठ शिष्यों को शिक्षा दिया। जिन्हें संयुक्त रूप से अष्टाछाप कहा जाता है। इस अष्टाछाप में सबसे प्रमुख शिष्य सूरदास थे।
- सूरदास की रचना सूर-सागर प्रमुख है।
- महाराष्ट्र के क्षेत्र में कृष्ण-भक्ति को एक साथ तुकाराम इत्यादि ने फैलाया।
- तुकाराम शिवाजी के समकालीन थे। गुजरात के क्षेत्र में कृष्ण-भक्ति का प्रचार नरसिंह मेहता ने किया। इनकी कविता **"वैष्णव जन तो तेने कहिए"** है। यह महात्मा गांधी का भी पसंदीदा गीत था।
- बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के क्षेत्र भक्ति आन्दोलन का प्रचार चैतन्य महाप्रभू ने किया था। इन्होंने ही हरिकीर्तन प्रारम्भ किया।
- कृष्ण भक्ति में संगीत बहुत ज्यादा है।

प्रमुख संत– चैतन्य, सूरदास, मीराबाई, तुकाराम, ज्ञानदेव, नामदेव आदि।

सगुण भक्ति के प्रमुख संत

चैतन्य

- इनका जन्म बंगाल के नवद्वीप या नदिया में हुआ था।
- इसका वास्तविक नाम विश्वंभर था तथा बाल्यावस्था में ये निमाई के नाम से जाने जाते थे।
- चैतन्य सगुण धारा के कृष्ण भक्ति शाखा के थे। उन्हें बंगाल में आधुनिक वैष्णववाद या गौडीय वैष्ण धर्म का संस्थापक माना जाता है।
- इनके अनुयायी उन्हें कृष्ण या विष्णु का अवतार मानते थे तथा उन्हें गौरांगमहाप्रभु के नाम से पूजते थे।
- चैतन्य ने भक्ति में कीर्तन को मुख्य स्थान दिया।

वल्लभाचार्य

- इनका जन्म तेलंगाना के ब्राह्मण परिवार में वाराणसी में उस समय हुआ, जब उनका परिवार काशी की तीर्थयात्रा पर आये थे।
- इन्होंने वैष्णव संप्रदाय की स्थापना की।
- ये विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय के समकालीन थे।
- बल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत दर्शन की अवधारणा दी और ईश्वर प्राप्ति के लिये पुष्टिमार्ग एवं भक्तिमार्ग पर विश्वास किया।

मीराबाई

- मीराबाई सोलहवीं शताब्दी के भारत की एक महान महिला संत थी। वे मेड़ता के राजा रत्नसिंह राठौर की इकलौती पुत्री थी।
- मीराबाई का विवाह राणासांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ परंतु वह जल्द ही विधवा हो गई थीं।
- वह सगुण भक्ति धारा के कृष्ण की भक्त थीं।

तुलसीदास

- तुलसीदास का जन्म 1532 ई. में राजापुर स्थान में हुआ था जो उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में है।
- तुलसीदास के गुरु का नाम नरहरिदास था।
- तुलसीदास सगुण भक्ति धारा की राम भक्ति शाखा के प्रमुख संत थे।
- ये मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे।
- उन्होंने अवधी भाषा में रामायण की रचना की, जो रामचरित मानस के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त अवधी में ही उन्होंने गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका आदि की रचना की।

निर्गुण भक्ति

- इस भक्ति के सन्त किसी की मूर्ति या चित्र नहीं बनाते थे। वे बिना मूर्ति के ही अराधना करते थे। इनका मानना था कि ईश्वर कण-कण में विद्यमान हैं।
- निर्गुण भक्ति दो भागों में बंट गया। संत भक्ति तथा सूफी भक्ति।

संत भक्ति

- संत भक्ति के अंतर्गत रामानंद, कबीर, रैदास, गुरुनानक आदि जैसे संत आते हैं–

रामानंद

- इनका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। ये रामनानुज के शिष्य थे।
- इसने पहली बार उपदेशों के हिन्दी में देना प्रांरभ किया।
- ये राम और सीता के उपासक थे।
- इनके 12 प्रमुख शिष्य थे, जो अलग-अलग जाति से थे जिनमें से दो महिला शिष्या भी थी– पद्मावती और सुरसी।

कुछ प्रमुख शिष्य एवं उनकी जातियाँ–

- कबीरदास– जुलाहा
- रैदास – चमार
- धन्ना – जाट
- पीपा – राजपूत
- सेन – नाई

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- **कबीर**
- संत कबीर का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हुआ था।
- यह ईश्वर के निराकार रूप के पूजक थे। अर्थात् यह निर्गुण धारा को मानती थी।
- निर्गुण भक्ति धारा में कबीर पहले संत थे, जो संत होकर भी अंत तक गृहस्थ बने रहे। उनकी विचाराधारा विशुद्ध अद्वैतवादी थी।
- कबीर के उपदेश साखी, सबद तथा रमैनी में वर्णित है, जिन्हें हिन्दू-मुसलमान दोनों अपनाना पसंद करते हैं।
- इनको मानने वालो को कबीर पंथी कहते हैं। इनके शिक्षाएँ/दोहे बीजक पुस्तक में संगृहित है
- ये सिकंदर लोदी के समकालीन थे।
- इनकी मृत्यु 1510 ई. में मगहर (उत्तरप्रदेश) में हुई थी।

- **रविदास/रैदास**
- ये चमार या मोची के जाति से आते थे।
- इन्हें संतों का संत कहा जाता था।
- सिक्खों के प्रमुख धार्मिक ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में रविदास के तीस से अधिक भजन संगृहीत है।
- इनके अनुसार मानव सेवा ही धर्म एवं भक्ति की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम है।

- **दादू**
- दादू का जन्म अहमदाबाद में एक जुलाहे के परिवार में हुआ था।
- दादू ने एक असांप्रदायिक मार्ग (निपख संप्रदाय) की स्थापना की।
- सुंदरदास, रज्जब और सूरदास इनके प्रमुख शिष्य थे।
- सूरदास अकबर एवं जहाँगीर के समकालीन थे तथा राधा-कृष्ण के भक्त थे।
- सूरदास ने ब्रजभाषा में तीन ग्रंथों-सूरसारावली, सूरसागर एवं साहित्य लहरी की रचना की।

- **प्रमुख प्रवर्तक एवं उनके संप्रदाय**

प्रवर्तक	मत	संप्रदाय
शंकराचार्य	अद्वैतवाद	स्मृति संप्रदाय
रामनुजाचार्य	विशिष्टाद्वैत	श्री संप्रदाय
माधवाचार्य	द्वैतवाद	ब्रह्म संप्रदाय
वल्लभाचार्य	शुद्धाद्वैत	रुद्र संप्रदाय
निंबाकाचार्य	द्वैताद्वैत	सनक संप्रदाय
गुरु नानक	–	सिक्ख संप्रदाय
नामदेव	–	वारकारी संप्रदाय
शंकर देव	–	एकशरण संप्रदाय

सिक्ख धर्म

- **गुरु नानक देव**
- यह सिख धर्म के प्रथम गुरु गुरु थे।
- यह संत भक्ति के संत थे।

- इनका जन्म 15 अप्रैल, 1469 ई. में तलवंडी में एक खत्री परिवार में हुआ था।
- यह स्थान वर्तमान समय में पाकिस्तान में है, जो ननकाना साहिब के नाम से प्रसिद्ध है।
- इनके पिता का नाम कालू चंद मेहता, माता का नाम तृप्ता, पत्नी का नाम सुलक्षणी तथा पुत्र का नाम श्रीचंद था।
- इनको ज्ञान की प्राप्ति सुल्तानपुर में बेई नदी के किनारे हुआ था।
- गुरु नानक ने सिख धर्म की स्थापना किया और गरीबों को मुफ्त में भोजन (लंगर) व्यवस्था शुरु किया किन्तु यह सुचारू रूप से नहीं चल पाया था।
- अंतिम समय उन्होंने करतार साहिब में बिताये थे। इन्होंने ही गुरु की परंपरा को प्रारम्भ किया था।
- इनके कविताओं एवं गीतों का संकलन एक पुस्तक के रूप में किया गया। जो आदि ग्रंथ के नाम से प्रकाशित हुआ।
- इनकी मृत्यु 1539 ई. में करतारपुर (पाकिस्तान में) हो गई।
- यह **बाबर** के साथ-साथ सल्तनत काल के अंतिम शासक **इब्राहिम लोदी** और महान संत **चैतन्य महाप्रभु** एवं **कबीरदास** के समकालीन थे।

- **गुरु अंगद देव**
- ये दूसरे गुरु थे।
- इनके बचपन का नाम लहना सिंह था।
- इन्होंने गुरुनानक देव की जीवनी को लिखा था।
- इन्होंने लंगर व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाया।
- इन्होंने गुरु-मुखी लिपि का खोज किया।
- यह शेरशाह एवं हुंमायू के समकालीन थे।

- **गुरु अमरदास**
- ये तीसरे गुरु थे।
- इन्होंने पर्दा-प्रथा, सती-प्रथा (कुप्रथा) इत्यादि का विरोध किया।
- इन्होंने हिन्दू विवाह पद्धति से अलग हटकर सिखों के लिए एक नई विवाह पद्धति को लागू किया जिसे लवन पद्धति कहा गया।
- यह पारिवारिक जीवन में रहते हुए गुरु के कर्त्तव्यों का पालन किया।
- यह अकबर के समकालीन थे।

- **गुरु रामदास**
- ये चौथे गुरु थे।
- इनके समय से गुरु का पद वंशानुगत हो गया।
- इनका अकबर से अच्छा सम्बन्ध था। अकबर ने इन्हें अमृतसर शहर के लिए 500 बिगहा जमीन दान में दिया।
- इन्होंने अमृतसर नामक एक तालाब बनाया था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- अमृतसर Airport का नाम गुरु रामदास Internatinal Airport है।
- यह अकबर के समकालीन थे।

➢ गुरु अर्जुन देव

- ये पांचवें गुरु थे।
- इन्होंने ही स्वर्ण मन्दिर की स्थापना की।
- इन्होंने गुरुग्रन्थ साहिब की रचना की थी। इन्हें आदि ग्रन्थ भी कहते हैं।
- गुरु अर्जुन देव ने मसनद प्रथा को प्रारंभ किया था जिसके अंतर्गत सिख लोग अपनी आय का 10 प्रतिशत गुरु के पास जमा करते थे।
- इन्होंने जहांगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को समर्थन दिया था। जिस कारण जहांगीर ने इन्हें फांसी दे दिया।

Note :– राजा रंजीत सिंह ने हरमंदिर पर सोने की परत चढ़वाया जिसके बाद हरमंदिर स्वर्ण मंदिर कहलाने लगा।

- सिख धर्म में सबसे ज्यादा जोर मानवता पर दिया गया है।
- यह अकबर तथा जहांगीर के समकालीन थे।

➢ गुरु हरगोविन्द

- ये छठवें गुरु थे।
- इन्होंने अकाल तख्त की स्थापना किया तथा नगाड़ा बजाने की परम्परा शुरु किया।
- इन्होंन स्वयं को सच्चा बादशाह घोषित किया और अमृतसर की घेराबंदी कराकर स्वयं को शासक के रूप में घोषित कर दि
- यह जहांगीर के समकालीन थे।

➢ गुरु हरराय

- ये सातवें गुरु थे।
- इनका मुगल बादशाह दारा शिकोह से अच्छा सम्ब था।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।

➢ गुरु हरकिशन

- ये आठवें गुरु थे।
- इनका कार्यकाल बहुत छोटा था।
- इनकी मृत्यु चेचक के कारण हो गयी थी।

➢ गुरु तेगबहादुर

- ये नौवें गुरु थे।
- इन्होंने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर द्वितीय को शरण दे दिया। जिस कारण औरंगजेब न इन्हें इस्लाम धर्म कुबुल करने को कहा किन्तु इन्होंने इस्लाम धर्म कुबुल नहीं किया। जिस कारण औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक पर हत्या कर दिया जहाँ आज शिशगंज गुरुद्वारा है।
- यह औरंगजेब के समकालीन थे।

➢ गुरु गोविन्द सिंह

- ये दसवें तथा अंतिम गुरु थे।
- इनका जन्म 26 दिसम्बर, 1666 को पटना साहिब में हुआ था। किन्तु इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अमृतसर में हुई थी।

- इनकी पिता का नाम गुरु तेगबहादुर तथा माता का नाम गुजरी देवी थी।
- इनके बाद गुरु का पद समाप्त हो गया।
- इन्होंने सिखों को एक सैनिक टुकड़ी में ढाल दिया और 13 अप्रैल 1699 ई. में वैशाखी के दिन आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना किया।
- इन्होंने पाहुल प्रणाली की प्रथा को जन्म दिया था।
- इन्होंने 5 ककार की स्थापना किया जो प्रकार है– केश, कंघा, कृपाण, कछा, कड़ा रखना अनिवार्य कर दिया।
- इन्होंने कहा कि सिख अपनी पीठ कभी नहीं दिखायेगा। इन्होंने मुगलों का मुँहतोड़ जवाब दिया।
- इनका कहना था-

"चिड़िया नु मैं बाज लड़ावा
गिदर नु मैं शेर बनावा
सवालख नु एक लड़ावा
तब गोविन्द सिंह नाम कहावा"

- 1705 में औरंगजेब के कहने पर बुलखान नामक व्यक्ति ने महाराष्ट्र के नानदेड़ में गोविन्द सिंह की हत्या कर दी। गोविन्द सिंह के मृत्यु के बाद सबसे बड़ा सिख योद्धा बंदा बहादुर था। जिसने हजारों की संख्या में मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
- औरंगजेब के इशारे पर बंदा बहादुर की भी हत्या कर दी गई। इसके बाद सिख धर्म छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया। जिसे मिशल कहते हैं। सबसे प्रमुख मिशल सुकर चकिया मिशल था। जिससे राजा रंजीत सिंह आते थे। इन्होंने ही स्वर्ण मंदिर के दीवारों पर सोने की चादर चढ़वाई थी।
- यह औरंगजेब के साथ-साथ बहादुरशाह के भी समकालीन थे।

Note :– सिखों में क्रमश: 3 वर्ग होती है। जट, ज्ञानी, सरदार (शनिदेवल, भाग मिल्खा सिंह, मनमोहन सिंह)।

सूफी भक्ति

- सूफी शब्द की उत्पति अरबी भाषा के सफा शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है पवित्रता।
- पहले सूफी सन्त के रूप में मैसूर हल्लाज का नाम आता है। इन्होंने अनहलत की उपाधि धारण की जिसका अर्थ होता है ईश्वर से मिलने वाला।
- सूफी विचारधारा में गुरु (पीर) और शिष्य (मुरीद) के बीच संबंध का महत्त्व बहुत अधिक है। प्रत्येक पीर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करता था जिसे **वली** कहते थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

चिश्ती सम्प्रदाय

- भारत में सबसे प्रमुख सम्प्रदाय चिश्ती सम्प्रदाय थी। भारत में इसकी स्थापना का श्रेय ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र राजस्थान के अजमेर में बनाया।
- चिश्ती सम्प्रदाय के संत उदारवादी (विनम्र) होते थे। ये कट्टर नहीं होते।
- मोइनुद्दीन चिश्ती के गुरु उस्मान हासनी थे।
- मोइनुद्दीन चिश्ती के सबसे प्रिय शिष्य ख्वाजा बख्तियार काकी थे।
- बख्तियार काकी के शिष्य बाबा फरीद तथा कुतुबुद्दीन ऐबक थे।
- बाबा फरीद के उपदेशों को गुरु ग्रन्थ साहिब में भी रखा गया है।
- बाबा फरीद के सबसे प्रिय शिष्य निजामुद्दीन औलिया थे, ये सात सुल्तानों का काल देखे थे।
- बाबा फरीद दिल्ली सल्तनत के सुल्तान बलबन के दामाद थे फिर भी उन्होंने राजकीय संरक्षण को स्वीकार नहीं किया।
- निजामुद्दीन औलिया के सबसे प्रिय शिष्य अमीर खुसरो थे।
- निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो दोनों का मकबरा दिल्ली में एक ही जगह है।
- अकबर के समकालीन सूफी शेख सलीम चिश्ती थे। इन्हीं से प्रभावित होकर अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा था। जो आगे जाकर जहांगीर के नाम से जाना गया।
- दक्षिण भारत में चिश्ती संप्रदाय का प्रचार करने का श्रेय सैयद मुहम्मद गेसूदराज को ही प्राप्त है।

Note :– ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती द्वारा चलाए गए सम्प्रदायों को चिश्ती सम्प्रदाय कहते हैं। यह भारत का सबसे बड़ा सूफी संप्रदाय है।

सुहरावर्दी सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदाय के स्थापना का श्रेय बहाउद्दीन जकारिया को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र पाकिस्तान के मुल्तान को बनाया था। इस शाखा के सूफी कठोर व्रत का पालन नहीं करते हैं। बल्कि सामान्य जीवन को जीते थे।

फिरदौसी सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदाय के स्थापना का श्रेय याहिया मनेरी को जाता है। इन्होंने अपना केन्द्र बिहार के मनेर शरीफ (दानापुर) को बनाया।
- बिहार में सबसे प्रचलित फिरदौसी सम्प्रदाय थी।

नक्शबंदी सम्प्रदाय

- नक्शबंदी सम्प्रदाय के संस्थापक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे।
- इस सम्प्रदाय के सूफी कठोर व्रत का पालन करते थे तथा कट्टर थे।
- धार्मिक कट्टर का अर्थ होता है धार्मिक नियम को कठोरता पूर्ण लागू करवाने वाला।
- मुगल बादशाह औरंगजेब इसी सम्प्रदाय का अनुयायी था। यह एक प्रत्यक्षवादी दर्शन, (वजहत-उल-शुद) था।

कादिरी सम्प्रदाय

- इस सम्प्रदाय के संस्थापक बगदाद के अब्दुल कादिर जिलानी थे परन्तु भारत में इस सिलसिले के शुरूआत सैयद मोहम्मद जिलानी ने की थी।
- मुगल बादशाह शाहजहाँ का ज्येष्ट पुत्र दारा शिकोह, कादिरी संप्रदाय का ही अनुयायी था।

Note :- पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम के जनक अब्दुल कादिर को कहा जाता है, जो सूफी न होकर एक परमाणु वैज्ञानिक थे।

➢ **कट्टर**

- वैसे लोग जो नियमों की शक्ति से पालन करते हैं कट्टर कहलाते हैं।

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

15. राजपूत वंश (Rajput Dynasty)

राजपूत काल या पूर्वमध्यकाल (800ई.-1200ई.)

- राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
- राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक "पृथ्वीराज रासो" से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुंड (हवन कुंड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं–

(i) प्रतिहार	(ii) परमार
(iii) चालुक्य	(iv) चौहान

(i) प्रतिहार

- पीछे पढ़ चुके हैं।

(ii) परमार वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- अंततः इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक मूल राज थे।
- इस वंश का शासक भीम-I के सामंत विमलशाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- महमूद गजनवी ने भीम-I के काल मे ही सोमनाथ मंदिर को लूटा था।
- इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गोरी को हराया था।
- यह मोहम्मद गोरी को भारत में प्रथम पराजय थी।
- अंततः इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

चौहान वंश

- इस वंश का उदय जंगल देश में हुआ जिसे बाद में सपादलक्ष (सवा लाख गांव)कहा गया। जिसकी राजधानी अहिक्षत्रपुर थी।
- इस वंश के संस्थापक वासुदेव (सिंह राज) थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक अरूणाराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रहराज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत नाट्य लिखा था।
- इस वंश के अगले शासक पृथ्वीराज-III (चौहान) थे।
- पृथ्वीराज चौहान को रामपिथौरा भी कहा जाता है।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) के पिता सोमेश्वर तथा माता (संरक्षिका) कर्पूरी देवी थी जो त्रिपुरी के कल्चूरी राजा अचलराज की पुत्री थी।
- पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में जयानक, चन्दबरदाई, विश्वरूप, वागीश्वर, जनार्दन, विद्यापति गौड, आशाधार तथा पृथ्वीभट्ट आदि विद्वान रहते थे।
- चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ की रचना किया।
- पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई०) में मोहम्मद गोरी को पराजित कर दिया।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और पृथ्वीराज-III (चौहान)एक दूसरे के विरोधी हो गए।
- जयचंद्र ने मोहम्मद गोरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192 ई०) में पृथ्वीराज-III (चौहान) की हत्या कर दी।
- तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक घटना थी।
- पृथ्वीराज तृतीय तराईन के युद्ध में **नाटयरम्भा** नामक घोड़ा तथा **रामप्रसाद** नामक हाथी पर सवार था।
- मोहम्मद गोरी ने 1194 ई० में चंदावर के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली तथा अजमेर पर आक्रमण करके चौहानों की सत्ता का अंत कर दिया।

Note :– चदेल शासक परमर्दिदेव चन्देल ने पृथ्वीराज चौहान के सेनापति आल्हा को पराजित कर दिया।

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

मध्यकालीन भारत
(Medieval History)

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

16. भारत पर मुस्लिम आक्रमण (Muslim invasion of India)

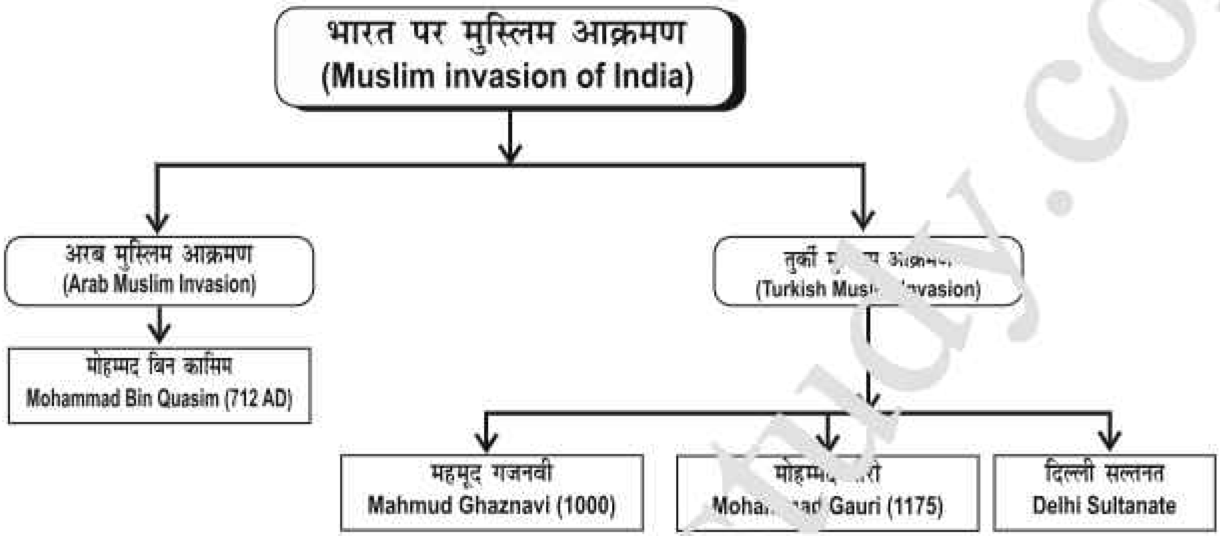

भारत पर अरब मुस्लिम आक्रमण

- भारत पर पहला सफल आक्रमण करने वाला अरब का मुस्लिम शासक **मोहम्मद-बिन-कासिम** था।
- इसने 712 ई. में सिंध के राजा दाहिर को पराजित कर दिया। राजा दाहिर 'चच' का वंशज था। उस समय सिंध की राजधानी ब्राह्मणवाद/आरोह थी।
- अरबों की सिंध विजय का प्रमाण फारसी ग्रंथ 'चचनामा (फतहनामा)' नामक ग्रंथ में मिलता है। जिसकी रचना 'अली अहमद' ने किया। इस पुस्तक की अरबी भाषा में रचना अबु मुआसिर ने किया।
- इसका भारत पर आक्रमण करने का उद्देश्य धन-दौलत लूटना और इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था न कि राज्य विस्तार का।
- मोहम्मद-बिन-कासिम ने 713 ई. में मुल्तान को जीत लिया और यहाँ से उसे इतना अधिक सोने का भंडार मिला कि मुल्तान को इतिहास में 'स्वर्ण नगरी' कहा जाने लगा।
- इसने जीते हुए क्षेत्र की राजधानी "अलमन्सूरा" को बनाया।
- मोहम्मद-बिन-कासिम के आक्रमण के फलस्वरूप अरबी संस्कृति को भारतीयों ने और कुछ भारतीय संस्कृति को अरबवासियों ने अपनाया।
- अरब और हिन्दु संस्कृति के मिश्रण के परिणामस्वरूप अरबवासियों ने भारत से खगोलशास्त्र, अंकगणित, चिकित्साशास्त्र और दर्शन के क्षेत्र में बहुत कुछ सिखा और इसका प्रचार-प्रसार पूरे यूरोप में किया।
- सर्वप्रथम अरबवासियों (मुस्लिमों) ने भारतीयों को हिन्दू कहकर संबोधित किया था और इस देश का नाम हिन्दुस्तान कहा था। अरब आक्रमण के फलस्वरूप भारत में पर्दा-प्रथा का तीव्र गति से विकास हुआ। इसके साथ ही जजिया, जकात और खराज (भू-राजस्व) नामक कर के बारे में जानकारी प्राप्त हुआ।
- **मोहम्मद-बिन-कासिम** ने भारत में सर्वप्रथम जजिया कर लगाया।
- जजिया गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का सुरक्षात्मक कर था।

मुहम्मद बिन कासिम ने जजिया कर से 5 लोगों को मुक्त रखा–

(i) बच्चा
(ii) बूढ़ा
(iii) ब्राह्मण
(iv) विकलांग
(v) औरत

- **फिरोज-शाह-तुगलक** ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
- मुगल बादशाह अकबर ने **1564 ई.** में जजिया कर समाप्त कर दिया।
- **औरंगजेब** ने 1679 ई. में पुनः जजिया कर लगा दिया।

Note :– एकमात्र मुगलबादशाह औरंगजेब थे जिसने अंग्रेजों से भी जजिया कर वसूला।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- जजिया कर को अंतिम रूप से **मोहम्मद शाह (रंगीला बादशाह)** ने समाप्त किया।
- अरबों ने सिंध में ऊंट पालने की प्रथा तथा खजूर की खेती को प्रारंभ किया।
- चचनामा ग्रंथ के अनुसार सुलेमान के आदेश पर मुहम्मद बिन कासिम की हत्या करवा दी गई थी।

भारत पर तुर्क आक्रमण

- भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना का श्रेय तुर्कों को दिया जाता है।
- तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिम सीमाओं पर निवास करने वाले एक लड़ाकू एवं बर्बर जाति था। जो उमैय्या वंशी शासकों के संपर्क में आने के बाद ईस्लाम धर्म अपना लिया।
  उनका उद्देश्य एक विशाल मुस्लिम साम्राज्य स्थापित करना था।
- अलप्तगीन ने 932 ई. में अफगान प्रदेश में गजनी साम्राज्य की स्थापना किया। जिसकी राजधानी गजनी थी।
- भारत पर पहला तुर्क आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था।
- सुबुक्तगीन अलप्तगीन का गुलाम था। जो बाद में अलप्तगीन का दामाद बना।
- प्रथम तुर्क आक्रमण के समय पंजाब में शाही वंश का शासक जयपाल शासन कर रहा था।
- इसने 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पेशावर में पराजित कर दिया।

महमूद गजनवी

- सुबुक्तगीन का पुत्र महमूद गजनवी था, जो अफगान के गजनी का रहने वाला था। महमूद गजनवी 998 ई. में गद्दी पर बैठा।
- अपने पिता के काल में महमूद गजनवी खुरासान का शासक था।
- सर हेनरी इलियट के अनुसार इसने 1000 ई. से 1027 ई. के बीच कुल 17 बार भारत पर आक्रमण किया।
- इसने मध्य एशिया में एक बड़े साम्राज्य की स्थापना के लिए धन प्राप्त करने के उद्देश्य से भारत पर आक्रमण किया।
- इसने 1001 ई. में पंजाब के हिन्दूशाही वंश के ऊपर आक्रमण किया। उस समय इसकी राजधानी वैहिंद अथवा उदभाण्डपुर थी। इस समय वहाँ के शासक जयपाल थे।
- जयपाल एकमात्र शासक है जो पराजित होने पर आत्महत्या कर लिया।
- इसने पुनः 1008 ई. में नगरकोट पर हमला किया और ज्वालामुखी मंदिर को तोड़कर उसके अवशेष को गजनी ले जाकर मस्जिद की सिढ़ियों पर फेंक दिया।
- भारत में महमूद गजनवी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अभियान 1025 से 1026 में सोमनाथ मंदिर (गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत) पर आक्रमण था। यह एक शिव मंदिर था।
- उस समय वहाँ का शासक भीम प्रथम था। इस युद्ध में 50 हजार से अधिक लोग मारे गए थे। महमूद इस मंदिर को पूर्णत: नष्ट कर दिया तथा इसकी कुल संपत्ति को लेकर सिंध के रेगिस्तान से वापस लौट गया।
- 1027 ई. में इसने जाट के विरुद्ध अपना अंतिम आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर दिया। क्योंकि सोमनाथ को लूटकर वापस जाते समय महमूद को जाटों ने क्षति पहुँचाई थी।
- फारूखी, उत्बी, फिरदौसी और अलबरूनी जैसे विद्वान गजनवी के दरबार में रहते थे।
- उत्बी ने किताब-उल-यामिनी की रचना की थी।
- उत्बी ने महमूद गजनवी के आक्रमणों को जेहाद की संज्ञा दी है।
- फिरदौसी ने शाहनामा लिखा, जबकि अलबरूनी ने अरबी भाषा में किताबुल हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द) लिखा।
- अलबरूनी इतिहासकार, दार्शनिक और संगीतज्ञ था तथा इसका वास्तविक नाम अबुरेहान मुहम्मद बिन अहमद था।
- पुराणों का अध्ययन करने वाला प्रथम मुसलमान अलबरूनी था।
- 1030 ई. में महमूद गजनवी का असाध्य रोग (मलेरिया) से मृत्यु हो गई।
- महमूद गजनवी प्रथम शासक था जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की थी।
- महमूद गजनवी को बूत शिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता था।
- महमूद गजनवी का सेनापति अयाज सुल्तान था।
- महमूद ने बहुजातीय सेना का गठन किया, इसकी सेना में अरब, तुर्क, अफगान और हिन्दू सैनिक भी शामिल थे जिसमें से उसका एक हिन्दू सेनापति **तिलक** भी था।
- गजनवी वंश का अंतिम शासक खुसरो मलिक था जिसकी हत्या मुहम्मद गौरी ने की थी।

तुर्क आक्रमण का दूसरा चरण (महमूद गौरी)

- तुर्क एक जनजाति थी जो अफगानिस्तान के क्षेत्र की थी।
- इसके दूसरे चरण का नेतृत्व मोहम्मद गौरी ने किया।
- इसका पूरा नाम मोहम्मद गौरी या मुईजुद्दीन मुहम्मद बिन शाम (शिहाबुद्दीन)था। इसे गौर वंश का मोहम्मद भी कहा जाता है।
- गौर वंश में जो प्रधान था उसका नाम शंसबनि था। मोहम्मद गौरी इसी वंश का शक्तिशाली शासक था।
- 1173 ई. में मोहम्मद गौरी गौर प्रदेश का शासक बना।
- 1175 ई. में इसने मुल्तान एवं सिंध पर आक्रमण किया।
- 1178 ई. में इसने पाटन (गुजरात) पर आक्रमण किया उस समय वहाँ चालुक्य वंशीय शासक भीम-II (मूलराज्य द्वितीय) का शासन था। जो गौरी को बूरी तरह परास्त किया।
- यह तुर्क आक्रमणकारियों की पहली पराजय थी अर्थात् मोहम्मद गौरी की भारत में पहली पराजय थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- मोहम्मद गौरी 1179 ई. में पेशावर, 1181 में लाहौर तथा 1184 ई. में सियालकोट को जीत लिया।
- इसने पंजाब के भटिंडा पर जब अधिकार किया तो पृथ्वीराज चौहान-III से विवाद हो गया।
- 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान-III ने गौरी को पराजित कर दिया। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान का सेनापति स्कन्द था।
- 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र के सहयोग से पृथ्वीराज चौहान-III को पराजित कर दिया और उनकी हत्या कर दी।
- महमूद गजनवी का सेनापति मल्लिक अयाज सुल्तान था।
- इतिहासकार बी.एस. स्मिथ ने कहा कि तराईन का द्वितीय युद्ध ऐसा निर्णायक युद्ध साबित हुआ जिसमें भारत पर मुसलमानों की आधारभूत सफलता निश्चित कर दिया। बाद में होनेवाले आक्रमण परिणाम मात्र थे।
- तराईन के युद्ध के बाद गौरी ने मेरठ, अलीगढ़ पर अधिकार कर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया।
- 1194 ई. के चंदावर के युद्ध में (फिरोजाबाद) उसने कन्नौज के शासक जयचंद को पराजित कर दिया।
- मोहम्मद गौरी का गुलाम तथा कुतुबद्दीन ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी 1198 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बिहार शरीफ नामक शहर बसाया।
- 1205 ई. में गौरी ने अपना अंतिम अभियान पंजाब के खोखर जातियों के विरुद्ध किया।
- मोहम्मद गौरी का सेनापति मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने 1203 ई. में बिहार विजय, 1204-05 में बंगाल विजय तथा 1206 ई. में असम पर आक्रमण किया।
- बिहार को जीतने वाला प्रथम मुस्लिम विजेता बख्तियार खिलजी को माना जाता है। बख्तियार खिलजी ने लखनौती को अपनी राजधानी बनाई थी।
- बख्तियार खिलजी के हत्या उसके ही अधिकारी अलीमर्दान खिलजी ने की थी।
- बख्तियार खिलजी के बंगाल आक्रमण के समय वहाँ सेन वंश की शासक लक्ष्मण सेन का शासन था, जिसकी राजधानी नदिया थी।
- गौरी के समय सिक्कों पर हिन्दु देवी लक्ष्मी और नंदी के चित्र का अंकन मिलता है। उनपर देवनागरी लिपि में मोहम्मद-बिन-साम अंकित है।
- मोहम्मद गौरी के साथ प्रसिद्ध चिश्ती संत मोइनुद्दीन चिश्ती भारत आए थे। जिन्होंने भारत में चिश्ती सम्प्रदाय की स्थापना की।
- मोहम्मद गौरी का कोई पुत्र नहीं था तथा जयचंद को पराजित करने के बाद गौरी द्वारा भारत में जीते गए प्रदेशों को कुतुबद्दीन ऐबक को सौंपकर वापस गजनी लौट गया।
- मोहम्मद गौरी ने कुतुबद्दीन ऐबक को प्रथम अक्ता प्रदान किया था।
- 1206 ई. में दमयक नामक स्थान पर रामलाल खोखर ने मोहम्मद गौरी की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गौरी को गजनी में दफनाया गया।

मोहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलाम थे–

(i) कुतुबुद्दीन ऐबक
(ii) याल्दोज
(iii) कुबाचा।

Note :– भारत में कागज का उपयोग 12वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था।

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

17. दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

- 1206 ई. से लेकर 1526 ई. तक के कुल 320 वर्षों तक दिल्ली पर मुस्लिम सुल्तानों का शासन रहा।
- भारत पर शासन करने वाले पाँच वंश के सुल्तानों के शासनकाल को दिल्ली सल्तनत या सल्तनत-ए-हिन्द/सल्तनत-ए-दिल्ली कहा जाता है।

➤ **ये पाँच वंश निम्न थे–**

1. गुलाम वंश (1206-1290)–मिश्रित जाति
2. खिलजी वंश (1290-1320)–निम्न जाति, छोटा कार्यकाल
3. तुगलक वंश (1320-1414)–सबसे लम्बा कार्यकाल
4. सैयद वंश (1414-1451)–उच्च जाति
5. लोदी वंश (1451-1526)–अफगान जाति

- इनमें से चार वंश मूलत: तुर्क थे जबकि अंतिम वंश अफगान था।

Trick :–

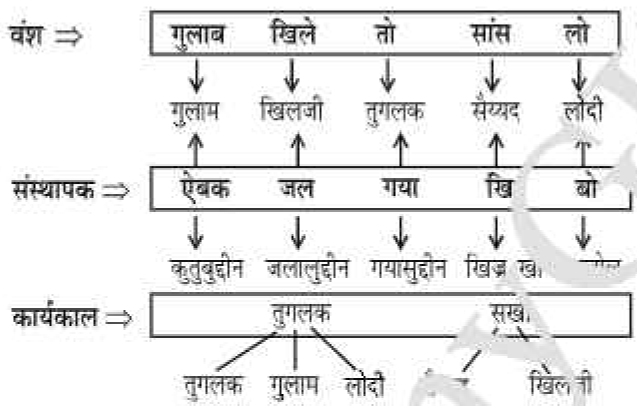

गुलाम वंश (1206 ई.-1290 ई.)

- इस वंश को गुलाम वंश इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के गुलाम थे।
- गुलामो को फारसी में बंदगान कहा जाता है तथा इन्हें सैनिक सेवा के लिए खरीदा जाता था।
- इस वंश का दरबारी भाषा फारसी था और इस वंश की सबसे प्रमुख भाषा फारसी थी।
- इस वंश को इल्बरी, ममलूक या दास कहा जाता है।

गुलाम वंश के प्रमुख शासक

1. कुतुबुद्दीन ऐबक (कुतुबी वंश)– 1206-1210 ई.
2. आरामशाह – 1210 ई. (कुछ महिने)
3. इल्तुतमिश (शम्सी/इल्बरी वंश)– 1211-1236 ई.
4. रूकनुद्दीन – 1236 ई.
5. रजिया सुल्तान – 1236-1240 ई.
6. बहराम शाह – 1240-1242 ई.
7. अलाउद्दीन मसूद शाह – 1242-1246 ई.
8. नसीरउद्दीन शाह – 1246-1266 ई.
9. बलबन/बहाउद्दीन (बलबनी वंश) – 1266-1286 ई.
10. कैकूबार – 1286-1290 ई.
11. क्यूमर्श – 1290 ई.

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 ई.-1210 ई.)

- ऐबक मुहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलामों में से एक था।
- मुहम्मद गोरी का मृत्यु के बाद ऐबक 1206 में स्वयं को लाहौर का स्वतंत्र शासक घोषित किया।
- ऐबक ने अपनी राजधानी को लाहौर को बनाया था।
- ऐबक का अर्थ 'चंद्रमा का देवता' होता है।
- इन्होंने सुल्तान की उपाधि नहीं धारण की, न ही अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और ना ही अपने नाम के सिक्के चलाये बल्कि इन्होंने केवल मलिक तथा सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- ये गरीबों के प्रति दया का भाव रखते थे अत: इन्हें हातिम कहा गया।
- ये लाखों में दान देते थे। अपनी असीम उदारता के कारण इन्हें लाख बख्श भी कहते हैं।
- इन्हें पुरा कुरान याद था इसलिए इन्हें कुरान खान भी कहा जाता है।
- इनके दरबार में मिनहाज-उस-सिराज रहते थे, जिन्होंने तबकात-ए-नासरी पुस्तक लिखी है।
- इनके दरबार मे हसन निजामी भी थे, जिन्होंने ताज-ऊल-नासिर पुस्तक लिखी है।
- ऐबक ने अजमेर विजय के बाद वहाँ पर ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवायी।
- ऐसा माना जाता है कि यह किसी संस्कृत विद्यालय के स्थान पर बनाया गया है।
- ऐबक ने दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद बनवायी।
- इसके प्रांगण में लौह स्तंभ पर चंद्रगुप्त द्वितीय का स्मृति मिलता है।
- इण्डो ईस्लामिक कला का सबसे पहला उदाहरण कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद में मिलता है।
- यह भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित पहली मस्जिद थी।
- ऐबक के गुरु बख्तियार काकी थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- कुतुबमीनार बख्तियार काकी के याद में ऐबक द्वारा बनवाया गया था।
- ऐबक ने अफगानिस्तान के जाम मीनार से प्रेरित होकर दिल्ली (महरौली) में कुतुबमीनार (1193 ई. में) बनवाई किन्तु पूरा नहीं कर सका।
  1. ऐबक कुतुबमीनार को 2 मंजिल बनवाया था, जबकि शेष 3 मंजिल को इल्तुतमिश ने पूरा किया। **मुहम्मद बिन तुगलक** के समय इस मीनार पर बिजली गिर गयी। उसके बाद फिरोज-शाह-तुगलक ने इसका जीर्णोधार किया।
  2. अल्लाउद्दीन खिलजी इस मिनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई मीनार बनवाना प्रारंभ किया, किंतु इंजीनियरों की गलती के कारण यह सफल नहीं हुआ।
  3. अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई-दरबार बनवाया।
- 1210 ई. में लाहौर में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने से कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु हो गई।
- ऐबक का सहायक सेनापति बख्तियार खिलजी था।
- ऐबक का मकबरा लाहौर में है।
- ऐबक को घुड़सवारी और धनुर्विद्या अब्दुल अजीज कुफी द्वारा सिखाया गया था।

आरामशाह (1210 ई.-1211 ई.)

- यह ऐबक का उत्तराधिकारी था, किन्तु अयोग्य था।
- 1211 ई. में इल्तुतमिश ने इसे हटाकर खुद शासक बन गया।
- यह मात्र आठ महिने तक शासन किया था।
- इसकी हत्या इल्तुतमिश द्वारा कर दी गयी थी।

शम्सी वंश (इल्तुतमिश 1211 ई.-1236 ई.)

- इसे गुलाम का गुलाम कहते हैं, क्योंकि यह ऐबक का गुलाम था।
- यह 1211 ई० में गद्दी पर बैठा।
- इसके बचपन का नाम अल्तमश था।
- इसका पूरा नाम शम्सउद्दीन इल्तुतमिश था।
- इसके पिता का नाम ईलम खां था जो इलबरी तुर्क था।
- 1215 के तराईन के तृतीय युद्ध में इसने याल्दोज को पराजित कर दिया।
- इसने सुल्तान की उपाधि धारण की तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया।
- शासक बनने से पहले यह बदायूँ (उत्तरप्रदेश) का सूबेदार था।
- इसने अपनी राजधानी लाहौर से दिल्ली को बनाया।
- इसने शासक बनने के लिए 1229 ई. में खलिफा अल मुस्तनसिर बिल्लाह से खिल्लत (Degree) हासिल की।
- इल्तुतमिश को गुंबद तथा मकबरा निर्माण का जनक कहते हैं।
- इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नसिरूद्दीन महमूद का मकबरा सुल्तान गढ़ी में बनवाया।
- इल्तुतमिश ने न्याय मांगने के लिए लाल वस्त्र पहनने की परंपरा चलवाया।
- इल्तुतमिश ने भारत में इक्ता व्यवस्था का प्रारंभ की। इक्ता एक अरबी शब्द है।
- इक्ता की जानकारी अबु अलीहसन द्वारा रचित सियासतनामा में मिलती है।
- इक्ता व्यवस्था में कर्मचारियों को वेतन के बदले भूमि दिया जाता था।
- इसने 40 तुर्क सरदारों का एक सलाहकार परिषद् बनाया जिसे तुर्कान-ए-चिहलगानी या चालीसा दल कहते हैं।
- इसके समय ख्वाजरिज्म के शासक जियाउद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खाँ दिल्ली की सीमा तक पहुँच गया। अत: इल्तुतमिश ने जियाउद्दीन को अपनी शरण नहीं दी।
- इल्तुतमिश को शुद्ध इस्लामिक पद्धति का वास्तविक संस्थापक कहते हैं।
- 1225 ई में इल्तुतमिश ने बिहार शरीफ तथा बाढ़ पर अधिकार किया।
- यह बिहार में अपना प्रथम सुबेदार मलिक अल्लाउद्दीन जानी को नियुक्त किया था।
- यह शुद्ध अरबी सिक्का चलाने वाला प्रथम शासक था।
- इसने चांदी का टंका तथा ताँबे का जीतल प्रारंभ किया।
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह को इल्तुतमिश द्वारा बनवाया गया था।
- 1236 ई. को इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई। इसने अपने जीवन काल में ही रजिया सुलतान को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।
- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद 40 सरदारों ने रजिया को शासक न बनाकर रूक्नुद्दीन फिरोजशाह को शासक बना दिया।
- उसके शासन काल में सल्तनत की वास्तविक सत्ता उसकी माता शाहर्तुकान के हाथों में था। वह अति महत्वाकांक्षी और निंदयी महिला थी।
- रजिया ने न्याय के लिए लाल वस्त्र पहनकर मस्जिद के आगे चली गई और जनता के हस्तक्षेप के बाद वह शासिका बनी।

रजिया सुल्तान (1236 ई.-1240 ई.)

- यह भारत की प्रथम महिला शासिका थी। यह पुरुषों की भांति वस्त्र कुबा (कोट) और कुलाह (टोपी) पहनकर दरवार आने लगी जो 40 तुर्क सरदारों को पसंद नहीं था।
- दिल्ली के जलालुद्दीन याकूत (अश्वशाला का प्रधान) के साथ रजिया का घनिष्ठ संबंध थे। इसे अमीर-ए-आखुर नियुक्त किया।
- रजिया सुलतान ने अपने हिसाब से इक्ताओं में परिवर्तन एवं अधिकारियों को नियुक्त किया। इस क्रम में एतगीन को बदायूँ को इक्तादार और फिर **'अमीर-ए-हाजिब'** का पद दिया, अल्तुनिया को सरहिन्द (भटिण्डा) का इक्तादार नियुक्त किया।
- तवरहिन्द (भटिंडा- पंजाब) के इक्तादार मलिक अल्तुनिया ने

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

रजिया की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जिस कारण रजिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु युद्ध में खुद को हारता देख रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया। किन्तु रास्ते में लौटते समय डाकुओं के हमले में हरियाणा के कैथल में रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या हो गई।

- दिल्ली में 40 सरदारों ने याकूत की हत्या कर दी।
- रजिया एक असफल शासिका साबित हुई और इसका प्रमुख कारण इसका महिला होना था।
- इतिहासकारों (एलफिर्स्टन) का कहना है कि अगर रजिया महिला न होती तो इसका नाम भारत के महान् शासकों में लिया जाता।
- इतिहासकार (मिनहाज) कहना है कि ''भाग्य ने उसे पुरूष नहीं बनाया वरना उसके समस्त गुण उसके लिए लाभप्रद हो सकते थे। रजिया में वे प्रशंसनीय गुण थे जो एक सुल्तान में होना चाहिए।''

बहराम शाह (1240 ई.-1242 ई.)

- रजिया सुल्तान के बाद बहराम शाह **1240** ई. में दिल्ली के गद्दी पर बैठा।
- बहरामशाह के शासनकाल में ही सल्तनत में प्रथम बार सन् **1241** ई. में मंगोलों ने **''तैर''** के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया, उसका प्रथम आक्रमण मुल्तान पर था।
- बहराम शाह को दिल्ली के तुर्क सरदारों द्वारा बंदी बनाकर **1242** ई. में उसकी हत्या कर दी गई।

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242 ई.-124 ई.)

- यह दिल्ली के गद्दी पर **1242** ई. में बैठा।
- यह सिक्कों पर बगदाद के अंतिम खलीफा का नाम सर्वप्रथम अंकित करवाया था।
- अलाउद्दीन मसूदशाह के शासनकाल में समस्त शक्ति चालीस अमीरो के समूह **तुर्कान-ए-चिहलगानी** के हाथों में था।
- यह अपना **अमीर-ए-हाजिब** गयासुद्दीन बलबन को नियुक्त किया।
- बलबन के षड्यंत्र के द्वारा **1246** ई. में अलाउद्दीन मसूद शाह को सुल्तान के पद से हटा **नसीरूद्दीन महमूद** को गद्दी पर बैठा दिया गया।

नसीरूद्दीन शाह (1246 ई.-1266 ई.)

- नासिरूद्दीन महमूद इल्तुमिश का पौत्र तथा शम्सी वंश का अंतिम शासक था।
- यह एक मितव्ययी (कम-खर्चीला) शासक था।
- यह टोपी सिलकर अपना जीवन-यापन करता था।
- इसने एक गुलाम को चालीसा दल में स्थान दिया, यह गुलाम बलवन था।
- बलबन अपनी पुत्री का विवाह सुलतान नासीरूद्दीन शाह से किया था।
- इसने बलबन को उलुग खाँ की उपाधि दिया।
- इसके समय बलबन की शक्तियाँ बहुत ही बढ़ गई थी।
- इसकी मृत्यु 1266 ई. के बाद इसका उत्तराधिकारी गयासुद्दीन बलबन बना।
- नासीरूद्दीन का मकबरा 'सुल्तान गढ़ी' में है।

बलबन (1266 ई.-1286 ई.)

- बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था, वह इलबरी जाति का तुर्क था।
- यह इरान का रहने वाला था।
- इसका पुरा नाम गयासुद्दीन बलबन था।
- रजिया सुल्तान के समय बलबन अमीर-ए-शिकार के पद पर था।
- यह दिल्ली के गद्दी पर 1266 ई. में बैठा।
- इसने सिजदा (घुटने पर बैठकर शीश नवाना) तथा पैबोस (पांव का चूमना) जैसी इरानी पद्धति को भारत में लागू किया।
- इसने नौरोज त्यौहार (फारसी) भी प्रारंभ किया।
- इसने राजा के राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- बलबन के राजत्व सिद्धांत का स्वरूप इरान के फारसी तत्वों से लिया गया है, इसके अंतर्गत बलबन सुल्तान को पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि मानता था।
- बलबन कहता था कि सुल्तान नियाबत-ए-खुदाई एवं जिल्ल-ए-इलाही है।
- इसने कहा कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि या छाया होता है।
- इसने 'लौह एवं रक्त' की नीति अपनाई अर्थात् आक्रमण नीति को अपनाया।
- बलबन ने चालीसा दल को समाप्त कर दिया।
- बलवन ने U.P. में एक गढ़-मुक्तेश्वर मस्जिद बनवायी।
- यह अपने दरबार का गठन फारसी पद्धति पर किया था।
- यह अपनी शक्ति को संगठित करने के बाद जिल्लेईलाही का उपाधि धारण किया था।
- बलबन ने स्वयं को नाईब-ई-खुदाई कहा था।
- प्रथम बार ईमारतों में मौजूद शाही मेहराब बलबन के मकबरा में देखा गया था।
- बलबन ने सीमा विस्तार की नीति को नहीं अपनाई।
- इसके शासनकाल में विद्रोह करने वाला तुगरील खां बंगाल का गवर्नर था।
- बलबन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने दरबार में गैर-ईस्लामिक प्रथाओं का प्रचलन किया। इसी के समय सेना को वंशानुगत बना दिया था।
- इसने दीवान-ए-अर्ज नामक सैन्य विभाग की स्थापना किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- फारसी कवि अमिर खुसरो और अमिर हसन बलबन के दरबार में रहते थे।
- 1286 ई. में फिरोजशाह ने इसकी हत्या कर दी, जिसे जलालुद्दीन खिलजी भी कहते हैं।
- अगला शासक कैकुबाद बना जो एक अयोग्य शासक था। इसने एक वर्ष तक शासन किया।

कैकूबाद (1287 ई.-1290 ई.)

- यह दिल्ली के गद्दी पर 1287 ई. में बैठा।
- यह मुईयुद्दीन की उपाधि धारण किया था।
- इसके सेनापति का नाम जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी था।
- जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी द्वारा इसकी हत्या करके उसे यमुना नदी में फेंक दिया गया।

शमशुद्दीन कैयूमर्स (1290 ई.)

- कैकूबाद का तीन वर्षीय पुत्र शमशुद्दीन को कैयूमर्स की उपाधि दिया गया था।
- इसकी भी हत्या जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी द्वारा की गई थी।
- यह गुलाम वंश का अंतिम शासक था।

खिलजी वंश (1290 ई.-1320 ई.)

- खिलजी वंश के स्थापना को इतिहासकारों ने खिलजी क्रांति का नाम दिया है।
- खिलजीयों ने ही भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्ति करने की परम्परा आरम्भ की थी।

जलालुद्दीन-फिरोज-खिलजी (1290 ई.-1296 ई.)

- खिलजी वंश के संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी थे।
- इनकी राजधानी किलोखरी थी।
- इन्होंने जनता के इच्छाओं के अनुरूप शासन किया। ये एक उदारवादी शासक थे।
- इन्होंने दक्षिण भारत विजय के लिए अपने भतीजा (दामाद) अलाउद्दीन खिलजी को भेजा।
- अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत को जीतकर वहाँ से अत्यधिक धन लूटा।
- जलालुद्दीन ने जब इससे धन का हिसाब मांगा तो इसने उसकी हत्या (1296 ई. में) कड़ा मनीकपुर (इलाहाबाद) में कर दी।
- जलाउद्दीन फिरोजशाह खिलजी सल्तनत का पहला ऐसा सुल्तान था जिसकी आंतरिक नीति दूसरो को प्रसन्न करने के सिद्धांत पर आधारित थी।
- जलालुद्दीन कहा करते थे कि मैं एक वृद्ध मुसलमान हूँ और मुसलमानों की रक्त बहाने की मेरी आदत नहीं है।

अलाउद्दीन खिलजी (1296ई.-1316ई.)

- इसके बचपन का नाम अली गुर्शास्प था।
- इनका राज्याभिषेक बलबन के लाल महल में हुआ था।
- इसने सिकंदर की भाँति विश्व विजय का अभियान चलाया। अत: इसे द्वितीय सिकंदर या सिकंदर-ए-सानी कहते है।
- अलाउद्दीन खिलजी अपने बारे में न रोज, न नमाज, न कुरान फिर भी सच्चा मुस्लमान हूँ कहा करते थे।
- इसने खलीफा के पद को मान्यता दिया।
- यह एक नया धर्म चलाना चाहता था। किन्तु उलेमा अलाउल्लमुल्क (विद्वान मौलाना) के कहने पर इसने यह विचार बदल दिया।
- इसने कुतुबमीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई-मीनार बनवाना प्रारंभ किया परन्तु यह बहुत छोटा बन पाया।
- इसने कुब्बत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई दरबार नामक दरवाजा बनवाया।
- मार्शल साहब ने इसे इस्लामी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे हीरा कहा।
- इसने मूल्य नियंत्रण के लिए बाजार प्रणाली को लाया और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों की पहचान के लिए घोड़ा दागने की प्रथा एवं हुलिया लिखने की प्रथा लागू की।

इसने शासक बनने के बाद 4 घोषणाएँ की–

1. सरकारी गुप्तचर की स्थापना।
2. दान में दी गई भूमि को खालसा भूमि (सरकारी भूमि) में परिवर्तन।
3. मद्यपान (नशा/शराब) पर प्रतिबंध।
4. छोटे त्योहार तथा अमीरों के मिलने पर प्रतिबंध लगा दिया।

अलाउद्दीन खिलजी के आर्थिक सुधार

➤ **इसके समय 4 प्रमुख कर थे–**

1. **जजिया–** यह गैर मुसलमानों से लिया जाता था।
2. **जकात–** यह मुसलमानों के आय पर लिया जाता था।
3. **खराज–** यह मुसलमानों का भूमि कर था।
4. **खुम्स–** यह सैनिकों से लूट पर लिया जाने वाला कर था। मकान पर घरी नामक कर तथा चारागाह पर चरी नामक कर लिया जाता था।

- इन्होंने अधिक से अधिक भूमि को खालसा भूमि में परिवर्तन कर दिया गया इसके तहत दान में मिल्क, वक्फ आदि के रूप मे दी गई जमीन को वापस ले लिया।
- इसके समय खालसा भूमि सबसे अधिक विकसित हुई। जो राजा के नियंत्रण में होता था।
- यह सल्तनत काल पहला शासक था जिसने भूमि की पैमाईश (माप) करवाया और उसी आधार पर कर (Tax) का निर्धारण किया।
- इसने भू-राजस्व की दर उपज का 1/3 के स्थान पर कुल उपज का 1/2 (50%) कर के रूप में निर्धारित किया।
- इसके समय लूट प्राप्त धन का 80% राजकर के रूप में लिया जाता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- दीवान-ए-मुस्तखराज का प्रारंभ अलाउद्दीन खिलजी ने ही किया था। जिसका संबंध भू-राजस्व से था।
- इसी के समय राशनिंग प्रणाली लागू हुआ।
- अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति की व्यापक जानकारी जियाउद्दीन बरनी की कृति तारीखे फिरोजशाही से मिलती है।

अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान

- अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर-भारत तथा दक्षिण-भारत दोनों का अभियान किया।
- इसके समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। इस आक्रमण के कारण इसकी उत्तरी सीमा असुरक्षित हो गई।
- अलाउद्दीन, खिलजी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग पर ध्यान दिया और इस उद्देश्य से 1297 ई. में गुजरात के शासक राय कर्ण को पराजित कर दिया। इस आक्रमण का नेतृत्व नुसरत खां कर रहे थे। इसी दौरान 1000 दीनार में मलिक काफूर (चंदराम) नामक हिजड़ा को खरीदा गया।
- मलिक काफूर को हजार दीनारी भी कहते हैं।
- नूसरत खां ने मल्लिक काफूर को खरीदकर 1298 ई. में गुजरात विजय से वापस आने पर अलाउद्दीन को उपहार भेंट किया था।
- गुजरात मार्ग में राजस्थान के शासक बाधा बन रहे थे।
- 1301 ई. में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर जीता।
- इसी अभियान के समय नूसरत खां मारा गया।
- 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ जीता।
- 1303 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी दुर्ग का निर्माण करवाया था।
- चित्तौड़ अभियान अलाउद्दीन ने रानी पद्मावती के लिए किया और यहाँ के राजा रतन सिंह को पराजित कर दिया, किन्तु चित्तौड़ की महिलाओं ने जौहर कर लिया।
- राजपूत महिलाएँ विदेशी आक्रमण से स्वयं के अभिमान की रक्षा के लिए जलती आग में कूद जाती थी, जिसे जौहर कहते हैं।
- इन्होंने चितौरगढ़ का नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया था।
- अलाउद्दीन ने दक्षिण-भारत विजय की जिम्मेदारी मलिक काफूर को दिया।
- मलिक काफूर ने 1307 ई. में देवगिरि के शासक रामचंद्र देव को पराजित कर दिया। किन्तु रामचंद देव की वीरता को देखकर अलाउद्दीन ने उसे गुजरात के नौसारी का जागीरदार बना दिया।
- 1309 ई. में इसने वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित कर दिया। प्रताप रूद्र देव ने अपने सोने की मूर्ति बनाई और उसमें जंजीर पहनाकर अलाउद्दीन को भेजा और साथ ही कोहिनूर हीरा भी भेजा एवं अधीनता स्वीकार कर ली।
- 1310 ई. में मलिक काफूर ने होयसल वंश पर आक्रमण किया किन्तु उसकी राजधानी द्वारसमुद्र को नहीं जीत सका।
- 1311 ई. में मलिक काफूर ने पांड्य वंश की राजधानी मदुरै जीत ली।
- इसका उत्तर भारत का अंतिम अभियान 1311 ई. में जालौर के विरूद्ध था।
- अलाउद्दीन जब निजामुद्दीन औलिया से भूमि का हिसाब मांगा तो उसने कहा कि 'मेरे घर में 10 दरवाजे हैं।'

अलाउद्दीन के 4 प्रमुख सेनापति–

1. जफर खां
2. नुसरत खां
3. उलुग खां
4. मलिक काफूर

- यह अपने चारों सेनापति की तुलना पैगम्बर के खलीफा से करता था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने मंगोल आक्रमण को रोकने के लिए उलुग खाँ, जफर खां तथा नुसरत खाँ सेनापतियों की सहायता ली।
- मंगोलों से लड़ते समय जफर खां की मृत्यु 1299 ई. हो गई थी।
- अलाउद्दीन की समय में अंतिम मंगोल आक्रमण 1307 ई. में इकबाल बंद कुबक की सेनाओं द्वारा किया गया था जो एक असफल अभियान रहा था।
- अलाउद्दीन खिलजी के समय मंगोल तथा सल्तनत के बीच सिंधु नदी को सीमा बनाया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने खलीफा के आदेशों की अवहेलना कर दी।
- सर्वप्रथम उलेमा वर्ग के प्रभाव से स्वतंत्र होकर शासन करने का श्रेय अलाउद्दीन को प्राप्त था।
- यह नगद वेतन, स्थायी सेना, घोड़ा दागना, सैनिक की हुलिया, बाजार नियंत्रण या मूल्य नियंत्रण प्रारंभ किया।
- इसी के शासन काल में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुआ।
- इसके समय दिल्ली में हाजियों द्वारा विद्रोह किया गया था।
- अमीर खुसरो के प्रसिद्ध पुस्तक खजायनुल-फुतूह में इसे द्वितीय सिकंदर कहा गया।
- इसके मुख्य अधिकारी मुहतसिब कहलाता था।
- सिरी का किला, हजार खंभों वाला महल, अलाई दरवाजा, जमयत खाना मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- दिल्ली (मंगोलपुरी) में बसने वाले मंगोल को नवीन मुसलमान कहा गया था।
- इसके समय सेना का गठन दशमलव प्रणाली के आधार पर था।
- भारत में प्रथम अवशिष्ट वास्तविक गुंबद इसी के समय प्राप्त हुआ।
- घोड़े के नाल जैसा मेहराब का सर्वप्रथम प्रयोग इसी के द्वारा किया गया था।
- 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई। उसे दिल्ली की जामा मस्जिद के बाहर मकबरे में दफनाया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316 ई.-1320 ई.)

- इसने खलीफा के पद को मान्यता नहीं दी।
- बरनी के अनुसार यह दरबार में कभी-कभी महिलाओं के वस्त्र पहन कर आ जाता था एवं कभी-कभी निर्वस्त्र आ जाता था।
- सेनापति खुसरो खां ने इसकी हत्या 1320 ई. में कर दी और खुद शासक बन गया।
- खुसरो खान की हत्या गाजी मलिक ने कर दिया।

तुगलक वंश (1320 ई.-1414 ई.)

- सल्तनत के इतिहास में तुगलक वंश के शासकों ने ही सबसे अधिक 1320 ई. से 1414 ई. तक अर्थात् 94 वर्षों तक शासन किया।
- तुगलक वंश सल्तनत संक्रमण का काल था।
- इस काल में जहाँ एक ओर साम्राज्य का विस्तार हुआ वहीं दूसरी ओर विघटन भी प्रारंभ हुआ।
- धार्मिक सहिष्णुता की नीति का सर्वप्रथम कार्यान्वयन इसी समय हुआ तथा धार्मिक कट्टरता का भी उदय हुआ।

गयासुद्दीन तुगलक (1320 ई.-1325 ई.)

- गाजी मल्लिक ने तुगलक वंश की स्थापना की और गयासुद्दीन तुलगक के नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया।
- यह किसानों के लिए नहर निर्माण का कार्य प्रारंभ किया। अतः इसे नहरों का जनक या पिता माना जाता है। हालांकि सर्वाधिक नहरों का जाल बिछाने का कार्य फिरोजशाह तुगलक ने किया था।
- गयासुद्दीन तुगलक ने अपना पहला अभियान जौना खान के नेतृत्व में तेलंगाना के लिए किया।
- जौना खान ने तेलंगाना जीतकर उसका नाम सुल्तानपुर रख दिया।
- इस विजय के बाद जौना खान को **मुहम्मद बिन तुगलक** कहा गया।
- गयासुद्दीन तुगलक ने खुद के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया, किन्तु बंगाल से इसे धन की प्राप्ति नहीं हुई।
- सुलतान गयासुद्दीन का अंतिम सैन्य अभियान बंगाल का था। इस अभियान के वापसी के दौरान कर्नाट वंश के अंतिम शासक हरि सिंह देव को हराया था।
- इसने निजामुद्दीन औलिया को संदेश भिजवाया कि मेरे दिल्ली पहुंचने तक दान में दी गई भूमि का हिसाब तैयार रखे।
- इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि 'हुनूज दिल्ली दूर अस्त' अर्थात् दिल्ली अभी दूर है और वास्तव में हुआ भी वही सुल्तान के दिल्ली आने से पूर्व ही उसका देहांत हो गया।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** ने उत्तरप्रदेश के अफगानपुर में गयासुद्दीन तुगलक के विश्राम के लिए लकड़ी का महल बनवाया किंतु इस महल के गिरने से गयासुद्दीन तुगलक की 1325 ई. में मृत्यु हो गई।
- गयासुद्दीन तुगलक पर 29 बार मंगोल का आक्रमण हुआ था।
- डाक प्रणाली को पूर्णत: गयासुद्दीन तुगलक ने व्यवस्थित किया था।
- इसके काल में डाक विभाग सर्वोच्च थी।
- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर रोमन शैली में तुगलकाबाद नामक नगर स्थापित किया।

मुहम्मद बिन तुगलक

- इसका वास्तविक (मूल) नाम जौना या जूना खां था।
- यह दिल्ली के गद्दी पर 1325 ई. में बैठा।
- मध्यकालीन सभी सुल्तानों में मुहम्मद बिन तुगलक सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति था।
- यह 23 भाषाओं का अच्छा जानकार था, साथ ही ज्योतिष, खगोल तथा गणित का भी अच्छा विद्वान था।
- मुहम्मद बिन तुगलक को अपनी सनक भरी योजनाओं, क्रूर कृत्यों एवं दूसरे के सुख-दुख के प्रति उपेक्षा भाव रखने के कारण स्वप्नशील, पागल एवं रक्तपिपासु कहा गया।
- यह इतिहास में सबसे पढ़ा-लिखा शासक था।
- इसके समय सल्तनत काल की विकास बहुत तेजी से हुआ, साथ ही बिखराव भी तेजी से हुआ।
- इसके समय साम्राज्य को 29 प्रांतों में बांटा गया था।

➢ **मुहम्मद बिन तुगलक ने 5 सबसे बड़ी गलतियाँ–**

1. इसने दोआब पर तब कर बढ़ा दिया जब वहाँ अकाल पड़ा था। दोआब सल्तनत काल का सबसे उपजाऊ प्रदेश था। किसानों के विद्रोह के कारण इसने किसानों की मदद के लिए एक नये विभाग दीवान-ए-अमीरकोही की स्थापना की जिसका प्रधान अमीर-ए-कोही था।

- अकाल से राहत के लिए सुल्तान ने एक अकाल संहिता तैयार करवाई।
- किसानों के लिए अग्रिम कृषि ऋण (तकावी) की व्यवस्था करवाई।

2. इसने ताँबे की सांकेतिक मुद्रा 1329-30 ई. में चलवाया, किन्तु इस मुद्रा का बड़े पैमाने पर दुरूपयोग होने लगा।

- बरनी कहते हैं कि प्रत्येक हिन्दू का घर टकसाल बन गया था।

3. इसने मंगोल आक्रमण के डर से तथा दक्षिण में इस्लाम के प्रसार के लिए राजधानी दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) को 1327 ई. में स्थानांतरित किया जो असफल रहा।

- बरनी के अनुसार देवगीरि साम्राज्य के केन्द्र में था जहाँ चारों ओर से दूरी समान थी इसलिए इसे राजधानी के लिए चुना गया था।

4. इसने खुरासान (इरान) पर आक्रमण के लिए 3 लाख सैनिकों की फौज बनायी और उन्हें अग्रिम वेतन भी दिया, किन्तु अंतिम समय में वह खुरासान के शासक से संधि कर लिया।

- इतिहासकारों के अनुसार खुरासान मध्य एशिया का ट्रांस ऑक्सीयाना का क्षेत्र था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- यह अभियान तरमाशरीन और मुहम्मद तुगलक की मैत्री का परिणाम था।

5. इसने सैनिकों के विद्रोह से बचने के लिए इन्होंने हिमालय की दुर्गम्य चोटी कराचिल अभियान के लिए सैनिक भेजा जहाँ अधिकांश सैनिक आपसी विवाद में लड़कर मर गए।

- 1333 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री 'इब्नबतुता' 7000 किमी. की यात्रा के बाद दिल्ली पहुंचा।
- रेहला नामक पुस्तक के लेखक इब्नबतुता था।
- मोहम्मद-बिन-तुगल इसकी विद्वता से खुश हुआ और उसे दिल्ली का काजी (जज) नियुक्त किया।
- इब्नबतुता के कहने पर ही **मुहम्मद बिन तुगलक** ने डाक-विभाग प्रारंभ किया।
- इब्नबतुता के नेतृत्व में मुहम्मदबिन तुगलक ने एक दूत मंडल को चीन में भेजा।
- 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर विजय नगर की स्थापना कर ली।
- 1347 ई. में हसन गंगु ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर बहमनी साम्राज्य की स्थापना कर ली।
- 1351 ई. सिंध (थट्टा) विद्रोह को दबाने के लिए सुल्तान स्वयं गये थे जिस दौरान उसकी मृत्यु हो गयी थी।
- उसके मृत्यु पर बदायूँ कहता है कि "सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गयी।"
- मुहम्मद बिन तुगलक धार्मिक रूप से एक सहिष्णु शासक था, इसके प्रशासन में साईराज नामक एक हिन्दु मंत्री था।
- इन्होंने जैन विद्वान जिनप्रभा सुरी को 1000 गायें दान में दी थी।
- यह पहला सुल्तान था जिसने अजमेर स्थित ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह तथा बहराइच में सलार मसूद गाजी के मकबरे का दर्शन किया था।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** होली का त्योहार अपने दरबार में मनाता था।
- **मुहम्मद बिन तुगलक** का कहना था कि मेरा राज्य रूग्ण (बीमार) हो चुका है।
- इसे रक्त पिपाशु या पागल बादशाह भी कहा जाता था।

Note :– मुहम्मद बिन तुगलक के समय बिहार के सुबेदार मज्दुल मुल्क था।

फिरोज-शाह-तुगलक

- यह जौना खाँ का चचेरा भाई था।
- फिरोज शाह तुगलक एक हिन्दु माता, राजपूत रणमल की पुत्री (नीला) का पुत्र था। अत: इस पर हिन्दु होने का आरोप न लगे इसलिए इसने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
- इसका राज्याभिषेक 1351 ई. में हुआ।
- इसने अशोक के टोपरा अभिलेख (हरियाणा) को तथा मेरठ अभिलेख (U.P.) को दिल्ली में स्थापित कर दिया।
- इसने अलग से एक निर्माण विभाग बनवाया और 300 से अधिक नगर (शहर) का निर्माण कराया।
  जैसे– जौनपुर, फिरोजाबाद, हिसार, फतेहाबाद, फिरोजपुर आदि।
- जौनपुर को सिराज-ए-हिन्द के रूप में जाना जाता है।
- इसने 1200 से अधिक फलों के बाग-बगीचे लगवाएं ताकि फलों की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।
- इसने नहरों का जाल बिछा दिया।
- इसी के समय सर्वप्रथम सिंचाई कर (Tax) लेना प्रारंभ कर दिया गया था। जो किसान सरकारी नहर से खेती करता था उसे 'हक-ए-शर्ब' (शर्ब) नामक कर (Tax) देना होता था, जो कुल ऊपज का 10% या 1/10 भाग देना होता था।
- इसके समय सर्वाधिक सिंचाई तथा लोकनिर्माण कार्य पर अधिक धन खर्च किया गया था।
- इसी के द्वारा सर्वप्रथम लोक-निर्माण विभाग का स्थापना किया गया था।
- फिरोज-शाह-तुगलक के दरबार में सर्वाधिक दास 1 लाख 80 हजार थे।
- इसने दासों की देखभाल के लिए एक अलग विभाग 'दीवान-ए-बंदगान' बनाया।
- इसने बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता भी दिया।
- गरीब, असहाय तथा अनाथ की सहायता के लिए इसने एक अलग विभाग दीवान-ए-खैरात बनवाया।
- इसने दर-ऊल-शफा नामक एक मुफ्त अस्पताल बनवाया।
- यह सरकारी खर्च पर हज की यात्रा करवाने वाले पहला भारतीय शासक था।
- विभिन्न धर्मों में आपसी समन्वय के लिए इसने एक अनुवाद विभाग बनवाया।
- फिरोज-शाह-तुगलक को सल्तनत काल का अकबर कहते हैं।
- इसके द्वारा अद्धा एवं विख नामक दो सिक्का चलाया था।
- फिरोजशाह तुगलक ने दिल्ली में कोटला दुर्ग का निर्माण करवाया।
- इसी के समय प्रथम बार हिन्दु धर्म ग्रंथों का फारसी में अनुवाद करना प्रारंभ किया गया था।
- इसी के द्वारा **फुतूहात-ए-फिरोजशाही** आत्मकथा लिखा गया था।
- फिरोजशाह तुगलक के दरबार में बरनी नामक विद्वान रहता था। जिसने फतवा-ए-जहांदारी तथा तारीख़-ए-फिरोजशाही नामक पुस्तक की रचना किया।
- इनकी मृत्यु 1388 ई. में हो गई।
- तुगलक काल में बिहार की राजधानी बिहार शरीफ थी।

➢ सैन्य अभियान

- फिरोजशाह ने 1359 ई. में उड़ीसा के जाजनगर पर चढ़ाई की और जगन्नाथ मंदिर को नष्ट कर काफी धन लूटा।
- 1365 ई. में उन्होंने काँगड़ा (हिमाचलप्रदेश) में स्थित नागरकोट के दुर्ग पर चढ़ाई की और वहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को नुकसान पहुचाया।
- इसमें सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

नसिरूद्दीन महमूद

- नसिरूद्दीन महमूद के समय तुगलक वंश का बिखराव बहुत तेजी से होने लगा।
- इसके बारे में कहा जाता है कि इसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक था।
- इनके पंजाब का सूबेदार खिज्र खां ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर लिया और खिज्र खां ने ही तैमूर को भारत पर आक्रमण करने के लिए उकसाया।
- तैमूर मध्य एशिया का एक खूंखार आक्रमणकारी था। 1369 ई. में अपने पिता के मृत्यु के बाद यह समरकंद का शासक बना था।
- 1398 ई. में तैमूर लंग ने भारत पर आक्रमण किया।
- तैमूर लंग के भारत आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन प्राप्ति था।
- तैमूर लंग के डर से यह दिल्ली छोड़ के भाग गया।
- तैमूर लंग ने खिज्र खां को दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया।
- तैमूर के आक्रमण से तुगलक वंश का अंत हो गया। इस प्रकार इस वंश का अंतिम शासक नसीरूद्दीन महमूद था।
- यह दिल्ली सल्तनत पर सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश था।
- 1414 ई. में खिज्र खां ने इसकी हत्या कर दी।

सैय्यद वंश (1414 ई.-1451 ई.)

- सैय्यद वंश के संस्थापक खिज्र खाँ थे।
- सैय्यद वंश स्वयं को इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद साहब का वंशज मानते थे।
- यह सल्तनत काल में शासन करने वाला एकमात्र शिया वंश था।
- 1398 ई. में तैमूर के भारत आक्रमण के समय खिज्र खाँ ने उसकी सहायता की। जिस कारण तैमूर ने भारत से लौटते समय उसे मुल्तान, लाहौर एवं दिपालपुर का सुबेदार नियुक्त किया।
- 1414 ई. में खिज्र खाँ ने दौलत खाँ को पराजित कर दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
- खिज्र खाँ ने कभी भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की बल्कि इसने स्वयं को रैय्यत-ए-आला कहा।
- खिज्र खाँ ने अपने आप को तैमूर लंग का पुत्र शाहरूख का प्रतिनिधि बताया था।
- खिज्र खाँ की मृत्यु 1421 ई. में हो गई।
- इस वंश का शासक मुबारक शाह ने सुल्तान की उपाधि धारण की।
- मुबारक शाह ने अपने नाम के स्वयं खुतबा पढ़वाया और अपने नाम का सिक्का चलवाया। साथ ही खुतबे से तैमूर वंशजों और सिक्कों से तुगलक वंश के शासकों का नाम हटवा दिया।
- इसने सिक्कों पर अपना नाम मुइज-उद-दीन मुबारक खुदवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह था।
- अलाउद्दीन आलम शाह इस वंश में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला शासक था।
- 1451 ई. में बहलोल लोदी ने इसकी हत्या कर दी और लोदी वंश की स्थापना कर दी।

लोदी वंश (1451 ई.-1526 ई.)

- यह भारत का पहला शुद्ध अफगान वंश था।
- इस वंश के संस्थापक बहलोल लोदी अफगानिस्तान कबिले कि शाहुखेल शाखा से संबंधित था।

बहलोल लोदी (1451 ई.-1489 ई.)

- तारीख-ए-दाउदी के लेखक अब्दुल्ला के अनुसार बहलोल लोदी अन्य सुल्तानों की तरह सिंहासन पर नहीं बैठता था। यह अपने दरबारियों के सम्मान में खड़ा रहता था और उनके बैठने के बाद बैठता था।
- इसने एक सिक्का चलाया जिसे बहलोली सिक्का कहते हैं।
- बहलोली सिक्का अकबर के काल तक प्रचलन में था।
- इसने जौनपुर पर आक्रमण करके उसे जीत लिया।
- बहलोल लोदी के सबसे बड़ी सफलता जौनपुर के विरुद्ध थे।
- 1479 ई. में इसने जौनपुर की शर्की शासक हुसैन शाह को पराजित कर जैनपुर को सलतनत काल में शामिल कर लिया।
- बहलोल लोदी ने ग्वालियर का शासक रायकर्ण को 1487 ई. में पराजित किया। यह उसका अंतिम अभियान था।
- बहलोल लोदी का प्रशासन समानता के सिद्धांत पर आधारित था।

सिकंदर लोदी (1489 ई.-1517 ई.)

- अगला शासक सिकंदर लोदी बना। यह इस वंश का सबसे योग्य शासक था।
- इसने 1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की और इसे 1506 ई. में अपनी राजधानी बनायी।
- आगरा में ही सिकंदर लोदी ने एक किले का निर्माण करवाया जो बादलगढ़ के किले नाम से मशहूर था।
- इसने गुलरूखी नामक पत्रिका लिखी।
- इनके आज्ञा से आयुर्वेदिक ग्रंथों का **फरहंग-ए-सिकंदरी** नाम से फारसी अनुवाद करवाया गया था तथा इसके ही शासन काल में गायन संबंधित एक ग्रंथ **लज्जत-ए-सिकंदर शाही** की रचना हुई थी जो भारतीय संगीत पर पहला फारसी ग्रंथ था।
- इसने जमीन की पैमाईश के लिए गज-ए-सिकन्दरी नामक एक मापक बनाया जो 30 इंच के बराबर होता था।
- इसने ताजिया निकालने तथा महिलाओं के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- सिकंदर लोदी के गवर्नर मियां भूआँ ने दिल्ली में मोठ मस्जिद का निर्माण करवाया था जो लोदी स्थापत्य का सर्वश्रेष्ठ नमूना है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

इब्राहिम लोदी (1517 ई.-1526 ई.)

- इस वंश का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था।
- इसने अफगान परंपरा के अनुसार सम्राज्य का विभाजन किया और अपने छोटे भाई जलाल खाँ को जौनपुर का साम्राज्य दिया।
- इब्राहिम लोदी की सबसे बड़ी सफलता ग्वालियर विजय थी जिसे बहलोल लोदी एवं सिकंदर लोदी दोनों ने जितने का प्रयास किया था।
- ग्वालियर विजय इब्राहिम लोदी 1517 ई. में वहाँ के शासन विक्रमजीत को पराजित करके किया था।
- इसे 1517 ई. में मालवा की प्राप्ति हेतु खतोली के युद्ध में राणा सांगा ने इन्हें पराजित कर दिया।
- इब्राहिम लोदी के संबंधी आलम खान एवं दौलत खान (पंजाब) ने इब्राहिम लोदी को मारने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।
- पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोदी की हत्या कर दी और लोदी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना कर दी।
- इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र शासक था जिसे युद्ध के मैदान में मार दिया गया।

दिल्ली सल्तनत की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

- दिल्ली सल्तनत पर इस्लामिक कानून लागू थे। किन्तु अधिकांश जनसंख्या मुसलमान नहीं थी। इसी कारण इतिहासकार ब[illegible] ने सल्तनत काल को वास्तविक इस्लाम नहीं कहा है सल्तनत काल के अधिकतर अधिकारी अमीर तथा सुल्तान [illegible]क कबी[illegible] के थे।
- इस समय समाज में दास प्रथा मौजूद थी जिस[illegible] पुरुष एवं महिला दोनों को दास के रूप में रखे जाते थे।
- सल्तनत कालीन राजस्व व्यवस्था की जानकारी क[illegible] मुख्य स्रोत अबु-याकुब की पुस्तक किताब-उल-खर[illegible] [illegible]लती है।

वित्तीय व्यवस्था

- इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्[illegible] आधार [illegible] एवं व्यापार था।
- भारत में तुर्क आगमन के साथ ही [illegible]ई के लिए रहट प्रणाली के शुरूआत हो गई थी।

> **इस समय 5 सबसे [illegible]मुख कर थ–**

(i) उश्र (ii) मुतई
(iii) खराज (iv) चरी
(v) घरी।

Note :– [illegible] को मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह लूट क[illegible] धन [illegible]।

- इस [illegible]मय धार्मिक कर को **सदका** कहा जाता था।
- [illegible] जकात को भी मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह धार्मिक कर था।
- कर वसूलने वाला सबसे छोटा ग्रामिक अधिकारी चौधरी होता था, जबकि सबसे बड़ा अधिकारी इक्तादार होता था।
- सल्तनत काल में टंका, शसगनी, ताँबा तथा जीतल चाँदी के प्रमुख सिक्के थे।
- जहाजरानी के क्षेत्र में दिशासूचक यंत्र का प्रयोग फि[illegible] तुगलक के काल में हुआ तथा शीशा उत्पादन त[illegible]क एवं शराब बनाने की आसवान तकनीक का प्रयोग इ[illegible] का[illegible] [illegible] देन है।
- सल्तनत काल में देवल (कराँची) अंतर्राष्ट्री[illegible] ब[illegible] [illegible] रूप में प्रसिद्ध था।

सल्तनत कालीन प्रशासन व्यवस्था

- सल्तनतकालीन केन्द्रीय प्रशासन का प्रधान सुल्तान होता था। प्रशासन की सम्पूर्ण शक्ति उ[illegible] के [illegible]थों में केन्द्रित थी।
- इसे सलाह देने के लि[illegible] [illegible] विशेष संस्था होती थी, जिसे मजलिस-ए-खलव[illegible] कहा जाता [illegible]।

सल्तनत कालीन साहित्य

- सल्तनत काल [illegible] फारसी भाषा का प्रचलन था।
- सल्तनत [illegible] के सबसे बड़े कवि अमीर खुसरो थे, जिन्हें मंगो[illegible] ने बंदी [illegible] लिया था, किन्तु वो वहाँ से भाग गए।
- [illegible] खुस[illegible] का जन्म उत्तर प्रदेश के एटा में हुआ था।
- [illegible] से लेकर **मुहम्मद बिन तुगलक** तक कुल 7 राजाओं के दरबार में रहे थे।
- इन्हें अपनी दरबार में संरक्षण अलाउद्दीन-खिलजी ने दिया।
- [illegible] हिन्दी, फारसी तथा खड़ी बोली के जानकार थे।
- इन्होंने सर्वाधिक रचनाएँ खड़ी बोली में की है।
- इनकी सबसे प्रमुख रचना तारीख-ए-दिल्ली है। इन्हें तोता-ए-हिन्द कहते हैं।
- ये निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। इन्होंने तबला तथा सितार का आविष्कार किया।
- सितार को हिन्दू-मुस्लिम का मिश्रण कहते हैं।
- सल्तन काल का एकमात्र सुलतान फिरोज-शाह तुगलक था, जिसमें अपनी आत्मकथा लिखी। जिसे फतुहात-ए-फिरोजशाही कहते हैं।

सल्तनत कालीन प्रमुख विभाग

नाम	संबंधित विभाग	शासक
दीवान-ए-मुस्तखराज / विजारत	वित्त विभाग	अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही	कृषि विभाग	मुहम्मद-बिन-तुगलक
दीवान-ए-अर्ज	सैन्य विभाग	बलबन
दीवान-ए-बंदगान	दास विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-खैरात	दान विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-रिसालत	धार्मिक विभाग	नशिरुद्दीन महमुद
दस्तार-ए-बंदगान	धर्म गुरु समूह	
दीवान-ए-ईशा	पत्र विभाग	
दीवान-ए-बरिद	गुप्तचर विभाग	
दीवान-ए-काजी	न्याय विभाग	

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

शासक	स्थापत्य कला
कुतुबुद्दीन ऐबक	कुव्त उल इस्लाम मस्जिद (दिल्ली)- भारत में निर्मित प्रथम मस्जिद
	अढाई दिन का झोपड़ा (अजमेर)- इस मस्जिद की दीवार पर विग्रहराज चतुर्थ द्वारा रचित संस्कृत नाटक हरिकेली के अंश उत्कीर्ण है। (यहां पहले बौद्ध मठ व संस्कृत विद्यालय था।
इल्तुतमिश	कुतुब मीनार, दिल्ली
	सुल्तान गढ़ी या नसीरुद्दीन महमूद का मकबरा, दिल्ली. अतारकिन का दरवाजा
	इल्तुतमिश का मकबरा, दिल्ली- स्क्रैच शैली में निर्मित भारत का पहला मकबरा।
	हौज ए शमसी बदायूं
बलबन	बलबन का मकबरा दिल्ली- शुद्ध इस्लामी शैली में निर्मित भारत का पहला मकबरा
	लाल महल (दिल्ली)
अलाउद्दीन खिलजी	अलाई दरवाजा (दिल्ली)
	सीरी का नगर (दिल्ली)
	हजार खंभा महल (दिल्ली)
	हौज-ए-खास (दिल्ली)
	जमात खाना मस्जिद (दिल्ली)
मुहम्मद बिन तुगलक	आदिलाबाद का किला
	निजामुद्दीन औलिया का मकबरा
	जहाँपनाह नगर
फिरोजशाह तुगलक	काली मिस्जद, खिर्की मस्जिद, कला मस्जिद, फिरोजशाह कोटला नगर, फिरोजशाह का मकबरा
मियाँ भुआ	मोठ मस्जिद
इब्राहिम लोदी	सिकंदर लोदी का मकबरा

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

18. विजयनगर साम्राज्य (Vijaynagar Empire)

☞ विजयनगर का शब्दिक अर्थ होता है– **जीत का शहर।**

☞ विजयनगर साम्राज्य की स्थापना **1336 ई॰** में **हरिहर एवं बुक्का नामक** दो भाइयों ने किया। इन दोनों को मुहम्मद बिन तुगलक ने इस्लाम धर्म कबूल करवाया था और दक्षिण भारत भेज दिया। जहाँ इनकी मुलाकात श्रृंगेरी के प्रतिष्ठित **गुरु विद्यारण्य** से हुई। जिन्होंने इनकी शुद्धि करायी अर्थात वापस हिन्दू धर्म में लाया।

☞ इन्होंने दक्षिण भारत के क्षेत्र को जीतकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किया और अपने पिता संगम के नाम पर संगम वंश की स्थापना किया और **हम्पी (कनार्टक)** को अपनी राजधानी बनाया।

Note :– विजयनगर साम्राज्य पर 4 वंशों ने शासन किया।

Trick :– संगम सतुआ

संगम वंश → सालुव वंश → तुलुव वंश → आरविडु वंश

संगम वंश (1336 ई.-1485 ई.)

➢ हरिहर प्रथम (1336 ई.- 1356 ई.)

☞ इस वंश का प्रथम शासक **हरिहर-I** था। जो 1336 ई. में शासक बना। इसने प्रारंभ में अनेगोण्डी को अपनी राजधानी बनाया परंतु बाद में राजधानी विजयनगर स्थानांतरित कर दी।

☞ इसके दरबार में **सायण** नामक विद्वान रहते थे जिन्होंने वेदों पर टीका (Command) लिखा।

➢ बुक्का प्रथम (1356 ई.-1377 ई.)

☞ हरिहर प्रथम के बाद इसका छोटा भाई बुक्का प्रथम शासक बना। इसने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण किया। इसके समय कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के बीच के रायचूर दोआब पर अधिकार के लिए बहमनी साम्राज्य से युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह युद्ध 200 वर्षों तक चला और अन्तत: सफलता विजयनगर साम्राज्य को ही मिला।

☞ बुक्का प्रथम ने हिन्दु धर्म की सुरक्षा का दावा किया और वेद मार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की।

☞ इसके शासन काल में बहमनी शासक **मुहम्मद-I** ने **बुक्का-I** को पराजित किया।

➢ देव राय प्रथम (1406 ई.-1422 ई.)

☞ इसने अपने सेना में तुर्क धनुर्धर को शामिल किया। इसने तुंगभद्रा नदी पर नहर बनाया ताकि सिंचाई हो सके। इसके समय बहमनी शासक **फिरोजशाह बहमन** ने आक्रमण किया। इसने **देवराय-I को पराजित** कर दिया। किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो गया।

☞ इसके दरबार में हरविलासम् के लेखक तथा प्रसिद्ध तेलुगू कवि श्रीनाथ रहते थे।

☞ इसके बाद अगला शासक देवराय-II बना।

➢ देव राय द्वितीय (1422 ई.-1446 ई.)

☞ इसके समय में संगम वंश का **सर्वाधिक विकास हुआ**। यह संगम वंश का सबसे प्रतापी **शासक** था।

☞ इसने **श्रीलंका** अभियान किया। इस प्रकार श्रीलंका अभियान करने वाला देवराय-II तीसरा शासक बन गया। पहला राजाराज, दूसरा राजेन्द्र I।

☞ वह अपनी सिंहासन के बगल में कुरान रखता था।

☞ देवराय-II को हाथी मारने का शौक था अत: इसे **गजवेटका** कहा गया।

☞ इसने दो संस्कृत ग्रंथ महानाटक सुधानिधि की रचना की एवं बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर टीका लिखी।

☞ इसी के दरबार में फारस के विदेश यात्री अब्दुर **रज्जाक** आया था। जिसका यात्रा विवरण मतला-ए-साहेन है। जो फारसी भाषा में लिखा गया। इस पुस्तक से विजयनगर का प्रशासनिक जानकारी मिलती है। इसी में लिखा है कि विजयनगर साम्राज्य में 300 बन्दरगाह थे।

➢ मल्लिकार्जुन (1446 ई.-1465 ई.)

☞ इसके समय संगम वंश का **पतन प्रारम्भ** हो गया। इसे **प्रौढ़ देवराय** कहा जाता है।

➢ विरूपाक्ष द्वितीय (1465 ई.-1485 ई.)

☞ संगम वंश का अंतिम शासक **विरूपाक्ष-II** था जिसकी हत्या **सालुव नरसिंह** ने कर दिया और संगम वंश के स्थान पर सालुव वंश की स्थापना कर दिया।

☞ इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में **प्रथम बलापहार** की घटना कहा गया है।

सालुव वंश (1485 ई.-1505 ई.)

☞ इस वंश का संस्थापक सालुव नरसिंह था। इस वंश का अंतिम शासक **इम्माडि नरसिंह** था जिसकी हत्या **वीर नरसिंह** ने कर दिया और **सालुव वंश** के स्थान पर तुलुव वंश की स्थापना कर दिया।

☞ इस घटना को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में द्वितीय बलाहार की घटना कहते हैं।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

तुलुव वंश (1505 ई.-1570 ई.)

- इसके संस्थापक **वीर नरसिंह** थे। जिसका पुर्तगाली गवर्नर अल्मोडा से अच्छा सम्बन्ध था। इसने 1505 ई. में अल्मोडा के साथ घोड़े के लिए व्यापारिक संधि किया था।
- वीर नरसिंह को इतिहास में द्वितीय बलापहार के नाम से जाना जाता है क्योंकि इसकी स्थापना भी शक्ति के बल पर की गई थी।
- 1509 ई. में वीर नरसिंह की मृत्यु हो गयी और अगला शासक कृष्णदेव राय बना [KDR]

> **कृष्णदेव राय (1509 ई.-1529 ई)**

- यह तुलुव वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने रायचूर दोआब पर अधिकार कर लिया।
- इस उपलक्ष्य में उसने **आन्ध्र भोज, आन्ध्र पितामह** तथा **अभिनव भोज** की उपाधि धारण किया। इसने यमन राजा से स्थापनाचार्य की भी उपाधि धारण किया।
- यह एक विद्वान शासक था, जिसने **आमुक्त माल्याद** नामक पुस्तक की रचना किया। यह पुस्तक तेलुगू भाषा में था। इसकी तुलना कौटिल्य के अर्थशास्त्र से की जाती है।
- आमुक्त माल्याद पुस्तक से विजयनगर के इतिहास का पता चलता है।
- इसने संस्कृत भाषा में **जामवति कल्यानम्** नामक पुस्तक की रचना किया।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा (तुजूक-ए-बाबरी) में लिखा है कि दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली शासक उस समय कृष्णदेव राय थे।
- कृष्णदेव राय ने विजयनगर के निकट **नागलपुर** शहर की स्थापना किया और वहां **बिट्ठल स्वामी मन्दिर** तथा **हजारा मन्दिर** का निर्माण किया।
- इसके समय इटली यात्री **डोमिंगो पायस** आया था तथा पुर्तगाली यात्री **बारबोसा** आया था।
- इसके दरबार में तेलगु भाषा के 8 प्रमुख विद्वान रहते थे जिन्हें संयुक्त रूप से **अष्ट्दिग्गज** कहते थे। इस अष्ट्दिग्गज में सबसे प्रमुख कवि अल्लासानी पेडन्ना थे जिन्हें तेलुगू भाषा का पितामह कहा जाता है। इन्होंने हरिकथा तथा मनुकारिता नामक पुस्तक की रचना किया। इनके शासनकाल को तेलुगू साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है।

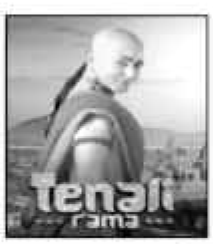

- अष्ट्दिग्गज में दूसरे स्थान पर तेनालीराम थे जिनकी रचना पाण्डुरंग महामात्य है। यह मंत्री के पद पर भी थे और इन्होंने अन्धविश्वास से जनता को दूर किया।
- इनके दरबार में **लक्ष्मीधर** नामक संगीतकार रहता था। जिन्होंने संगीत सूर्योदय नामक ग्रंथ लिखा।
- कृष्णदेव राय 1510 ई. में बीदर के शासक महमूद शाह को पराजित किया।
- इन्होंने 1512 ई. में रायचूर दोआब तथा गुलबर्गा के किलों को भी जीत लिया। इन्होंने उड़ीसा के साथ-साथ प्रताप रूद्र देव से संधि कर उसकी पुत्री से विवाह किया।
- 1520 ई. में कृष्णदेवराय ने गोलकुंडा को हराकर वारंगल पर अधिकार कर लिया।
- मात्र 10 वर्षों में ही कृष्णदेव राय ने अपने सभी विरोधियों को पराजित कर दक्षिण भारत में स्वयं एवं विजयनगर की प्रभुत्व स्थापित किया।
- 1529 ई. में कृष्णदेव राय की मृत्यु हो गयी

> **अच्युतदेव राय (1529 ई.-1542 ई.)**

- इस वंश का अगला शासक **अच्युतदेव राय** बना।
- इसने प्रान्तों पर नियंत्रण रखने के लिए **महामण्डलेश्वर नामक** नये अधिकारी की नियुक्ति की गई। इसके समय से ही इस वंश का विघटन शुरु हो गया।
- इसके समय पुर्तगाली यात्री **नुनीज** भारत आया।

> **सदाशिव राव (1542 ई.-1570 ई.)**

- इस वंश का **अंतिम शासक सदाशिव राव** था। इसका सेनापति रामराय था। रामराय ने शासन की सारी शक्ति अपने हाथ में ले लिया।
- सदाशिव राव के अभिलेखों से सूचना मिलती है कि उसने अपने शासनकाल में 'नाइयों' को व्यवसाय कर से मुक्त कर दिया था।
- वह एक साम्राज्यवादी सेनापति था जिसने बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य (बीजापुर, गोलकुण्डा, वरार, वीदर, अहमदनगर) में फूट डालने की कोशिश किया किन्तु इसके विपरीत परिणाम हुआ।
- इसी के शासन काल में बहमनी साम्राज्य के पांच राज्य में से वरार को छोड़कर शेष चारों ने मिलकर 1565 में विजयनगर पर हमला कर दिया। इस युद्ध को तालिकोटा का युद्ध कहा जाता है। इसे राक्षसी-तंगड़ी का युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।
- इस युद्ध ने विजयनगर साम्राज्य का अन्त कर दिया। युद्ध के मैदान में रामराय मारा गया।
- सदाशिवराय ने अपना अगला सेनापति तिरुमल को बनाया। तीरुमल ने सदाशिवराय की हत्या कर दी और एक नया वंश आरविडू वंश की स्थापना की।

आरविडू वंश (1570 ई.-1652 ई.)

- इस वंश के संस्थापक तिरुमल थे। तिरुमल ने पेणुगोण्डा को विजयनगर के स्थान पर अपनी राजधानी बनाया परंतु 1586 ई. में वेंकट द्वितीय ने चंद्रगिरि को अपना मुख्यालय बनाया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इसे विजयनगर साम्राज्य का अंतिम महान शासक माना जाता है।
- यह वंश अधिक दिन तक शासन नहीं कर सका और इस वंश का अंतिम शासक श्रीरंग-III को पराजित करके शिवाजी ने उसके क्षेत्र को मराठा साम्राज्य में मिला लिया।
- विजयनगर साम्राज्य को तेलगु भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।

विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था

- प्राचीन भारत की भाँति इस काल में भी राज्य की सप्तांग विचारधारा पर बल दिया गया था।
- विजयनगर की प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी कृष्णदेव राय की रचना आमुक्त माल्याद तथा अब्दुर रज्जाक की रचना में है।
- राजा को सलाह देने के लिए एक मँत्रिपरिषद होती थी जिसके प्रमुख अधिकारी प्रधानी या महाप्रधानी कहलाता था। इसका अध्यक्ष सभानायक होता था।
- इस समय राजा अपने राज्याभिषेक के समय एक विशेष प्रकार का यज्ञ कराता था जिसे पटटाभिषेक यज्ञ कहते हैं।
- इसके समय पूरे साम्राज्य को निम्न नामों से जाने जाते थे–

केंद्र | Central
⇩
प्रांत (मंडल) | Province (Division)
⇩
जिला(कोट्टम/वलनाडू) | District (Kottam / Valanadu)
⇩
तहसील (मेलाग्राम) | Tehsil (Melagram)
⇩
ग्राम(ऊर) | Gram (Ur)

- कृष्णदेव राय के समय प्रान्तों की **संख्या 6** थी।
- अच्युतदेव राय के समय प्रान्त का प्रशासन प्रान्तपति से लेकर **महाभिण्डलेश्वर** नामक अधिकारी को दे दिया गया।
- कृष्णदेव राय ने **नायंकर व्यवस्था** लाया। इसके तहत अधिकारियों को नगद वेतन के स्थान पर भूमि दिया जाता था। यह गुप्तकालीन सामंती व्यवस्था तथा दिल्ली सल्तनत के इक्ता व्यवस्था के समान था।
- इस समय सैनिकों को दान में दी गयी भूमि को **अमरम् भूमि** कहा जाता था तथा इस भूमि को प्राप्त करने वाले को **अमरम् नायक** कहा जाता था। मन्दिर के दान में दी गयी भूमि को **देवभूमि** कहा जाता था।
- इस समय सैन्य विभाग को कदाचार कहा जाता था।

विजयनगर की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति

- विजयनगर भारतीय इतिहास का अंतिम साम्राज्य था जो वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था।
- विजयनगर समाज वर्ण एवं जाति आधारित समाज था। चारों वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ थे। इन्हें मृत्यु दंड से मुक्त रखा जाता था।
- इस काल में उत्तर भारत से बहुत बड़ी संख्या में लोग दक्षिण में आकर बस गए थे जिन्हें **बडवा** कहा जाता था।
- इस काल में समाज में देवदासी प्रथा भी प्रचलित थी।
- इस समय महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी थी।
- कृष्णदेव राय के दरबार में महिला अंगरक्षिकाओं की भी नियुक्ति की जाती थी।
- इस काल में पशुओं का क्रय विक्रय भी होता था जिसे **वेस-वग** कहा जाता था।
- मनोरंजन के साधन के रूप में इस समय शतरंज के साथ बोमलाट नामक छाया नाटक का प्रचलन था।
- यक्षगान का भी विकास विजयनगर में ही हुआ।
- भू-राजस्व को शिस्त कहते थे और इस कर को वसूलने वाले अधिकारी को आथवन कहते थे। कर का मुख्य आधार कृषि था।
- विजयनगर साम्राज्य में शिष्ट नामक भूमिकर राजकीय आय का प्रमुख स्रोत था जबकि केंद्रीय राजस्व विभाग अठावने के नाम से जाना जाता था।
- इस समय चार प्रकार के भूमि का प्रचलन था।

➢ **सिंचित भूमि**
- यह सबसे उपजाऊ भूमि थी। यहाँ बिना किसी सिंचाई साधन के ही अच्छी फसल होती थी। इस पर सर्वाधिक कर था।

➢ **बगानी/बागाती भूमि**
- इस भूमि पर बगानी फसल जैसे- मसाला की खेती होती थी। इस पर कर सिंचित भूमि से कम था।

➢ **उसर भूमि**
- यह वैसी भूमि थी जिस पर प्रतिवर्ष कृषि नहीं होती थी। यह अधिकतर समय सूखा ग्रस्त रहता था। इस पर कर कम था।

➢ **जंगली या वनभूमि**
- इस भूमि का अधिकतर भाग पर वन का विस्तार था। इस पर कृषि कार्य न के बराबर होता था। इस भूमि पर कोई कर नहीं था।

मुद्रा व्यवस्था

- विजयनगर की सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का वराह था। जो 52 ग्रेन का होता था। इसे ही पैगोड़ा कहा जाता था।
- सोने के छोटे सिक्के को प्रपात तथा फणम् कहा जाता था जबकि चांदी के छोटे सिक्के को तार कहा जाता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

विजयनगर की स्थापत्य कला

- इस समय मन्दिर निर्माण के क्षेत्र में द्रविड़ शैली का विकास अधिक हुआ। जिसका सर्वश्रेष्ठ नमूना **विठ्ठलस्वामी** मंदिर है।
- यहाँ के मंदिरों में गोपुरम् को राय गोपुरम् कहा जाता है, साथ ही मंदिरों में अम्मन मठ तथा कल्याण मंडप उल्लेखनीय है।
- अम्मन मठ देवी को समर्पित भवन की एक संरचना है जबकि कल्याण मंडप एक विशालकाय सभाभवन होता है।
- विजयनगर राज्य के शासक तिरूमलाई नायक के काल में सुंदरेश्वर मंदिर एवं मदुरै के मीनाक्षी मंदिर का निर्माण हुआ।

विजयनगर काल में आये विदेशी यात्री

यात्री	देश	शासक
निकोलो डे काण्टी	इटली	देवराय I
अब्दुर रज्जाक	फारस	देवराय II
बार्थोमा	इटली	वीर नरसिंह
बारबोसा	पुर्तगाली	कृष्णदेव राय
डोमिंगोपाएस	इटली	कृष्णदेव राय
नुनिज	पुर्तगाली	अच्युतदेव राय

Note :– चीनी यात्री माहुआन संगम वंश के शासक मल्लिकार्जुन के शासन काल में आया था।

बहमनी साम्राज्य (1347 ई.-1527 ई.)

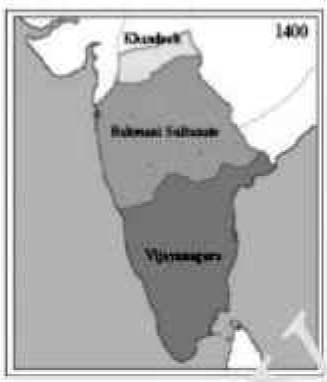

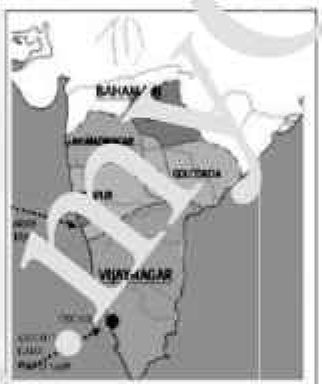

- **अलाउद्दीन बहमनशाह (1347 ई.-1358 ई.)**
- इस वंश की स्थापना 1347 ई. में मोहम्मद बिन तुगलक के समय हसन गंगू ने किया। इसका मूल नाम अलाउद्दीन हसन बहमनशाह था।
- हसन गंगू ने अपनी राजधानी गुलबर्गा को बनाया तथा इसका नाम अहसानाबाद रखा।
- बहमनी राज्य की भाषा मराठी थी तथा इनकी मुद्रा हूण थी।
- **मुहम्मद शाह (1358 ई.-1375 ई.)**
- हसन गंगू के बाद मुहम्मद शाह / प्रथम शासक बना।
- इसी के शासन काल में बहमनी-विजयनगर की बीच संघर्ष की शुरूआत हुई।
- इसने रायचूर पर अधिकार के लिए बुक्का-I से युद्ध किया और युद्ध में विजय रहा।
- **फिरोजशाह (1397 ई.-1422 ई.)**
- यह बहमनी वंश का सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था।
- इसने भी रायचूर पर अधिकार कर लिया। विजयनगर शासक देवराय-I से युद्ध किया और युद्ध में विजयी रहा।
- **शिहाबुद्दीन अहमदशाह (1422 ई.-1435 ई.)**
- इस वंश का अगला शासक शिहाबुद्दीन था।
- उदार नीति के कारण लोग इसे संत अहमद या अहमद शाह वली कहते थे।
- **हुमायूँशाह (1458 ई.-1461 ई.)**
- यह एक क्रूर शासक था। अतः इसे जालिम हूमायूं तथा **दक्कन का नीरो** भी कहा जाता था।
- इसी ने महमूद गवां को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया था। जो एक योग्य व्यक्ति थे। ये पत्रों का संग्रह करते थे। इनके पत्रों का संग्रह रियाजुल-इंशा कहलाता है।
- इस वंश का अंतिम शासक कलिमुल्ला था। जिसकी मृत्यु 1527 ई. होने के बाद बहमनी साम्राज्य का अंत हो गया।

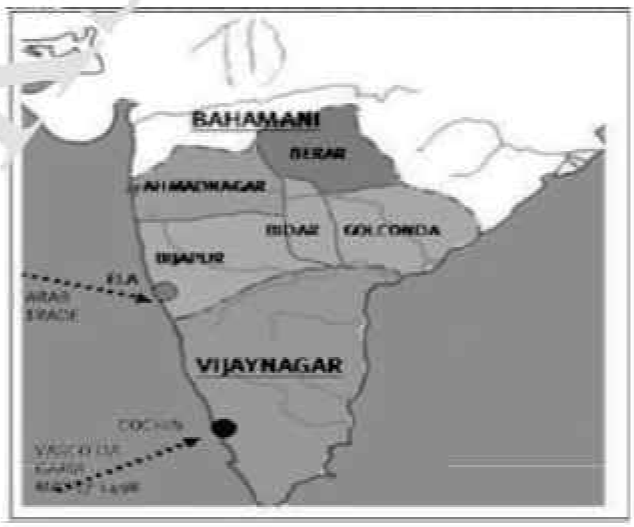

- **इसी के समय बहमनी साम्राज्य पांच भागों में बंट गया–**
  (1) बरार (2) बीजापुर
  (3) अहमदनगर (4) गोलकुण्डा
  (5) बीदर

राज्य	वंश	संस्थापक	वर्ष	क्षेत्र	राजधानी
1. बरार	इमादशाही वंश	फतेहउल्लाह ईमादशाह	1484	महाराष्ट्र	एलिचपुर, गाविलगढ़
2. बीजापुर	आदिल शाही वंश	यूसुफ आदिल शाह	1489	कर्नाटक	नौरसपुर
3. अहमदनगर	निजाम शाही वंश	मलिक अहमद	1490	महाराष्ट्र	जुन्नार, अहमदनगर
4. गोलकुण्डा	कुतुबशाही वंश	कुली कुतुबशाह	1512	तेलंगाना	गोलकुण्डा
5. बीदर	बरीदशाही वंश	अमीर अली बरीद	1526	कर्नाटक	बीदर

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

बहमनी साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था

- यहाँ भी सत्ता का प्रधान सुल्तान था।

इसकी सहायता के लिए आठ मंत्रीपरिषद होते थे–

वकील	–	प्रधानमंत्री
अमीर-ए-जुमला	–	वित्तमंत्री
वजीर-ए-अशरफ	–	विदेश मंत्री
दबीर	–	सचिव
कोतवाल	–	पुलिस विभाग का अध्यक्ष
मुनहियान	–	गुप्तचर

सैन्य व्यवस्था
- यहाँ के सेनापति को अमीर-उल-उमरा कहते थे।
- सुल्तान अपने अंगरक्षक रखता था, जिन्हें खासखेल कहा जाता था।

अर्थव्यवस्था
- बहमनी साम्राज्य में अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि ही थी।
- रूसी यात्री निकितीन के अनुसार बहमनी साम्राज्य से मुख्यत: घोड़ा, वस्त्र, रेशम और मीर्च का व्यापार होता था।

अन्य क्षेत्रीय शक्तियों का उदय

मालवा
- मालवा का राज्य नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित था।
- तुगलक वंश के पतन के दौरान तुगलक गवर्नर दिलावर खां हुसैन ने सन् 1401 ई. में स्वतंत्र मालवा साम्राज्य की स्थापना की तथा धार को अपनी राजधानी बनाया।
- मालवा का प्रसिद्ध शासक हुशंगशाह, दिलावर खां का पुत्र था।
- हुशंगशाह महान विद्वान और सूफी संत शेख बुरहानुद्दीन का शिष्य था।
- हुशंगशाह ने 1406 ई. में नर्मदा के किनारे होशंगाबाद नगर की स्थापना की।
- 1436 ई. में इस वंश को समाप्त कर महमूद खलजी ने मालवा में एक नए वंश की स्थापना की।
- मालवा पर अधिकार के लिए महमूद खिलजी और मेवाड़ के राजा राणा कुंभा के बीच युद्ध हुआ और दोनों शासकों ने युद्ध में विजयी होने का दावा किया।
- इस युद्ध के उपलक्ष्य में राणा कुंभा ने चित्तौड़ में विजय स्तंभ बनवाया और महमूद खिलजी ने मांडू में ''सात मंजिलों वाला स्तंभ'' स्थापित किया।
- अकबर ने 1562 ई. में अब्दुल्ला खाँ के नेतृत्व मालवा पर सेना भेजी। उस समय वहाँ का शासक बाजबहादुर था, जिसे परास्त कर मालवा को अंतिम रूप से मुगल साम्राज्य का हिस्सा बना लिया गया।

मेवाड़
- हम्मीरदेव ने 1314 ई. में मेवाड़ में सिसोदिया वंश की स्थापना की।
- मेवाड़ राज्य की राजधानी उदयपुर थी। बाद में इसकी राजधानी चित्तौड़ हो गई।
- राणा कुंभा 1433 ई. में मेवाड़ का शासक बने। जो एक महान विजेता माना जाता है।
- मालवा विजय की स्मृति में राणा कुंभा ने चित्तौड़ में कीर्ति स्तंभ (विजय स्तंभ) की स्थापना करवाई।
- 1468 ई. में उसके पुत्र ऊदा ने उसकी हत्या कर दी।
- राणा सांगा भी मेवाड़ का शक्तिशाली शासक था। वे रायमल का पुत्र था। उसका वास्तविक नाम संग्राम सिंह था।
- राणा सांगा 1517-18 ई. में घटोली (खतोली) के युद्ध में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को पराजित किया था।
- 1527 ई. में खानवां के युद्ध में राणा सांगा को मुगल बादशाह बाबर ने पारित कर दिया था।

जौनपुर
- जौनपुर वर्तमान उत्तर प्रदेश राज्य में अवस्थित सल्तनतकालीन नगर है, जिसकी स्थापना फिरोजशाह तुगलक ने अपने चचेरे भाई जौना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) की स्मृति में कराई थी।
- सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक का एक दास मलिक सरवर (ख्वाजा जहाँ) ने 1394 ई. में स्वतंत्र जौनपुर राज्य की स्थापना की।
- मलिक सरवर एक हिजड़ा था। शासक बनने के बाद उसने सुल्तान उस शर्क की उपाधि धारण की।
- मलिक सरवर द्वारा जौनपुर की शर्की वंश की स्थापना की गई
- इब्राहिम शाह शर्की वंश का महानतम शासक था।
- इब्राहिम शाह के समय ही जौनपुर को भारत का शिराज कहा जाने लगा तथा उसने स्वयं शिराज-ए-हिन्द की उपाधि धारण की।
- इब्राहिम शाह के द्वारा जौनपुर में प्रसिद्ध अटाला मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- पद्मावत के लेखक मलिक मोहम्मद जायसी जौनपुर में रहते थे।

कश्मीर
- 1301 ई. में सूहादेव ने कश्मीर में स्वतंत्र हिन्दू राजवंश की स्थापना की।
- 1339 ई. में शाह मिर्जा अथवा शाहमीर ने कश्मीर पर मुस्लिम राजवंश शाहमीर वंश की स्थापना की।
- सुल्तान जैनुल आबिदीन (1420-1470 ई.) कश्मीर का सबसे महान शासक था।
- जैनुल आबिदीन ने हिन्दुओं से जजिया की वसूली बंद करवा दी।
- गौ-हत्या पर भी निषेध कर दिया तथा हिन्दुओं की भावना को ध्यान में रखते हुए सती प्रथा पर प्रतिबंध हटा दिया।
- सुल्तान जैनुल आबिदीन कुतुब उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था तथा शिकायतनामा नामक ग्रंथ की रचना की।
- जैनुल आबिदीन के आदेश पर महाभारत एवं राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद किया गया। कश्मीर के लोगों ने उसे 'बुडशाह' (महान शासक) की उपाधि से सम्मलित किया।
- उसने कश्मीर में वूलर झील एवं जैना लंका नामक द्वीप का निर्माण करवाया था।
- जैनुल आबिदीन की उदार नीतियों के कारण इतिहास में उसे कश्मीर का अकबर और मूल्य नियंत्रण व्यवस्था के कारण कश्मीर का अलाउद्दीन खिलजी कहा गया है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

19. मुगल काल (Mughal Period)

☛ तैमूर के मृत्यु के बाद मध्य एशिया में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। उन्हीं राज्यवंशों में से एक मुगल था।

बाबर → हुमायूं → अकबर → जहांगीर → शाहजहाँ → औरंगजेब → बहादुर शाह जफर

बाबर (1526-1530 ई.)

☛ मुगल वंश का संस्थापक **बाबर** को माना जाता है। बाबर का वास्तविक नाम **'जहीरुद्दीन मुहम्मद'** था।

तुर्की भाषा में बाबर का अर्थ बाघ होता है। अत: जहीरुद्दीन मोहम्मद अपने पराक्रम एवं निर्भिक्ता के कारण बाबर कहलाया।

☛ बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 को फरगना के एक छोटे से राज्य में हुआ जो अब उजबेकिस्तान में है। इसके पिता उमर शेख मिर्जा (तैमूर वंशज) तथा माता कुतुलुबनिगार खान (मंगोल वंशज) जो चंगेज खां की वंशज थी। इसलिए इसे तुर्कों एवं मंगोलो दोनों के रक्त का मिश्रण के वंशज कहा गया।

☛ बाबर अपनी दादी एहसान दौलतबेग के सहयोग से 11 वर्ष की आयु में 1494 ई. में फरगना का शासक बना और मिर्जा की उपाधि धारण किया।

☛ बाबर ने 1501 में समरकंद जीत लिया किन्तु यह जीत केवल आठ महिने ही रही। बाबर ने काबुल और गजनी पर अधिकार कर लिया।

☛ 1507 ई. में इसने मिर्जा की उपाधि त्याग किया और पादशाह (बादशाह) की उपाधि धारण किया।

☛ बाबर ने जिस नए वंश की स्थापना किया उसका नाम चगताई तुर्क था।

☛ बाबर को भारत की ओर आक्रमण करने के लिए इसलिए मजबूर होना पड़ा कि उसके पड़ोस के शासक उससे हमेशा युद्ध करते रहते थे।

☛ 1519 ई. में बाबर ने पहला बाजौर अभियान किया था। उसी आक्रमण में ही उसने भेड़ा के किला को जीत लिया। बाबर ने इस किले को जीतने के लिए सर्वप्रथम बारुद और तोप का प्रयोग किया।

☛ बाबर पानीपत के प्रथम युद्ध से पहले भारत पर 4 बार आक्रमण किया।

☛ पानीपत का प्रथम युद्ध उसका भारत पर 5वां आक्रमण था।

☛ पानीपत के प्रथम युद्ध के लिए बाबर को निमंत्रण पंजाब का सूबेदार दौलत खां लोदी, इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खां लोदी तथा राणासांगा ने दिया था।

☛ पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने उजबेकों की युद्ध नीति तुगलमा निति (अर्धचन्द्राकार) तथा तोपो को सजाने में उस्मानी विधि (रूमी विधि) का प्रयोग किया और इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिया और इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया।

☛ दिल्ली सलतनत का एक मात्र शासक इब्राहिम लोदी था जो युद्ध में मारा गया था।

☛ भारत में तोप (कैनन) का प्रयोग पहली बार बाबर ने ही किया था।

☛ पानीपत के युद्ध में बाबर के तोपखाने का नेतृत्व उस्ताद अली और मुस्तफा खां नामक दो तुर्की अधिकारियों ने किया।

☛ तुगलमा नीति को अर्धचन्द्रकार नीति भी कहते हैं। इस नीति के सफलता का मुख्य स्रोत तोपो की उपस्थिति थी।

☛ पानीपत का युद्ध परिणाम के दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था। फलस्वरूप इस युद्ध में भारत के भाग्य नहीं बल्कि लोदियों के भाग्य का निर्णय था।

Trick :– बाबर के द्वारा जीता गया युद्ध।

पान	खा	चांद	के घर
1526	1527	1528	1529
पानीपत	खानवा	चन्देरी	घाघड़ा
(इब्राहिम लोदी)	(राणासांगा)	(मेदनी राय)	(अफगान सेना)

☛ बाबर का पसंदीदा शहर काबुल था।

☛ पानीपत के प्रथम युद्ध के विजय के बाद बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक-एक चांदी का सिक्का दिया और कलन्दर (दानी) की उपाधि धारण किया।

☛ पानीपत का प्रथम युद्ध में बाबर ने यह निर्णय नहीं किया था कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।

☛ जैसे ही बाबर ने भारत में रहने का योजना बनाया तो राणासांगा ने विरोध कर दिया। 1527 ई० में खानवा (आगरा के समीप) का युद्ध हो गया। इस युद्ध में राणासांगा के साथ इब्राहीम लोदी के भाई महमूद लोदी, आलम लोदी और चंदेरी के राजा मेदिनी राय थे। सबकी सेना आगरा आयी और उसके बाद संयुक्त सेना खानवा के मैदान में आ गयी। बाबर का मुकबला इन चारों से था। इनकी संयुक्त सेना का मुकाबला बाबर के बस की नहीं

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

थी। बाबर ने अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाया और सैनिकों पर लगने वाले तमगा नामक टैक्स को खत्म कर दिया। बाबर को हर हाल में यह युद्ध जीतना था।

- इसी युद्ध में बाबर ने जिहाद शब्द (धर्म के लिए जनादेश) का प्रयोग किया। इस युद्ध में बाबर अपने सैनिकों को मदिरा पीने से रोक लगा दिया। बाबर की सेना पूरी बहादुरी से लड़ी और इस युद्ध में बाबर की जीत हुई। इस युद्ध के बाद बाबर ने **गाजी** (युद्ध का विजेता) की उपाधि धारण कर लिया।
- इसी युद्ध के बाद बाबर ने यह निर्णय लिया कि वह भारत में स्थायी रूप से रहेगा।
- 1528 के चंदेरी (मध्यप्रदेश का ग्वालियर क्षेत्र) के युद्ध में उसने मेदनी राय को पराजित किया।
- 1529 ई. में उसने घाघरा के युद्ध में बिहार तथा अफगान के संयुक्त सेना को पराजित कर दिया। इसका नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। किन्तु बाबर ने अफगानों का पूर्णत: सफाया नहीं किया। यही बचे हुए अफगान सैनिक हुमायूं के लिए खतरा बनकर सामने आए।
- 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु हो गयी और उसे आगरा के आरामबाग में दफनाया गया।
- अकबर के समय इसके कब्र को आगरा से काबुल स्थानान्तरित कर दिया गया, क्योंकि बाबर की यह इच्छा थी उसे काबूल में दफनाया जाए।
- बाबर चार बाग शैली आगरा के आरामबाग नामक बगीचा में बनवाया था। इसमें नदी तथा नहरों द्वारा पानी देने की व्यवस्था थी।
- बाबर को चार बाग शैली का जनक कहा जाता है।

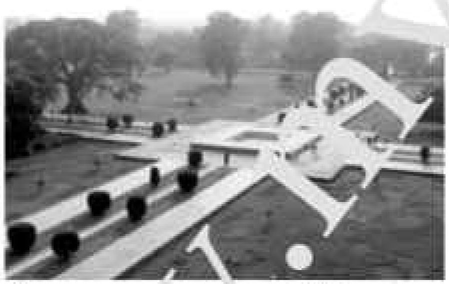

- बाबर ने मुबइयान नामक पद्य शैली का विकास किया।
- बाबर ने सड़कों को मापने के लिये गज-ए-बाबरी नामक माप का प्रयोग किया था।
- बाबर ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था। इस मस्जिद का वस्तुकार (desioner) मीर बाकी था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी (तुर्की भाषा) में यह कहता है कि उसने जिस वक्त भारत पर आक्रमण किया उस वक्त भारत में 5 मुस्लिम राज्य तथा 2 हिन्दू राज्य थे मुस्लिम राज्य में-दिल्ली, मालवा, गुजरात, बहमनी तथा बंगाल था। हिन्दु राज्य में-मेवाड़ तथा विजयनगर था।
- विजयनगर शासक कृष्ण देवराय बाबर के समकालिन थे बाबर ने इन्हें उस वक्त का सबसे शक्तिशाली शासक बताया है।

Remark :– तुजुक-ए-बाबरी बाबर की आत्मकथा है, जो तुर्की भाषा में है। अब्दुल रहीम खाने खाना ने अकबर के कहने पर इसका फारसी में अनुवाद किया। इसकी फारसी अनुवाद ही बाबर-नामा कहलाता है।

- बाबर के 4 पुत्र थे। जिसमें सबसे बड़ा पुत्र हुमायूं था। बाबर अपने जीवन काल में ही चिश्ती को अपना उत्तराधिकारी बनाया था।

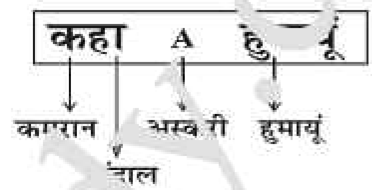

हुमायूं (1530–1556 ई.)

- हुमायूं का जन्म काबुल में माहम बेगम के गर्भ से हुआ था। हुमायूं का अर्थ होता है– **भाग्यवान**
- यह बाबर के 4 बेटों में से सबसे बड़ा पुत्र था।

- बाबर के कहने पर हुमायूं ने अपने राज्य को 4 भाइयों में बांट दिया कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिन्दाल को मेवात (अलवर) की जागीर दी तथा चचेरे भाई सुलेमान मिर्जा को बदख्शाँ राज्य प्रदान की। जो हुमायूं की सबसे बड़ी भूल साबित हुआ।

हुमायूं के लिए चुनौती–

1. राज्य का बँटवारा
2. धन की कमी
3. राजपूत का विरोध
4. अफगान

- बाबर ने अफगान शासकों का पूर्णत: सफाया नहीं किया था, जिस कारण अफगान शासक हुमायूं के लिए सबसे बड़ा खतरा बनने लगे।
- हुमायूं का राज्याभिषेक 1530 ई. में हुआ। यह शासक बनने से पूर्व बदख्शाँ (अफगान) का सुबेदार था।
- हुमायूं ने सर्वप्रथम पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर के साथ हिस्सा लिया था, यह उसके जीवन का प्रथम युद्ध था।
- हुमायूं का प्रारम्भिक शासन शांतिपूर्ण था। किन्तु हुमायूं के ही प्रमुख विरोधी थे-एक गुजरात का शासक बहादुर शाह तथा एक बिहार का शासक शेरशाह सूरी।
- चितौड़ की रानी, कर्णवाही ने गुजरात के शासक बहादुर शाह के अत्याचार से बचने के लिए हुमायूं से मदद मांगी और भेंट स्वरूप उसे राखी दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- हुमायूं कर्णवाही की रक्षा के लिए सेना लेकर चल दिया किन्तु कालींजर के शासक प्रताप रूद्र देव से हुमायूं का युद्ध हो गया और हुमायूं के पहुँचने में देर हो गयी तब तक कर्णवाही जौहर कर चुकी थी।
- हुमायूं बहादुर शाह को पराजित करने के लिए 1531 ई. में सर्वप्रथम कालिंजर अभियान किया।
- कालिंजर अभियान हुमायूं का शासक बनने के बाद पहला अभियान था।
- हुमायूं का अफगानों के विरूद्ध पहला अभियान 1532 ई. में दोहरिया (दौरा) का अभियान था। जिसमें हुमायूं विजयी रहा।
- 1538 ई. में हुमायूं ने गौड़ (बंगाल) अभियान किया। इसने बंगाल का नाम जन्नताबाद रखा।
- बंगाल अभियान से लौटते समय उसकी सेना पर शेरशाह सूरी ने 1539 ई. में अचानक चुनार की किला के पास चौसा नामक स्थान पर हुमायूं पर आक्रमण कर दिया। हुमायूं की सेना में भगदड़ मच गयी और पराजय की स्थिति में हुमायूं घोड़ा सहित गंगा नदी में कुद गया। हुमायूं की जान शिहाबुद्दीन निजाम नामक भिस्ती (मल्लाह) ने बचायी इसी कारण उसने शिहाबुद्दीन निजाम को एक दिन के लिए दिल्ली का शासक बनाया। इसी ने अपने एक दिन के कार्यकाल में चमड़े का सिक्का चलाया।
- इसकी जानकारी हुमायुनामा नामक पुस्तक से मिलती है। जिसकी रचना हुमायूं की बहन गुलबदन बेगम ने किया। यह पुस्तक दो भागों में हैं-प्रथम भाग में बाबार तथा द्वितीय भाग में हुमायूं की चर्चा है।
- यह मुगलकाल की एक मात्र पुस्तक है जिसकी रचना किसी महिला ने की।
- 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने बिलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूं को हराया और उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और 1540 ई. में शेरशाह सूरी ने खुद को दिल्ली का शासक घोषित कर दिया।
- भारत से निष्कासन के दौरान हुमायूं ने अपनी गर्भवती पत्नी हमिदा बानों बेगम को अमरकोट (पंजाब) के राजा वीरसाल के दरबार में छोड़कर चला गया।
- इन्हीं के दरबार में 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अकबर का जन्म हुआ।
- निर्वासन के दौरान हुमायूं काबुल में रहा। हुमायूं ने पुन: 1545 ई. में ईरान के शासक की सहायता से कंधार एवं काबुल पर अधिकार कर लिया।
- 1553 ई. में शेरशाह के उत्तराधिकारी इस्लामशाह की मृत्यु के बाद अफगान साम्राज्य विघटित होने लगा ऐसी स्थिति में हुमायूं को पुन: अपने राज्य प्राप्ति का अवसर मिला।
- 1555 ई. में लुधियाना के समीप मच्छीवाड़ा के युद्ध में हुमायूं ने अफगान सरदार हैवत खान तथा तातार खान को पराजित करके पंजाब जीत लिया।
- 1555 ई. में ही सरहिन्द के युद्ध (चण्डीगढ़) में हुमायूं के सेनापति बैरमखान ने अफगान सेनापति सिकन्दरशाह शूर को पराजित कर दिया।
- सरहिंद विजय के पश्चात 1555 ई. में एक बार पुन: दिल्ली के तख्त पर हुमायूं को बैठने का सौभाग्य मिला।
- हुमायूं ने दिल्ली में दिन पनाह नामक पुस्कालय बनवाया था। इसी पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर हुमायूं की मृत्यु 1556 ई. में हो गयी।
- हुमायूं अफिम के सेवन का आदि था। यह ज्योतिष विद्या में विश्वास रखता था जिस कारण सप्ताह के प्रत्येक दिन अलग-अलग रंग के वस्त्र पहनता था।
- हुमायूं के दरबार में दो प्रमुख चित्रकार-मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद रहते थे।
- लेनपुल ने लिखा है हुमायूं का अर्थ होता है खुशनसीब व्यक्ति लेकिन हुमायूं जीवन भर लड़खड़ाते रहा और लड़खड़ाते हुए ही उसकी मृत्यु हो गयी।
- हुमायूं की कब्र ईरानी संस्कृति से प्रभावित है, जिसका वास्तुकार मिर्जा ग्यास बेग था। यह उसकी पत्नी हमीदा बानो बेगम की हुमायूं को अमूल्य भेंट थी। यह मकबरा दिल्ली में स्थित है।

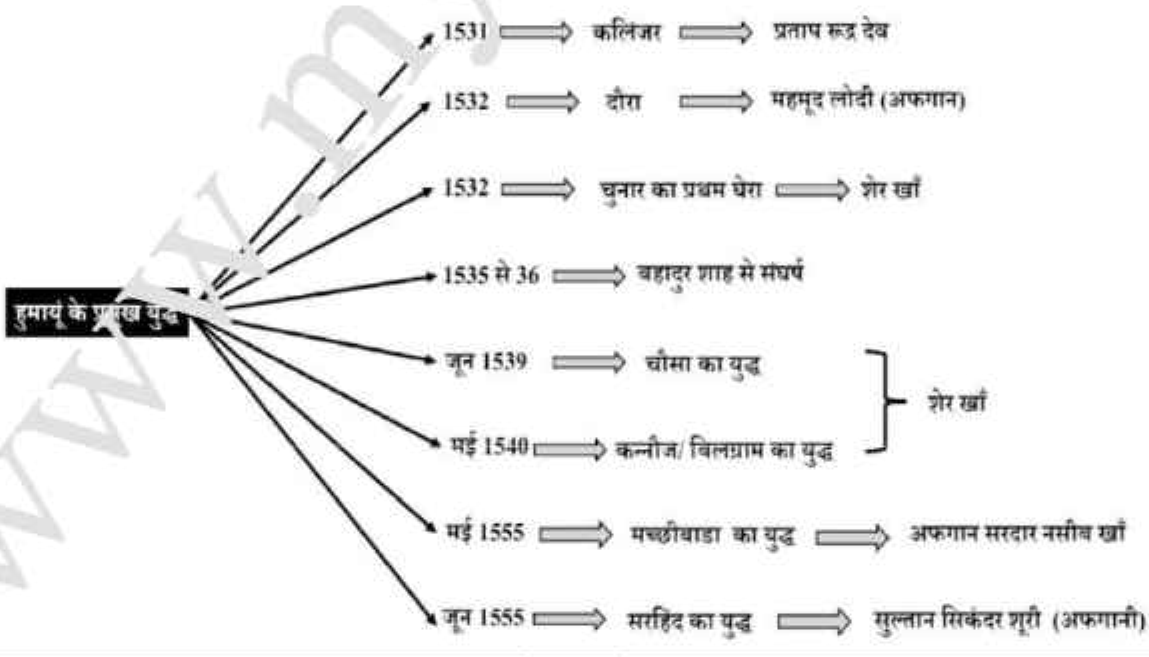

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

शेरशाह सूरी (1540–1545)

शेरशाह → इस्लामशाह → फीरोज शाह → मोहम्मद शाह

- शेरशाह सूरी का बचपन का नाम फरीद खान था। इसके पिता हसन अली थे, जो बिहार के जागीरदार थे और बहलोल लोदी के दरबार में कार्यरत थे।
- हसन अली के मृत्यु के बाद शेरशाह सूरी बिहार के नुमानी शासकों के दरबार में काम करने लगा।
- बहार अली नुमानी ने ही फरीद को शेरशाह सूरी की उपाधि दिया।
- शेरशाह सूरी द्वितीय अफगान वंश का संस्थापक कहा जाता है।
- शेरशाह सूरी ने जिस वंश की स्थापना किया उसे सूर वंश कहते हैं। सूर वंश की जानकारी अब्बास खान शेरखानी की रचना तौफा-ए-अकबरशाही से मिलती है।
- शेरशाह सूरी को मध्यकाल में एक प्रबल प्रशासक के रूप में देखा जाता है, इन्होंने कहा था कि **किस्मत साथ दे तो मैं मुगलों को हरा दूँगा।**
- 1538 ई. के बंगाल अभियान के बाद हुमायूं जब लौट रहा था तो 1539 ई. में चौसा नामक स्थान पर शेरशाह ने आक्रमण कर दिया और हुमायूं को पराजित किया। 1540 ई. के विलग्राम (कन्नौज) के युद्ध में हुमायूं को भारत छोड़ने के लिए विवश कर दिया और 1540 ई. में दिल्ली का शासक बन गया।
- इसने हजरत-ए-आला की उपाधि धारण किया।
- 1541 ई. में शेरशाह का गक्खर जाति के लोगों से युद्ध हुआ, जिसमें शेरशाह उनकी शक्ति को खत्म तो न कर सका पर उनकी रोकथाम के लिए उसने पश्चिमोत्तर सीमा पर रोहतासगढ़ के किले का निर्माण करवाया। गक्खर लोग अपनी वीरता एवं साहस हेतु प्रसिद्ध थे एवं लूटपाट करते थे।
- शेरशाह ने 1542 ई. में मालवा पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया, क्योंकि कन्नौज युद्ध के समय मालवा के शासक शेरशाह का साथ नहीं दिया था।
- 1543 ई. में शेरशाह ने रायसीन पर आक्रमण किया। माना जाता है कि शेरशाह ने इस अभियान में धोखे से राजपूत शासक पूरनमल को मार डाला। पूरनमल की मृत्यु के बाद राजपूत स्त्रियों ने जौहर कर लिया। रायसीन की यह घटना शेरशाह के चरित्र पर एक कलंक माना जाता है।
- 1544 ई. में शेरशाह सूरी ने मेवाड अभियान किया और यहां के शासक मालदेव को पराजित किया। मेवाड़ विजय कठिन होने के कारण शेरशाह सूरी ने कहा कि मैं एक मुट्ठी बाजरे के लिए पूरे भारत को खो चुका था।

- 1545 ई. में शेरशाह सूरी ने कलिंजर अभियान किया। यह अभियान एक दासी (Dancer) के लिए था। इस समय यहाँ के राजा कीरत सिंह थे। इस अभियान के दौरान शेरशाह सूरी के सेना द्वारा छोड़े गये तोप का गोला कलिंजर की किला से टकराकर वापस शेरशाह-सूरी के समीप आ गिरा। जिससे शेरशाह सूरी की मृत्यु हो गयी। कलिंजर का वर्तमान नाम महोबा है। यह मध्यप्रदेश में है। शेरशाह सूरी को सासाराम में दफनाया गया।
- शेरशाह का मकबरा सासाराम में है। कनिंघम ने शेरशाह के मकबरे को ताजमहल से भी सुंदर कहा है।
- इसका बेटा इस्लाम शाह योग्य था किन्तु 1553 ई. में आकस्मिक मृत्यु हो गयी।
- इसके बाद फिरोजशाह शासक बना जिसे उसके मामा (मुबारिज खान) ने मरवा दिया।
- शेरशाह सूरी के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना और इस वंश का अंतिम शासक सिकन्दर शाह सूरी था।

शेरशाह सूरी का प्रशासनिक व्यवस्था

- शेरशाह सूरी एक प्रबल प्रशासक था इसने बहुत से सुधार किया। इन सारे सुधार को अकबर ने भी अपनाया था। इसी कारण शेरशाह सूरी को अकबर का पथ प्रदर्शक (रास्ता दिखाने वाला) या अकबर का पूर्वगामी शासक कहा जाता है।
- टोडरमल शेरशाह सूरी के दरबार में भी सेवा दे चुके थे।
- शेरशाह सूरी ने पाटलीपुत्र का नाम बदलकर पटना रखा था।
- इसने Grand Trank (G.T.) Road का निर्माण करवाया।
- इसने किसानों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने के लिए रैय्यतवाड़ी व्यवस्था शुरु किया। यह किसानों को रैय्यत कहकर बुलाता था।
- कर की चोरी न हो इसलिए उसने भूमि की नाप करवायी इस व्यवस्था को जब्ती व्यवस्था कहा गया।
- इसने पट्टा एवं कबुलियत नामक नयी व्यवस्था शुरु की। पट्टा पर कर का विवरण रहता था कि कितना कर लिया जाएगा और किस समय लिया जाएगा।
- कबुलियत वह दस्तावेज था जिस पर किसान इस बात की सहमति देता था कि वह पट्टा में दिये गए कर को देन में सहमत है।
- भूमि की माप कराने के लिए जरीबान नामक कर लिया जाता था, जो किसान भूमि का माप नहीं कराता था उससे मुहाबिलाना नामक कर लिया जाता था।
- शेरशाह सूरी के समय जौनपुर शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र था। इसे भारत का शिराज (सर का ताज) कहा जाता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- शेरशाह सूरी ने सोने का जो सिक्का चलाया उसे **असर्फी** या **मोहरा कहा** गया है। शेरशाह सूरी ने जो चांदी का सिक्का चलाया उसे **रुपया** कहा गया। इसके तांबे के सिक्का को दाम कहा जाता था। शेरशाह के शासनकाल में चांदी के रुपये एवं तांबे के दाम का अनुपात 1 : 64 था।
- इसने भूमि की जांच करने के लिए एक कानूनगो नामक अधिकारी की नियुक्ति किया।
- इसने दिल्ली में किला-ए-कुहना नमक मस्जिद का निर्माण कराया। इसे ही पुराना किला के नाम से जाना जाता हैं।
- इतिहासकार कहते हैं कि शेरशाह सूरी के समय यदि कोई औरत आधी रात को सोना लेकर जाती है, तो कोई भी व्यक्ति उसके सोना को छुने की हिम्मत नहीं कर सकता है।
- यह इस बात की ओर इशारा करता है कि शेरशाह सूरी के समय पुलिस व्यवस्था बहुत अच्छी थी।
- इसके कठोर न्याय तथा दण्ड व्यवस्था के कारण अपराध बहुत कम होते थे।
- शरेशाह के समक्ष अमीर-गरीब, मित्र, दुश्मन सभी एक समान होते थे।

अकबर (1556-1605 ई.)

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में हुआ था। अकबर की मां हमिदा बानो बेगम थी। इसकी धाय माँ माहम अनंगा थी।
- अकबर को बचन में अस्करी ने पाला और फिर काबुल में कामरान के पास भेज दिया (1547 ई. से अकबर हुमायूं के साथ रहने लगा)।
- अकबर की प्रथम पत्नी हिंदाल की पुत्री रूकैया था।
- 1555 ई. में हुमायूं जब भारत पर पुनः आक्रमण किया और मच्छीवाड़ा का युद्ध लड़ा। इस युद्ध में हुमायूं के साथ अकबर भी भाग लिया। यह युद्ध अकबर के जीवन का पहला युद्ध था।
- 1555 ई. में हुमायूं ने अकबर को अपना उत्तराधिकारी बनाकर लाहौर का सूबेदार बनाया।
- 1556 ई. में जब हुमायूं की मृत्यु हुई तब अकबर पंजाब का सूबेदार सिकंदर सूर से युद्ध कर रहा था। (17 दिन तक हुमायूं की मृत्यु को गुप्त रखा गया)।
- 14 फरवरी, 1556 ई. को पंजाब के कालानौर (गुरुदासपुर) में मिर्जा अब्दुल कासिम ने अकबर का राज्याभिषेक कराया।
- राज्याभिषेक के समय अकबर अल्पायु था अत: वैरम खान को अकबर का संरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

- वैरम खान अकबर को लेकर आगरा की ओर बढ़ा किन्तु इससे पहले ही आदिल शाह सूरी का सेनापति हेमू आगरा पर अधिकार कर लिया। साथ ही साथ हेमू ने दिल्ली पर भी अधिकार कर लिया। हेमू दिल्ली का एक बनिया था जिसने विक्रमादित्य का उपाधि धारण किया था।
- आदिलशाह ने हेमू को विक्रादित्य की उपाधि प्रदान की थी।
- हेम विक्रमात्यि की उपाधि धारण करने वाला 14वाँ और अंतिम शासक था साथ ही दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला अंतिम हिन्दू सम्राट था।
- दिल्ली में मुगल सेनापति तरवीबेग ने बैरम खान को भारत छोड़ने की सलाह दिया जिस कारण वैरम खान ने उसकी हत्या कर दी।
- 1556 ई. के पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर के सेना का नेतृत्व वैरम खान ने किया और इस युद्ध में वैरम खान ने हेमू को पराजित कर दिया।
- यह युद्ध अकबर का शासक बनने के बाद पहला युद्ध था।
- अकबर ने वैरम खान के संरक्षण में शासन आरम्भ किया जिस कारण वैरम खां अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया।
- वैरम खान की इमानदारी को देखकर अकबर ने उसे खान-ए-खाना की उपाधि से सम्मानित किया।
- बैरम खान शिया था। जबकि दिल्ली की अधिकांश जनता सुन्नि था। यही विवाद आगे चलकर युद्ध का रूप लिया और तिलवाड़ा का युद्ध 1560 ई. में अकबर ने वैरम खान को हरा दिया और वैरम खां के आगे दो प्रस्ताव रखा–
  1. वैरम खा या तो दूर के किसी सूबा (राज्य) के सूबेदार बन जाए।
  2. या तो हज यात्रा पर चले जाएं।
- वैरम खान ने हज यात्रा को चुना। हज पर जाते समय गुजरात के मुबारक खां नामक व्यक्ति ने गुजरात के पाटन नामक स्थान पर वैरम खां की हत्या कर दी।
- वैरम खां का बेटा अब्दुल रहीम था तथा उसकी पत्नी सलीमा बेगम थी। अकबर ने सलीमा बेगम से शादी कर ली।
- 1560 ई. में अकबर जैसे ही वैरम खां के संरक्षक से मुक्त हुआ तो अपनी धाय माँ माहम अनगा के प्रभाव में आ गया और दो वर्षों तक उसके प्रभाव मे रहा। इस दो वर्ष के शासन को पेटीकोट शासन, पर्दा प्रथा का शासन, हरम दल का शासन या अतका खेल का शासन कहा गया।

अकबर की धार्मिक नीति

- 1562 ई. में अकबर हरम दल के प्रभाव से मुक्त हो गया।
- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अन्त, 1563 ई. में तीर्थ यात्रा कर का अन्त तथा 1564 में जजिया कर का अन्त कर दिया गया।
- 1571 ई. में अकबर ने फतेहपुर सिकरी शहर की स्थापना किया। 1575 ई. में अकबर ने इबादत खाना की स्थापना फतेहपुर सिकरी में किया। इस इबादतखाना में सभी धर्मों के लोग बृहस्पतिवार के दिन इकट्ठा होते थे और अपने अपने धर्म की विशेषता का उल्लेख करते थे। किन्तु बहुत ही जल्द यह

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

इबादतखाना को बन्द करना पड़ा क्योंकि यहां मारपीट शुरु हो जाती थी। अकबर के इस नीति को सुलह-ए-कुल की नीति कहा गया।

- 1578 ई. में सभी धर्मों के लोगों के लिए इबादत खाना में प्रवेश का द्वार खोल दिया गया।
- 1579 ई. में अकबर ने मजहर की घोषणा की। इसके तहत धार्मिक मामले में अकबर सर्वोपरि हो गया। मजहर के तहत अकबर ने धार्मिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया। धार्मिक विवादों को राजा हल करेगा किन्तु कुरान पर राजा का कोई अधिकार नहीं होगा।
- 1582 ई. में अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक एक नया धर्म चलाया। यह धर्म मानने के लिए कोई बाध्य नहीं था। यह लोगों की इच्छा पर था।
- दीन-ए-इलाही धर्म को मानने वाला एक मात्र हिन्दू महेशदास (बीरबल) था।
- दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान पुरोहित (पंडित) अबुल फज़ल था। उनके धार्मिक गुरु अब्दुल लतीफ था।
- 1583 ई. में अकबर ने हिजरी संवत के जगह एक नया कैलेंडर इलाही संवत जारी किया।
- अकबर ने अमीर-उल-मोमिनी की उपाधि धारण किया जो केवल खलीफा धारण करते थे।
- अकबर के दरबार में हिन्दू धर्म के विद्वान पुरुषोत्तम तथा कुम्भनदास रहते थे।
- पारसी धर्म के विद्वान दस्तूर मेहर जी राणा रहते थे। इन्हीं से अकबर ने सूर्य नमस्कार सीखा था।
- इसाई धर्म के एकाबीवी रहते थे।
- अकबर के दरबार में जैन विद्वान हरिविजय सूरी को जगत गुरु तथा जिनचन्द्र सुरी को युग प्रधान की उपाधि दिया।
- अकबर ने चौथे सिख गुरु राम दास को अमृतशहर की स्थापना के लिए 500 बिघा जमीन दान दिया।
- अकबर ने पारसी धर्म के पुरोहित दस्तूर मेहर जी राणा को जीवन निर्वाह के लिए 200 बीघा जमीन दी थी।
- अकबर के समकालिन सूफी संत शेख सलीम चिश्ती थे। अकबर इनसे सर्वाधिक प्रभावित हुआ था इसी कारण अकबर ने अपने बेटे का नाम सलीम रखा। जो आगे जाकर जहांगीर के नाम से जाना गया।
- शेख सलीम चिश्ती का मकबरा फतेहपुर सिकरी में है। फतेहपुर सिकरी शहर का वास्तुकार बहाउद्दीन थे।

मुद्रा प्रणाली

- अकबर ने अनेक प्रकार के सिक्के चलाए। अकबर ने रुपया तथा दाम सिक्को को भी निरन्तर जारी रखा।
- 1 रुपया (अकबर) = 40 दाम
- 1 रुपया (शेरशाह) = 64 दाम
- अकबर के समय वृत्ताकार सिक्का "इलाही" तथा आयताकार सिक्का "जलाली" कहलाता था।
- 1 इलाही = 10 रुपया

अकबर के समय भू-राजस्व व्यवस्था

> **जब्ती प्रणाली**

- भूमि के माप (आकार) के आधार पर लगान (Tax) निर्धारण व्यवस्था को जब्ती प्रणाली कहते हैं।

> **कनकूट प्रणाली**

- ऊपज को ध्यान में रखकर लगान (Tax) निर्धारण व्यवस्था को कनकूट व्यवस्था कहते हैं।

> **आईन-ए-दहसाला**

- दस वर्षों के औसत ऊपज को आधार मानकर लगान (Tax) का निर्धारण आइन-ए-दहसाला कहलाता है। यह लगान निर्धारण की एक औसत प्रणाली है। इसका श्रेय टोडरमल को जाता है।

Note :– भू-राजस्व को ऊपज भी कहते थे यह ऊपज का 1/2 भाग (50%) से 1/3 भाग (33%) तक रहता था।

> **अकबर ने भूमि को ऊपज के आधार पर चार श्रेणी में बाँटा था–**

1. पोलज भूमि	—	प्रतिवर्ष खेती
2. परती भूमि	—	एक वर्ष अंतराल पर खेती
3. चाचर भूमि	—	चार वर्ष अंतराल पर खेती
4. बंजर भूमि	—	यहाँ खेती नहीं होती थी

> **अकबर ने लगान वसूली के आधार पर भूमि को चार श्रेणी में बाँटा–**

1. खालसा भूमि– यह सरकारी भूमि होती थी।
2. जागीर भूमि– यह मनसबदार को दी गई भूमि थी।
3. पैबाकी भूमि– यह सरकार के अधीन रहती थी इसके द्वारा जागीरदारों के घाटे की पूर्ति की जाती थी।
4. मददमाश भूमि– यह दान में दी जाती थी।

अकबर के नवरत्न

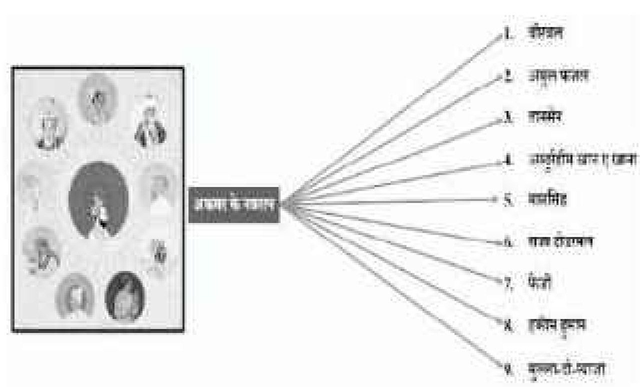

- अकबर के दरबार में विभिन्न क्षेत्र के 9 विद्वान रहते थे जिन्हें नवरत्न कहा जाता है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

1. **बीरबल**

- इसका असली नाम महेश दास था। यह दिन-ए-इलाही को मानने वाले एक मात्र हिन्दू (राजपूत) थे। यह अकबर के प्रधान सलाहकार थे। इनकी मृत्यु 1586 ई. में कश्मीर के युसूफ जाई के विद्रोह को दबाते समय हो गयी। अकबर ने इन्हें कविराज व राजा की उपाधि प्रदान किया था।

2. **तानसेन**

- यह अकबर के दरबार में सबसे प्रसिद्ध संगीतकार थे। इनका जन्म ग्वालियर में हुआ। इनका मूल नाम (असली नाम) राम तनु पाण्डेय था। इनकी प्रमुख रचना मिया का टोपी, मियां का सारंग, मियां का मल्हार, दरबारी कन्हरा था। अकबर ने इन्हें कण्ठा भरण वाणी विलास की उपाधि दी थी।

3. **मानसिंह**

- यह आमेर के राजा भारमल का पोता, भगवानदास का बेटा था। अकबर ने सर्वाधिक युद्ध इसी के नेतृत्व में जीता। अकबर ने इन्हें 'अमीर-उल-उमरा' की उपाधि दी थी।

4. **टोडरमल**

- यह अकबर के दरबार में भूमि तथा राजस्व सुधारक थे। इन्होंने राजस्व के क्षेत्र में एक नई व्यवस्था आईने दहशाला लेकर आये। राजा टोडरमल अकबर से पहले शेरशाह के दरबार में कार्यरत थे।

5. **अबुल फजल**

- यह दिन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था। इसने अकबरनामा तथा आइन-ए-अकबरी पुस्तक लिखा। जिसमें अकबर का चर्चा है। यह पुस्तक सात साल में लिखी गयी। इस पुस्तक के 3 भाग है। तीसरा भाग आइने अकबरी कहलाता है। जो खुद अबुल फजल की आत्मकथा है। 1602 ई. में वीर सिंह बुन्देला ने जहांगीर के कहने पर इनकी हत्या कर दी। जब वो दक्षिण से आगरा की ओर आ रहे थे।

6. **फैजी**

- अबूल फजल के बड़े भाई थे जो कवि के पद पर थे। इन्होंने गीता तथा लीलावती पुस्तक का फारसी अनुवाद किया।

7. **अब्दुल रहीम खान-ए-खाना**

- यह बैरम खां का पुत्र था। अकबर ने इसे अनुवाद विभाग का प्रधान बनाया। इसने बाबर की आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी का फारसी में अनुवाद किया और इसी अनुवादित पुस्तक का नाम बाबरनामा है।

8. **मुल्ला-दो-प्याजा**

- यह अरब का रहने वाला था जो प्रमुख व्यंगकार (मजाकिया) था। इसे भोजन के साथ दो प्याज खाने की आदत थी।

9. **हकीम हुकाम**

- यह अकबर के दरबार में बावर्ची के पद पर थे।

Remark :– तुलसीदास अकबर के समकालीन थे। अकबार के कहने के बाद भी वे नवरत्न में शामिल नहीं हुए।

मनसबदारी व्यवस्था

- यह अकबर की सैन्य तथा प्रशासनिक व्यवस्था थी।
- मनसबदार को पैदल सैनिक (जाट) तथा घुड़सवार (सवार) रखने होते थे। जिसके बदले में अकबर मनसबदारों को वेतन देता था।
- 1573-74 ई. में गुजरात विजय के बाद मनसबदारी प्रथा आरंभ की गई।
- युद्ध के समय सभी मनसबदार अपनी सेना लेकर आते थे। सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार औरंगजेब के पास थे।
- पैदल सैनिक (जाट) का वेतन प्रतिमाह = 3 रु
- घुड़सवार सैनिक (सवार) का वेतन प्रतिमाह = 20 kg अनाज
- मनसबदार 3 श्रेणी के होते थे।

  A. प्रथम श्रेणी – 10000 सैनिक

  B. द्वितीय श्रेणी – 5000 सैनिक

  C. तृतीय श्रेणी – 10 – 20 सैनिक
- मनसबदारों की संख्या वास्तविक सैनिकों की संख्या से भिन्न रहती थी।
- अकबर का संपूर्ण सम्राज्य 12 सूबों में विभक्त था तथा दक्षिण विजय के बाद संख्या 15 हो गई।

अकबर की राजपूत नीति

- अकबर की राजपूत नीति "दमन और समझौते" की नीति थी।
- राजपूत नीति के तहत अकबर राजपूत राजाओं की सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था।
- अकबर ने राजपूत राजाओं को समझौता नीति के तहत उन्हें जागीरदार तथा पैतृक जागीर भूमि पर शासन का अधिकार दिया और उनको राजा का पद पर भी बना रहने दिया तथा खुद अकबर उनका सम्राट हुआ करता था। किन्तु अकबर ने उन्हें स्वयं के सिक्के चलाने का अधिकार छीन लिया और उनके क्षेत्र में मुगलशाही सिक्का का प्रचलन करवाया।
- जो राजा उनकी बात (समझौता नीति) नहीं मानते थे उनसे युद्ध किया करते थे।

अकबर का सैन्य अभियान

- अकबर ने सर्वप्रथम 1559 ई. में ग्वालियर अभियान किया।
- 1560 ई. में अकबर ने जौनपुर अभियान किया।
- 1561 ई. में चुनार तथा मालवा अभियान किया तथा इसे जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- इस समय मालवा का शासक बाजबहादुर था तथा इस अभियान का नेतृत्व माहम अनंगा के पुत्र अधम खाँ ने किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 1562 ई. में आमेर पर आक्रमण किया। आमेर की राजधानी जयपुर थी और आमेर के राजा भारमल (कछवाहा राजपूत) थे।
- राजा भारमल एक मात्र राजपुत राजा थे जिन्होंने अकबर की अधीनता स्वेच्छा से स्वीकार किया और अपनी बेटी जोधाबाई (हरखू बाई) का विवाह अकबर से करा दिया। वे अपने बेटे भगवान दास तथा पोता मान सिंह को अकबर की सेवा में भेजा। अकबर ने जोधाबाई को मरियम-उज्ज-जमानि की उपाधि दिया।
- गोंडवाना (मध्यप्रदेश) की रानी दुर्गावती (संग्राम सिंह की विधवा) ने कभी भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं किया। यह एक मात्र महिला थी जिसने अकबर का सर्वाधिक विरोध किया।
- 1564 ई. में आसफ खां ने रानी दुर्गावती को पराजित कर दिया। अंतत: गोंडवाना (मध्यप्रदेश) पर अकबर का अधिकार हो गया।
- 1567 ई. में अकबर ने मेवाड़ अभियान किया। इस समय मेवाड की राजधानी चित्तौड़गढ़ थी और वहां के राजा उदय सिंह थे।
- मेवाड अभियान पूरा होने से पहले ही अकबर लौट गया। पुन: अकबर ने 1576 ई. में मेवाड अभियान किया और हल्दीघाटी के युद्ध में उदय सिंह के पुत्र महाराणा प्रताप को पराजित कर दिया। इस युद्ध में अकबर की सेनापति मानसिंह थे। जबकि महाराणा प्रताप का सेनापति हकीम खान शूर थे।
- प्रारम्भ में युद्ध महाराणा प्रताप जीत रहे थे किन्तु यह अफवाह फैलाया गया कि अकबर भी युद्ध में शामिल हो गया। जिससे मुगल सेना का मनोबल बढ़ गया। इसके बाद महाराणा प्रताप जंगल में भाग गए और इस प्रकार मेवाड़ अभियान अधूरा रह गया।
- धीरे-धीरे महाराणा प्रताप ने पुन: अपने अधिकांश क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।
- 1572 ई. में अकबर ने गुजरात अभियान किया। इसी समय अकबर ने पहली बार समुद्र (खम्भात की खाड़ी) को देखा था। यहीं पर अकबर पुर्तगालियों से भी मिला था।
- अकबर ने जब गुजरात को हराकर वापस लौटा तो गुजरात के शासकों ने अकबर की अधिनता मानने से अस्वीकार कर दिया। इसी कारण अकबर ने पुन: 1573 ई. में गुजरात अभियान किया। यह अकबर का सबसे द्रुतगामी (9 दिन) अभियान था। इसी गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने फतेहपुर सिकरी में बुलन्द दरवाजा का निर्माण करवाया था।
- बिहार एवं बंगाल के शासक दाऊद खाँ ने पटना के मुगल किले पर 1574 ई. में आक्रमण किया था।
- अकबर ने पूर्णत: बिहार तथा बंगाल को मुगल साम्राज्य में 1576 ई. में मिला लिया।
- अकबर ने 1581 ई. में काबुल अभियान, 1586 ई. में कश्मीर अभियान किया और इसे जीत लिया।
- कश्मीर के यूसूफजाई कबीले के विद्रोह में ही बीरबल की मृत्यु हो गयी।
- 1595 ई. में कंधार तथा बलुचिस्तान को भी जीत लिया।

दक्षिण भारत अभियान

- अकबर ने दक्षिण भारत विजय के लिए अब्दुल रहीम और उसके पुत्र मुराद के नेतृत्व में सेना भेजा।
- अकबर दक्षिण भारत अभियान करने वाला पहला मुगल शासक था।
- अकबर ने पूरी तरह से दक्षिण भारत को नहीं जीता था।

➤ **दक्षिण भारत के 4 प्रमुख राज्य थे–**
  1. खानदेश
  2. अहमदनगर
  3. बीजापुर
  4. गोलकुण्डा

- खानदेश को दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार कहते थे। खानदेश ने स्वत: अकबर की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- अकबर ने अहमदनगर की शासिका चांद बीबी से युद्ध करके उससे बरार तथा अहमदनगर का क्षेत्र जीत लिया।
- बीजापुर के शासक ने भी अकबर की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- 1601 ई. में खानदेश ने विद्रोह कर दिया जिसे असीरगढ़ के युद्ध में अकबर ने विद्रोह समाप्त कर दिया। यह युद्ध अकबर ने रिश्वत देकर जीता था। असीरगढ़ का युद्ध अकबर के जीवन का अंतिम युद्ध था।
- इस प्रकार असीरगढ़, बीजापुर, अहमदनगर, खानदेश तथा बरार पर मुगलों का अधिकार हो गया।
- 1602 ई. में जहांगीर ने अपने पिता के विरुद्ध इलाहाबाद में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह को दबाने के लिए अकबर ने अबुल फजल को भेजा। किन्तु जहांगीर के कहने पर वीर सिंह बुन्देला ने इनकी हत्या कर दी।
- 1605 ई. में डायरिया के कारण अकबर की मृत्यु हो गयी।

Remark :– अकबर के गुरु अब्दुल लतीफ थे जो एक योग्य व्यक्ति थे किन्तु अकबर निरक्षर ही रह गया।

Note :– फिरोज शाह तुगलक (F.S.T.) को सल्तनत काल का अकबर कहा जाता है।

जहांगीर (1605-1627 ई.)

- जहांगीर का जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. को मरियम इजवानि (हरखु बाई/जोधाबाई) के गर्भ से हुआ। इसके बचपन का नाम सलीम था। मानबाई तथा जगत गोसाई इसकी प्रारम्भ में दो पत्नीयां थी। जगत गोसाई जहांगीर की अत्यधिक शराब पीने से अप्रसन्न थी जिस कारण इसने आत्महत्या कर ली।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- जहांगीर ने आगरा के किले में न्याय के लिए सोने की जंजीर टंगवायी थी जिसमें 12 घण्टियां थी। जहांगीर न्याय के लिए प्रसिद्ध था। इसने अपराधी के नाक-कान काटने और घर कुर्की करने का आदेश दिया था।
- जहांगीर ने मद्यपान (नशा) पर रोक लगा दिया।
- इसने रविवार एवं बृहस्पतिवार को पशु हत्या पर रोक लगा दिया, क्योंकि रविवार को अकबर का जन्म दिन था जबकि बृहस्पतिवार को अपना राज्याभिषेक कराया था। किन्तु इस दिन यदि बकरीद का दिन हो तो पशु हत्या कर सकते थे।
- 1606 ई. ये जहांगीर का बेटा खुसरो ने मानसिंह के साथ मिलकर जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह में 5वें गुरु अर्जुन देव ने खुसरो की सहायता किया। जिस कारण जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव को फांसी दे दी।
- 1615 ई. में जहांगीर ने चित्तौड़ अभियान किया और यहां के शासक अमर सिंह को पराजीत कर दिया और चित्तौड़ को मुगल साम्राज्य में मिला दिया। इस प्रकार चित्तौड़ अभियान जहांगीर के समय पुरा हुआ।

  Note :– मेवाड़ (चित्तौड़) का पहला अभियान अकबर ने 1567 ई. में किया। उस समय राजा उदयसिंह थे। दूसरा अभियान अकबर ने 1576 ई. में किया। उस समय राजा महाराणा प्रताप थे और अंतिम और तीसरा अभियान जहांगीर ने 1615 ई. में किया। उस समय राजा अमर सिंह थे।
- 1615 ई. में जहांगीर और अमर सिंह के बीच संधि हुआ और अमरसिंह ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लिया। कि न आत्म-ग्लानि के कारण अपना सिंहासन अपने त्र करनसिंह को सौंपकर स्वयं वनवास धारण कर लिया।
- 1616 ई. में जहांगीर ने अपने बेटा शाहजहां (खुर्रम) को दक्षिण भारत अभियान करने के लिए भेजा। खुर्रम ने बड़ी आसानी से दक्षिण भारत को जीत लिया। उसने अहमदनगर के शासक मलिक अम्बर को युद्ध में हरा दिया। इसी जय के उपलक्ष में जहांगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दिया था।

  Note :– मलिक अम्बर ने टोडरमल के भूराजस्व प्रणाली को लागू किया था।
- 1622 ई. में कंधार के शासकों ने मुगल क्षेत्र में रहने से इंकार कर दिया। शाहजहां का काल आते-आते कंधार पूरी तरह भारत से स्वतंत्र हो गया। कंधार को भारत का प्रवेश द्वार कहा जाता था।
- जहांगीर के शासनकाल को चित्रकला का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- जहांगीर ने अपनी आत्मकथा में लिखा कि कोई भी चित्र चाहे वह किसी मृत व्यक्ति या जीवित व्यक्ति द्वारा बनाया गया हो, मैं देखते ही तुरंत बता सकता हूं कि यह किस चित्रकार की कृति है। यदि किसी चेहरे के आंख को एक चित्रकार ने, भौंह किसी और ने बनाई हो, तो भी यह जान लेता हूं कि आंख किसने और भौंह किसने बनाये है।
- जहांगीर दूसरा ऐसा विद्वान शासक था जिसने अपनी आत्मकथा स्वयं लिखी। इसकी आत्मकथा का नाम तुजुक-ए-जहाँगिरी था जो फारसी भाषा में लिखा गया। किन्तु जहांगीर अपनी आत्मकथा पूरा होने से पहले ही मर गया। जहांगीर की आत्मकथा को मोतमिद खान ने पूरा किया।
- जहांगीर ने अपनी प्रयसी (प्रेमिका) अनारकली के लिए 1615 ई. में लाहौर में एक सुंदर कब्र बनवायी और इस पर यह प्रेमसूचक अभिलेख लिखवाया कि-"यदि मैं अपनी प्रेयसी का चेहरा एक बार पुन: देख पाता, तो कयामत के दिन तक अल्लाह को धन्यवाद देता।"
- जहांगीर धार्मिक दृष्टि से सहिष्णु था। रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया और अपनी कलाई पर राखी बंधवायी। जहांगीर ने दीवाली के दिन जुआ खेलने की इजाजत दे रखी थी।
- जहांगीर ने सूरदास को आश्रय दिया था और उसी के संरक्षण में 'सूरसागर' की रचना हुई।
- जहांगीर ने एक नयी प्रथा चलायी जिसके अनुसार पुरुषों का कान-छिदवाकर मूल्यवान रत्न पहनना फैशन बन गया।
- अशोक के कौशाम्बी अभिलेख तथा समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ती अभिलेख पर जहांगीर ने भी लेख लिखवाया था।

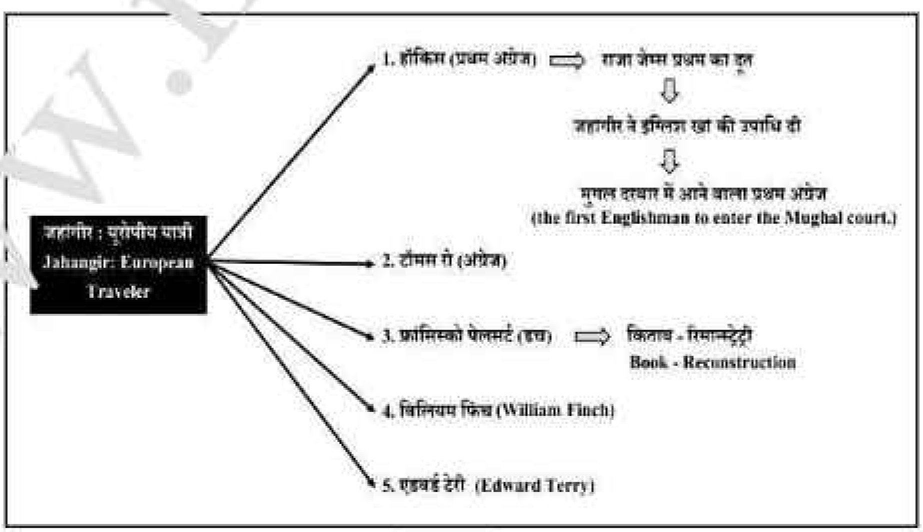

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 1608 ई० में इंग्लैंड के राजा जेम्स-I का राजदुत कैप्टन हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में व्यापारिक छूट प्राप्त करने के लिए आया किन्तु जहांगीर ने उसे कोई भी छूट नहीं दिया। किन्तु उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उसे English खान की उपाधि दिया। हॉकिन्स के पास अकबर के नाम का पत्र था किन्तु अकबर की मृत्यु हो चुकी थी। हॉकिन्स फारसी में बात करता था।
- 1615 ई० में पुन: इंग्लैण्ड के राजा जेम्स-I का राजदूत टॉमस रॉ जहांगीर के दरबार में व्यापारिक छूट प्राप्त करने के लिए आया। पहली बार जहांगीर ने टॉमस रॉ को ही व्यापारिक छूट दिया था।
- जहांगीर के समय ही पुर्तगालियों ने भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू की खेती प्रारंभ किया।
- 1627 ई० में शाहजहां ने लाहौर में जहांगीर के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। उस विद्रोह को दबाने के लिए जहांगीर तथा नूरजहां दोनों लाहौर पहुंचे।
- जहांगीर का सेनापति महावत खान शाहजहां के साथ मिल गया और नूरजहां तथा जहांगीर को कैदी बना लिया गया। किन्तु नूरजहां के प्रयास से वे दोनों जल्दी ही कैद से मुक्त हो गये। इसी वर्ष लाहौर के शहदरा में जहांगीर की मृत्यु हो गयी। यहीं पर जहांगीर का मकबरा है। इस मकबरा को नूरजहां ने बनवाया।

नूरजहाँ

- नूरजहां का असली नाम मेहरुन निशा था।
- नूरजहां अलीकूली बेग (शेर अफगान) की पत्नी विधवा थी। इसे जहांगीर के दरबार में अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा के लिए लाया गया था।
- नवरोज त्यौहार के दिन जहांगीर ने पहली बार नूरजहां को देखा और उसकी सुन्दरता को देखकर उसे नूरमहल की उपाधि दिया। यह पारसी थी।
- 1611 ई० में जहांगीर ने उससे विवाह कर लिया और उसे नूरजहां की उपाधि दिया। नूरजहां जहांगीर के साथ झरोखा दर्शन देती थी। ऐसा माना जाता है कि शाही आदेशों पर बादशाह के बाद नूरजहां का भी हस्ताक्षर होता था।
- नूरजहां के भाई का नाम आसफ खां था जिसकी पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज महल) से 1612 ई. में शाहजहां का विवाह हुआ। नूरजहां के माता का नाम अस्मत बेगम था। इसी ने पहली बार गुलाब से इत्र निकालने की विधि खोज की थी।
- नूरजहां के पिता का नाम ग्यासबेग था, जिसे जहांगीर ने एतमादुद्दौला की उपधि दिया था।
- नूरजहां ने आगरा में एतमतुद्दौला का मकबरा बनवाया यह भारत में बेदाग सफेद संगमरमर से बनने वाला पहला मकबरा था। इसी में पहली बार इटली की पिएट्रा डोरा शैली का प्रयोग किया गया।

शाहजहां (1627-1657 ई.)

- शाहजहाँ का जन्म 5 जनवरी, 1592 को लाहौर में जगत गोसाई के गर्भ से हुआ था।
- शाहजहां के बचपन का नाम खुर्रम था।
- 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह नूरजहां के भाई आसफ खान की पुत्री अर्जुमन्द बानो बेगम से हुआ जिसे मुमताज कहा जाता था। शाहजहाँ ने इसे मल्लिका-ए-जमानी की उपाधि प्रदान की थी।
- मुमताज के 14 संतान हुए। जिसमें से 7 संतान जीवित थे। इनकी मृत्यु 1631 में 14वें संतान के प्रसव पीड़ा के कारण हुयी। 1. दारा शिकोह 2. शाह शुजा 3. औरंगजेब 4. मुरादबख्स 5. जाहांआरा 6. रोशन आरा 7. गौहर आरा।
- मुमताज की कब्र पर मुमताज महल बनाया गया इसे ही ताजमहल कहते हैं।

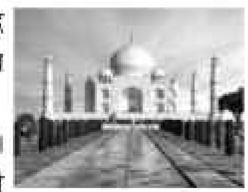

- ताजमहल के वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी थे। जबकि ताजमहल को इशा खां की देख रेख में बनाया गया।
- शाहजहां का संघर्ष पुर्तगालियों से हुआ। शाहजहां ने पुर्तगाली व्यापारिक कोठी हुगली पर अधिकार कर लिया।
- शाहजहां का संघर्ष 6वें सिख गुरु हरगोविन्द के साथ ही शिकार करने के दौरान हुआ था।
- शाहजहां ने दक्षिण भारत अभियान की जिम्मेदारी औरंगजेब को दे दिया और औरंगजेब ने बड़ी ही कुशलता पूर्वक अहमदनगर, बरार, तेलंगना तथा खान देश को जीत लिया। शाहजहां ने औरंगजेब को दक्षिण भारत का सूबेदार बना दिया और औरंगजेब ने अपना केंद्र महाराष्ट्र के औरंगाबाद को बना लिया।
- बुंदेला सरदार जुझार सिंह ने शाहजहां से विद्रोह कर दिया किन्तु शाहजहां ने विद्रोह को दबा दिया।
- अफगान सेनापति खान-ए-जहां लोदी ने विद्रोह किया किन्तु शाहजहां ने इस विद्रोह को भी दबा दिया।
- शाहजहां के समय अफगानिस्तान तथा मध्य एशिया पूरी तरह स्वतन्त्र हो गया।
- शाहजहां ने अपने कर्मचारियों को वार्षिक वेतन के स्थान पर मासिक वेतन देना प्रारंभ किया।
- शाहजहां ने अपनी राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानतरित कर दिया।
- शाहजहां के समय को स्थापत्यकला का स्वर्णकाल कहा जाता है क्योंकि इसमें वास्तुकला के क्षेत्र में बहुत से इमारत बनवाये गए। जैसे- दिल्ली का लाल किला, दिल्ली का जामा मस्जिद, आगरा में ताजमहल, आगरा के लाल किला में मोती मस्जिद, लाहौर में शीश महल आदि।

Remark :– दिल्ली के लाल किला में मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- शाहजहां ने दिल्ली के लाल किला में दीवान-ए-आम तथा दीवाने-ए-खास की भी स्थापना किया।
- दीवाने-आम में साधारण मुद्दे जबकि दीवाने-खास में महत्त्वपूर्ण मुद्दे सुलझाए जाते थे।
- शाहजहाँ के दरबार के प्रमुख चित्रकार मुहम्मद फकरी एवं मीर हासिम थे। उसने संगीतज्ञ लाल खाँ को 'गुण समुन्दर' की उपाधि प्रदान की थी।
- शाहजहां ने मयुर सिंहासन (तख्त-ए-ताऊस) बनवाया था। जिसपर कोहिनूर हीरा लगा हुआ था। यह मयुर सिंहासन दीवाने-आम में रखा रहता था। मयूर सिंहासन का वास्तुकार बे बादल खां था।

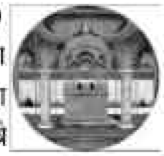

Remark :– मयुर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मोहम्मद शाह था।

- शाहजहां ने अकबर द्वारा चलाए गये इलाही संवत् के स्थान पर पुन: हिजरी कैलेण्डर को लागू करवाया।
- शाहजहां ने अकबर द्वारा चलाए गये, झरोखा-दर्शन तथा तुलादान प्रथा पर रोक लगा दिया।
- शाहजहाँ ने सिजदा एवं पायबोस की प्रथा समाप्त कर दी और चहार-तस्लीम प्रथा शुरू की।
- शाहजहां ने अपने जीवन के समय में ही दारा शिकोह को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था।
- शाहजहां जब बीमार पड़ा तो यह अफवाह फैल गयी थी कि शाहजहां की मृत्यु हो गयी। अत: पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्ध प्रारंभ हो गया।

> **उत्तराधिकार के लिए चार युद्ध हुए–**

बहादुरपुर → बाघ | सा | देव

↓ धरमट | ↓ सामुगढ़ | ↓ देवराय

> **बहादुरपुर का युद्ध (बनारस)**

- यह युद्ध फरवरी, 1658 ई. में हुआ। इस युद्ध में दारा शिकोह के पुत्र सुलेमान ने शाहशुजा को पराजित कर दिया।

> **धरमट का युद्ध (उज्जैन)**

- यह युद्ध अप्रैल, 1658 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। जिसमें औरंगजेब जीत गया।

> **सामुगढ़ का युद्ध (आगरा)**

- यह युद्ध जून, 1658 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजेब जीत गया और आगरा में अपना राज्याभिषेक कराया।
- सामुगढ़ को जीतने के बाद औरंगजेब शाहजहां को बन्दी बना लिया और उसे यमुना नदी के किनारे आगरा के किला में कैद कर दिया। उसे खाने में केवल एक भोजन देने को कहा जिस पर शाहजहां ने चना माँगा था।
- 1666 ई. में शाहजहां की मृत्यु हो गयी। यह मुगल सल्तनत वंश का एक मात्र शासक था जिसका अंतिम संस्कार नौकर-चाकर ने किया। इसे ताजमहल में दफनाया गया।

> **देवराय का युद्ध (अजमेर)**

- यह युद्ध अप्रैल, 1659 ई. में औरंगजेब एवं दारा शिकोह के बीच हुआ। इस युद्ध में भी औरंगजब जीत गया और दारा शिकोह की हत्या कर दिया गया। इस युद्ध को जीतने के बाद औरंगजेब ने दिल्ली में अपना दुबारा राज्याभिषेक कराया। इस प्रकार फिरोजशाह तुगलक के बाद औरंगजेब ऐसा दूसरा शासक हुआ जिसने अपना राज्याभिषेक दो बार करवाया।
- दारा शिकोह को इतिहासकार लेनपुल ने साम्प्रदायिक उदारता के कारण लघु अकबर कहा।

औरंगजेब (1658–1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म 1618 ई. में उज्जैन के दोहद नामक स्थान पर मुमताज के गर्भ से हुआ था। जबकि औरंगजेब का अधिकांश समय अपनी दादी नूरजहाँ के पास बीता।
- औरंगजेब के गुरु पीर मुहम्मद हकीम थे।
- औरंगजेब का विवाह फारस (ईरान) की राजकुमारी दिलरास बानो बेगम (रबिया बीबी) से हुआ।
- औरंगजेब ने अपना राज्याभिषेक दो बार करवाया।
  1. सामुगढ़ विजय (1658 ई.) के बाद
  2. देवराय विजय (1659 ई.) के बाद।
- इसके समय मुगलसत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर थी।
- इसने इस्लामिक नियम कानून को बड़े कठोरता से अपने साम्राज्य में लागू किया और यह आदेश दिया कि मुगलकाल में बने सारे मन्दिर को तोड़ दिया जाएगा। इसी क्रम में उसने वीर सिंह बुन्देला द्वारा मथुरा में बनाए गये केशव नारायण मन्दिर को तोड़ दिया। जिस कारण जाटो ने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह कर दिया।
- जाटों के विद्रोह का नेतृत्व गोकुल ने किया।
- औरंगजेब ने 1670 ई० में तिलपत के युद्ध में गोकुल की हत्या करवा दिया।
- गोकुल की हत्या के बाद जाट विद्रोह का नेतृत्व राजाराम ने किया था।
- राजाराम ने सिकन्दरा में स्थित अकबर के कब्र को लूट लिया और उसके अस्थियों को आग लगा दिया। जिस कारण औरंगजेब ने उसकी हत्या कर दी।
- राजाराम के बाद जाट विद्रोह का नेतृत्व चुड़ामन ने किया। इसके बाद जाट विद्रोह स्वत: समाप्त हो गया।
- औरंगजेब ने मीर जुमला को भेजकर कूचबिहार, असम तथा आराकाम के राजा से चटगांव को जीत लिया।
- औरंगजेब ने शाइस्ता खां को भेजकर बंगाल जीत लिया तथा पुर्तगालियों को दण्ड दिया और उनसे सोनद्वीप छीन लिया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

> **बीजापुर पर अधिकार**

- औरंगजेब ने बीजापुर जीतने के लिए जयसिंह, बहादुर खान एवं दिलेर खान को भेजा किन्तु वे लोग सफल नहीं हुए। अंततः औरंगजेब स्वयं आक्रमण करके बीजापुर को जीत लिया।

> **गोलकुण्डा पर अधिकार**

- औरंगजेब ने गोलकुण्डा जीतने के लिए मुअज्जम को भेजा किन्तु इसे सफलता नहीं मिली। बाद में औरंगजेब ने स्वयं गोलकुण्डा पर विजय हासिल किया।
- औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर-II को 9वें गुरु तेगबहादुर ने संरक्षण दे दिया जिस कारण औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक पर उनसे इस्लाम कबूल करने को कहा और उन्होंने इस्लाम कबूल नहीं किया तो औरंगजेब ने उनकी हत्या उसी स्थान पर कर दी। जहां आज शीशगंज गुरूद्वारा है।
- अकबर-II को शिवाजी का पुत्र सम्भा जी ने भी संरक्षण दिया था। जिस कारण औरंगजेब ने सम्भा जी की खाल उधेड़ कर भूसा भर दिया और बीच चौराहे पर टांग दिया। और अपने पुत्र अकबर द्वितीय का आंख निकाल लिया।
- औरंगजेब का सर्वाधिक विरोध दक्षिण भारत में मराठा शिवाजी ने किया था।
- औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध शाइस्ता खां को भेजा, किन्तु शिवाजी ने शाइस्ता खां की हत्या कर दी।
- 1665 ई. में औरंगजेब ने राजा जय सिंह को शिवाजी को ... के लिए भेजा। जय सिंह ने शिवाजी को पराजित करके पुरन्दर की संधि किया। इस संधि के तहत शिवाजी औरंगजेब से मिलने 1666 ई. में आगरा पहुंचे। किन्तु औरंगजेब ने उन्हें धोखे से कैद करके जयपुर महल में कैद कर दिला। शिवाजी बहुत जल्द भेष बदलकर वहां से भाग गये।
- 1679 ई. औरंगजेब ने दक्षिण भारत में पुनः जजिया कर लगा दिया।
- औरंगजेब सुन्नी मुसलमान था। यह कट्टर तथा रूढ़िवादी था।
- औरंगजेब को जिन्दा पीर कहा जाता है।
- इसने हिन्दुओं को दान में दी गयी भूमि को (खालसा भूमि) में बदल दिया।
- 1667 ई. में औरंगजेब ने झरोखा दर्शन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 1680 ई. में औरंगजेब ने तुलादान पद्धति पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

  Note :– चिश्ती ने जनता की समस्या सुनने के लिए झरोखा दर्शन प्रारम्भ किया जिसे अकबर ने सुचारू रूप दिया।

  Note :– अकबर तुलादान व्यवस्था के तहत स्वयं के भार के बराबर दान गरीबों को देता था।
- इसने सोना चांदी के वस्तु के उपयोग पर रोक लगा दिया तथा मुद्रा पर से कलमा हटवा दिया।
- औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबन्ध लगा दिया किन्तु खुद औरंगजेब वीणा का अच्छा जानकार था।
- औरंगजेब के समय मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विकास हुआ। इसके काल में मुगल अपने चरमोत्कर्ष पर थे।
- सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार लगभग 337 औरंगजेब के समय में थे।
- औरंगजेब दार-उल-हर्ब (काफिरों का प्रदेश) को दार-उल-इस्लाम (इस्लाम का देश) में बदलना चाहता था।
- धार्मिक मामले की देख-रेख के लिए मोहतसिब नामक अधिकारी को नियुक्त किया गया।
- 1702 ई. में औरंगजेब ने अपने प्रिय पौत्र राजकुमार अजीम को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया। उसने पटना को अजीमाबाद का नया नाम दिया और उसका पुनर्निर्माण करवाया।
- बाद में राजकुमार अजीम को 'अजीमुश्शान' की उपाधि दी गई।
- 1707 ई॰ में औरंगजब की मृत्यु हो गयी। उसे औरंगाबाद में दफनाया गया।
- औरंगजेब ने अपनी बेगम दिलराश बानो बेगम के लिए औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनाया। इसे द्वितीय ताजमहल तथा ताजमहल की घटिया नकल कहा जाता है।
- औरंगजेब के मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया। क्योंकि औरंगजेब के बाद कोई भी शासक योग्य नहीं था।

  Note :– MBT (मोहम्मद बिन तुगलक) तथा औरंगजेब की सम्पूर्ण दक्षिण भारत की नीति, इनके साम्राज्य के पतन का कारण बना।

उत्तर मुगलकाल

- औरंगजेब के बाद के काल को उत्तर मुगल काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में कोई भी शासक योग्य नहीं था।

उत्तरकालीन मुगल सम्राट	
नाम	**कार्यकाल**
बहादुर शाह प्रथम	1707-1712 ई.
जहाँदार शाह	1712-1713 ई.
फर्रुखसियर	1713-1719 ई.
रफी-उद्-दरजात	फरवरी-जून 1719 ई.
रफी-उद्-दौला	जून-सितंबर 1719 ई.
मुहम्मद शाह	1719-1748 ई.
अहमदशाह बहादुर	1748-1754 ई.
आलमगीर द्वितीय	1754-1758 ई.
शाहजहाँ तृतीय	1758-1759 ई.
शाहआलम द्वितीय	1759-1806 ई.
अकबर द्वितीय	1806-1837 ई.
बहादुर शाह द्वितीय/जफर	1837-1857 ई.

बहादुर शाह (1707–12 ई.)

- इसे शाह-ए-बेखबर के नाम से जाना जाता था क्योंकि इसे अपने राज्य के कुल क्षेत्रफल के बारे में भी जानकारी नहीं थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इसका नाम मुअज्जम था।
- यह जिस वर्ष शासक बना उस वर्ष उसकी आयु 63 वर्ष थी। अत: यह सबसे अधिक उम्र में शासक बना था।
- यह अन्तिम मुगल शासक था जिसके बारे में कुछ अच्छा कहा जा सकता है।
- बहादुर शाह ने सिखों के 10वें गुरु गोबिंद सिंह के साथ मेल-मिलाप के संबंध स्थापित किये एवं उन्हें संतुष्ट करने के लिए गुरु के सम्मान में **उच्च मनसब** प्रदान किया।
- इसने राजा जयसिंह को सवाई राजा का उपाधि से सम्मानित किया था।
- 1712 ई॰ में इसकी मृत्यु हो गयी।

जहांदार शाह (1712–13 ई.)

- इसे लम्पट मुर्ख कहा जाता था, क्योंकि यह अत्यधिक दान देता था।
- इसने आमेर के राजा जयसिंह को **मिर्जा राजा सवाई जयसिंह** की पदवी दी तथा मालवा का सूबेदार बनाया।
- जहांदार शाह ने वित्तीय व्यवस्था में सुधार के लिये राजस्व वसूली का कार्य ठेके पर देने की नई व्यवस्था को प्रोत्साहन दिया, जिसे **इजारा व्यवस्था** कहते हैं।
- यह सैयद बन्धु के सहायता से शासक बना था।
- सैयद बंधु सैयद हसन अली खान और सैयद अब्दुल्लाह नामक दो भाई थे।

Remark :– सैय्यद बन्धु को नृप (राजा) निर्माता कहा जाता है।

फर्रुखसियर (1713–1719 ई.)

- इसने सैयद बन्धुओं की सहायता से जहांदार शाह की [illegible] कर दी।
- इसे घृणित कायर कहा जाता है। क्योंकि इसने शासक बनने के लिए जहांदार शाह की हत्या कर दिया था।
- फर्रुखसियर के शासनकाल में सैयद बंधु अब्दुल्ला खां को 'वजीर' तथा हुसैन अली को 'मीरबख्शी' के पद पर नियुक्त किया गया।
- फर्रुखसियर पहला मुगल सम्राट था जिसका राज्याभिषेक पटना (बिहार) में 1713 ई. में हुआ था।
- 1717 ई. में फर्रुखसियर को चेचक हो गया था जो ठीक नहीं हो पा रहा था।
- एक अंग्रेज डॉ॰ [illegible] ने उसका इलाज किया जिससे की वह ठीक हो गया। अत: वह खुश होकर अंग्रेजों को बंगाल के हित में ₹ [illegible] प्रतिवर्ष कर लेकर व्यापार करने की छूट दे दिया। इसे इतिहास में अंग्रेजी शासन का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। मैग्नाकार्टा का अर्थ होता है बहुत बड़ा धोखा पत्र जिससे कि [illegible] स्थिति बदल जाए।
- 1717 ई॰ में ही इसने मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ से एक संधि किया और **क्षत्रपति** के पद को (**मराठा राज्य**) मान्यता दिया। इस संधि को मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- फर्रुखसियर की हत्या के बाद सैयद बंधुओं ने रफी-उद्-दरजात (1719 ई.) को गद्दी पर बैठाया, जिसकी जल्द ही बीमारी के कारण मृत्यु हो गया।
- रफी-उद्-दरजात की मृत्यु के बाद सैयद बंधओं ने रफी-उद्-दौला (1719 ई.) को गद्दी पर बैठाया। वह अफीम का आदी था। इसकी भी जल्द ही मृत्यु हो गई।

मोहम्मद शाह (1719–48 ई.)

- इसे रंगीला बादशाह कहा जाता है क्योंकि इसे नाच गाना अत्यधिक पसन्द था।
- इसका मूल नाम रौशन अख्तर था। इसके समय मुगल साम्राज्य का बिखराव तेजी से प्रारम्भ हो गया और इसी क्रम में मुर्शीद कुली खां ने स्वतन्त्र बंगाल, शआदत खां स्वतन्त्र अवध निजामूल मुल्क ने स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना कर दिया।
- 1737 ई. में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने मात्र 500 घुड़सवार लेकर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया और मोहम्मद शाह से अत्यधिक धन ले लिया और उससे यह वचन दिया की विदेशी आक्रमण के समय वह उसकी मदद करेगा।
- 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया। इसे दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए शआदत खान ने प्रेरित किया था। नादिर शाह कोहिनूर हीरा तथा मयूर सिंहासन को अपने साथ लेकर चला गया। इस प्रकार मयूर सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक मोहम्मद शाह था।
- 1748 ई. में मोहम्मद शाह की मृत्यु हो गयी।

अहमद शाह (1748–54 ई.)

- इसके समय पहली बार अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने 1748 ई. में पंजाब पर आक्रमण किया। इसके समय मुगल अर्थ व्यवस्था इतनी कमजोर हो गयी कि अपने सैनिकों तथा अधिकारियों को वेतन देने के लिए मुगल दरबार के सामानों की बिक्री करना पड़ा।
- इसके समय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और इसे अंधा बनाकर जेल में डाल दिया।

आलमगीर-II (1754–59 ई.)

- इसके समय 1757 ई. में प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में लार्ड क्लाईव ने सिराजुद्दौला को पराजित कर दिया।
- इस युद्ध के बाद अंग्रेजों को भारत में शासन करने का एक सुनहरा मौका मिल गया।
- 1758 ई. को दमाद-मुल्क ने आलमगीर द्वितीय की हत्या करवा दी तथा बहादुर शाह प्रथम के पौत्र शाहजहाँ तृतीय (1758-59 ई.) को सिंहासन पर बैठा दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

शाह आलम-II (1759–1817 ई.)

- उत्तर मुगलकाल में इसका कार्यकाल सबसे लम्बा था। इसके समय 1761 ई. में पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ। इस युद्ध में अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को पूरी तरह पराजित कर दिया।
- इसी के समय 1764 ई. में बक्सर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो कर रहा था। हेक्टर मुनरो ने शाह आलम-II के नेतृत्व में बनी त्रिगुट सेना को पराजित कर दिया।
- इलाहाबाद की संधि (1765 ई.) के तहत शाहआलम-II ने अंग्रेजों को बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा की दिवानी (राजस्व कर) सौंप दी। इसी प्रकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया।
- इलाहाबाद के संधि के तहत ही शाह आलम-II को अंग्रेजों का पेंशन भोगी बना दिया गया और अंग्रेजों ने शाहआलम-II को अपने संरक्षण में ले लिया।

अकबर-II (1817–37 ई.)

- यह अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बनने वाला पहला मुगल शासक था। यह भी अंग्रेजों का पेंशन भोगी था। अंग्रेजों ने इसके पेंशन को कम कर दिया। अत: इसने अपने पेंशन को बढ़वाने के लिए राम मोहन राय को लंदन भेजा और उन्हें राजा की उपाधि दिया। अत: वे राजा राम मोहन राय के नाम से मशहूर हो गये।

बहादुर शाह-II (जफर) (1837–57 ई.)

- यह जफर नाम की पत्रिका लिखता था, जिस कारण इसका नाम बहादुर शाह जफर पड़ा।
- यह भी अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बना।
- इसने 1857 ई. की क्रांति में भारतीय सैनिकों का नेतृत्व किया था।
- इस क्रांति के दौरान अंग्रेजों ने इसे हुमायूँ के मकबरे के समीप पकड़ लिया ओर उसके सामने उसके दोनों बेटों की हत्या कर दिया और उसे वर्मा की राजधानी रंगून में निर्वासित कर दिया। जहाँ 1862 ई. में अंतिम मुगल सम्राट की मृत्यु हो गई।
- रंगून में ही बहादुर शाह जफर का मकबरा है।
- बहादुर शाह जफर अपने जीवन काल में ही दिल्ली में अपना मकबरा बनवाया था। किन्तु यह मकबरा खाली रह गया, क्योंकि बहादुर शाह को रंगून भेज दिया।
- बहादुर शाह जफर अंतिम मुगल शासक था।

मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- मुगलों की शुरुआत बाबर से हुई। किन्तु बाबर अधिक समय तक शासन नहीं किया और जितना समय शासन किया। वह युद्ध मे फंसा रहा। अत: बाबर ने प्रशासनिक क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया।
- हुमायू की शुरुआत का शासन अच्छा था। किन्तु शेरशाह ने उसे भारत छोड़ने पर विवश कर दिया और जब हुमायू लौटा तो कुछ ही दिन के बाद उसकी मृत्यु हो गयी। अत: उसने भी प्रशासनिक क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं किया।
- मुगल प्रशासनिक व्यवस्था की वास्तविक शुरुआत अकबर के समय में हुआ। अकबर ने लगभग सभी क्षेत्रों में सुधार किया।
- अकबर ने प्रशासनिक सुधार से पहले सामाजिक सुधार पर जोर दिया और उसने दास प्रथा, जजिया कर, तीर्थ यात्रा कर को समाप्त कर दिया।
- भूमि सुधार के क्षेत्र में अकबर ने टोडरमल के सहयोग से आइने दहशाला पद्धति लाया। जो दस वर्षों के लिए थी।
- अकबर ने सैन्य क्षेत्र में एक नई व्यवस्था मनसबदारी व्यवस्था लाया।
- अकबर ने धर्म निरपेक्षता की नीति अपनाते हुए शासन किया।
- अकबर ने अपनी राजधानी आगरा से फतेहपुर सिकरी बनवायी।
- अकबर ने राजपूत नीति के तहत राजपूतों को भी राजा स्वीकार किया।
- अकबर किसी भी व्यक्ति को कोई पद अधिक समय तक नहीं देता था उसने सर्वाधिक प्रधानमंत्री बदले हैं।
- जहाँगीर ने प्रशासनिक क्षेत्र में सुधार के लिए न्याय व्यवस्था पर अधिक बल दिया और न्याय की एक जंजीर टंगवाई। जहाँगीर ने सैन्य क्षेत्र में नई व्यवस्था सिंह-अश्पा तथा दो-अश्पा नामक प्रणाली लाया। जिस सैनिक के पास दो घोड़े रहते थे उन्हें दो-अश्पा तथा जिसके पास दो से अधिक घोड़े रहते थे उन्हें सिंह-अश्पा कहा गया।
- शाहजहां के समय विद्रोह बहुत अधिक हुआ जिस कारण वह प्रशासनिक सुधार पर ध्यान नहीं दे सका।
- औरंगजेब ने धार्मिक कट्टरता की नीति अपनाई तथा इसने पुन: जजिया कर प्रारम्भ किया। इसने संगीत तथा चित्रकला पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- औरंगजेब ने मुहतसीब नामक एक अधिकारी की नियुक्ति किया। जो यह देखता था कि लोग शरीयत (इस्लाम) के अनुसार जी रहे हैं या नहीं।
- फर्रुखशियर ने मुगलों के पतन का रास्ता खोल दिया क्योंकि इसने मराठाओं एवं अंग्रेजों को मान्यता दे दिया।
- उत्तर मुगल काल में मोहम्मद शाह ने जजिया कर को पूर्णत: समाप्त कर दिया।
- शाह आलम-II ने इलाहाबाद की संधि के तहत बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को दे दी। इसी के समय मुगल अंग्रेजों के अधीन होने लगा और बहादुर शाह द्वितीय के समय मुगलों के क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

मुगलकालीन स्थापत्य कला

- भवन, मकबरा तथा बाग बगीचे के निर्माण की विभिन्न शैलियों को स्थापत्य या वास्तुकला कहते हैं।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- मुगलों के आने से ही भारत में गुम्बज तथा मेहराब बनना प्रारंभ हुआ।
- मुगल वास्तुकला का प्रारम्भ बाबर के समय से ही चालू हो गया था।
- बाबर को चार बाग शैली का जनक माना जाता है। चारबाग शैली बाबर ने आगरा के अरामबाग में निर्माण करवाया था।
- बाबर ने बाग बगीचे के सिंचाई के लिए नहरों का प्रयोग करता था। बाबर ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- हुमायूं ने दिल्ली में दीनपनाह नामक पुस्तकालय का निर्माण करवाया, जबकि हुमायूं की पत्नी हमीदा बानो ने दिल्ली में हुमायूं का मकबरा बनवाया। इसे लाल-ताजमहल के नाम से जाना जाता है।
- अकबर ने फतेहपुर सिकरी में बुलन्द दरवाजा, आगरा का लालकिला तथा ईलाहाबाद का किला का निर्माण करवाया।
- जहांगीर के समय नूरजहां ने एतमातुद्दौला का मकबरा बनवाया।

  Remark :– सफेद बेदाग संगमरमर तथा इटली की पिएट्रा-डोरा शैली का प्रथम प्रयोग इसी मकबरा निर्माण में हुआ था।

  Remark :– मुगलकालीन स्थापत्य कला में गोलगुम्बद से युक्त भवनों का निर्माण हुआ।
- शाहजहां स्थापत्य कला में अधिक रुचि लेता था। इसके काल को स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहते हैं। इसने दिल्ली में जामा मस्जिद तथा लाल किला का निर्माण करवाया।
- इसने आगरा में ताजमहल का निर्माण कराया। ताजमहल भारत का सबसे बड़ा मकबरा है।
- पिएट्रा-डोरी शैली का प्रयोग ताजमहल में भी हुआ है।

  Remark :– आगरा के किला के अंदर स्थित मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने करवाया, जबकि दिल्ली के लाल किला में स्थित मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया।
- औरंगजेब ने औरंगाबाद में बीबी का मकबरा बनवाया जिसे द्वितीय ताजमहल या ताजमहल का घटिया नकल कहते हैं।
- अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने दिल्ली में अपना मकबरा स्वयं बनवाया था।

मुगलकालीन चित्रकला

- मुगलकालीन चित्रकला बाबर के समय प्रारम्भ हुई थी। बाबर के दरबार में बेहजाद नामक चित्रकार रहते थे जिन्हें पूर्व का राफेल कहा जाता था।

  Remark :– राफेल एक यूरोपीय चित्रकार था। जिसने पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया था।
- हुमायूं के दरबार में मीर सैय्यद अली तथा अब्दुल समद नामक चित्रकार रहते थे।
- अकबर के दरबार में दसवन्द तथा बसावन नामक प्रसिद्ध चित्रकार थे। दसवन्द सबसे प्रमुख चित्रकार रहते थे। जिसकी सबसे प्रमुख चित्रकारी खानदाने तैगुरिया एवं तुतीनामा थी।
- दसवन्त द्वारा बनाने गये चित्र रज्मनामा नामक पांडुलिपि में मिलते हैं। इस पांडुलिपि को मुगल चित्रकला के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है।
- जहांगीर के काल को चित्रकला का स्वर्ण काल कहा जाता था। इसके दरबार में विसन दास मोहर तथा मंसुर नामक चित्रकार रहते थे।
- शाहजहां के समय चित्रकला का विकास कम हुआ इसके समय सर्वाधिक विकास स्थापत्य कला में हुआ।
- औरंगजेब ने चित्रकला पर यह कहकर प्रतिबन्ध लगा दिया कि चित्रकला इस्लाम के खिलाफ है। साथ ही उसने सिकन्दरा में स्थित अकबर के मकबरा से चित्रकला को मिटवा दिया।

मुगलकाल में आए विदेशी यात्री

1. **राल्फ फिन्च–** यह एक अंग्रेज था जो अकबर के समय आया था। इसी ने अकबर को गुजरात अभियान के समय समुद्र दर्शन करवाया था।
2. **कैप्टन हाकिंस–** यह भी एक अंग्रेज था जो 1608 ई. में जहांगीर के दरबार में आया। इसका उद्देश्य जहांगीर से व्यापारिक छूट प्राप्त करना था। किन्तु जहांगीर ने इसे कोई भी छूट नहीं दिया। किन्तु इसकी योग्यता से खुश होकर इसे खान की उपाधि दिया। अतः इसे इंग्लिश खान कहते हैं।
3. **टामस रो–** यह भी एक अंग्रेज था। 1615 ई. में जहांगीर के समय आया। सर्वप्रथम इसी को जहांगीर ने कुछ व्यापारिक छूट दिया था।
4. **पिएट्रो डेला वेले–** यह इटली का रहने वाला था। ये जहांगीर के समय आया था।
5. **जीन बैप्टिस्ट ट्रेवर्नियर–** यह फ्रांस का रहने वाला था और शाहजहां के समय आया था। यह अंग्रेज था तथा पेशे से जौहरी (सोनार) था।
6. **वर्नियर–** यह एक अंग्रेज था। जो शाहजहां तथा औरंगजेब दोनों के समय आया था। इसने मुगलकाल में उत्तराधिकार के युद्ध को देखा था।
7. **मनूची–** यह एक अंग्रेज था। जो औरंगजेब के समय आया था। यह पेशे से एक तोप्ची (तोप चलाने वाला) था। जिसे औरंगजेब ने इसे अपने सेना में भर्ती कर लिया था।

मुगल शासकों का मकबरा

बाबर	पहले आगर में, वर्तमान में काबुल में
हुमायूं	दिल्ली
अकबर	सिकन्दरा (फतेहपुर सिकरी)
जहांगीर	लाहौर (सहदरा)
शाहजहां	आगरा (ताजमहल)
औरंगजेब	औरंगाबाद
बहादुर शाह जफर	रंगून (बर्मा)

- शेष मुगल राजाओं का मकबरा दिल्ली में हुमायूं के मकबरा के समीप है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

मुगल शासकों के असली नाम

बाबर	जहीरूद्दीन-मुहम्मद-बाबर
हूमायूं	नसीरूद्दीन-मुहम्मद-हुमायूं
अकबर	जलालुद्दीन-मुहम्मद-अकबर
जहांगीर	नुर-उ-द्दीन-मुहम्मद-जहांगीर
शाहजहां	शिहाबुद्दीन-मुहम्मद-शाहजहां
औरंगजेब	आलमगीर-औरंगजेब
बहादुर शाह	मोअज्जम
मोहम्मद शाह	रौशन अख्तर

शासक	**उपनाम**
बहादुरशाह	शाह-ए-बेखबर
जहाँदारशाह	लम्पट मुर्ख
फर्रूखशियर	घृणित कायर
मोहम्मद शाह	रंगीला बादशाह

मुगलकालीन विभाग

वजीर	राजस्व विभाग तथा प्रधानमंत्री
मीर बख्शी	सैन्य विभाग
मीर बहर	नौ-सेना तथा जहाज
मुहतसिव	नैतिक आचरण तथा धार्मिक नीति
रूद्र-उस-सुदूर	धार्मिक विभाग
काजी-उल-कुजात	न्याय विभाग

मुगलकालीन भूमि के प्रकार

1. **पोलज भूमि**
- ☛ यहाँ प्रतिवर्ष खेती होती थी। क्योंकि यह सबसे उपजाऊ थी।

2. **परती भूमि**
- ☛ यह कम उपजाऊ थी। यहाँ एक या दो वर्ष के अंतराल पर फसल उगती थी।

3. **छच्चर/चाचर भूमि**
- ☛ यहाँ तीन से चार वर्ष के अंतराल पर फसल उगती थी।

4. **बंजर भूमि**
- ☛ यह सबसे खराब भूमि थी। यहाँ पांच वर्ष या उससे भी अधिक समय के अंतराल पर खेती होती थी।

मुगलकालीन प्रमुख पुस्तक

	पुस्तक (ग्रंथ)		**लेखक**
1.	**तुजुक-ए-बाबरी**	–	बाबर
2.	**बाबरनामा**	–	अब्दुल रहीम (खन-ए-खाना)
3.	**हुमायूनामा**	–	गुलबदन बेगम (बहन)
4.	**अकबरनामा**	–	अबुल फजल
5.	**तुजुक-ए-जहांगीरी**	–	जहांगीर + मोतमिद खान
6.	**शाहजहांनामा**	–	इनायत खान
7.	**तबकात-ए-अकबरी**	–	निजामुद्दीन अहमद इस पुस्तक में दिल्ली सल्तनत से लेकर मुगलकाल तक का इतिहास है।

मुगलकालीन फारसी में अनुवादित पुस्तक

1.	**महाभारत (रज्मनामा)**	–	बदायूनी, अबुल फजल, फैजी
2.	**रामायण**	–	बदायुनी
3.	**अथर्ववेद**	–	बदायुनी + हाजी इब्राहिम
4.	**लीलावती**	–	फैंजी
5.	**नल-दमयंती**	–	फैंजी
6.	**राजतरंगिणी**	–	शाहमुहम्मद सहबादी
7.	**उपनिषद्**	–	दारा-शिकोह
8.	**गीता**	–	दारा-शिकोह

- ☛ मुगल सल्तनत 1526 से 1857 तक रही–
- ➢ **इसे दो भागों में बाँटते हैं–**
  - (i) उन्नति का काल (1526–1707)
  - (ii) अवनति का काल (1707–1857)

❒❒❒

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

20. मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

- मुगल साम्राज्य के विघटन के पश्चात कई स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई जिनमें से मराठा साम्राज्य सर्वाधिक शक्तिशाली था।
- मराठा शब्द का उत्पति **राठा** शब्द से हुई है।
- महाराष्ट्र की भक्ति आंदोलन तथा औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति मराठों के उदय का मुख्य कारण बनी।
- मराठों के पूर्वज राजस्थान के सिसोदिया वंश के सूर्यवंशी राजपूत थे।
- मराठा साम्राज्य की राज भाषा मराठी थी।

शिवाजी

- मराठा साम्राज्य की स्थापना शिवाजी ने किया था।
- शिवाजी का जन्म 19 फरवरी, 1630 ई. को पुना के निकट शिवनेर नामक स्थान पर हुआ था।
- इनके पिता शाहजी भोंसले तथा माता जीजाबाई थे एवं शिवाजी की सौतेली माँ तुकाबाई थी।
- इनके राजनीतिक गुरु दादाजी कोण्ड देव थे तथा इनकी आध्यात्मिक/धार्मिक गुरु समर्थ रामदास थे।
- शिवाजी के पिता (शाहजी भोंसले) पहले अहमदनगर के शासक के यहाँ नौकरी पर थे। जब अहमदनगर पर मुगलों का अधिकार हो गया तो शाहजी भोसले बीजापुर के शासक के यहाँ नौकरी करने लगे और अपनी अपेक्षित पत्नी जीजाबाइ तथा पुत्र शिवाजी को पुना की जागीर सौंप दिया।
- शिवाजी के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव उनके माता जीजाबाई तथा दादाजी गुरु कोण्ड देव का पड़ा।
- शिवाजी दक्षिण भारत में मुस्लिम शासन के स्थान पर हिन्दू साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे।
- शिवाजी ने रायगढ़ में अपनी राजधानी स्थापित किया।
- शिवाजी को पहाड़ी चूहा के नाम से जाना जाता है।
- शिवाजी ने गुरिल्ला पद्धति या छापामार पद्धति का प्रयोग अपनी युद्ध अभियान में किया। इस पद्धति में रुक-रुक कर, छिप-छिप कर तथा अचानक हमला किया जाता था।
- शिवाजी ने गुरिल्ला पद्धति को अहमद नगर के शासक मलिक अम्बर से सीखा था।
- शिवाजी ने अपना प्रथम सैन्य अभियान 1645 ई. में बीजापुर के विरुद्ध किया और बीजापुर के सेनापति अफजल खां की हत्या कर दी।
- शिवाजी ने पनहाला, कोल्हापुर व पुरंदर का किला भी जीत लिया।
- 1657 ई. में शिवाजी की मुलाकात औरंगजेब से हुयी शिवाजी, औरंगजेब से संधि करना चाहते थे किन्तु औरंगजेब ने स्वीकार नहीं किया।
- औरंगजेब ने शिवाजी को पराजित करने के लिए कई अभियान किये।
- शिवाजी ने औरंगजेब के मामा शाइस्ता खां को पराजित कर दिया।
- 1664 ई. में शिवाजी ने सुरत को पहली बार लूटा

Remark :- सुरत मुगलों के समय बहुत बड़ा औद्योगिक केन्द्र था।

- सुरत को जब शिवाजी ने लूटा तो औरंगजेब शिवाजी के विरुद्ध एक बड़ा अभियान भेजा। इस अभियान का नेतृत्व राजा जय सिंह कर रहे थे। इस अभियान में शिवाजी पराजित हो गए।
- शिवाजी तथा जय सिंह के बीच 5 जून, 1665 ई. पुरन्दर की संधि हुई। पुरन्दर की संधि के तहत शिवाजी को जीते गए 35 किलों में से 23 किला मुगलों को लौटाना पड़ा। इस संधि के तहत शिवाजी ने अपने पुत्र शम्भाजी को औरंगजेब की सेवा में भेजा और खुद अगले वर्ष 1666 ई. में औरंगजेब से मिलने आगरा पहुँचे, किन्तु औरंगजेब ने धोखा से शिवाजी को जयपुर महल (आगरा) में कैद कर लिया।
- शिवाजी बहुत जल्द भेष बदलकर (1666 ई. में) फलों की टोकरी में बैठकर जयपुर महल से भाग गए।
- 1670 ई. में शिवाजी ने सुरत को दुबारा लूटा।
- 1674 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ के किला में अपना राज्याभिषेक करवाया और छत्रपति की उपाधि धारण किया।
- शिवाजी का राज्याभिषेक गंगा भट्ट (विशेश्वर) नामक पण्डित ने करवाया। गंगा भट्ट मूल रूप से काशी (बनारस) का रहने वाला था।
- औरंगजेब कभी भी शिवाजी को पराजित नहीं कर सका अन्त में 1679 ई. में औरंगजेब ने पुन: जजिया कर लगा दिया। जजिया कर का विरोध करने वाला एक मात्र शासक शिवाजी थे। (विवश होकर औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि दिया।)
- शिवाजी का अंतिम सैन्य अभियान कर्नाटक के विरुद्ध (1677 ई.) था।
- प्रशासन में शिवाजी की सहायता और परामर्श के लिये जो 8 मंत्रियों की परिषद होती थे, उसे अष्टप्रधान कहा जाता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 3 अप्रैल, 1680 ई. को शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

- शम्भाजी → शाहूजी
- राजाराम → शिवाजी-II

शम्भाजी (1680-1689 ई.)

- शिवाजी के मृत्यु के बाद शम्भाजी जो पनहाला के किला में कैद थे, वे वहाँ से भागकर मराठा सम्राज्य के छत्रपति बनें।
- 1686 ई. में शम्भाजी ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर-II को शरण दे दिए जिस कारण औरंगजेब ने शम्भाजी को यातना देकर मार दिया और उनके पुत्र शाहू जी को बन्दी बना लिया।

राजाराम (1689-1700 ई.)

- शम्भाजी के बाद राजा राम शासक बना।
- राजाराम ने एक नए पद **प्रतिनिधि** का सृजन किया। इस प्रकार शिवाजी के अष्टप्रधान में प्रतिनिधि सहित अब नौ मंत्री हो गये।
- 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी-II तथा ताराबाई (1700-1707 ई.)

- राजाराम की पत्नी ताराबाई ने अपने अल्पायु पुत्र शिवाजी-II को शासक बना दिया और खुद उसकी अंगरक्षक बन गयी।
- शाहूजी जो मुगल दरबार में कैद थे (शम्भाजी का पुत्र) और बहादुर शाह ने मराठा शक्ति को कमजोर करने के लिए शाहू जी को जेल में ही छोड़ दिया।
- 12 अक्टूबर 1707 ई. में शाहू तथा ताराबाई के मध्य खेड़ा का युद्ध हुआ जिसमें शाहु, बालाजी विश्वनाथ की मदद से विजयी हुआ।

शाहू (1707-1749 ई.)

- शाहूजी ने शिवाजी-II को पराजित करके छत्रपति (शासक) बन गया।
- खेड़ा के युद्ध के बाद मराठा राज्य दो भागों में बंट गया– उत्तर में सतारा राज्य जो शाहू के अधीन था तथा दक्षिण में कोल्हापुर का राज्य जो शिवाजी द्वितीय (ताराबाई के पुत्र) के अधीन था।
- शाहू ने 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया। इस नियुक्ति के साथ ही पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
- 1749 ई. में शाहूजी की मृत्यु हो गयी। इनके मृत्यु के बाद मराठा प्रशासन की सारी शक्तियाँ पेशवा के हाथ में आ गयी।

> **पेशवा का काल (1713-1818 ई.)**

- पेशवा वंशानुगत था, इसका निवास पूणे था।

बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.)

- इन्हें पेशवा शाहू जी ने बनाया इन्ही के सहयोग से शाहूजी छत्रपति बने थे।
- शाहूजी ने इन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर मुगल शासक फर्रुखशियर के दरबार में भेजा (1717 ई.) था। फरुखशियर ने छत्रपति के पद को मान्यता दे दिया। इस संधि को मराठा शासन का मैगनाकार्टा कहा जाता है।
- 1720 ई. में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु हो गयी।

बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.)

- यह बालाजी विश्वनाथ के पुत्र थे, इन्हें लड़ाकू पेशवा भी कहा जाता है।
- शिवाजी के बाद गुरेल्ला पद्धति का सर्वाधिक प्रयोग बाजीराव प्रथम ने किया।
- बाजीराव प्रथम ने 1728 ई. में हैदराबाद के शासक निजाम-उल-मुल्क को हराकर उनसे मुंशी शिवगाँव की संधि किया।
- बाजीराव प्रथम ने छत्रपति शाहू को संबोधित करते हुए कहा कि "आओ हम इस पुराने वृक्ष के जड़ों पर वार करें, शाखाएं तो स्वयं गिर पड़ेंगे।" इस पर शाहूजी ने यह प्रतिक्रिया दिया कि आप नि:संदेह ही एक योग्य पिता के एक योग्य पुत्र हैं। आपके प्रयासों से मराठा साम्राज्य का पताका कटक से अटक तक लहराए जाएंगे।
- बाजीराव प्रथम ने 1737 ई. में मात्र 500 घुड़सवार लेकर मुगल शासक मोहम्मद शाह पर आक्रमण कर दिया और दिल्ली को पूरी तरह लूटा और मोहम्मद शाह से एक संधि की जिसके तहत 5 लाख प्रति वर्ष लेकर विदेशी आक्रमण के समय सैन्य मदद देने का वचन दिया।
- 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहे जाने वाले नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण कर दिया किन्तु बाजीराव ने कोई भी सैन्य मदद नहीं दिया।
- बाजीराव ने पुर्तगालियों से सालसेट तथा बसीन (महल) छीन लिया।
- बाजीराव हिन्दू पद पादशाही की स्थापना करना चाहते थे।
- बाजीराव का सम्बन्ध मस्तानी नामक एक मुस्लिम महिला से था।
- शाहू जी बाजीराव-I के समय ही पूरे मराठा साम्राज्य को पांच परिसंघ में बांटा था–

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

(i)	बड़ौदा	गायकवाड़ (प्रशासक)
(ii)	पुना	पेशवा
(iii)	नागपुर	भोसले
(iv)	इन्दौर	होल्कर
(v)	ग्वालियर	सिंधिया

बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.)

- बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है।
- इनके समय मराठा साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ। यही कारण है कि बालाजी बाजीराव को शिवाजी के बाद मराठा का दुसरा संस्थापक कहा जाता है।
- 1749 ई. में छत्रपति शाहूजी की मृत्यु हो गयी और संगोली के संधि के तहत छत्रपति के पद को समाप्त कर दिया गया और मराठा साम्राज्य पूरी तरह पेशवा के अधीन हो गया।
- 1752 ई. में झलकी की संधि के द्वारा हैदराबाद के निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार कर लिया।
- 14 जनवरी, 1761 ई. को मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के अफगान सेनापति अहमद शाह अब्दली ने मराठों के साथ पानीपत का III युद्ध किया। इस युद्ध में मराठा बुरी तरह पराजित हो गए।
- इस युद्ध में मराठों की तरफ से वास्तविक सेनापति सदाशिव राव भाउ थे, जबकि नाममात्र का सेनापति विश्वासराव भाउ था।
- मराठों को पराजय की खबर सुनकर पेशवा बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गयी।
- इतिहासकार सिडनी ओवेन ने कहा है कि पानीपत का III युद्ध यह सिद्ध नहीं कर सका कि भारत में किसका शासन होगा लेकिन यह जरुर सिद्ध कर दिया कि भारत में किसका शासन नहीं होगा।

माधव नारायण राव (1761-1772 ई.)

- इसके समय मराठा साम्राज्य की खोई हुई शक्तियां दुबारा मिलने लगी। यह एक योग्य पेशवा था इसने मुगल शासक शाह आलम-II को दुबारा मुगल गद्दी पर बैठाया जो कि अहमद शाह अब्दाली के डर से दिल्ली छोड़कर भाग गया था। किन्तु इसी वर्ष माधव नारायण की मृत्यु हो गयी।

नारायण राव

- इसका कार्यकाल बहुत छोटा था। इनका चाचा रघुनाथ ने इसकी हत्या कर दी।

माधव राव-II (1773-1795 ई.)

- यह अल्पायु था। अत: इसे सहायता देने के लिए बारभाई परिषद का गठन किया गया। यह परिषद 12 मंत्रियों का एक समूह था। इसमें सबसे प्रमुख नाना फडनवीस तथा महादजी सिंधिया थे।
- रघुनाथ राव (रघोवा) ने खुद पेशवा बनने के लिए अंग्रेजों के साथ 1775 ई० में सूरत की संधि कर ली और अंग्रेजों को उपहार में बेसीन तथा सालसेट दे दिया किन्तु बाद में अंग्रेज अपने वादे से मुकर गये।
- अंग्रेजों तथा मराठों के बीच यही तनाव आंग्ल मराठा युद्ध का रूप लिया और 3 आंग्ल मराठा युद्ध हुआ।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-1782 ई.)

- यह युद्ध महादजी सिंधिया के अध्यक्षता में सालाबाई के संधि के तहत समाप्त हुआ।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बारभाई परिषद को मान्यता दिया तथा माधव नारायण-II को पेशवा स्वीकार किया।
- इस युद्ध के दौरान बंगाल के गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिंग्स थे।
- 1795 ई० में महादजी सिंधिया तथा माधव नारायण-II की मृत्यु हो गयी और अगला पेशवा बाजीराव-II बना।

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1806 ई.)

- यह युद्ध बेसीन की संधि के तहत समाप्त हुआ। इस संधि के तहत पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इस युद्ध के समय बंगाल के गर्वनर जनरल लॉर्ड वेलजली थे।
- इस संधि को भोंसले, होल्कर तथा सिंधिया ने स्वीकार नहीं किया और यह III आंग्ल मराठा युद्ध का कारण बना।

तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818 ई.)

- यह युद्ध पूणे की संधि के तहत समाप्त हुआ और इस युद्ध के समाप्ति के बाद पेशवा बाजीराव-II को अंग्रेजों ने पेंशन भोगी बना दिया गया।
- इस युद्ध के समय बंगाल के गर्वनर जनरल लॉर्ड हैस्टिंग्स थे।
- अंग्रेजों ने अंतिम रूप से पेशवा को किर्की के युद्ध में पराजित कर उसे पेंशन देकर कानपुर के पास बिठूर भेज दिया।
- इसी पेशवा बाजीरव-II का दत्तक पुत्र (गोद लिया हुआ) नाना साहब था। बाजीराव-II के बाद इसे भी पेंशन दिया जा रहा था। किन्तु लॉर्ड डलहौजी ने उनका पेंशन बन्द कर दिया। यही कारण था कि नाना साहब 1857 ई. के विद्रोह में भाग लिये।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

➢ **तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध के बाद हुई संधियाँ–**

क्षेत्र	प्रशासक	सन्धि
1. पूना	पेशवा	पूना की सन्धि
2. नागपुर	भोंसले	नागपुर की सन्धि
3. इन्दौर	होल्कर	मंदसौर की सन्धि
4. ग्वालियर	सिंधिया	ग्वालियर की सन्धि

☞ बड़ौदा का गायकवाड़ के साथ कोई संधि नहीं की गयी क्योंकि यह तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में शामिल नहीं था। इसने स्वत: ही अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली।

☞ 1818 ई. आते-आते मराठा शक्ति समाप्त हो गयी और मराठा क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

➢ **पिण्डारी**

☞ पिंडारी हिंदू-मुस्लिम का संयुक्त संगठन था। इनमें सांप्रदायिक एकता थी।

☞ इनके प्रमुख नेता वासिल मुहम्मद, करीम खाँ, चीतू थे।

☞ यह मराठा के छोटी टुकड़ी थी यह जंगलों में रहती थी तथा छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) करके अंग्रेजों से लड़ती थी।

☞ मेल्कम ग्रे नामक इतिहासकार ने पिण्डारियों को मराठों का कुत्ता कहा है।

☞ लार्ड हेस्टिंग्स ने पिण्डारियों का अन्त कर दिया।

मराठा सैन्य व्यवस्था

☞ मराठों का मुगलों से संघर्ष शाहजहां के काल से ही प्रारम्भ हो गया था।

☞ मराठों के पास 250 किला था। जिसमें से 23 किला को शिवाजी ने पुरन्दर की संधि के तहत मुगलों को दे दिया।

☞ शिवाजी ने पुर्तगालियों से लगभग 200 तोप खरीदे थे। शिवाजी ने कर्नाटक के कोलावा में नौसेना का गठन किया था।

☞ मराठा सैनिकों को धार्मिक स्थल, बच्चा, महिला तथा आम नागरिकों पर आक्रमण पर निषेध था।

☞ शिवाजी के घुड़सवारों को दो भागों में बांटा जाता है-

1. **बरगीर**

☞ यह स्थायी घुड़सवार थे और नियमित रूप से सेना में रहते थे।

2. **सिलहदार**

☞ यह अस्थायी घोड़सवार थे। यह युद्ध के समय सेना में रहते थे।

☞ पैदल सैनिक = पायक

मराठा प्रशासन व्यवस्था

☞ मराठा प्रशासन की शुरुआत शिवाजी ने की। उन्होंने प्रशासन के लिए 8 मंत्रियों की नियुक्ति किया जिन्हें संयुक्त रूप से अष्ट प्रधान कहा जाता था।

☞ मराठा प्रशासन में सबसे बड़ा पद छत्रपति का था उसके बाद पेशवा का पद था।

अष्ट प्रधान

➢ शिवाजी की सहायता और परामर्श हेतु आठ मंत्रियों की परिषद को ही अष्ट प्रधान कहा गया। प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख होते थे। इनके पद अनुवांशिक नहीं होते थे। इनकी नियुक्ति के अधिकार शिवाजी के पास था।

1. **पेशवा–** यह प्रधानमंत्री होते थे। यह छत्रपति के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण पद था इसका कार्य छत्रपति की अनुपस्थिति में प्रशासन की देख रेख करना।
2. **मजुमदार/अमात्य–** यह वित्त मंत्री का पद था जो राजस्व का लेखा जोखा रखता था।
3. **सर-ए-नौबत–** यह सेनापति का प्रमुख पद होता था।
4. **सुमंत–** यह विदेश मंत्री का पद था। इसका कार्य विदेशी राज्यों से तालमेल करना था।
5. **वाकयानवीस–** यह सूचना गुप्तचर एवं संधि करने वाला मंत्री था।
6. **चिटनिस–** इसका कार्य पत्राचार व्यवस्था को देखना था।
7. **पंडित राव–** इसका कार्य धार्मिक मामलों की देख-रेख करना था।
8. **न्यायाधीश–** इसका कार्य न्याय व्यवस्था की देख-रेख करना।

Note :– शम्भाजी के समय ही अष्टप्रधान का विघटन हो गया।

मराठा राजस्व व्यवस्था

☞ मराठों की कोई व्यवस्थित राजस्व व्यवस्था नहीं थी।

☞ शिवाजी का राजस्व व्यवस्था मलिक अम्बर के राजस्व व्यवस्थ से ली गयी थी। शिवाजी के समय राजस्व का सबसे बड़ा स्रोत कृषि कर था (भूमिकर)

☞ शिवाजी ने भूमिकर को 33% से बढ़ाकर 40% कर दिया।

☞ शिवाजी के समय सबसे महत्त्वपूर्ण कर चौथ तथा सरदेश मुखी था।

➢ **चौथ**

☞ यह कर शिवाजी अपने पड़ोसी देश से लेते थे। यह कुल कृषि का 1/4 भाग था।

➢ **सरदेश मुखी**

☞ शिवाजी यह कर अपने ही देश की जनता से लेते थे। इस कर को देने वाला इस बात को स्वीकार करता था कि उसके देश के प्रमुख शिवाजी ही हैं।

☞ यह कर कुल कृषि के 1/10 भाग पर था।

☞ मराठा सम्राज्य की सबसे छोटी इकाई गांव था जिसका प्रधान पटेल होता था।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

आधुनिक इतिहास
(Modern History)

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

21. यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Arrival of European Companies)

- भारत में यूरोपवासियों के आने के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगीज (पुर्तगाली) थे, इसके बाद क्रमश: डच, अंग्रेज, डेनिस और फ्रांसीसी आए।
- अंग्रेज डच के बाद भारत आये थे परंतु अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी से पहले ही हो चुकी थी।

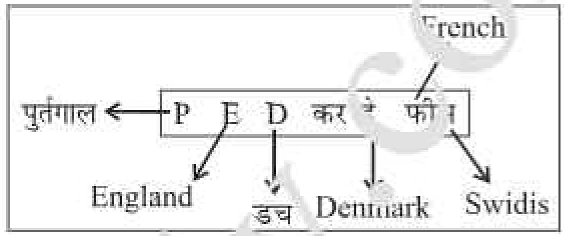

यूरोपिय कम्पनिया एवं स्थापना वर्ष					
क्र.स.	कंपनी	देश	स्थापना वर्ष	गवर्नर कोठी/फैक्ट्री	स्थल/प्रथम
1.	पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी (इस्तादो द इंडिया)	पुर्तगाली	1498 ई.	एफ.डी. अल[illegible]	कालीकट (1498)
2.	अंग्रजी ईस्ट इंडिया कंपनी (दि गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू दि ईस्ट इंडीज)	अंग्रेज	1600 ई.	सर [illegible]स रो	सूरत (1613)
3.	डच ईस्ट इंडिया कंपनी	डच	16[illegible] ई.	[illegible]लियस डेहस्तमान	मसूलीपट्टनम (1605)
4.	डेनिश इस्ट इंडिया कंपनी	डेनिश	[illegible]616 ई.	विर्निचओ	ट्रांकेबर (1620)
5.	फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया (कंपनी द इंडस ओरिचंटल)	फ्रांसीसी	166[illegible] ई.	जोन बैप्टिस्ट कोल्बर्ट/मार्टिन	सूरत (1668)
6.	स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी	स्वीडिश	[illegible]31 ई.	विलियम-यूसेलिक्स	गोहनबर्ग

➤ पुर्तगाल ईस्ट इंडिया कम्पनी

- इसकी स्थापना 1498 में हुई।
- 17 May 1498 को पुर्तगाली नावि[illegible] वास्को[illegible]गामा गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मजीद की सहायता से केरल के कालीकट बन्दरगाह पर पहुंचा। वहाँ के शासक जमोरिन ने उसका भव्य स्वागत किया और उसकी जहाज को मसालों से भर दिया। इन मसालों के अतिरिक्त वास्को डिगामा कुछ और मसाले खरीदे थे जिसे वह यूरोप में बेच[illegible]0 गुना मुनाफा कमाया।
- वास्कोडिगामा पुर्[illegible] के शासक डॉन हेनरीक के प्रतिनिधि के रूप में भारत आया था।
- 1502 ई. [illegible] वास्कोडिगामा पुन: भारत आया।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने कोची का किला जीत लिया।
- पुर्तगाल ने [illegible]स-डी-अल्मेडा को गवर्नर नियुक्त किया। अल्मोड़ा नौसेना को मजबूत करने के लिए शांत जल की नीति (B[illegible] Water Policy) को अपनाया, किन्तु यह वास्तविक [illegible] गवर्नर के पद को नहीं सम्भाल सका और इसके स्थान पर 1509 ई. में अल्बुकर्क को पुर्तगाली गवर्नर नियुक्त किया गया।
- अल्बुकर्क को ही पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक गवर्नर माना जाता है।
- इसने बीजापुर के शासक से गोवा 1510 ई. में जीत लिया।
- 1511 ई. में इसने मलक्का पर कब्जा कर लिया तथा 1515 ई. में इसने फारस की खाड़ी में स्थित हॉरमुज बंदरगाह को युद्ध में जीत लिया।
- इसका विजय नगर शासक कृष्ण देव राय के साथ अच्छा संबंध था।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगालियों की संख्या बढ़ाने के लिए पुर्तगालियों को भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया।
- अल्बुकर्क सती प्रथा का विरोध करने वाला प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था।
- 1612 ई. में पुर्तगालियों को स्वैली के युद्ध में अंग्रेजों ने थॉमस बैस्ट के नेतृत्व में हराया था।
- पुर्तगालियों द्वारा हुगली को बंगाल की खाड़ी में समुद्री लुटपाट के लिए अड्डे के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
- पुर्तगाली सबसे पहले भारत आए थे और सबसे बाद में 1961 ई. में भारत छोड़कर गए।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू तथा आलू की खेती प्रारम्भ करवायी थी।
- सर्वप्रथम भारत-जापान व्यापार प्रारम्भ करने का श्रेय इन्हें ही प्रदान किया जाता है।
- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम 1556 ई. में गोवा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना किया।
- भारत में गोथिक स्थापत्य कला की स्थापना का श्रेय पुर्तगालियों को दिया जाता है।

डच ईस्ट इंडिया कम्पनी (1602)

- भारत आने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति डच ही थे।
- ये नीदरलैंड या हॉलैंड के निवासी थे।
- 1596 ई. में भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक कारनेलिस डी हाउटमैन था।
- डच ने 1605 ई. में मसूलीपट्टनम में अपनी पहली व्यापारिक कोठी स्थापित की तथा पुलिकट में अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी एवं सूरत में अपनी तीसरी व्यापारिक कोठी स्थापित की।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1632 ई. में अपनी फैक्टरी पटना में भी स्थापित की थी।
- 1759 के वेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को बुरी तरह से पराजित कर दिया और उनके सभी व्यापारिक कोठियों पर अधिकार कर लिया।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व क्लाइव ने किया था।
- डच भारत से अधिक इण्डोनेशिया से व्यापार करने में रूचि रखते थे।
- भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केंद्र बनाने का श्रेय डचों को जाता है।

डेनिस ईस्ट इंडिया कम्पनी (1616)

- इन्होंने अपनी व्यापारिक कोठी केरल के ट्रा... में स्थापित किया । दूसरी व्यापारिक कोठी बंगाल के सीरामपुर में स्थापित किया ।
- डेनिस के व्यापारिक कोठियों का विस्तार अधिक नहीं था। अंततः 1745 ई. में डेनमार्क ने अपना सभी कोठियों को अंग्रेजों के हाथ बेच दिया।

फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया

- यह सरकारी कम्पनी थी।
- इसकी स्थापना 1664 इ. में राजा लुई 14वां के समय हुई थी।
- भारत में फ्रांसीसी कंपनी का संस्थापक कोल्बर्ट को माना जाता है।
- फ्रांसीसी ने अपना पहली व्यापारिक कोठी 1669 ई. में सूरत में खोली।
- फ्रांसीसियों ने अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी 1669 ई. में मसुलीपट्टनम में खोली।
- फ्रांसीसियों ने बीजापुर के शासक से आज्ञा लेकर 1673 में पाण्डिचेरी शहर की स्थापना की।
- पाण्डिचेरी की स्थापना फ्राँसिस मार्टिन ने किया।
- फ्राँसिस (फ्रैंको) मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- फ्राँसिस गवर्नर डूप्ले को 1742 ई. में भारत में फ्रांसीसी गवर्नर बनाया गया। इसे सहायक संधि का जनक कहा जाता है।
- इसी के समय में कर्नाटक युद्ध हुआ।
- फ्राँसिसियों का भारत में अधिक क्षेत्रों पर अधिकार नहीं था किन्तु वे आजादी के बाद तक भारत में रहे और 1956 ई. में भारत छोड़कर चले गए।

स्वीडीश ईस्ट इंडिया कम्पनी (17..)

- ये अपना अधिक विस्तार नहीं कर सका और भारत से चले गये।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी

- इसकी स्थापना 31 दिसम्बर 1600 को महारानी एलिजाबेथ ने एक शाही फरमान द्वारा 15 वर्षों के लिए किया।
- शुरूआत में ईस्ट इंडिया कंपनी के साझेदारों की संख्या 217 थी।
- जिस समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई, उस समय मुगल शासक अकबर था।
- ब्रिटिश कंपनी ने 1608 ई. में भारत के पश्चिमी तट सूरत में व्यापारिक केंद्र खोलने का प्रयास किया।
- 1613 ई. में सूरत में स्थापित कारखाना अंग्रेजों का प्रथम स्थायी कारखाना था।
- 1639 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने मद्रास को भाड़े पर ले लिया और यहाँ फोर्ट सेण्ट जार्ज का किला बनवाया।
- 1651 ई. में अंग्रेजों ने बंगाल के हुबली में अपनी व्यापारी कोठी खोली।
- 1661 ई. में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स-II का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से हो गया और चार्ल्स-II ने बम्बई बंदरगाह को ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी को 10 पौंड वार्षिक किराये पर दे दिया।
- 1698 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किला का निर्माण प्रारम्भ किया।

  Remark :– कलकत्ता शहर की स्थापना जॉब चॉरनाक ने किया था।
- 1717 ई. में फरूखशियर ने अंग्रेजों को व्यापारिक छूट दे दिया। इसे अंग्रेजी साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन करने लगा। इस युद्ध के कारण अंग्रेजों को बंगाल में पैर जमाने का मौका मिल गया।
- 1759 ई. में अंग्रेजों ने वेदरा के युद्ध में डचों को पराजित कर दिया।
- 1760 ई. में वाँडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह से पराजित कर दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 1764 के बक्सर के युद्ध के बाद 12 Aug 1765 को अंग्रेजों एवं शाहआलम-II के बीच इलाहाबाद की संधि हुई।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन लगा दिया।
- इस प्रकार भारत में अंग्रेजों का विरोध करने वाली कोई बड़ी शक्ति नहीं बची।
- BEIC (ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी) धीरे-धीरे मजबूत होने लगी किन्तु भ्रष्टाचार बढ़ गया था और राजा का नियंत्रण भी कम्पनी पर कमजोर पडने लगा था।
- अंग्रेजी शासन काल में बिहार अफीम उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था।

शहर	संस्थापक	मूल निवासी
बंबई	गराल्ड ॲगियार	ब्रिटेन
कलकत्ता	जाब चारनाक	ब्रिटेन
दिल्ली	लुटियंस	ब्रिटेन
चंडीगढ़	ली कार्बुजिए	फ्रांस
पांडिचेरी	फ्रेंक मार्टिन	फ्रांस
हैदराबाद	मुहम्मद कुतुबशाह	भारत
मद्रास	फ्रांसीस डे	ब्रिटेन

महाद्वीप	खोजकर्त्ता	मूल निवासी
भारत	वास्कोडिगामा	पुर्तगाल
ब्राजील	पेड्रो अलवर्स कैब्रल	पुर्तगाल
न्यूजीलैंड	अबेल तस्मान	हॉलेण्ड
तस्मानिया	एवेल जंजून तस्मान	हॉलेण्ड
अमेरिका	क्रिस्टोफर कोलम्बस	स्पेन
अस्ट्रेलिया	कैप्टन जेम्स कुक	ब्रिटेन

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

22. नवीन राज्यों का उदय (Rise of New Kingdoms)

अवध राज्य

- अवध के संस्थापक सआदत खाँ अथवा बुरहान-उल-मुल्क थे। इन्होंने अवध की स्थापना 1722 ई. में मुगलों से अलग हो कर किया।
- इन्होंने अपनी राजधानी फैजाबाद (लखनऊ) को बनाया।
- अवध के राजाओं को नबाब कहा जाता था।
- सआदत खाँ के समय 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहा जाने वाला नादिर शाह ने अवध पर आक्रमण कर दिया। किन्तु अवध धन दौलत से कंगाल था। अत: सआदत खाँ ने नादिर शाह को दिल्ली पर आक्रमण के लिए उकसा दिया। जब नादिर शाह दिल्ली को लूटने के बाद वापस सआदत खाँ के पास कुछ धन देने के लिए आया तो उनके डर से सआदत खाँ ने आत्महत्या कर लिया।
- इसके मृत्यु के बाद उसके पुत्र सफदर जंग तथा शुजाउद्दौला के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ और शुजाउद्दौला विजय हुआ। 1764 के बक्सर के युद्ध में तिलगुट सेना ने भाग लिया और पराजित हो गया।
- 1801 ई. में अवध ने लॉर्ड वेलेजली द्वारा प्रारंभ की गयी सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।
- अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह थे जिनको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे अंग्रेजी क्षेत्र में मिला लिया और वाजिद अली शाह को कैद कर लिया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। यही कारण था कि वाजिद अली शाह की पत्नी बेगम हजरत महल ने 1857 के विद्रोह में भारतीय सैनिकों का अगुवाई से नेतृत्व किया।
- विद्रोह समाप्त होने के बाद बेगम हजरत महल नेपाल चली गयी जहां उनकी मृत्यु हो गयी।

हैदराबाद

- स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना 1724 ई. में निजाम-उल मुल्क अथवा चिनकिलिच खाँ ने मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के समय किया। यहाँ के राजा को निजाम कहा जाता था।
- निजाम-उल-मुल्क ने 1725 ई. में हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाया।
- एक हिन्दू दीनानाथ को निजाम-उल-मुल्क ने अपना 'दीवान' नियुक्त किया था।
- 1728 ई में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने हैदराबाद पर आक्रमण किया और पालखेड़ा के युद्ध में निजाम को पराजित कर दिया।
- पेशवा तथा निजाम के बीच मुंशी शिवगांव की संधि हुयी इस संधि के तहत निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार की और चौथ तथा सरदेशमुखी नामक कर देने लगा। जब 1798 ई. में लार्ड वेलेजली ने सहायक संधि प्रारंभ किया तो उसे मानने वाला पहला राज्य हैदराबाद ही था।
- स्वतन्त्रता के बाद हैदराबाद (तेलंगाना वाला क्षेत्र) पाकिस्तान में मिलने की इच्छा की। किन्तु सरदार पटेल ने ऑपरेशन पोलो नामक पुलिस कार्यवाही से हैदराबाद को भारत में मिला लिया।

कर्नाटक

- कर्नाटक की स्थापना सादुतुल्ला ने किया। कर्नाटक पर अधिकार करने के लिए फ्रांसीस तथा अंग्रेज आपस में लड़ गए और 3 युद्ध हुआ।

➢ प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1746-48)

- इस युद्ध का कारण ऑस्ट्रिया के अधिकार को लेकर इंग्लैंड तथा फ्रांस के बीच युद्ध हुआ। जिस कारण उनकी कम्पनियां भारत में युद्ध कर ली। ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार का युद्ध ए-ला-शापल की संधि से समाप्त हुआ। इसी संधि के तहत भारत में प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।

➢ द्वितीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1749-54)

- इस युद्ध का कारण फ्रांसिस गर्वनर डुप्ले का महात्वाकांक्षी होना था। इसने भारत में अग्रेंजो पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध पाण्डिचेरी के संधि के तहत समाप्त हुआ।

➢ तृतीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1756-63)

- इस युद्ध का कारण यूरोप में चल रहे सात वर्षीय युद्ध को माना जाता है। यह युद्ध इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के बीच मुख्य रूप से हुआ। इसी युद्ध के दौरान 1760 में वांडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बूरी तरह पराजित कर दिया और भारत से फ्रांसीसी सत्ता लगभग समाप्त हो गयी। यह युद्ध 1763 में पेरिस संधि के तहत समाप्त हो गयी। इस संधि के तहत चन्द्र नगर तथा पाण्डिचेरी पर फ्रांसीसियों का अधिकार रहा शेष क्षेत्र पर अंग्रेजो ने कब्जा कर लिया।

मैसूर राज्य

- मैसूर का राज्य पहले विजयनगर साम्राज्य का एक अंग था, परंतु 1565 ई. में तालकोटा के युद्ध के बाद वेंकट द्वितीय (1612 ई.) के समय मैसूर में वाड्यार राजवंश की स्थापना हुई।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- मैसूर राज्य की स्थापना हैदर अली ने 1755 ई० में किया। हैदर अली एक योग्य शासक था।
- मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टनम था।
- इसने अपने साम्राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया और यही अंग्रेजों तथा मैसूर के बीच युद्ध का कारण बना।
- फ्रांसीसियों की सहायता से हैदर अली ने डिंडीगुल में 1755 ई. में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना की।

➤ अंग्रेजों तथा मैसूरों के बीच लड़े गए युद्ध

● प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69)

- हैदर अली ने अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को दबाने के लिए अंग्रेजों के साथ यह युद्ध किया था।
- इस युद्ध में हैदर अली विजयी रहा इसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर जनरल स्मिथ कर रहा था।
- यह युद्ध मद्रास की संधि से समाप्त हुआ।
- मद्रास की संधि की सारी शर्तें हैदरअली ने तय किया था। यही कारण है कि यह संधि सफल नहीं हो सकी और द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जन्म दे दिया।

● द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84)

- इस युद्ध का कारण अंग्रेजों द्वारा हैदर अली का क्षेत्र माहे (पाण्डिचेरी) पर अधिकार करना था।
- इस युद्ध में हैदरअली मारा गया और उसका बेटा टीपू सुल्तान युद्ध को आगे बढ़ाया। यह युद्ध बिना किसी निर्णय के मंगलौर की संधि से समाप्त हो गया।

● तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)

- यह युद्ध टीपू सुल्तान ने लड़ा किन्तु इस युद्ध में टीपू सुल्तान पराजित हो गया और यह युद्ध श्रीरंगपट्टनम की संधि से समाप्त हो गया।

● चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)

- इस युद्ध में टीपू सुल्तान मारा गया और मैसूर के क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।
- इस युद्ध में लॉर्ड वेलेजली स्वयं सेना का नेतृत्व किया था।

संधि का Trick		
महा (मद्रास)	मंगल (मंगलोर)	श्री (श्रीरंगपट्टनम)
1	2	3

- टीपू सुल्तान ने फ्रांसीसियों के सहयोग से एक नव सेना का गठन किया और फ्रांस के जैकोबियन कल्ब (फ्रांस का गरम दल) की सदस्यता ग्रहण की।
- फ्रांसीसी क्रांति के बाद टीपू सुल्तान ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में जैकोबिन क्लब बनवाया तथा राजधानी में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया।
- टीपू सुल्तान एक धार्मिक उदार शासक था। इसने शंकराचार्य द्वारा बनवाए गये श्रृंगेरी पीठ जो की मैसूर में स्थित हैं का पुनर्निमाण करवाया।
- टीपू सुल्तान की अंगूठी पर राम लिखा था। टीपू सुल्तान के तोपों का आकार शेर की तरह था।
- टीपू सुल्तान कहता था कि 100 दिन के गीदड़ के जीवन से अच्छा है कि एक दिन के शेर का जीवन।

पंजाब राज्य

- पंजाब राज्य की स्थापना सुकरचकिया मिसल के राजा रणजीत सिंह ने किया।
- इसके समय 1798 तक अफगानिस्तान के शासक अहमद ने हमला किया। इस हमले के दौरान जमान शाह के कुछ तोप चिनाब नदी में गिर गये जिसे राजा रणजीत सिंह ने वापस जमान शाह को दे दिया।
- राजा रणजीत सिंह के इस उदारता से जमान शाह प्रसन्न हुआ और लाहौर को उपहार में दे दिया।
- 1809 ई. में रणजीत सिंह तथा चार्ल्स मेटकाफ के बीच अमृतसर की संधि हुई। इस संधि के तहत सतलज नदी को अंग्रेजी तथा पंजाब राज्य के बीच सीमा मान लिया गया।
- इस संधि का उद्देश्य रणजीत सिंह के साम्राज्य विस्तार पर रोक लगाना था।
- राजा रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- राजा रणजीत सिंह ने स्वर्ण मन्दिर पर सोने की चादर चढ़ायी।
- 1839 ई० में राजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- अगला शासक खड़क सिंह बना तथा इन्होंने अपना वजीर (PM) ध्यानसिंह को बनाया।
- ध्यानसिंह एक धोखेबाज व्यक्ति था उसने अगले ही वर्ष 1840 में खड़क सिंह की हत्या कर दी।
- अगला शासक नैनीहाल बना। इसने भी अपना वजीर ध्यान सिंह को ही बनाया। ध्यानसिंह ने इसकी भी हत्या 1843 में कर दी।
- इसके बाद अगला शासक शेरसिंह बना किन्तु शेर सिंह की 1844 ई. में मृत्यु हो गयी और इनका अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह अगला शासक बना।
- 1843 ई. में राजमाता जिंदन के संरक्षण में महाराजा रणजीत सिंह के अल्पवयस्क पुत्र दिलीप सिंह का राज्यारोहण किया गया।
- अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार के लिए दो-दो युद्ध लड़े।

➤ प्रथम आंग्ल पंजाब युद्ध (1845-46)

- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध मुख्यत: महारानी जिंदन की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा का परिणाम था।
- यह युद्ध भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड हॉर्डिंग के समय लड़ा गया था तथा इस समय भारत के प्रधान सेनापति जनरल गफ थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस युद्ध में अंग्रेज विजय हुए। यह युद्ध भोरेवाल की संधि के तहत समाप्त हुआ।

➢ **द्वितीय आंग्ल पंजाब युद्ध (1848-49)**

- इस युद्ध का कारण लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पनीति थी। लार्ड डलहौजी ने पंजाब पर अधिकार के लिए चार्ल्स नेपियर नामक एक कुशल सेनापति भेजा था।
- यह चार्ल्स नेपियर युद्ध में विजय रहा और पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। लार्ड डलहौजी कोहिनूर हीरा पंजाब राज्य से लेकर ब्रिटेन की रानी को भेज दिया।
- राजा रणजीत सिंह का अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने अच्छी शिक्षा के लिए लंदन भेज दिया और उसकी माता को 48000 रु० प्रति वर्ष पेंशन देकर शेखपुरा (जम्मू-कश्मीर) भेज दिया। इस प्रकार पंजाब पूरी तरह अंग्रेजों के अधीन हो गया।

कोहिनूर हीरा

- यह हैदराबाद के समीप गोलकुण्डा के खाने से निकला था तथा वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव के पास था जिससे मलिक काफूर ने छीन कर अलाउद्दीन खिलजी को दे दिया।
- खिलजी वंश के बाद यह हीरा तुगलक वंश के पास चला गया।
- तुगलक वंश से यह सैयद वंश और उसके बाद लोदी वंश के पास चला गया। लोदी वंश से यह मालवा के शासक के पास गया जिससे मुगलों ने छीन लिया।
- मुगल बादशाह मुहम्मद शाह से नादिर शाह ने छिन लिया और ईरान लेकर चला गया किन्तु पश्तुन दुरानियों ने नादिर शाह से कोहिनूर हीरा छीन लिया।
- पश्तुन दुरानी से पंजाब के सिख शासकों ने कोहिनूर हीरा छीन लिया। अंतत: लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब के सिख शासकों से कोहिनूर हीरा लेकर महारानी विक्टोरिया के पास भेज दिया। नीले रंग का यह कोहिनुर हीरा आज भी विक्टोरिया के राजमुकुट में है।

गोलकुण्डा → वारंगल → खिलजी → तुगलक → सैयद लोदी →
↓
सिख ← पश्तुन ← दुरानी ← नादिर शाह ← मुगल मालवा
└ डलहौजी → Victoria

बंगाल

- बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शीद कुली खान ने किया। इन्होंने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद को बनाया।
- इनकी मृत्यु 1727 ई. में हो गयी।
- शुजाउद्दीन अगला शासक बना किन्तु 1739 ई. में उनकी मृत्यु हो गयी।
- इसके बाद अलीवर्दी खान अगला नबाब बना। 1756 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।
- सिराजुद्दौला अगला शासक बना। सिराजुद्दौला का अपने ही परिवार में घसीटी बेगम से विवाद था। साथ ही अपने पड़ोसी राजवल्लभाचार्य से भी विवाद था। इस विवाद का फायदा उठाकर अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में किला बनवाना प्रारम्भ किया। जिसे फोर्ट विलियम किला कहा गया। इस फोर्ट विलियम किला का प्रधान अधिकारी ड्रेजर था।
- सिराजुद्दौला ने अचानक किला पर हमला कर दिया और वहाँ से 146 लोगों को पकड़ कर कलकत्ता के चन्द नगर नामक स्थान पर एक छोटे से घर में कैद कर दिया जिसमें 123 लोगों की मृत्यु हो गयी और मात्र 23 ही जीवित बचे। इस घटना को कालकोठरी (Black Hall) की घटना के नाम से जाना जाता है। इस घटना की जानकारी इतिहासकार हार्नवेल ने दिया। क्योंकि वह भी इन 146 लोगों में से थे जो कैद किए गए थे।
- सिराजुद्दौला को हराने के लिए मद्रास का गवर्नर लार्ड क्लाईव बंगाल आया और उसने सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर तथा कोषाध्यक्ष (वित्तमंत्री) राय दुर्लभ को मिला लिया।
- 23 जून, 1757 को पं. बंगाल राज्य में हुगली नदी के किनारे प्लासी नामक स्थान पर प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में सिराजुद्दौला मीर जाफर के कहने पर युद्ध से पहले ही लौट गया और जिसकी रास्ते में हत्या कर दी गयी। और युद्ध के मैदान में मीर जाफर चुपचाप अंग्रेज का साथ देता रहा और अंग्रेज जीत गए।
- पूर्व शर्त के अनुसार मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया।
- अंग्रेजों ने मीर जाफर से धन लेना प्रारम्भ किया मीर जाफर ने भी उन्हें अत्यधिक धन दिया किन्तु धन जब समाप्त होने लगा तो मीर जाफर धन देने से कतराने लगा। इसी कारण अंग्रेजों ने मीर जाफर को हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया। इसे बंगाल का प्रथम शांतिपूर्ण क्रांति कहते हैं।

दस्तक प्रणाली

- दस्तक एक प्रकार का शाही फरमान (राजा) था। जिस अंग्रेज के पास दस्तक होता था। उसे बंगाल के क्षेत्र में 'कर' में छूट दिया जाता था।
- अंग्रेजों ने इस दस्तक प्रणाली का दुरुपयोग प्रारम्भ करने लगा। जिस कारण मीर कासिम ने दस्तक प्रणाली को हो समाप्त कर दिया। इसी कारण अंग्रेज मीर काशिम का विरोध करना प्रारम्भ किया।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से बिहार के मुंगेर लाया और मुंगेर में गोला बारूद का कारखाना खोला।
- अंग्रेजों को मीर कासिम की यह नीति पसंद नहीं आई और अंग्रेजों ने मीर कासिम को हटाकर मीर जाफर को पुन: बंगाल का नवाब बना दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

बक्सर का युद्ध

- मीरकासिम ने अब अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम-II के साथ मिलकर एक त्रिगुट (तीन गुटों वाली सेना) सेना का गठन किया।
- इस सेना का नेतृत्व शाह आलम-II कर रहा था, जिसका सामना बिहार के बक्सर में अंग्रेजों के साथ 21 अक्टूबर, 1764 ई. को हुआ। इसे ही बक्सर का युद्ध कहते हैं।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व एक कुशल सेनापति हेक्टर मुनरो कर रहा था।
- इस युद्ध में त्रिगुट सेना पराजित हुई और अंग्रेज विजय हो गए।
- 1765 ई. में अंग्रेजों ने शाहआलम-II के साथ इलाहाबाद की संधि किया। इस संधि के तहत शाहआलम-II ने बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी राजस्व अंग्रेजों को सौंप दी।
- इस प्रकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया।
- इस समय कम्पनी का गवर्नर लॉर्ड रॉबर्ट क्लाईव था।
- लॉर्ड क्लाईव को भारत में द्वैध शासन का जनक कहते हैं। बंगाल का अंतिम नवाब मुबारक शाह था।
- इसके बाद बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-1816)

- लार्ड हेस्टिंग्स के समय कर्नल डेविड ऑक्टरलोनी ने गोरखाओं को 1816 ई. में पराजित किया। जिसके कारण 1816 ई. में अंग्रेज तथा नेपाल के बीच संगोली की संधि हुई। इस युद्ध में नेपाल के अमर सिंह थापा को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

आंग्ल-बर्मा युद्ध

- अंग्रेज को बर्मा पर नियंत्रण करने हेतु तीन युद्ध करने पड़े।

- **प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-1826)**
- 1824 में अंग्रेज सेनापति सर आर्चीबाल्ड कैम्पबेल ने रंगून पर अधिकार कर लिया।
- इस युद्ध का अंत 1826 में यान्डबू की संधि के तहत हुआ।
- इस युद्ध के समय अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड एमहर्स्ट थे।
- यह ब्रिटिश भारतीय इतिहास का सबसे महंगा युद्ध था।

- **द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852)**
- यह युद्ध लार्ड डलहौजी के शासन काल में लड़ी गई।
- इस युद्ध के तहत 1852 ई. में लोअर बर्मा और पीगू को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

- **तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885-1888)**
- यह युद्ध लार्ड डफरिन के शासन काल में लड़ी गई।
- इस युद्ध के तहत बर्मा को अंतिम रूप से अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

Note :

(i) भारत शासन अधिनियम 1935 ई. में बर्मा को भारत से पृथक करने का प्रावधान था, जिसके तहत 1937 ई. में बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया।

(ii) आंग सन की सहयोगी यूनू के नेतृत्व में चले आन्दोलन के कारण 4 जनवरी 1948 को बर्मा को ब्रिटिश राज से आजादी मिली।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

23. 1857 की क्रांति (Revolution of 1857)

➢ 1857 की क्रांति
- इस क्रांति की पृष्ठभूमि 1757 के बाद से ही बन रही थी।
- भारतीय जनता धीरे-धीरे अंग्रेजों के खिलाफ होते जा रही थी जिसके कई कारण थे–

➢ आर्थिक कारण
- अंग्रेजों ने जमींदारी व्यवस्था, महालवारी, रैयतवाड़ी, स्थाई बंदोवस्त इत्यादि द्वारा भारतीय किसानों का अत्यधिक शोषण किया जिस कारण भारतीय किसान गरीब हो गए।
- वे इसका कारण अंग्रेजों को मानते थे।

➢ सामाजिक कारण
- अंग्रेजों ने सती प्रथा, नरबलि प्रथा, बाल विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया तथा विधवा पुनर्विवाह लागू करा दिया, जिस कारण भारतीय समाज में एक क्रांति की भावना आने लगी।

➢ प्रशासनिक कारण
- लार्ड डलहौजी ने हड़प नीति के तहत सतारा, अवध, झांसी, कानपुर, इलाहाबाद, जगदीशपुर, सिक्किम इत्यादि पर अधिकार कर लिया।
- इसने नाना साहब का पेंशन बंद कर दिया। जिस कारण ये सभी राजा विरोधी हो गए।

➢ धार्मिक कारण
- 1813 ई. में ईसाई मिशनरियों को भारत आने की अनुमति दी गई।
- अंग्रेज ईसाई धर्म का अत्यधिक प्रचार करते थे। जिस कारण भारतीय समाज विरोधी हो गया।

➢ तकनीकी कारण
- रेल, डाक तथा प्रेस के प्रारंभ होने से विद्रोह की भावना तथा संदेश तेजी से फैलने लगा।

➢ सैनिक कारण
- भारतीय सैनिकों को दाढ़ी, मूँछ, पगड़ी तथा बाला (कड़ा) पहनने पर रोक लगा दिया गया जिस कारण सैनिक खिलाफ हो गए।

➢ तत्कालिक कारण
- अंग्रेजों ने Brase field rifel के स्थान पर Enfield राइफल को लाया। तभी यह अफवाह उड़ गई कि हिन्दुओं को दी जाने वाली राइफल के कारतुस पर गाय की चर्बी तथा मुसलमानों को दी जाने वाल राइफल के कारतुस पर सुअर की चर्बी लगी है तथा अंग्रेजों के द्वारा दिए जानेवाले आटे में गाय और सुअर के हड्डी का पाउडर मिला है। जिस कारण सैनिकों में मतभेद हो गया।
- बंगाल के बैरकपुर छावनी के 34वीं नेटिव इनफैन्ट्री के जवान मंगल पाण्डेय ने इन कारतुसों के प्रयोग से मना कर दिया। उसके अधिकारियों ने जब दबाव बनाया तो उसने लेफ्टिनेंट बाग तथा लेफ्टिनेंट ह्यूज को गोली मार दी। इस कारण मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल, 1857 ई. को बैरकपुर छावनी में फाँसी दे दी गई।
- मंगल पाण्डेय U.P. के बलिया का रहने वाला था। इस घटना के कारण सारे सैनिकों के अंदर विद्रोह की भावना आ गई।
- सैनिकों ने 30 मई, 1857 ई. को विद्रोह का दिन निर्धारित किया और इसके लिए रोटी तथा कमल के फूल द्वारा संदेश फैलाया गया।
- सर्वप्रथम 1857 ई. की लड़ाई मेरठ के 20 NI के जवानों के द्वारा 10 मई को किया गया था।
- ये विद्रोही पूरे छावनी के हथियारों को लुटकर 11 मई को दिल्ली पहुँच गए।
- विद्रोहियों ने दिल्ली पहुंचकर दिल्ली की छावनी को जीत लिया और बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित कर दिया गया।
- बहादुरशाह जफर की पत्नी जिन्नत महल ने अंग्रेजों के डर से अंग्रेज को गुप्त सूचना दे दी थी।
- 4 जून, 1857 ई.को बेगम जहरत महल ने लखनऊ से विद्रोह कर दिया। इनका सेनापति बख़्त खान था।
- 5 जून, 1857 ई. को नानासाहब तथा तात्याटोपे ने कानपुर से विद्रोह कर दिया।
- तात्याटोपे का मूल नाम राम चंद्र पांडु रंग था। ये झांसी के रानी के गुरु थे।
- झांसी से विद्रोह मनुबाई (झांसी की रानी) ने किया ये बनारस की रहने वाली थी जिनका विवाह ग्वालियर के राजा गंगाधर राव से हुआ था।
- ग्वालियर की राजधानी उस समय झांसी थी।
- पटना से विद्रोह पुस्तक विक्रेता पीर अली ने किया था।
- आरा के जगदीशपुर के जमींदार वीरकुंवर सिंह ने विद्रोह किया। इन्होंने लीग्रांड को 23 अप्रैल, 1858 ई. को पराजित कर दिया और अपनी राजधानी जगदीशपुर पर पुन: अधिकार प्राप्त कर लिया। किन्तु कुंवर सिंह के हाथ में गोली लग गई थी जिस कारण उन्होंने अपना हाथ स्वयं काट कर गिरा दिया, जिस कारण कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। कुंवर सिंह के भाई को गोरखपुर जेल में डाल दिया गया जहां उनकी भी मृत्यु हो गई।
- बिहार सरकार 23 अप्रैल को विजय दिवस के रूप में मनाती है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- **विद्रोह दबाने वाले अंग्रेजी सेनापति**
  - **(i) दिल्ली (बहादुर शाह-II) :** निकलसन तथा हडसन।
  - **(ii) फैजाबाद (अयोध्या) - मौलबी अहमद उल्ला :** कर्नल रेनर्ड।
  - **(iii) फत्तेहपुर (अजीमुल्ला) :** कर्नल रेनड।
  - **(iv) बरेली (खान बहादुर खां) :** विसेंट आयर।
  - **(v) लखनऊ (हजरत महल) :** कैंपबेल।
  - **(vi) कानपुर (नाना साहब) :** कैंपबेल।
  - **(vii) झांसी (मनुबाई) :** ह्यूरोज।
  - **(viii) ग्वालियर (तात्याटोपे) :** ह्यूरोज।
  - **(ix) इलाहाबाद (लियाकत अली) :** कर्नल नील।
  - **(x) जगदीशपुर (कुंवर सिंह) :** लीग्रांड।
  - **(xi) पटना (पीर अली) :** विसेंट आयर।

  Remark :– कर्नल नील, लारेंस तथा हैबलक विद्रोह दबाते समय मारे गए थे।

- तात्या टोपे नाना साहब से अलग होने के बाद इस आंदोलन का मुख्यालय काल्पी को बनाया था।
- नाना साहब के सलाहकार एवं तात्या टोपे के सेनापति अजीमुल्ला खाँ थे।
- 1859 ई. में जब तात्या टोपे पकड़े गए तो विद्रोह को पूर्णत: समाप्त समझा जाने लगा।
- इन्दौर में अंग्रेजी सेनाओं से संघर्ष सहादत्त खाँ ने किया था।
- इस आंदोलन में अंग्रेज का सबसे कट्टर दुश्मन फैजाबाद के मौलबी अहम उल्ला शाह था।
- इस लड़ाई में अंग्रेजों की सर्वाधिक सहायता ग्वालियर के सिंधिया ने किया था। इस समय यहाँ के मंत्री सर दिनकर राव थे।
- इस विद्रोह के दौरान साहब-ए-आलम बहादुर का खिताब बहादुर शाह ने बख्त खाँ को दिया था। बख्त खान विद्रोह के सेनापति थे।

1857 के विद्रोह के असफलता के कारण –

(i) हथियारों की कमी
(ii) संगठन का अभाव
(iii) नेतृत्व की कमी
(iv) राजपुत तथा सिंधिया ने अंग्रेजों का साथ दिया
(v) शिक्षित लोग तटस्थ (Nutral) रहे
(vi) बहादुर शाह का पत्नी जीनत महल ने सभी गोपनीय सुचनाएं अंग्रेजों को दे दी और अंग्रेजों ने हुमायुं के मकबरे के समीप बहादुर शाह जफर को पकड़ लिया और उसे रंगुन भेज दिया जहाँ 1862 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
(vii) विद्रोहियों में देश प्रेम की भावना नहीं बल्कि आपसी स्वार्थ था।

कारण –(a) बेगम हजरत महल से अवध छिना गया।
(b) नाना साहब का पेंशन रोका गया।
(c) झांसी की रानी के दत्तक पुत्र को राजा नहीं बनाया गया।
(d) कुंवर सिंह से जमींदारी छिन ली गई।

- विद्रोह के दौरान लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को आपात कालीन मुख्यालय बनाया था।
- विद्रोह समाप्त होते ही इंग्लैण्ड की महारानी ने अपना घोषणा पत्र लार्ड कैनिंग को भेजा। जिसे लॉर्ड कैनिंग ने इसे 1858 ई. में इलाहाबाद में पढ़कर सुनाया।
- इस घोषणा के अनुसार इस्ट इंडिया कम्पनी को समाप्त कर दिया गया और भारत का शासन इंग्लैण्ड की महारानी को दे दिया गया। ब्रिटेन ने यह वादा किया कि वह नया क्षेत्र पर कब्जा नहीं करेगा।
- विद्रोह के समय इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री पाम एलफिस्टन थे तथा भारत का गर्वनर जनरल लार्ड कैनिंग था। विद्रोह समाप्ति के बाद पील आयोग के सिफारिश पर सेना का पुर्नगठन किया गया और सेना में राजपूत तथा ब्राह्मणों की संख्या घटा दी गई। जबकि नेपाली तथा पठान की संख्या बढ़ा दी गयी।
- इस विद्रोह के बाद यूरोपीय और भारतीय सैनिकों का अनुपात 1 : 2 रखा गया जिसे बाद में बढ़ाकर 2 : 5 कर दिया गया।
- इस विद्रोह के बाद भारतीय राज्यों को प्रभुसत्ता के सिद्धांत के अंतर्गत ब्रिटिश शासन के दौरान लाया गया जिसके अनुसार 1 जनवरी, 1877 ई. को महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित कर दिया गया। अत: भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सर्वोच्चता खत्म हो गई और ब्रिटिश सत्ता (संसद) सर्वोच्च हो गई।

- **1857 की क्रांति में विभिन्न विद्वानों द्वारा दिया गया मत–**

(1) यह राष्ट्रीय विद्रोह था - डिजरायली।
(2) यह सैनिक विद्रोह था - सीले और लॉरिन्स।
(3) यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था- बी.डी. सावरकर।
(4) यह हिन्दु मुस्लिम षड्यंत्र था- जेम्स आउट्रम।
(5) यह ईसाइयों के विरूद्ध धर्मयुद्ध था- रीज।
(6) यह सभ्यता और बर्बरता का युद्ध था- टी.आर होम्स।
(7) यह न तो प्रथम न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था- आर.सी. मजूमदार।
(8) यह जन क्रांति था- रामबिलास शर्मा।

- **1857 की क्रांति में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखा गया पुस्तक–**

(1) 1857 – सुरेन्द्र नाथ सिंह, मौलाना अबुल कलाम।
(2) महान विद्रोह – अशोक मेहता।
(3) 1857 का विद्रोह – पी.सी. जोशी।
(4) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम – बी.डी. सावरकर।
(5) प्रथम राष्ट्रीय विद्रोह – बी.डी. सावरकर।
(6) 1857 का विद्रोह और सैनिक विद्रोह - आर.सी.मजूमदार।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

24. क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary Movement)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885 ई.)

- कांग्रेस एकलैटिन अमेरिकी शब्द है। अर्थात् कांग्रेस शब्द की उत्पत्ति उत्तरी अमेरिका के राजनीतिक इतिहास की देन है, जिसका अर्थ है– **व्यक्तियों का समूह।**
- कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर, 1885 ई. में हुई, उस समय भारत का वायसराय लार्ड डफरिन था।
- कांग्रेस के संस्थापक स्कॉटलैण्ड के असैन्य अधिकारी ए॰ ओ॰ ह्यूम थे। इन्हें शिमला का संत (Harmit of Shimla) कहा जाता था।
- कांग्रेस का पहला अधिवेशन पूना में प्रस्तावित था किन्तु वहां प्लेग नामक बीमारी फैल जाने के कारण इसे बम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में आयोजित किया गया। जिनमें से कुल 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
- कांग्रेस ने अपने स्थापना के समय कुल 9 प्रस्ताव को पारित किए थे।
- कांग्रेस अधिवेशन के पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी एवं सचिव ए-ओ-ह्यूम थे।
- ए-ओ-ह्यूम की जीवनी बेडर बर्न ने लिखा है।
- कांग्रेस की स्थापना अंग्रेजों ने अपनी खुद की सुरक्षा वॉल्व के रूप में किया था।
- सेफ्टी वॉल्व की अवधारणा का अर्थ है– भारत में कांग्रेस के रूप में एक ऐसे राजनीतिक संगठन का निर्माण करना जो विदेशी शासन के प्रति संभावित राजनीतिक असंतोष की लहर को रोक सके। किन्तु कांग्रेस भारतीय क्रांतिकारियों का एक मंच बन गया।
- लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक यंग-इंडिया में सेफ्टी वॉल्व सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
- कांग्रेस की वार्षिक बैठक **अधिवेशन** कहलाती थी। कांग्रेस का अधिवेशन दिसम्बर महीने में होता था और प्रत्येक वर्ष अलग-अलग स्थानों पर होता था। किन्तु 1930 ई. के बाद यह जनवरी में होने लगा।
- कांग्रेस के पहले 20 साल का काल उदारवादी का काल कहलाता है क्योंकि इस समय कांग्रेस अंग्रेजों के हाँ में हाँ मिलाती थी।
- उदारवादी के काल को बालगंगाधर तिलक ने राजनीतिक शिक्षा का काल कहा है।
- उदारवादी काल के प्रमुख नेता डब्लू.सी. बनर्जी, दादा भाई नौरोजी तथा रविन्द्रनाथ टैगोर थे।

गरम दल और नरम दल		
आधार	नरम दल	गरम दल
समय काल	कांग्रेस की स्थापना के 20 **वर्षों** तक (1885 से 1905 ई.) कांग्रेस नरम दल के रूप में जाना गया।	सन 1905 ई. के बाद से कांग्रेस के राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्रवादियों का उदय हुआ, जिसने कांग्रेस में एक नई गरम दल का रूप **लिया।**
विश्वास	उनका विश्वास था कि उनकी जायज मांगे सरकार स्वीकार कर लेगी इसलिए वे प्रस्ताव पास करके आवेदन तैयार करके प्रार्थना सरकार के पास भेजते **थे**, उन्हें आशा थी कि अनुनय के इन तरीकों से भारतीय जनता धीरे-धीरे अपने अधिकार प्राप्त कर लेगी और अंततः भारत स्वतंत्र हो जाएगा।	19वीं सदी के अंतिम **वर्षों** में नए नेता सामने आये। उनका विश्वास था कि केवल अनुनय-विनय करके भारतीय अपने अधिकार नहीं प्राप्त कर सकते। इसलिये उन्होंने जनता को आत्मबल का पाठ पढ़ाया और उनमें देश-प्रेम की भावना भर दी। उन्होंने जनता को देश के लिए कोई भी कुर्बानी देने के लिए तैयार किया। बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित गीत वंदे मातरम् पूरे देश में राष्ट्रीय गीत के रूप में लोकप्रिय हुआ।
प्रमुख नेता	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता और अन्य पुराने नेता।	बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय और अरविंद घोष।

- भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों की शुरूआत महाराष्ट्र से हुई, जिसे उभारने का श्रेय बाल गंगाधर तिलक के पत्र केसरी को जाता है। जबकि क्रांतिकारी आंदोलन का प्रधान केंद्र बंगाल था।

➤ **क्रांतिकारी आंदोलन**
क्रांतिकारी आंदोलन दो क्षेत्रों में हुई–
1. भारत, 2. विदेश

- भारत में क्रांतिकारी आंदोलन दो चरणों में हुई- प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण।

क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम चरण

- बाल गंगाधर तिलक ने क्रांतिकारी युवाओं को एकजुट होने, राष्ट्रवाद की भावना भरने तथा शस्त्र की प्रशिक्षण देने के लिए 1893 में गणपति महोत्सव तथा 1895 में शिवाजी महोत्सव प्रारंभ किया।
- इनका कहना था ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे।''

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- तिलक की प्रेरणा से महाराष्ट्र में 'आर्य बांधव समिति' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना हुई।

➢ व्यायाम मण्डल

- इसकी स्थापना 1897 में चापेकर बंधु तथा दामोदर हरि एवं बालकृष्ण हरि ने किया था।
- इन्होंने पूना के प्लेग अधिकारी डब्लू.सी.रेंड और आयर्स्ट की हत्या कर दी क्योंकि, वह भारतीय जनता से सहयोग करने के बजाय टैक्स वसूल रहा था।

➢ मित्र मेला और अभिनव भारत

- गणपति उत्सव मनाने के दौरान 1899 ई. में बी.डी. सावरकर द्वारा नासिक में मित्र मेला की स्थापना की गई।
- यह मित्र मेला आगे जाकर 1904 ई. में अभिनव भारत के रूप में परिवर्तित हो गया।
- यह संस्था मेजिनी के तरूण इटली के सदृश्य एक गुप्त सभा थी।
- इसी अभिनव भारत के एक सदस्य अनंत लक्ष्मण कान्हरे ने नासिक के मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या कर दी, इसी घटना को नासिक षड्यंत्र केस कहते हैं।
- इसी संस्था के सदस्य पांडुरंग महादेव बापट को बम बनाने की कला सिखने के लिए पेरिस भेजा गया था।
- 1906 ई. में सावरकर कानून की पढ़ाई के लिए लंदन चले गए। जहाँ 1857 के क्रांति की 50वीं सालगिरह मनाई जा रही थी।
- इन्होंने अपनी पुस्तक India War for Freedom में 1857 की क्रांति को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा है।

➢ अनुशीलन समिति

- यह बंगाल की पहली क्रांतिकारी संस्था थी, जिसकी स्थापना 24 मार्च, 1902 ई. को मिदनापुर में ज्ञानेंद्रनाथ बसु द्वारा तथा कलकत्ता में जतीन्द्र नाथ बनर्जी और बारीन्द्र कुमार घोष के द्वारा किया गया था।
- प्रारंभ में इस समिति का नाम भारत अनुशीलन समिति था। जिसके अध्यक्ष प्रमथ नाथ मित्रा और उपाध्यक्ष चितरंजन दास थे।
- इस संस्था में निवेदिता एक मात्र महिला सदस्य थी।

➢ युगांतर समिति

- बंगाल के क्षेत्र से क्रांतिकारी आंदोलन वरिन्द्र नाथ घोष तथा भूपेन्द्र नाथ घोष ने किया। इन्होंने युगांतर नामक पत्रिका में कहा कि यदि 30 करोड़ भारतीयों के 60 करोड़ हाथ एक साथ खड़े हो जाए तो कोई अंग्रेज की ताकत नहीं की उसे रोक सके।
- खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी इस समिति के सक्रिय सदस्य थे।
- प्रफुल्ल चाकी तथा खुदीराम बोस ने 1908 ई. में मुजफ्फरपुर के जज किंग्स फोर्ड का गाड़ी पर बम फेंक दिया, किन्तु दुर्भाग्य से किंग्स फोर्ड की पत्नी कैनेडी एवं पुत्री की मृत्यु हो गई।
- प्रफुल्ल चाकी पुलिस की डर से आत्म हत्या कर लिए जबकि अंग्रेजों ने खुदीराम बोस को 11 अगस्त, 1908 ई. को लगभग 18 वर्ष की आयु में मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दिया। यह सबसे कम उम्र में फाँसी चढ़ने वाले क्रांतिकारी थे।

➢ अलीपुर षड्यंत्र केस

- अंग्रेजी सरकार ने मानीकटोला उद्यान एवं कलकत्ता में अवैध हथियारों के तलाशी के दौरान कई व्यक्तियों को गिरफ्तार कर अलीपुर कारागार (कलकत्ता) में डाल दिया गया जिसे अलीपुर षड्यंत्र केस कहते हैं।
- इसमें अरविंद घोष एवं बारीन्द्र घोष गिरफ्तार किए गए थे, जिसमें से बारीन्द्र घोष को आजीवन काला पानी की सजा दी गई एवं चितरंजन दास के बचाव से अरविंद घोष बरी हो गए।
- इस घटना के बाद अरविन्द घोष सन्यासी बन गए और पाण्डेचेरी चले गये जहाँ उन्होंने ओरोविल आश्रम की स्थापना की।

बंगाल विभाजन (1905)

- वर्ष 1905 तक आते-आते बंगाल में राष्ट्रवाद की भावना चरम सीमा पर पहुँच गया था अतः राष्ट्रीय चेतना को समाप्त करने के लिए अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया।
- बंगाल विभाजन की घोषणा लार्ड कर्जन ने 19 जुलाई, 1905 ई. को किया जो 16 अक्टुबर, 1905 ई. को विभाजन लागू हो गया।
- बंगाल विभाजन के समय बंगाल का लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एण्ड्रुज फ्रेजर थे।
- इसी दिन 19 अक्टूबर, 1905 ई. को शोक दिवस के रूप में मनाया गया है।
- रविन्द्र नाथ टैगोर के कहने पर इसे रक्षाबंधन दिवस के रूप में मनाया गया।
- बंगाल विभाजन के अवसर पर ही रविन्द्र नाथ टैगोर ने अपना प्रसिद्ध गीत **अमार सोनार बांग्ला** लिखा जो वर्तमान में बांग्ला देश का राष्ट्रीय गान है।
- बंगाल विभाजन लॉर्ड कर्जन ने साम्प्रदायिकता के आधार पर विभाजन कर दिया, किन्तु अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन का कारण प्रशासनिक सुधार को बताया।
- पूर्वी बंगाल में मुसलमानों को अधिक रखा और पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं को अधिक रखा।
- अंग्रेज मुसलमानों के संरक्षक का काम करने लगे और उन्हें पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं से लड़वाने लगे। जबकि पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक मुसलमानों से अंग्रेज यह कहते थे कि हम तुम्हारे संरक्षक बनकर रहेंगे।
- अंग्रेज बंगाल से फुट डालो और शासन करो की नीति प्रारंभ कर दिया। अंग्रेजों की बंगाल विभाजन की नीति सफल नहीं हो पाई क्योंकि 1905 ई. में बंगाल के टाउन हाउस से स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन प्रारंभ हो गया था।
- भारतीयों ने अंग्रेजों के वस्त्र, विद्यालय, वस्तुएँ इत्यादि का बहिष्कार किया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया।
- भारतीय लोगों ने अंग्रेजों के कपड़े धुलने, उनके यहाँ नौकरी करने तथा उनके विद्यालय में पढ़ने से मना कर दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस आंदोलन के दौरान भारतीयों ने विदेशी कपड़ों को जला दिया। जिसे रविन्द्र नाथ टैगोर ने एक निष्ठुर अपराध कहा।
- बंगाल में ब्रिटेन के वस्तुओं के बहिष्कार का सुझाव सर्वप्रथम कृष्ण कुमार मित्र ने दिया था।
- स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख नेता व्योमेश चंद्र बनर्जी, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, बिपीन चन्द्र पाल एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर इत्यादि थे। इन्होंने बंगाल विभाजन को रद्द करने के लिए बंग भंग आंदोलन चलाया।
- मद्रास में स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व चिदम्बरम पिल्लै, पंजाब में अजित सिंह एवं लाला लाजपत राय, बम्बई और पुणे में लोकमान्य तिलक तथा दिल्ली में सैयद हैदर रजा ने किया था।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान ही **वन्दे मातरम्** भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का शीर्षक गीत बना था।
- स्वदेशी के प्रचार प्रसार हेतु बालगंगाधर तिलक द्वारा महाराष्ट्र में 'स्वदेशी वस्तु – प्रचारिणी सभा' का गठन किया गया।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान रवीन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन से प्रेरणा लेकर कलकत्ता में 14 अगस्त, 1906 ई. को बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना की।
- इस कॉलेज के प्रथम प्रधानाचार्य अरविन्द्र घोष को बनाये गये।
- ब्रिटिश पत्रकार एच.डब्लू. नेविन्सन स्वदेशी आंदोलन से जुड़े हुए थे।

Note :– सामान्यत: कृषक वर्ग के लोग एवं मुसलमान 1905 ई. के स्वदेशी आंदोलन से अप्रभावित रहे थे जबकि महिलाएँ एवं बुद्धिजीवि वर्ग के लोग इस आंदोलन से प्रभावित थे।

- 1911 ई. में लॉर्ड हार्डिंग के समय ब्रिटेन के राजा [illegible] भारत आए। उनके आगमन पर दिल्ली में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसे दिल्ली दरबार [illegible] हैं। इसी दौरान 1911 ई. में तीन घोषणाएँ की [illegible]
  - (i) बंगाल विभाजन को रद्द किया [illegible]
  - (ii) बंगाल से बिहार को अलग [illegible] दिया जाएगा।
  - (iii) भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली बनाई जाएगी।
- इन तीनों घोषणाओं को 1 जनवरी, 1912 ई. को लागू किया गया।

Note :– 1912 ई. में [illegible] से बिहार अलग हुआ। 1936 ई. में बिहार से उड़ीसा अलग हुआ।

- 15 नवम्बर, 2000 ई. को बिहार से झारखण्ड अलग हुआ।

Remark :– लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया तो गोपाल कृष्ण गोखले ने लॉर्ड कर्जन की तुलना औरंगजेब से कर दी।

- 1918 ई. आते-आते क्रांति आंदोलन का पहला चरण समाप्त हो गया।

क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण

- द्वितीय चरण की शुरूआत महात्मा गाँधी के अचानक असहयोग आंदोलन समाप्त करने के कारण हुआ।

➢ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)

- इसकी स्थापना शचीन्द्र नाथ सान्याल ने Oct. 1924 ई. में कानपुर में की थी।
- इसका उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से देश में समाजवादी संघीय गणतंत्र की स्थापना करना था।
- इस संगठन को धन की आवश्यकता थी जिसे एकत्रित करने के लिए इस संस्था के सदस्य ने काकोरी षडयंत्र किया।

➢ काकोरी षडयंत्र (9 August, 1925 ई.)

- सहारनपुर से लखनऊ [illegible] को काकोरी नामक स्थान पर 8 डॉउन सहारनपुर – लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को रोक कर उसमें से ब्रिटिश खजाने को लूट लिया गया।
- इस आरोप में अस्फाकउल्ला खान को फैजाबाद जेल में, रौशन सिंह को इलाहाबाद जेल में, राजेन्द्र लाहिड़ी को गोंडा जेल में तथा राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में फाँसी दे दिया गया।
- फाँसी पर चढ़ने वाले पहले मुस्लिम क्रांतिकारी अस्फाकउल्ला खान थे।
- [illegible] के सरकारी वकील जगत नारायण मुल्ला थे।
- काकोरी कांड के मुख्य अभियुक्त चंद्रशेखर आजाद वहां से फरार हो गए बाद में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों से मुठभेड़ हो गई।
- चंद्रशेखर आजाद ने अपनी आखिरी गोली से खुद को गोली मार ली। इस प्रकार 27 फरवरी, 1931 ई. को इनकी मृत्यु हो गई। इनका कहना था "English has no bullet to shoot me."
- राम प्रसाद बिस्मिल का नारा था "सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"

➢ नौजवान सभा

- इसकी स्थापना मार्च 1926 ई. में भगत सिंह, छबील दास एवं यशपाल द्वारा पंजाब में किया गया था।
- 1928 ई. में इस सभा को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलय कर दिया गया। (पुन: बाद में इसे HSRA में विलय कर दिया गया।)

➢ हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)

- इसकी स्थापना 10 सितम्बर, 1928 ई. को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में चन्द्रशेखर आजाद द्वारा किया गया।
- यह संस्था काकोरी कांड के बाद समाप्त हुए हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थान पर स्थापना किया गया था।
- यह संस्था एक लोकतांत्रिक संगठन था जिसमें फैसले बहुमत के आधार पर होते थे।
- इसी संगठन के सदस्यों द्वारा साण्डर्स की हत्या, असेम्बली बम कांड एवं लाहौर षड्यंत्र केस को अंजाम दिया गया।

Note :– साईमन कमीशन का विरोध एवं सॉण्डर्स की हत्या नौजवान सभा के सदस्यों ने भी किया था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- **साण्डर्स की हत्या**

☛ लाला लाजपत राय की साइमन कमीशन के विरोध के दौरान लाठी चार्ज में घायल होने के उपरांत मृत्यु होने पर इसका बदला 17 दिसम्बर, 1928 ई. को लाहौर के सहायक पुलिस अधीक्षक सॉण्डर्स की गोली मारकर हत्या कर के ली।

☛ इस कांड में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव और जय गोपाल शामिल थे।

Note :– लाला लाजपत राय को शेर-ए-पंजाब के उपाधि से विभूषित किया गया था।

- **असेम्बली बम कांड**

☛ 8 अप्रैल, 1929 ई. को भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त द्वारा केन्द्रीय विधान सभा में ट्रेड डिसप्यूट बिल और पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध में बम फेका गया।

☛ असेम्बली में बम फेकते समय भगत सिंह की उम्र 21 वर्ष से थोड़ा ज्यादा थी।

☛ असेम्बली में बम फेकते समय पहली बार भगत सिंह ने **इन्कलाब जिन्दाबाद** का नारा दिया था।

Note :– यह नारा मौलाना हसरत मोहानी द्वारा लिखा गया था।

☛ इस बम कांड का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं था बल्कि बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए था।

☛ भगत सिंह ने कहा अंग्रेज सोये हुए हैं इन्हें जगाने का यही रास्ता है।

☛ इस कांड के लिए भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त को उम्र कैद की सजा दी गई।

- **लाहौर षड्यंत्र केस**

☛ असेम्बली बम कांड एवं सॉण्डर्स हत्या कांड में शामिल अभियुक्तो के खिलाफ लाहौर में मुकदमा चलाया गया जिसे लाहौर षड्यंत्र केस या भगत सिंह ट्रायल के नाम से जाना जाता है।

☛ इस केस के निर्णय के आधार पर भगत सिंह, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त पर मुकदमा चलाया गया और 14 फरवरी 1931 ई. को इन्हें मौत की सजा सुना दी गई। और 23 मार्च, 1931 ई. को इन्हें फाँसी दे दिया गया।

Note :– जतीनदास जेल में भूख हड़ताल पर बैठ गए और जेल में 64 दिन की भूख हड़ताल के बाद उनकी मृत्यु हो गई।

➢ **इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी (IRA)**

☛ इसकी स्थापना 1930 ई. में सूर्य सेन (मास्टर दा) द्वारा बंगाल के चटगांव में किया गया।

☛ इस संस्था के प्रमुख कार्य चटगांव स्थित शस्त्रागारों का लूटना था।

➢ **चटगांव शस्त्रागार** ... - बंगाल क्षेत्र में सूर्यसेन ने क्रांतिकारी आंदोलन को 1930 ई. में बढ़ावा दिया। इन्होंने अप्रैल, 1930 ई. को चटगांव में अंग्रेजों के शस्त्रागार को लुट लिया। जिस कारण अंग्रेजों ने इन्हें 1934 ई. में फाँसी दे दिया। इस प्रकार भारत में क्रांतिकारी आंदोलन समाप्त हो गया।

विदेशों में हुए क्रांतिकारी आंदोलन

➢ **इण्डियन होमरूल सोसाइटी**

☛ इसकी स्थापना 1905 ई. में लंदन में हिडमेन के सुझाव पर श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा किया गया।

☛ इसका उद्देश्य भारत में स्वशासन की स्थापना करना था।

☛ भारत से बाहर विदेश के धरती पर स्थापित यह पहली क्रांतिकारी संस्था थी।

- **विलियम कर्जन वाइली की हत्या**

☛ इण्डिया हाउस के सदस्य मदन लाल ढींगरा द्वारा जुलाई, 1909 ई. को लंदन में भारत सचिव विलिय कर्जन वाइली की गोली मारकर हत्या कर दी।

☛ इस हत्या का कारण था कि कर्जन वाइली ने ... रियासत के रेजिडेंट की हैसियत से श्यामीजी कृष्ण वर्मा को प्रताडित करने से।

➢ **स्टुटगार्ट सम्मेलन (1907 ई.)**

☛ 1907 ई. में जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस के सम्मेलन में विभिन्न राष्ट्रों को बुलाया गया जिसमें भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए 22 अगस्त, 1907 ई. को भारतीय स्वतंत्रता की जननी मैडम भिखाजी कामा ने भारत का प्रथम राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया।

☛ इस झंडा का डिजाइन मैडम भिखाजी कामा के साथ सरदार सिंह राना ने किया था।

☛ इस झंडे में तीन रंग– लाल, हरा एवं पीला का प्रयोग किया गया था तथा इसमें आठ कमल के फूल एवं आठ राज्यों के प्रतीक थे। इस झंडे मध्य में देवनागिरी अक्षरों में **वन्देमातरम्** लिखा था।

➢ **गदर पार्टी**

☛ इसकी स्थापना लाला हरदयाल ने 1 नवम्बर, 1913 ई. में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में किया गया।

☛ इसके प्रथम अध्यक्ष सोहन सिंह भाखना थे तथा इसी के सुझाव पर गदरपार्टी का स्थापना किया गया।

☛ यह पार्टी **हिन्दुस्तान गदर** नामक पत्र निकालती थी जिसका प्रथम अंक उर्दू में छपता था और बाद में गुरूमुखी लिपि में भी छपने लगा।

☛ यह पत्रिका कालान्तर में उर्दू एवं गुरूमुखी के अलावा हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, पंजाबी एवं गुजराती में भी छपने लगी।

☛ इस पत्रिका का संपादन रामचन्द्र पेशावरी करते थे।

☛ यह एक क्रांतिकारी संगठन था।

☛ अमेरिका में गदर पार्टी पर प्रतिबंध के बाद लाला हरदयाल ने मैडम भिखाजी कामा से मिलकर 1916 ई. में **भारतीय स्वतंत्रता समिति** की स्थापना बर्लिन में की।

➢ **कामागाटा मारू (1914 ई.)**

☛ गुरुदत्त सिंह ने कामागाटा मारू नामक जापानी जहाज को भाड़े पर लिया और कुछ भारतीयों को कलकत्ता से लेकर कनाडा की ओर चल दिया किन्तु कनाडा सरकार अँग्रेजों के दबाव में आकर यह घोषणा किया कि वैंकुवर बंदरगाह पर उसी जहाज को रूकने दिया जाएगा जो रास्ते में बिना कहीं रूके आया है किन्तु कामागाटामारू जहाज सिंगापुर में रूका था।

☛ कनाडा सरकार ने उस जहाज को वैंकुवर बंदरगाह पर रूकने नहीं दिया। अत: जहाज वापस कलकत्ता बंदरगाह लौट आया।

☛ जब ये क्रांतिकारी वापस कलकत्ता के बजबज बंदरगाह पर पहुंचे तो अंग्रेजों और इनके बीच गोलीबारी शुरु हो गई इस घटना को ही कामागाटा मारू की घटना कहते हैं।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

25. सामाजिक सुधार संगठन (Social Reform Organization)

1. ब्रह्म समाज

- इसके संस्थापक राजाराम मोहन राय थे। जिन्होंने इसकी स्थापना 1828 ई. में की थी।
- इन्हें राजा की उपाधि अकबर द्वितीय ने दिया था।
- ये हिन्दू धर्म के कुप्रथाओं के विरूद्ध आवाज उठाए जिस कारण उन्हें भारतीय पुनर्जागरण (सुधार) तथा आधुनिक भारत का अग्रदूत कहा जाता है।
- सुभाष चंद्र बोस ने इन्हें युग दूत कहा है। इन्होंने डेविड हेयर की सहायता से 1817 ई. में हिन्दू कॉलेज की स्थापना तथा 1825 ई. में वेदांत कॉलेज की स्थापना की। 1829 ई. में विलियम बेंटिक के सहयोग से इन्होंने सती प्रथा का अंत कर दिया।
- इन्होंने सती प्रथा का घोर विरोध अपनी पुस्तक संवाद कौमुदी के माध्यम से किया।
- इन्हें फारसी, बंगाली, अंग्रेजी तथा उर्दू का अच्छा ज्ञान था। इन्होंने सर्वाधिक पत्रिका फारसी भाषा में लिखा।
- 1821 ई. में संवाद कौमुदी बंगाली भाषा में तथा 1822 ई. में मिरातुल अखबार फारसी में प्रकाशन किया।
- 1833 ई. में लंदन में मेनिनजाइटिस के कारण इनकी मृत्यु हो गई।
- इनके दो प्रमुख शिष्य देवेन्द्र नाथ टैगोर तथा केशव चन्द्र सेन थे।
- इसके पश्चात् 1843 ई. में देवेन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर तथा केशवचन्द्र के बीच मतभेद हो गया। जिस कारण इन दोनों ने ब्रह्म समाज को छोड़ दिया।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 1865 ई. में भारतीय आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की जबकि 1865 ई. में केशव चन्द्र सेन ने एक नया संगठन नवीन ब्रह्म समाज या भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना की।

2. आर्य समाज

- इसके संस्थापक दयानंद सरस्वती थे।
- दयानंद सरस्वती का जन्म गुजरात में 1834 ई. में हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम मूलशंकर था। इनके गुरु विरजानंद थे।
- इन्होंने आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में मुम्बई में किया और 1877 ई. में इसकी शाखा लाहौर में खोली।
- आर्यसमाज का नारा था- ''भारत भारतीयों के लिए है।'' जबकि दयानंद सरस्वती का नारा था- ''वेदों की ओर लौटो।''
- दयानंद ने सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का विरोध किया तथा महिला शिक्षा तथा विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।
- इनकी मृत्यु के बाद 1886 ई. में इनके शिष्य हंसराज ने DAV (दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज) की स्थापना किया जो भारत के लगभग सभी जिलों में फैल चुका है।
- भारतीय चिंतकों में स्वराज शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम स्वामी दयानंद ने ही किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ में अपने विचारों को प्रतिपादन किया।
- वेलेंटाइल शिरॉल ने अपनी पुस्तक इंडियन अनरेस्ट में आर्य समाज को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा।

Note:- वेलेंटाइन ने बाल गंगाधर तिलक को 'भारतीय असंतोष का जनक' के रूप में बताया।

3. रामकृष्ण मिशन

- इन्होंने अपने गुरु परमहंस की स्मृति में 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- इसके संस्थापक स्वामी विवेकानंद थे। इन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण के नाम पर इसका नामकरण किया।
- विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 ई. को कलकत्ता में हुआ।
- इनका नाम नरेन्द्र दत्त था। रामकृष्ण परमहंस ने इन्हें हिन्दू धर्म की शिक्षा दी थी।
- 1887 ई. में इन्होंने कलकत्ता में बेलुरमठ की स्थापना की।
- 1893 ई. में इन्होंने ऐतिहासिक शिकागो धर्म सम्मेलन में भाग लिया।
- इन्होंने अमेरिका के न्यूयार्क में वेदान्त सोसायटी की स्थापना 1896 ई. में कर दिया।
- 1897 ई. में इन्होंने बेलुरमठ को रामकृष्ण मिशन का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय बना दिया।
- 1902 ई. में इनकी मृत्यु हो गई। इन्हें हिन्दू नेपोलियन या तुफानी हिन्दू कहते हैं। सुभाषचन्द्र बोस ने इन्हें भारत का अध्यात्मिक गुरु कहा।
- इन्हें स्वामी विवेकानंद नाम खेतड़ी के महाराजा ने दिया था।

4. थियोसोफिकल सोसायटी

- इसकी स्थापना मैडम ब्लावाटस्की तथा कर्नल आलकाट ने 1875 ई. में अमेरिका के न्यूयॉर्क में किया। यह संस्था विभिन्न देशों में संस्कृति तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत थी।
- थियोसोफिस्टों का हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म तथा कर्म के सिद्धांतों पर विश्वास था और वे सांख्य तथा वेदान्त (उपनिषदों) दर्शन को अपना प्रेरणास्त्रोत मानते थे।
- 1886 ई. में इसकी एक शाखा मद्रास के अडियार में खोली गई जो आगे चलकर इस संस्था का मुख्यालय बन गया। इसी शाखा की एक सदस्य बनकर आयरलैण्ड की महिला एनी बेसेंट भारत आयी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इन्होंने आयरलैण्ड की भाँति भारत में भी होमरूल आंदोलन प्रारंभ करना चाहती थी किन्तु भारत में यह सफल नहीं हो पाया।
- बेसेन्ट ने 1898 ई. में बनारस में 'सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज' की नींव रखी जो आगे चलकर 1916 ई. में मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से यह कॉलेज बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ।

5. यंग बंग आंदोलन

- इसे हेनरी विलियम डेरीजीयो ने 1828 ई. में प्रारंभ किया। यह बंगाल के युवाओं का आंदोलन था। ये भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता की मांग करते थे।
- डेरीजीयो ने 'ईस्ट इंडिया' नामक दैनिक पत्र का भी संपादन किया।
- हेनरी विवियन डेरीजीयो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

6. वेद समाज तथा प्रार्थना समाज

- केशव चन्द्र सेन के प्रयासों से वेद समाज की स्थापना मद्रास के **के. श्री धरालु नायडू** ने 1864 ई. में की थी।
- केशवचन्द्र सेन के प्रभाव से 1867 ई. में बम्बई में डॉ. आत्माराम पाण्डुरंग ने प्रार्थना समाज को स्थापित किया।
- डॉ. आत्माराम पाण्डुरंग तथा महादेव गोविंद रानाडे ने प्रार्थना समाज को स्थापित किया।
- प्रार्थना समाज ने दलितों, अछूतों, पिछड़ों तथा पीड़ितों की दशा एवं दिशा में सुधार हेतु 'दलित जाति मण्डल' (Depressedclassed mission) 'समाज सेवा संघ' (Social Service League), का गठन किया।
- शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु रानाडे ने पूना में 1884 ई. में दक्कन एजुकेशनल सोसाइटी तथा 1891 ई. में विधवा-पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करने के लिये 'विधवा पुनर्विवाह संघ' का स्थापना की।
- रानाडे को पश्चिम भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्रदुत माना जाता है।
- स्त्री शिक्षा के लिए श्री केशव कर्वे ने 1916 ई. में बम्बई में प्रथम 'भारतीय महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की।

7. परमहंस मण्डली

- 1849 ई. में महाराष्ट्र में आत्माराम पाण्डुरंग तथा उनके तीन सहयोगियों दादोबा पाण्डुरंग, बालकृष्ण जयकर एवं जाम्बेकर शास्त्री के साथ मिलकर परमहंस मण्डली की स्थापना की थी।
- इस मण्डली का मुख्य उद्देश्य धर्म तथा समाज के प्रति सुधार लाकर सामाजिक असमानता तथा भेदभाव को मिटाना था।

8. सत्य शोधक समाज

- इसकी स्थापना ज्योतिराव गोविन्दराव फुले उर्फ ज्योतिबा फुले ने 1873 ई. में मम्बई (महराष्ट्र) में की थी।
- इसने निम्न जातियों को ब्राह्मणवादी व्यवस्था से मुक्त कराने हेतु स्थापना किया गया था।
- ज्योतिराव फुले ने एक पुस्तक गुलामगिरी का प्रकाशन किया जिसमें ब्राह्मणों को प्रभुत्व चुनौती दी और पुरोहीत वर्ग को समाज का शोषक सिद्ध किया।

9. वायकोम सत्याग्रह

- यह आन्दोलन केरल में 1924 ई. में चलाया गया था।
- इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य मंदिर में निम्न जाति के प्रवेश को लेकर चलाया गया था।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व श्री नारायण गुरु ने किये थे।
- नारायण गुरु ने कहा था कि मानव के लिए एक धर्म, एक जाति और एक ईश्वर हैं।
- अरुविप्पुरम आन्दोलन 1888 ई. में नारायण गुरु के ही द्वारा चलाया गया था।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक कानून

- गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बैंटिक द्वारा 1829 ई. में अधिनियम 17 द्वारा सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

> **शिशु हत्या**

- राजपुताना संयुक्त प्रांत और पंजाब में कन्या हत्या का प्रचलन था जिस पर रोक लगाने हेतु 1870 ई. में प्रभावकारी कानून बनाए गए।

> **विधवा विवाह**

- विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने हेतु जुलाई, 1865 ई. में गवर्नर जनरल कौंसिल के सदस्द जे.पी. ग्रान्ट ने एक अधिनियम प्रस्तुत किया जो 13 जुलाई, 1856 ई. को पास हुआ इसे विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 ई. के नाम से जाना जाता है।
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयास से पहला विधवा विवाह श्री चन्द्र विद्या रत्न और काली मती देवी का हुआ था।

> **नरबली प्रथा**

- लॉर्ड हार्डिंग ने गोंड जाति में प्रचलित नर बलि की प्रथा को कानून बना कर समाप्त किया।

> **बाल विवाह**

- बाल विवाह को समाप्त करने के लिए केशव चन्द्र सेन (1870 ई.) ने Indian Reform Association की स्थापना की।
- केशव चन्द्रसेन के प्रयास से सरकार ने 1872 ई. में बाल विवाह अधिनियम बनाया जिसमें लड़कियों के लिए न्यूनतम उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई।
- बहरामजी मालावारी के प्रयत्न से 1891 ई. में सम्मति आयु अधिनियम (Age of Consent Act.) के द्वारा 10वें नियम के तहत बालिका के विवाह की उम्र घटाकर 12 वर्ष कर दिया गया।
- हरविलास शारदा के प्रयत्न से 1930 ई. में शारदा अधिनियम लाया गया जिसमें लड़कियों की विवाह की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 1949 ई. में 15 वर्ष तथा 1978 ई. में लड़कियों के लिए विवाह की उम्र 18 वर्ष निर्धारित किया गया।

मुस्लिम सुधार आंदोलन

1. वहाबी आंदोलन

- इसका प्रारंभ बरेली से हुआ किन्तु पटना इसका केन्द्र बन गया। यह पश्चिमी संस्कृति का विरोध करते थे। इसके संस्थापक सैयद अहमदबरेली थे। यह सबसे संगठित आंदोलन था।
- बंगाल में वहाबी आंदोलन का नेतृत्व सैयद अहमद बरेलवी के शिष्य मीर निसार अली (टीटू मीर) ने किया।

2. अलीगढ़ आंदोलन

- इसका प्रारंभ अलीगढ़ से हुआ। इसका उद्देश्य मुसलमानों को उच्च शिक्षा देना था। इसके संस्थापक सर सैयद अहमद खान ने 1875 ई. में अलीगढ़ एंग्लो ओरिएण्टल कॉलेज की स्थापना किया। जो 1920 ई. में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का रूप ले लिया। सर सैयद अहमद खां ने Petriotic Association की स्थापना किये थे।
- सैयद अहमद ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए 1870 ई. में 'तहजीब-उल-अखलाख' (सभ्यता और नैतिकता) नामक फारसी पत्रिका लिखी।
- सर सैयद अहमद खाँ के अलीगढ़ आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था– मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा देकर ब्रिटिश राज का भक्त बनाना।
- अंग्रेजों का राजभक्त होने के कारण 'राजभक्त मुसलमान' पत्रिका का भी प्रकाशन किया तथा 'असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द' नामक पुस्तक 1857 के विद्रोह पर लिखी।

3. अहमदिया आंदोलन

- इसका प्रारंभ गुरुदासपुर जिले के कादिया नाम स्थान से हुआ था।
- इसके संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद थे।
- ये हिन्दू-मुस्लिम में एकता लाना चाहते थे।
- अहमदिया आन्दोलन उदारवादी सिद्धांतों पर आधारित था।
- इन्होंने स्वयं को कृष्ण एवं ईसा-मसीह का अवतार घोषित कर दिया जिस कारण हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही इस संस्था से हट गए।
- मिर्जा गुलाम अहमद ने अपने सिद्धांतों की व्याख्या अपनी पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया में की।

4. देवबंद आंदोलन

- यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से प्रारंभ हुआ।
- इसके संस्थापक उलेमा मुहम्मद कासिम ननौत्वी तथा राशिद अहमद गंगोही थे।
- यह आंदोलन एक पुनर्जागरण आन्दोलन था जिसका उद्देश्य कुरान तथा हदीस की शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना और विदेशी शासकों के विरुद्ध 'जिहाद' की भावना को जीवित रखना था।
- यह पश्चिमी संस्कृति का विरोध करता था तथा इस्लामिक संस्कृति शिक्षा को बढ़ावा देता था।

Note :– डब्ल्यु.डब्ल्यु. हंटर ने कहा था कि ''मुसलमान यदि खुश और संतुष्ट हैं तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महत्तम बचाव होगा।''

मुस्लिम सामाजिक धार्मिक आंदोलन

आंदोलन	वर्ष	स्थान	संस्थापक	मुख्य उद्देश्य
फरायजी आंदोलन	1804	फरीदपुर (पू.बंगाल)	हाजी शरीयत उल्ला, दादू मियां	इस्लाम के मूल सिद्धांतों पर बल
तैय्यूनी आंदोलन	1839	ढाका	करामत अली जौनपुरी	–
मोहम्डन लिटरेटी सोसायटी	1863	कलकत्ता	अब्दुल लतीफ	शोषित एवं पिछड़े मुस्लिम समाज को शिक्षित कर विकास की मुख्य धारा मं लाना।
नदवतुल आंदोलन	1894-96	लखनऊ	मौलाना शिवली नूमानी	मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक एवं अंग्रेजी शिक्षा का प्रवेश।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

पारसी सुधार आन्दोलन

- **रहनुमाई मजद्यासन सभा**
- इस सभा की स्थापना 1851 ई. में बम्बई में दादा भाई नौरोजी तथा उनके सहयोगियों– नौरोजी फरदोनजी, जे.बी.वाचा तथा एच.एस. बंगाली द्वारा किया गया था।
- इस सभा का प्रमुख उद्देश्य पारसियों की सामाजिक स्थिति का पुनरुद्धार तथा पारसी धर्म की प्राचीन पवित्रता को पुर्नस्थापित करना था।
- इस सभा ने गुजराती भाषा में साप्ताहिक पत्र 'रास्त गोफ्तार' (सत्यवादी) का प्रकाशन किया था।

सिक्ख सुधार आन्दोलन

- सिक्ख धर्म संसार का सबसे नवीनतम धर्म है। इसके संस्थापक गुरु नानक थे।

1. निरंकारी आन्दोलन

- इस आन्दोलन के संस्थापक दयाल साहिब थे।
- इसका मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित हिन्दू रीति-रिवाजों एवं कुरीतियों को दूर करना था।

2. कूका आन्दोलन

- यह 1840 ई. में पंजाब के क्षेत्र से शुरू हुआ इसका नेतृत्व भगत जवाहर मल ने किया।
- इस आन्दोलन के स्थापना 1840 ई. में की गई।
- यह आन्दोलन शीघ्र ही खत्म हो गया था क्योंकि यह धार्मिक आन्दोलन से ज्यादा राजनीतिक आंदोलन बन गया था।

3. नामधारी आन्दोलन

- इस आन्दोलन के प्रणेता बाबाराम सिंह (1816-85) एवं उनके शिष्य बालक सिंह थे।
- यह आन्दोलन कूका आन्दोलन का ही एक शाखा था
- इस आन्दोलन के कार्यकर्त्ता को नामधारी कहते हैं।
- ये मूर्ति पूजा, वृक्ष पूजा एवं दरगाह की पूजा के विरूद्ध थे।
- ये गो मांस भक्षण के विरोधी और महिलाओं की समानता एवं पुनर्विवाह के समर्थक थे।
- इस आन्दोलन के अनुयायी श्वेत पगड़ी एवं श्वेत वस्त्र धारण करते थे।

जनजातीय आंदोलन

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले जनजाति (आदिवासी) जो अंग्रेजी नीति से त्रस्त हो चुके थे वे सभी मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध कई विद्रोह किये थे।
- जनजाति को **आदिवासी** नाम से सर्वप्रथम ठक्कर बापा ने सम्बोधित किया था।
- आदिवासी लोग बाहरी लोगों को **दीकू** नाम से पुकारते थे।

1. सन्यासी विद्रोह

- इस विद्रोह की शुरूआत 1760 ई. से माना जाता है जो लगभग 1800 ई. तक चला।
- अंग्रेजों ने आकाल पड़ने के बाद भी कर में कोई कमी नहीं किया जिस कारण सन्यासियों ने विद्रोह कर दिया।
- यह विद्रोह बंगाल से प्रारंभ हुआ था।
- इस विद्रोह को वारेंग हेस्टिंग्स के द्वारा नियंत्रित किया गया।
- इस विद्रोह में शामिल लोग 'ओउम् वन्देमारत्' का नारा लगाते थे।
- इसकी चर्चा बंकिम चंद्र चटर्जी की पुस्तक आनंदमठ में है।

2. पागलपंथी विद्रोह

- पागलपंथी गारो जनजाति का एक अर्थ– धार्मिक सम्प्रदाय था।
- यह धार्मिक पंथ सत्य, समानता, बन्धुत्व आदि पर बल देता था।
- यह बंगाल के क्षेत्र में हुआ इसकी शुरूआत 1825 में करमशाह ने किया। बाद में इसका नेतृत्व उनके पुत्र टीपू मीर ने किया।

3. फरैजी विद्रोह

- इसकी शुरूआत बंगाल में हाजी शरीय तुल्ला तथा दादू मीर के नेतृत्व में किया गया था।

4. चुआर तथा हो विद्रोह

- इस विद्रोह को भूमि विद्रोह के नाम से भी जानते है।
- इस विद्रोह का प्रमुख केंद्र बंगाल के मेदनीपुर जिले थे जो छोटानागपुर तथा सिंह भूमि जिले की हो जनजाति के क्षेत्र तक फैले हुए थे।
- इस विद्रोह के नेतृत्व राजा जगन्नाथ तथा दुर्जन सिंह कर रहे थे।

5. भूमिज विद्रोह

- यह विद्रोह पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले के बाराभूमि की जमींदारी में विरासत के मुद्दे के रूप में शुरू हुआ था।
- इस विद्रोह की शुरूआत 1832 ई. में हुई तथा इसके नेतृत्वकर्ता गंगानारायण था।

6. अहोम विद्रोह

- यह असम में प्रारंभ हुआ था।
- इसका नेतृत्व 1828 ई. में गोमधर कुंवर ने किया।

7. खासी विद्रोह

- यह मेघालय में खासी पहाड़ी से 1833 में प्रारंभ हुआ इसका नेतृत्व तीरथ सिंह ने किया था।
- खासी लोग मेघालय मे फैली जयंतिया तथा गारो पहाड़ियों के बीच निवास करते हैं।

8. रामोसी विद्रोह

- रामोसी जनजाति मुख्यत: पश्चिमी घाट (महाराष्ट्) में रहने वाली एक आदिम जाति थी।
- यह विद्रोह 1822 ई. में चित्तर सिंह के द्वारा प्रारंभ किया गया।
- चित्तर सिंह के बाद इस विद्रोह के नेतृत्व नरसिंह दत्तात्रेय पंतत्तकर ने किया था।
- यह किसानों का विद्रोह था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

9. संथाली विद्रोह
- यह झारखण्ड के राजमहल के पहाड़ी से शुरू हुआ था। इस क्षेत्र को दमन-ए-कोह के नाम से भी जाना जाता है।
- यह विद्रोह जमींदारों के विरुद्ध था।
- इस विद्रोह का प्रमुख 1793 ई. में स्थाई बन्दोबस्त व्यवस्था द्वारा संथालों की जमीन का छिना जाना था।
- इसका नेतृत्व सिद्धु कान्हु ने किया।
- 1856 आते-आते यह विद्रोह समाप्त हो गया।

10. मुंडा विद्रोह
- यह झारखण्ड का जनजाति विद्रोह था जो मुण्डा जनजातियों ने किया था।
- इस विद्रोह का सरदारी लड़ाई के लिए भी जाना जाता है।
- इसका नेतृत्व बिरसा मुण्डा ने किया।
- बिरसा मुण्डा का जन्म 15 Nov. 1874 ई. को हुआ।
- 1895 ई. में बिरसा ने स्वयं को भगवान का दूत भी घोषित किया था।
- बिरसा मुंडा के अनुयायी उन्हें 'धरती आबा' मानते थे।

11. ताना भगत आंदोलन
- यह झारखण्ड से प्रारंभ हुआ इसका नेतृत्व जतारा भगत ने किया।

12. कोल विद्रोह
- इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र छोटा नागपुर की पहाड़ी, हजारीबाग, सिंहभूम, पलामू तथा रांची क्षेत्र था।
- इसका नेतृत्व 1831 में बुद्धो भगत द्वारा किया गया था।
- कोल जाति द्वारा चावल से निर्मित शराब पर उत्पादन शुल्क लगा देने से यह विद्रोह हुई थी।

13. तमाड़ विद्रोह
- यह विद्रोह छोटा नागपुर के क्षेत्र में 1779-1794 ई. में हुआ था।
- इसका नेतृत्व ठाकुर भोलानाथ सिंह के द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह का संबंध उरांव जनजाति से था।

14. खेरवार आन्दोलन
- इस विद्रोह का क्षेत्र झारखण्ड के संथाल परगना था।
- इस विद्रोह का नेतृत्व भागीरथ मांझी ने किए थे।
- यह आन्दोलन 1870 ई. में किया गया था।
- इस आन्दोलन को ... आन्दोलन भी कहा जाता है।
- इस विद्रोह का मुख्य उद्देश्य जनजातिय परम्पराओं और प्राचीन मूल्यों को स्थापित करना था।

15. पाइक विद्रोह
- यह विद्रोह 1817 ई. में उड़ीसा के क्षेत्र में हुआ था।
- इस विद्रोह का नेतृत्व जगबंधु के द्वारा किया गया था।
- पाइक लगान मुक्त भूमि का उपयोग करने वाले उड़ीसा के खुर्दा क्षेत्र के सैनिक थे।

16. गड़करी विद्रोह
- गड़करी विद्रोह 1844 ई. में महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था।
- इस विद्रोह के प्रमुख नेता बाबाजी अहीरेकर थे।

17. भील विद्रोह
- इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र महाराष्ट्र के पश्चिमी ... का खान देश जिला था।
- इस विद्रोह के नेतृत्व 1820 ई. में सरदार दशरथ ने किया था।

18. रम्पा विद्रोह
- यह विद्रोह आंध्र प्रदेश के गोदावरी जिले के उत्तर में स्थित तटवर्ती पहाड़ी क्षेत्र था।
- इस विद्रोह का नेतृत्व अल्लूरी सीता राम राजू ने किया था जो एक गैर आदिवासी था।
- सीताराम राजू गांधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित था लेकिन आदिवासी कल्याण हेतु हिंसा को आवश्यक मानता था।

19. चेंचू आन्दोलन
- इस आन्दोलन का आरंभ 1920 ई. में चरवाहा शुल्क के विरोध में आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिलें में जंगल सत्याग्रह के रूप में हुआ।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व वेंकट्टप्पया ने किया।

20. पोलिगारों का विद्रोह
- इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र दक्षिण भारत के मालावार क्षेत्र था
- इस विद्रोह का नेतृत्व वीर पी. कट्टवामन (कट्टवोम नाइकन) ने किया था।
- अंग्रेजों के विरुद्ध हुए विद्रोहों में दक्षिण भारत के पोलिगारों का विद्रोह सबसे बड़ा था।

किसान विद्रोह

- अंग्रेजों ने भारतीय किसानों का शोषण बहुत बड़े पैमाने पर करने लगे थे जिस कारण भारतीय किसान अत्यधिक गरीब हो गए और उसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विद्रोह प्रारंभ कर दिया।

1. नील विद्रोह (1859 – 1860 ई.)
- यह बंगाल के नदियां जिला से प्रारंभ हुआ किसानों का आंदोलन था।
- इसका नेतृत्व दिगम्बर विश्वास तथा विष्णु विश्वास ने किया था।
- इसकी चर्चा दिनबंधु मित्र की रचना नील दर्पण तथा हरिश्चन्द्र मुखर्जी की पुस्तक हिन्दू Patriotic में है।

2. पाबना विद्रोह (1873 ई.)
- यह विद्रोह मध्य बंगाल के पाबना जिले के युसुफशाही परगना से शुरू हुआ।
- इस विद्रोह के प्रमुख कारण थे जमींदारों और लगान की दरों में अत्यधिक सीमा से अधिक बढ़ा देना।
- इस विद्रोह के प्रमुख नेता ईशानचन्द्र राय, शंभुपाल तथा केशव चन्द्र राय एवं खोदी मल्लाह आदि थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- लेफ्टिनेंट गवर्नर कैम्बेल ने इस विद्रोह का समर्थन किया था क्योंकि यह विद्रोह अंग्रेजी शासन के विरोध में न होकर जमींदारों के विरोध में था।

3. मोपला विद्रोह (1836 ई.)

- यह विद्रोह केरल राज्य के मालावार क्षेत्र में हुआ था।
- आठवीं एवं नौवीं शताब्दी में अरब मुल्क के कुछ लोग इस क्षेत्र में आकर बस गए जिसे मोपला कहा गया।
- इस विद्रोह के नेतृत्व अली मुसलियार ने किया था।
- मोपला विद्रोह का समर्थन खिलाफत आन्दोलन के नेता मौलाना अबुल कलाम आजाद और शौकत अली तथा गाँधी जी ने किए थे।

4. चम्पारण सत्याग्रह (1917 ई.)

- यह बिहार के चम्पारण से प्रारंभ हुआ इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया।
- यह निलहे जमींदारों के विरुद्ध एक आंदोलन था।
- ये जमींदार तीन कठिया पद्धति के तहत 20 कट्ठा खेत में जबरदस्ती 3 कट्ठे पर नील की खेती करवाते थे।
- एक बार नील बोने पर तीन साल के लिए खेत बंजर हो जाती थी। महात्मा गांधी ने इस पद्धति को समाप्त करवा दिया।

5. खेड़ा सत्याग्रह (1918 ई.)

- इसे गुजरात के खेड़ा से महात्मा गांधी ने प्रारंभ किया।
- अंग्रेज खेड़ा में आकाल पड़ने के बाद भी टैक्स वसूल कर रहे थे इसे महात्मा गांधी ने माफ करवा दिया।

6. अवध किसान सभा (1920 ई.)

- इसे रामचन्द्र ने प्रारंभ किया यह किसानों का एक संगठन था।

7. एका आन्दोलन (1921 ई.)

- यह आन्दोलन अवध प्रांत के किसानों के हित में चलाया गया।
- इसका नेतृत्व मदारी पासी और सहदेव ने किया था।
- इस आन्दोलन में सभास्थल पर गंगा की सौगंध दी जाती थी कि किसान निर्धारित लगान से एक पैसे भी अधिक नहीं देंगे।

8. बारदोली सत्याग्रह (1928 ई.)

- यह गुजरात के बारदोली से आकाल के दौरान टैक्स वसूलने के विरुद्ध एक आंदोलन था जिसका नेतृत्व सरदार बल्लभभाई पटेल ने किया।
- इस आन्दोलन में कस्तूरबा गांधी, मनीबेन पटेल, शारदाबेन शाह और शारदा मेहता जैसी महिलाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया था।
- इस आंदोलन की सफलता के बाद बारदोली की महिलाओं ने गांधी जी के माध्यम से बल्लभभाई को सरदार की उपाधि दिया।

9. बिहार किसान सभा (1929 ई.)

- यह बिहार के किसानों का एक संगठन था जिसका नेतृत्व स्वामी सहजानंद ने किये थे।

10. तेभागा आन्दोलन (1946 ई.)

- यह आन्दोलन बंगाल और त्रिपुरा के क्षेत्र में हुआ था।
- इसके नेतृत्वकर्ता मुख्यत: कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह थे।
- यह आन्दोलन मूलत: बटाईदार किसानों का संघर्ष था।

प्रमुख किसान सभा का गठन

किसान सभा	संस्थापक/नेता	वर्ष	क्षेत्र
फड़के विद्रोह	वासुदेव बलवंत फड़क	1879	महाराष्ट्र
बिजौलिया आंदोलन	साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक	1913-41	बिजौलिया (राजस्थान)
अवध किसान सभा	बाबा रामचन्द्र	1920	उत्तर प्रदेश
कृषक प्रजा पार्टी	फजलुलहक, अकरम खन, अर्ब्दुरहीम	1929	बंगाल
अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	1936	लखनऊ
बकाश्त कृषक आन्दोलन	यदुनंदन शर्मा, यमुना कार्यी एवं राहुल सांस्कृत्यायन, स्वामी श्रद्धानंद	1938-47	बिहार
वर्ली विद्रोह	गोदावरी पुरूलेकर	1945	बम्बई
तेलंगाना आन्दोलन	कमरैया	1946-51	आन्ध्र प्रदेश

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

ब्रिटिशकालीन भारत की प्रमुख संस्थाएँ एवं संगठन

संस्था/संगठन	संस्थापक	स्थान	स्थापना वर्ष
एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल	विलियम जोंस	कलकत्ता	1784
कलकत्ता मदरसा	वारेन हेस्टिंग्स	कलकत्ता	1781
संस्कृत कॉलेज	जोनाथन डंकन	बनारस	1791
आत्मीय सभा	राजा राममोहन राय	बंगाल	1815
हिंदू कॉलेज (कलकत्ता)	डेविड हेयर एवं राजा राममोहन राय	कलकत्ता	1817
यंग बंगाल	हेनरी विवियन डिरोजियो	बंगाल	1826-1832
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	बंगाल	1828
धर्म सभा	राधाकांत देव	बंगाल	1830
लैंडहोल्डर्स सोसायटी	द्वारकानाथ टैगोर	बंगाल	1838
रहनुमाई मजदायसन सभा	दादाभाई नौरोजी	बंबई	1851
राधास्वामी आंदोलन	स्वामीजी महाराज	आगरा	1861
प्रार्थना सभा	महादेव गोविंद रानाडे, आत्माराम पांडुरंग	महाराष्ट्र	1867
भारतीय सुधार संघ	केशवचंद्र सेन	कलकत्ता	1870
पूना सर्वाजनिक सभा	महादेव गोविंद रानाडे	महाराष्ट्र	1870
सत्यशोधक समाज	ज्योतिबा फुले	पुणे	1873
आर्य समाज	दयानंद सरस्वती	बंबई	1875
थियोसोफिकल सोसायटी	कर्नल अल्काट एवं मैडम ब्लावात्स्की	न्यूयॉर्क, अड्यार (मद्रास)	1875-82
मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज	सर सैयद अहमद खाँ	अलीगढ़	1875
दक्कन एजुकेशन सोसाइटी	विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, तिलक, गोपाल गणेश आगरकर तथा महादेव बल्लाल नामजोशी	पुणे	1884
सेवा सदन	बी.एम. मालाबारी	बंबई	1885
देव समाज	शिवनारायण अग्निहोत्री	लाहौर	1887
अहमदिया आंदोलन	मिर्जा गुलाम अहमद	गुरुदासपुर (पंजाब)	1889
दि सर्वे ऑफ इंडियन सोसायटी	गोपालकृष्ण गोखले	पुणे (महाराष्ट्र)	1905
भारत स्त्री मंडल	सरलाबाई देवी चौधरानी	इलाहाबाद	1910
जस्टिस पार्टी	सी.एन. मुदलियार, टी.एम. नायर, पी. त्यागराया चेट्टी	मद्रास	1916-17
विश्व भारती	रवींद्रनाथ टैगोर	शांति निकेतन (बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल)	1921

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

26. गांधी युग (Gandhi Era)

गांधी युग

- महात्मा गांधी का जन्म 2 oct, 1869 ई. को गुजरात के पोरबंदर में हुआ।
- इनका पूरा नाम मोहन दास करमचन्द गांधी था जबकि प्यार से इन्हें लोग भाई कहते थे।
- इनके पिता करमचन्द गाँधी पोरबंदर, राजकोट तथा बीकानेर रियासतों के दिवान थे। इनकी माता पुतलीबाई थी। 1883 ई. में 13 वर्ष की अवस्था में कस्तुरबा गांधी से इनका विवाह हो गया। इनके चार पुत्र थे। हरिलाल, मनिलाल, रामदास देवदास तथा यमुना लाल बजाज को इनका पांचवां (दत्तक) पुत्र कहा जाता है।
- गांधीजी की प्राथमिक शिक्षा राजकोट में हुई थी तथा उच्च शिक्षा के लिए 1887 ई. में भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश किया।
- गांधीजी 4 सितम्बर, 1888 ई. को अपनी उच्च शिक्षा बैरिस्टरी के लिए लंदन चले गए और वहाँ वकालत की पढ़ाई (LLB) पूरी करके बैरिस्टर बने।
- 1891 ई. में पढ़ाई पूरी कर भारत लौटे और बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की।
- एक गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का केस लड़ने के लिए 1893 ई. में वो दक्षिण अफ्रिका के ट्रान्सवाल की राजधानी प्रिटोरिया चले गए। जहाँ उन्हें रंगभेद का सामना करना पड़ा।
- 1894 ई. में वहीं रहकर सामाजिक कार्य तथा वकालत करने का फैसला किया एवं इसी वर्ष नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 22 मई, 18.. ई. को गांधीजी को सचिव पद पर मनोनीत किया।
- दक्षिण अफ्रीका में नेटाल क्षेत्र के समीप डरबन में पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन पर इन्हें ट्रेन से नीचे ढकेल दिया गया, क्योंकि प्रथम श्रेणी में भारतीयों और कुत्तों को जाना मना था।
- इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार को गांधीजी से माफी मांगनी पड़ी। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधीजी ने भारतीयों के लिए अपना पहला सत्याग्रह किया।
- 1896 ई. को ... भारत आए किन्तु कुछ ही महीने के बाद पुनः ... परिवार के साथ नेटाल वापस चले गये।
- 1899 ई. में गांधीजी ने ब्रिटिश सेना के लिए बोअर युद्ध में भारतीय एबुलेंस सेवा तैयार की थी।
- 1901 ई. में भारत रवाना हुए तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों को आश्वासन दिया कि वे जब भी आवश्यकता महसूस करेंगे वे वापस लौट आएंगे।
- गांधीजी 1901 ई. में पहली बार कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिए।
- 1902 ई. में भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर दक्षिण अफ्रीका पुन: वापस लौटे।
- 1903 ई. में जोहान्सबर्ग में वकालत का दफ्तर खोला।
- इन्होंने 1904 ई. में दक्षिण अफ्रिका में शिल्पकार कालेनवाख की मदद से फीनिक्स फार्म (Phenix form) की स्थापना किया। महात्मा गांधी ने Indian Opinion नामक सप्ताहिक पत्रिका लिखी जो कई भाषाओं में प्रकाशित हुई किन्तु इसका प्रकाशन उर्दू में नहीं हुआ।
- 1906 ई. में आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। एशियाटिक आर्डिनेंस के विरुद्ध जोहान्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरम्भ किया।
- 1907 ई. में 'ब्लैक एक्ट'–भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों का जबरदस्ती पंजीकरण के विरुद्ध सत्याग्रह।
- 1908 ई. में सत्याग्रह के लिए जोहान्सबर्ग में **प्रथम बार कारावास** दण्ड आंदोलन जारी रहा तथा द्वितीय सत्याग्रह में पंजीकरण प्रमाणपत्र जलाए गए। पुन: कारावास दण्ड मिला।
- जून, 1909 ई. में भारतीयों का पक्ष रखने हेतु इंग्लैंड रवाना हुए और नवम्बर में दक्षिण अफ्रिका से वापसी के समय जहाज में 'हिन्द-स्वराज' नामक पुस्तक लिखी।
- मई, 1910 ई. में महात्मा गांधी ने जोहान्सबर्ग के निकट टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना की थी।
- 1913 ई. में रंगभेद तथा दमनकारी नितियों के विरूद्ध सत्याग्रह जारी रखा।
- 'द ग्रेट मार्च' का नेतृत्व महात्मा गांधी के द्वारा किया गया, जिसमें 2000 भारतीय खदान कर्मियों ने न्यूकासल से नेटाल तक की पदयात्रा की।
- दक्षिण अफ्रिका में ही महात्मा गांधी ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मान लिया।
- महात्मा गाँधी को आंदोलन की प्रेरणा रूस के विद्वान लियो टॉलस्टॉय से मिली। इन्हीं से महात्मा गांधी सर्वाधिक प्रभावित थे।
- महात्मा गांधी को भुख हड़ताल की प्रेरणा जर्मन विद्वान रस्किन से मिली थी।
- महादेव देसाई महात्मा गाँधी के (सलाहकार) सचिव थे।
- अमेरिकी पत्रकार मिलर महात्मा गाँधी का सहयोगी था।
- 9 Jan. 1915 ई. को महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी बम्बई लौट आये। उनके स्वागत में फिरोजशाह मेहता की अध्यक्षता में एक नागरिक अभिनंदन की तैयारी की गई जिसमें हर समुदाय के लोगों ने भाग लिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- आज भी इस दिन को प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- 1915 ई. में फीनिक्स एवं टॉलस्टाय फॉर्मों के अनुरूप मई में अहमदाबाद के निकट 1917 ई. में कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम के लिए धन अम्बालाल साराबाई ने दिया था। इस आश्रम के अंदर महात्मा गांधीजी की कुटिया हृदय कुंज कहलाता था।
- 4 फरवरी, 1916 में गांधीजी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में भाषण दिए थे।

गांधीजी के स्वदेश में प्रारंभिक सत्याग्रह की शुरूआत

- गांधीजी को सत्याग्रह की प्रेरणा डेविड थ्योरो के लेख सिविल डिसओबीडियन्स से मिली थी।
- गांधीजी सबसे अधिक प्रभावित लियो टॉलस्टाय से थे।
- गांधीजी ने अपने साप्ताहिक समाचार पत्र इण्डियन ओपीनियन में सत्याग्रह को कल्याणकारी कार्यों हेतु दृढ़ रूप बताया है।
- यंग इण्डिया में इन्होंने सत्याग्रह को स्वयं कष्ट सहने वाले के सिद्धांत के रूप में वर्णित किया है। जबकि हिन्द स्वराज में सत्याग्रह को दूसरों के लिए स्वयं का त्याग श्रेष्ठ बताया है।
- 1916 ई. में महात्मा गांधी ने कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में भाग लिया इसकी अध्यक्षता अम्बिका चंद्र मजूमदार कर रहे थे। इसी अधिवेशन में राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चम्पारण के निलहे जमींदारों के तीन कठिया पद्धति (3/20) की जानकारी दी और उन्हें चम्पारण आने का आग्रह किया।
- 1917 ई. में महात्मा गांधी राजेन्द्र प्रसाद तथा अनुग्रहनारायण सिन्हा के साथ चम्पारण पहुंचे और वहाँ सफल सत्याग्रह किया अंग्रेजों ने तीनकठिया पद्धति समाप्त कर दी। यह आंदोलन निलहे जमिंदारो के विरूद्ध था।
- यह भारत में महात्मा गांधी का पहला सफल आंदोलन था।
- इसकी सफलता के बाद रविन्द्र नाथ टैगोर ने इन्हें महात्मा की उपाधि दिया।
- इस आंदोलन में महात्मा गांधी के साथ राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य जे.बी. कृपालानी, महादेव देसाई और बाबा नरहरि पारिख ने दिया।
- 15 मार्च, 1918 ई. में ही महात्मा गांधी ने अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह किया, इस समय अहमदाबाद में प्लेग फैला हुआ था जिसके चलते मजदूर पलायन कर रहे थे जिसे रोकने के लिए मिल मालिकों ने 50 प्रतिशत बोनस की घोषणा कर दी लेकिन प्लेग समाप्त होते ही इस बोनस को वापस ले लिया।
- इस सत्याग्रह में मजदूरों के लिए पहली बार महात्मा गांधी ने भुख हड़ताल का प्रयोग किया, इसके फलस्वरूप मिल मालिक मजदूरों को के लिए 35 प्रतिशत बोनस देने के लिए तैयार हो गया।
- अतः इस प्रकार यह आंदोलन भी सफल रहा।
- गांधीजी ने 1918 ई. में अहमदाबाद लेबर टेक्सटाइल एसोसिएशन की स्थापना किया।
- 22 मार्च, 1918 ई. में महात्मा गांधी ने खेड़ा सत्याग्रह किया और किसानों के बढ़े हुए टैक्स को माफ कराया।

Remarks : महात्मा गांधी के आंदोलन के चार चरण थे–
(i) सत्याग्रह (ii) भुखहड़ताल (iii) बहिष्कार (iv) हड़ताल।

Note :– गांधीजी के प्रमुख हथियार थे– सत्य एवं अहिंसा।

महात्मा गाँधी की उपाधियाँ

- अंग्रेजों ने गाँधीजी को सारजेण्ट की उपाधि दी, क्योंकि गाँधीजी ने प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना में बहुत से भारतीयों को भर्ती करवाया।
- अंग्रेजों का सहयोग करने के कारण महात्मा गाँधी को ब्रिटिश सरकार ने कैसर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- चम्पारण सत्याग्रह की सफलता के बाद रविन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा की उपाधि दी।
- जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें बापू की उपाधि दिया।
- सुभाष चंद्र बोस ने इन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि दिया।
- विन्सटन चर्चिल ने इन्हें अर्द्धनग्न फकीर कहा था।
- रामधारी सिंह दिनकर ने इन्हें सर्वोदय का अग्रदूत कहा।
- शेख मुजिबुर रहमान ने इन्हें जादुगर की उपाधि दिया।
- खुदाई खिदमत गार संस्था ने मंगल बाबा की उपाधि दिया।
- आइंस्टाइन ने कहा कि आने वाले 100, 200 वर्ष के बाद शायद ही कोई विश्वास करे की ऐसे हाड़मांस के शरीर वाला व्यक्ति इस पृथ्वी पर था, जिसने इतना बड़ा आंदोलन कर दिया था।

रॉलेक्ट एक्ट (18 मार्च 1919)

- भारतीय क्रांति को दबाने के लिए इंग्लैंड हाईकोर्ट के न्यायाधीश सिडनी रॉलेक्ट की अध्यक्षता में 10 दिसम्बर, 1917 ई. को एक समीति का गठन किया गया। जिसके तहत संदेह के आधार पर पुलिस किसी को भी गिरफ्तार कर सकती थी।
- इस समिति का रिपोर्ट 15 अप्रैल, 1918 ई. में आयी जिसे भारतीय नेताओं के कड़े विरोध के बावजूद अंग्रेजी सरकार ने 18 मार्च 1919 को रॉलेक्ट एक्ट पास कर दिया।
- इस एक्ट को द अर्नाक्रिकल एंड रिवोल्यूशनरी क्राइम एक्ट (The Anarchical and Revolutionary Crime Act.) भी कहते हैं।
- भारतीयों ने इसे काला कानून कहा तथा इसे बिना दलील, बिना अपील, बिना वकील का कानून कहा गया।
- 6 अप्रैल, 1919 को गाँधीजी के द्वारा देशव्यापी हड़ताल किया गया।

गांधीजी ने रॉलेक्ट सत्याग्रह के लिए तीन राजनीतिक मंच का उपयोग किया था–

1. होमरूल लीग
2. खिलाफत आंदोलन
3. सत्याग्रह सभा

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 8 अप्रैल, 1919 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर पंजाब के पलवल जिला में (वर्तमान में हरियाणा का जिला) गिरफ्तार कर बम्बई भेज दिया गया।
- रॉलेक्ट सत्याग्रह अखिल भारतीय राजनीति में गांधीजी का पहला साहसिक कदम था।
- इसी एक्ट के विरोध में स्वामी श्रद्धानन्द ने लगान न देने का आंदोलन चलाने का सुझाव दिया था।
- इसी कानून के तहत 9 अप्रैल को पंजाब के दो नेता सैफुद्दीन किचलु तथा डॉ. सत्यपाल को गिरफ्तार कर अमृतसर भेज दिया गया।
- इस सत्याग्रह का केन्द्र पंजाब था।

जलियाँवाला बाग (13 April 1919)

- रौलेक्ट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल, 1919 ई. को वैशाखी के दिन एक शांति सभा का आयोजन किया गया था।
- उसी समय पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर ओ. डायर ने गोरखा रेजीमेंट के ब्रिगेडियर आर. डायर को जलियाँवाला बाग सैनिको के साथ भेजा दिया। जहाँ आर. डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवा दी।
- आँकड़ों के अनुसार मरने वालों की संख्या 379 थी एवं 1200 व्यक्ति घायल हुए थे। लेकिन वास्तव में इससे कहीं ज्यादा लोग मारे गए।
- इस समय भारत का वायसराय (गवर्नर) लॉर्ड चेम्सफोर्ड था।
- हंस राज नामक भारतीय ने जलियाँवाला बाग की सूचना अंग्रेजों को दी थी।
- इस नरसंहार के विरोध में रविन्द्र नाथ टैगोर ने सर की उपाधि त्याग दिया एवं डॉ. शंकर नायर ने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् से त्याग पत्र दे दिया।
- अंग्रेजों ने इसके जाँच के लिए 1 अक्टूबर 1919 को हंटर कमिशन का गठन किया। इस आयोग में तीन भारतीय सदस्य (चिमन लाल शितलवाड़, साहबजादा सुल्तान अहमद एवं जगत नारायण) और पाँच अंग्रेज सदस्य थे।
- इस समिति का अध्यक्ष लॉर्ड हण्टर थे।
- इस कमीशन ने जनरल डायर को सही ठहराया। जनरल ओ. डायर को लंदन में सम्मान के रूप में तलवार और 2600 पौंड की धनराशि दिया गया तथा ब्रिटेन में उसे **ब्रिटिश साम्राज्य का शेर** की उपाधि दी गई।
- कांग्रेस ने इस कांड की जांच के लिए मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक समीति बनाई जिसके अन्य सदस्य पंडित मोती लाल नेहरू, गांधीजी, अब्बास तैयब जी, सी.आर. दास, और पटेल जयकर थे। इस समिति ने कहा की यह जनरल डायर द्वारा जल्दबाजी में लिया गया मुर्खतापूर्ण कदम था।
- दीनबंधु सी.एफ. एन्ड्रूज ने इस कांड को जानबुझकर की गई क्रूर हत्या कहा था।
- जलियाँवाला बाग के हत्या कांड के समय ही पंजाब में चमनदीप के नेतृत्व में डांडा फौज का गठन किया गया।
- 13 मार्च, 1940 ई. को उधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल ओ. डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।

होमरूल आंदोलन

- यह आंदोलन आयरलैण्ड से प्रेरित था इसकी शुरुआत दो चरणों में हुई पहला चरण बालगंगाधर तिलक ने अप्रैल 1916 ई. में महाराष्ट्र से प्रारंभ किया।
- इसी आंदोलन के दौरान उन्होंने कहा, **"स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूँगा।"**
- वैलेंटाइन सिरोल ने तिलक जी को भारतीय अशांति का जनक (Indian Arnest) कहा था। जिस कारण ये उस पर केश करने लंदन चले गए।
- 1918 ई. तक होमरूल आंदोलन का पहला चरण समाप्त हो गया।

  Remark :– बालगंगाधर तिलक को लोकमान्य कहा जाता है। इनकी अर्थी को महात्मा गांधी तथा शौकत अली ने कंधा दिया था।
- होमरूल का दूसरा चरण सितम्बर, 1916 ई. में एनी बेसेंट ने प्रारंभ किया।
- यह होमरूल आंदोलन पूरे भारत में फैल गया। किन्तु अंग्रेजों ने एनी बेसेंट को गिरफ्तार कर लिया और जब 1918 ई. में उन्हें छोड़ा दिया और तब तक होमरूल आंदोलन पूरी तरह समाप्त हो चूका था। होमरूल का उद्देश्य प्रांतीय स्वायत्ता (राज्यों का स्वशासन) थी।

खिलाफल आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान इंग्लैंड के प्रधानमंत्री डेविड लायड जॉर्ज ने यह घोषणा की थी तुर्की के साथ किसी भी प्रकार का अन्याय नहीं किया जाएगा। लेकिन विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों ने सेवर्स की संधि (10 अगस्त, 1920 ई.) के तहत तुर्की का विभाजन कर दिया। जिसका विरोध तुर्की के खलिफा ने किया।
- भारत में इसी विभाजन के विरोध में खिलाफत आंदोलन प्रारंभ किया गया। खिलाफत आंदोलन को मोहम्मद अली तथा सौकत अली ने शुरू किया था।
- 4 मार्च, 1919 ई. को इस आंदोलन के दौरान स्वामी श्रद्धांनन्द ने दिल्ली की जामा मस्जिद के मंच से हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण दिया था।
- इस आंदोलन के दौरान ही हकीम अजमल खां ने हाजिक-उल-मुल्क की पदवी त्याग दी थी।
- अखिल भारतीय खिलाफत की बैठक दिल्ली के फिरोज साह कोटला मैदान में हुई।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 23 Nov. 1919 को महात्मा गांधी द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों का एक संयुक्त सम्मेलन दिल्ली में बुलाया गया जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने किया।
- 1921 ई. में केरल में हुए मोपला आंदोलन की शाखा खिलाफत आंदोलन का ही एक भाग था।
- इस आंदोलन के बारे में एचिंसन ने कहा था कि इस आंदोलन में हम मुसलमानों को हिन्दुओं से भीड़ा नहीं पाए।
- अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर अंग्रेजों ने तुर्की के विभाजन को रद्द कर दिया और भारत में भी खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया। और महात्मा गांधी को मुसलमानों का भी सहयोग प्राप्त हो गया।

असहयोग आंदोलन

- महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन 1 अगस्त, 1920 को शुरू किया था।
- असयोग आंदोलन के समय भारत के वायसराय लॉर्ड चेम्स फोर्ड थे।
- यह आंदोलन दुखद घटना के साथ प्रारंभ हुआ क्योंकि इसी दिन बाल गंगाधर तिलक के मृत्यु हो गई थी।
- यह महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया पहला जन आंदोलन था, क्योंकि इसमें पूरे देश की जनता ने भाग लिया था।
- असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव 4 सितम्बर, 1920 को कलकत्ता में हुए विशेष अधिवेशन में लाया गया था। परंतु सी. आर. दास तथा लाला लाजपत राय के विरोध का कारण यह प्रस्ताव पारित नहीं हो पाया।
- इस आंदोलन की पुष्टि दिसम्बर, 1920 में हुए नागपुर अधिवेशन में मिली।
- महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि हमसब मिलकर सामूहिक रूप से अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करें तो निश्चित ही एक वर्ष में आजादी मिल जाएगी।
- महात्मा गांधी के कहने पर ही वकीलों ने न्यायालय जाना छोड़ दिया।
- यह आंदोलन प्रारंभ करने से पूर्व ही गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दिया गया **केसर-ए-हिन्द** उपाधि तथा जमनालाल बजाज ने भी अपनी **राय बहादुर** की उपाधि वापस कर दी।
- विद्यार्थियों ने अंग्रेजों का स्कूल छोड़ दिया नाई, धोबी, मोची, बावर्ची ने अंग्रेजों का काम करने से मना कर दिया। लोग अंग्रेजों के वस्तुओं को खरीदना छोड़ दिए और दुकानदार उसे बेचना छोड़ दिए। इससे अंग्रेजों को भारी नुकसान हुआ।
- इस आंदोलन के दौरान एक सर्वाधिक लोकप्रिय नारा था– **हिन्दू मुसलमान की जय।**
- इसी अवसर ब्रिटेश युवराज प्रिंस ऑफ वेल्स ने भारत की यात्रा की।
- दक्षिण भारत से असहयोग आंदोलन का नेतृत्व गोपालचारी ने किया। इसी आंदोलन के दौरान मौलाना मजहरूल हक ने पटना में सदाकत आश्रम की स्थापना की।
- C.R. दास तथा मोतीलाल नेहरू ने प्रारंभ में इस आंदोलन का विरोध किया किन्तु बाद में वे भी इस आंदोलन से जुड़ गए।
- इस आंदोलन में जेल जानेवाले पहले पुरुष C.R. दास तथा पहली महिला वसंती देवी थी।
- असहयोग आंदोलन के दौरान बिहार में कृषको का नेतृत्व स्वामी विद्यानंद ने तथा छपरा में राहुल सांस्कृत्यानन ने किया था।

चौरी-चौरा कांड

- 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर के चौरी-चौरा कस्बे में भीड़ ने 22 पुलिस वालों को जिंदा जला दिया।
- इस जुलूस का नेतृत्व भूतपूर्व सैनिक भगवान अहीर कर रहा था।
- इस घटना के समय भारत के वायसराय लॉर्ड रिडिंग थे।
- इस घटना के समय महात्मा गांधी बारदौली (गुजरात) में थे। इन्होंने इस हिंसा से आहत होकर 12 फरवरी, 1922 ई. को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। महात्मा गांधी के इस निर्णय का पूरे भारत में विरोध हुआ।
- असहयोग आंदोलन को वापस लेने के कारण डॉ. मुजे ने गांधीजी के विरोध में निंदा प्रस्ताव लाए थे।
- जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि **"यदि काश्मीर के किसी गांव में हिंसा हुआ है तो उसका सजा कन्याकुमारी के किसी गांव को क्यों दी जाए।"**
- सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि **"जब जनता का उत्साह अपने चरम पर था तो गांधी जी द्वारा आंदोलन स्थगित करना एक मुर्खता पूर्ण निर्णय था।"**
- 10 मार्च, 1922 ई. को न्यायाधीश ब्रूमफील्ड ने जनता को भड़काने के आरोप में गांधी जी को 6 वर्ष जेल की सजा सुनाई।
- 5 फरवरी, 1924 ई. में गांधीजी के खराब स्वास्थ्य हाने के कारण जेल से रिहा कर दिया गया।

स्वराज पार्टी

- 1922 ई. में कांग्रेस के गया अधिवेशन में स्वराज पार्टी के गठन की चर्चा हुई।
- 1 जनवरी, 1923 ई. को स्वराज पार्टी का गठन इलाहाबाद में किया गया। इसके पहले अध्यक्ष C.R. Das तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू बने। यही दोनों इस पार्टी के संस्थापक भी थे।
- बिहार में स्वराज पार्टी का गठन श्रीकृष्ण सिंह ने किया था।
- **इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य था–**
  - (i) केन्द्रीय विधान सभा (संसद) में घुसकर सरकारी काम में बाधा डालना।
  - (ii) राज्यों की स्वायत्तता (स्वतंत्रता)।
  - (iii) डोमेनियन स्टेट।
- इसके लिए इन्होंने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया और जनता से यह वादा किया कि वे कोई भी सरकारी पद नहीं लेंगे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- केन्द्रीय विधान सभा के 100 सीटों में स्वराज दल को 42 सीटों प्राप्त हुई जिस कारण से 1923 ई. के चुनाव में स्वराज पार्टी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी बनी।
- स्वराज दल ने ली कमीशन की रिपोर्ट नहीं लागू होने दिया जो जाति की उच्चता को बरकरार रखने की बात कर रहा था।
- स्वराज दल ने मुडीमैन कमीशन का भी रिपोर्ट पारित नहीं होने दिया जो राज्यों में स्वतंत्रता न लाकर द्वैध शासन की बात कर रहा था।
- विट्ठल भाई पहले भारतीय बने जो विधान सभा के अध्यक्ष बने ये स्वराज दल के थे।
- मोतीलाल नेहरू ने भी सरकारी पद ले लिया जिस कारण जनता का विशवस इस पार्टी से उठने लगा और 1928 ई. आते-आते यह पार्टी समाप्त हो गई।

➢ **बलसाड़ सत्याग्रह (1923-24 ई.)**

- डकैतियों का आतंक दबाने के लिए पुलिस व्यवस्था करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार ने सितम्बर, 1923 ई. में बलसाड़ के प्रत्येक व्यस्क व्यक्ति पर कर लगाने की घोषणा कर दी इसे ही **डकैती कर** कहते हैं।
- इसका प्रारंभ गुजरात के बलसाड़ से किया गया था। जिसका विरोध स्थानीय लोगों के द्वारा किया गया। इसका नेतृत्व बल्लभ भाई पटेल ने किया था। अंतत: विरोध के कारण अंग्रेजों को डकैती कर रद्द करना पड़ा।

➢ **वायकोम सत्याग्रह (1924-25 ई.)**

- यह केरल के मालवाड़ तट से प्रारंभ हुआ। इजवा ज[illegible]ति के लोगों को मंदिर के आगे के रास्ते पर जाने से रोका गया [illegible]
- जिसके विरूद्ध T.K. माधवन ने यह आंदोलन [illegible]रंभ किया। यह आंदोलन सफल रहा।

साइमन कमीशन

- 1919 ई. के माटेंग्यू चेम्सफोर्ड अधि[illegible]म की सम[illegible]क्षा हेतु तथा प्रशासनिक सुधार पर विचार करने के [illegible] दस [illegible]र्ष बाद एक संवैधानिक आयोग की नियु[illegible]त [illegible]जाएगी, जो यह जाँच करेगी कि भारत उत्तरदायी शासन [illegible] दिशा में कहाँ तक प्रगति करने की स्थिति में है।
- आयोग की नियुक्ति तो 1[illegible] वर्ष के [illegible]ाद की जानी चाहिए थी, लेकिन ब्रिटेन की त[illegible] [illegible]ंजरवेटिव सरकार ने दो वर्ष पूर्व ही साइमन कमी[illegible] की नियुक्ति (8 नवम्बर, 1927 ई.) कर दी, क्योंकि [illegible] आशंका [illegible] कि दो वर्ष बाद लेबर पार्टी की सरकार [illegible] स[illegible]र्थक सदस्यों वाले वैधानिक आयोग की नियुक्ति कर [illegible] है।
- कि[illegible] [illegible] में आपसी मतभेद बहुत अधिक था। जिस कारण भारत के राज्य सचिव बरकेन हेड ने 1927 ई. में [illegible] कमीशन का गठन करवा दिया।
- [illegible] 7 सदस्यों वाले आयोग के सभी सदस्य अंग्रेज सदस्य थे। इसिलिए इसे श्वेत कमीशन भी कहते है। भारतीयों को इससे बाहर लॉर्ड इरविन के कहने पर किया गया था।
- इस कमीशन के अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे।
- क्लीमेंट एटली भी इसके सदस्य थे जो आगे जाकर ब्रिटेन के PM बने।
- साइमन कमीशन 1919 ई. की अधिनियम की [illegible] करन भारत आया था। इसका मूल नाम Indi[illegible] Statu[illegible] Commission (भारतीय वैधानिक आयोग) था।
- 3 फरवरी, 1928 ई. को जब साइमन कमी[illegible] ब[illegible] पहुचा तो उसका अत्यधिक विरोध हुआ तथा स[illegible]न वा[illegible]स जाओ (Simon go back) का नारा लगा[illegible]।
- इस कमीशन के विरोध के बावजूद [illegible]इमन [illegible]मीशन ने 1930 ई. में अपनी रिपोर्ट दे दी। जिसके आधा[illegible] लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- इसी विरोध प्रदर्शन में [illegible] म[illegible] लाला लाजपत राय के ऊपर सांडर्स के नेतृत्व [illegible] पुलिस ला[illegible] चार्ज हो गई जिसमें चोट लगने से लाला [illegible]जप[illegible] की [illegible]त्यु हो गई।
- लाला लाजपत [illegible] ने [illegible]हा कि **"मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक ल[illegible] अ[illegible] के ताबुत की आखिरी कील साबित [illegible]गी।"**
- दक्षि[illegible] भारत [illegible] जस्टिस पार्टी (मद्रास), यूनियन पार्टी ([illegible]जाब), [illegible] डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन (अंबेडकर द्वारा संच[illegible]) ने इस आंदोलन का समर्थन किया था।

नेहरू रिपोर्ट

- [illegible]इमन कमिशन के विरोध के कारण भारत के राज्य सचिव बरकेन हेड ने भारतीयों को यह चुनौती दी **"यदि सर्व सहमति से वह अपना कानून बना लेंगे तो मैं उसे ब्रिटेन में पारित करा दूंगा।"**
- इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मोतीलाल नेहरू और तेज बहादुर सप्रु ने नेहरू रिपोर्ट तैयार किया था। इस रिपोर्ट में कूल 9 सदस्य थे।
- जिसका मुख्य उद्देश्य स्वायत राज्य (Dominion State) की स्थापना करना था किन्तु मुस्लिम लीग ने इसे स्वीकार नहीं किया जिस कारण नेहरू रिपोर्ट पारित नहीं हो सका।
- नेहरू रिपोर्ट के विरोध में जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस ने 1928 ई. में इंडिपेंडेंस फॉर इण्डिया लीग की स्थापना की।

➢ **14 सूत्री जिन्ना फार्मुला**

- नेहरू रिपोर्ट के प्रतिउत्तर में जिन्ना ने 14 सूत्री जिन्ना फर्मुला दिया।
- जिन्ना ने अपने इस 14 सूत्री की मांग को इंग्लैंड में हुए प्रथम गोलमेज सम्मेलन के समक्ष पेश किया। जिनमें से अधिकांश मांगें अगस्त 1932 में मैकडोनाल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय में स्वीकार कर ली गई।

➢ **लाहौर अधिवेशन (1929 ई.)**

- इसकी अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू ने किया इसमें पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाया जाएगा।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इसी कारण 26 नवम्बर, 1949 ई.को संविधान बनने के बावजूद इसे 26 जनवरी, 1950 ई. को लागु किया गया।
- इसी अधिवेशन में लाहौर में रावी नदी के तट पर मध्य रात्री को जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा लहराया और कहा कि मध्यरात्रि को जब पूरी दुनिया सो रही है भारत अपनी स्वतंत्रता की नीव रख रहा है।

➤ गांधीजी की 11 सूत्री मांगे

- गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने से पहले 2 मार्च, 1930 को वायसराय इरविन को लिखे पत्र में 11 सूत्री मांगे पेश की थी।
- इसका उल्लेख इन्होंने अपने समाचार पत्र इण्डिया में प्रकाशित लेख के द्वारा किया।

दाण्डी मार्च

- गाँधीजी ने इरविन को अपनी 11 सूत्री माँग सौंप दी। किन्तु इरविन ने उसे अस्वीकार कर दिया। जिस कारण महात्मा गाँधी ने 12 मार्च 1930 ई. को साबरमती आश्रम से अपने 78 सहयोगियों के साथ नामक कानून तोड़ने के लिए दांडी की ओर चल दिए। उनके साथ सरोजनी नायडू भी थी।
- इस 78 सहयोगियों में से बिहार के गिरिवरधारी चौधरी थे।
- इस यात्रा के दौरान 240 mile ($240 \times 1.61 = 386.22$ km की यात्रा को 24 दिन में पूरा किया गया।
- 6 अप्रैल 1930 ई. को दाण्डी यात्रा पूरी हुई और गाँधी जी ने दाण्डी में आसवन विधि द्वारा नमक बनाया।
- भागलपुर में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व महादेव लाल सर्राफ ने किया था।
- इस यात्रा में गांधीजी के साथ वेब मिलर नामक अमेरिकी पत्रकार थे।
- नमक सत्याग्रह के दौरान शोलापुर में गांधीजी गिरफ्तार हो जाने के बाद इस आंदोलन का नेतृत्व अब्बास तैयब जी ने किया था।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

- गांधीजी के 11 सूत्री के मांगों के न्यायोचित उत्तर नहीं मिलने के कारण विवश होकर गांधीजी को 12 मार्च, 1930 ई. को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करना पड़ा।
- गांधीजी ने 11 सूत्री मांगे लॉर्ड इरविन के सामने रखी थी उनमें से एक नमक कर की समाप्ति थी लेकिन इरविन ने इसकी अवहेलना कर दी इसी के कारण गांधीजी ने दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन करने का निश्चय किया।
- बिहार में इस आंदोलन के शुरूआत 6 अप्रैल, 1930 ई. को हुई थी। जिसकी रूपरेखा राजेन्द्र प्रसाद ने तैयार की थी।
- गुजरात में इसी आंदोलन के दौरान सरोजनी नायडू ने 25000 आंदोलनकारियों को लेकर धरसना नामक स्थान पर पहुंची किन्तु इसकी सूचना पहले ही अंग्रेजों को लग गई और अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबा दिया।
- इसी आंदोलन के दौरान लड़कों का बंदरी सेना तथा लड़कियों की मंजरी सेना का गठन किया गया।
- विनोबा भावे की पहली बार गिरफ्तारी सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान ही हुई थी।
- इस आंदोलन के दौरान गढ़वा रेजिमेंट (पेशावर) के सैनिकों ने प्रदर्शन कारियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था।
- इस रेजिमेंट का नेतृत्व बीरचंद्र सिंह गढ़वाला कर रहे थे।
- सविनय अवज्ञा के समर्थन में उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में खान अब्दुल गफ्फर खाँ के नेतृत्व में खुदाई खिदमतगार नाम से आंदोलन चलाया गया।
- इस आंदोलन को लाल कुर्ती आंदोलन भी कहते हैं क्योंकि इनके सदस्य लाल कुर्ती पहनते थे।
- भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में इस आंदोलन के दौरान वहाँ की जनजातिओं ने जादूनाग के नेतृत्व में **जियातरंग** आंदोलन चलाए।
- मणिपुर के युवा (नागा जनजाति) महिला गैडिन्ल्यू (गाइडिंल्यू) को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इनकी संघर्ष क्षमता के कारण रानी की उपाधि प्रदान की थी।
- इस आंदोलन के दौरान बिहार में कर नाआदायगी आंदोलन तथा चौकीदारी कर अदा नहीं करने से संबंधित आंदोलन चलाया गया।

गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली-समझौता)

जब सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था तो लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था क्योंकि भारत के इस आंदोलन के कारण कोई कांग्रेस का प्रतिनिधि वहाँ भाग लेने नहीं गया।

- जिस कारण इंग्लैण्ड से इरविन पर दबाव आने लगा कि वे कांग्रेस को इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए भेजे।
- इसी दबाव में आकर इरविन ने समझौता करने का विचार किया।
- 5 मार्च, 1931 को दिल्ली में तेज बहादुर सप्रु और एम.आर. जयकर के प्रयत्नों से एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-इरविन समझौता कहा जाता है।
- इस समझौते को एलन कैम्पबेल जॉनसन ने महात्मा गांधी के लाभ को सांत्वना पुरस्कार कहा।
- इरविन ने महात्मा गांधी से यह आग्रह किया गया कि यदि वे सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करके गोलमेज सम्मेलन में भाग लेंगे तो गांधीजी के कुछ बातों को मान लिया जाएगा जिसमे सबसे प्रमुख राजनीतिक कैदियों की रिहाई थी।
- इस समझौता के तहत भगत सिंह को रिहा नहीं किया गया क्योंकि उनपर अपराधिक मुकदमा था।

Note :– सरोजनी नायडू ने गांधी तथा इरविन को दो महात्मा कहा।

गोलमेज सम्मेलन (1930-1932)

- भारतीय प्रशासन पर चर्चा करने के लिए लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- **प्रथम गोलमेल सम्मेलन (12 Nov, 1930-19 Jan, 1931 ई.)**
- यह सम्मेलन लंदन के सेन्ट जेम्स पैलेस में लॉर्ड इरविन के प्रयासों से साइमन कमिशन के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए बुलाई गई थी।
- इस सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम तथा इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने किया था।
- इस सम्मेलन में कांग्रेस का कोई प्रतिनिधि भाग नहीं लिया क्योंकि महात्मा गांधी सविनय अवज्ञा आंदोलन कर रहे थे।
- इस सम्मेलन में मौलाना मुहम्मद अली जिन्ना, भीमराव अंबेडकर तथा के.टी. पॉल आदि ने भाग लिया था।

- **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 Sep, 1931 ई.)**
- इस सम्मेलन में कांग्रेस की ओर से महात्मा गाँधी ने भाग लिया किन्तु ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने सम्प्रदायिक पंचांट की बात कही जिस कारण गांधीजी सम्मेलन छोड़कर वापस चले आए।
- इस सम्मेलन में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व सरोजनी नायडू, एनीबेसेंट और मीराबेन कर रही थी।
- इस सम्मेलन में गांधीजी भाग लेने के लिए एस.एस. राजपुताना नामक जहाज से इंग्लैंड गये थे तथा 1 दिसम्बर, 1931 ई. को बेन्सटीयाना नामक इटली के जहाज से भारत वापस आये थे।
- गांधीजी वापस आने के बाद कहा कि **''मैं भारत खाली तो जरूर लौटा हूँ पर मैंने अपनी देश की इज्जत को बट्टा लगने नहीं दिया''।**
- भारत आने के बाद गांधी इरविन समझौते के प्रावधानों का उल्लंघन होने के कारण पुन: गांधीजी ने 4 जनवरी, 1932 ई. को द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत की जो अप्रैल, 1934 ई. तक चला।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के समय महात्मा गांधी के सचिव महादेव देसाई थे।

- **तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 Nov. 1932-24 Dec. 1932 ई.)**
- इस सम्मेलन में कांग्रेस, इंग्लैंड की लेबर पार्टी तथा जिन्ना ने भाग नहीं लिया।
- इसी सम्मेलन में मैकडोनाल्ड ने दलीतों के लिए पृथक क्षेत्र (साम्प्रदायिक पंचांट की घोषणा कर दी।
- इस सम्मेलन के बाद ब्रिटिश संसद में एक अधिनियम पारित किया गया जिसे भारतीय शासन अधिनियम 1935 ई. कहते हैं।

Note :– तेज बहादुर सप्रू तथा भीमराव अम्बेडकर तीनों ही गोलमेज सम्मेलन में भाग लिए थे।

पूना समझौता और साम्प्रदायिक पंचांट

- 16 अगस्त, 1932 ई. को इंग्लैंड के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने एक घोषणा की जिसे साम्प्रदायिक पंचांट कहते हैं।
- जैसे ही साम्प्रदायिक पंचांट की घोषणा हुई और दलितों को आरक्षण सहित पृथक क्षेत्र दिया गया।
- महात्मा गांधी ने पूना के यरवदा जेल में अनशन कर दिया। तेज बहादुर सप्रू, राजेन्द्र प्रसाद तथा मदनमोहन मालीय के सहयोग से गांधी एवं अम्बेडकर के बीच 24 सितम्बर, 1932 ई. को एक समझौता हुआ। जिसे पूना पैक्ट कहते हैं। इसके तहत दलितों के आरक्षीत सीट को 71 से बढ़ाकर 147 कर दिया गया।
- इसके तहत बौद्धों के लिए कोई सीट आरक्षित नहीं थी। इसमें केवल मुसलमान, सिक्ख, अनुसूचित जाति तथा ईसाईयों के लिए सीट आरक्षित थी।

Note :– इस समझौते पर अम्बेडकर के साथ महात्मा गांधी और इसके समर्थक हस्ताक्षर किये थे न कि गांधीजी।

हरिजन सेवक संघ

- महात्मा गांधी ने दलितों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उन्हें हरिजन नाम दिया।
- 1932 में पुन: पूना के बाद गांधीजी ने अखिल भारतीय अस्पृश्यता संघ (All India Untouchability League) की स्थापना किया जो आगे चलकर हरिजन सेवक संघ कहलाया।
- हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष घनश्याम दास बिडला थे।
- 1933 में महात्मा गांधी ने सप्ताहिक **पत्रिका हरिजन** का प्रकाशन किया।

Note :– **दलित वर्गों का संघ** की स्थापना बाबू जगजीवन राम के द्वारा किया गया था।

मुस्लिम लीग

इसकी स्थापना ढाका में 1906 ई. में आगा खाँ एवं सलीमुल्लाखाँ ने किया इस समय वायसराय लॉर्ड मिण्टो-II थे।

- 1909 ई. में मुस्लिम लीग की मांग पर मुसलमानों को पृथक निर्वाचन क्षेत्र मिल गया जिस कारण कांग्रेस तथा लीग में विवाद होने लगा।
- ऐनी बेसेंट तथा तिलक जी के सहयोग से 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में नरमदल, गरमदल तथा मुस्लिम लीग एक हो गए तथा कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचन क्षेत्र को स्वीकार कर लिया।
- मुसलमानों के लिए एक पृथक राष्ट्र का विचार सर्वप्रथम मोहम्मद इकवाल ने 1930 ई. में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में दिया था।
- पाकिस्तान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र **चौधरी रहमत अली** ने 1933 ई. में किया था।
- 1937 ई. के चुनाव के फलस्वरूप कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनी थी और वायसराय के परिषद में कांग्रेस का दबदबा बन गया और मुस्लिम लीग की शक्तियां कमजोर होती चली गई।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने बिना भारतीयों तथा कांग्रेस के अनुमती के ही यह घोषणा कर दी की 3 लाख भारतीय सैनिक इंग्लैंड की तरफ से लड़ेंगे जिस कारण कांग्रेस ने 22 Dec. 1939 ई. को वायसराय के परिषद से त्याग पत्र दे दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

इससे खुश होकर मुस्लिम लीग ने 22 Dec. 1939 ई. को मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।

- 1940 ई. में मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन हुआ। जिसकी अध्यक्षता जिन्ना ने किया। इन्होंने इस अधिवेशन में स्पष्ट रूप से पृथक पाकिस्तान की मांग कर दी।
- इस अधिवेशन में पाकिस्तान के सृजन का प्रस्ताव फजलूलहक ने प्रस्तुत किया तथा खली कुज्जमां ने इनका अनुमोदन किया था।
- 1945 ई. में लार्ड वेवेल ने भारत के विभिन्न पार्टियों को आपसी समन्वय तथा सहयोग बनाए रखने के लिए शिमला सम्मेलन बुलाया। किन्तु इस सम्मेलन में मुस्लिम लीग पूरी तरह पृथक पाकिस्तान कि माँग पर तुला हुआ था।
- इस सम्मेलन में मुस्लिम लीग की बात नहीं मानी गई। और मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के मांग के कारण ही यह सम्मेलन विफल हो गया।

प्रत्यक्ष कार्यवायी दिवस

- शिमला सम्मेलन की विफलता के बाद मुस्लिम लीग ने 16 Aug 1946 ई. को प्रत्यक्ष कार्यवायी दिवस (Direct Action Plan) घोषित किया जिसके तहत पूरे भारत में साम्प्रदायिक दंगे फैल गए।
- सबसे बड़ा दंगा, बंगाल के नोआखली में हुआ। मुस्लिम लीग का नारा था। **''बांटो और आजाद करो।''**
- इन दंगों से तंग आकर कांग्रेस ने सी.आर. फर्मूला के आधार पर विभाजन का समर्थन किया।
- लार्ड माऊंटबेटन को यह विशेष सलाह पर भारत भेजा गया था कि यथा संभव वे भारत को संयुक्त रखे किन्तु साम्प्रदायिक दंगों से तंग आकर माऊंट बेटन ने भी सी.आर. फर्मूला का ही समर्थन किया और बाल्कन योजना के तहत 14 Aug. 1944 ई. को भारत का विभाजन कर दिया गया।
- सिरील रेडक्लिफ के नेतृत्व में भारत पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ नामक विभाजन रेखा खींच दी गई।
- मोहम्मद अल्ली जिन्ना को पाकिस्तान का निर्माता कहा जाता है। लिआकत अली पाकिस्तान के पहले प्रधानमंत्री बने जो संयुक्त भारत के वित्तमंत्री थे।

सुभाषचन्द्र बोस

- सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 Jan 1897 ई. को उड़ीसा के कटक में हुआ था। इनके गुरु चितरंजन दासथे। इन्होंने 1920 ई. में इंडियन सिविल सर्विस (I.C.S.) की परीक्षा पास की किन्तु 1921 ई. में उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और राजनीति में प्रवेश कर गए। 1938 ई. में गुजरात के हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष बने।
- सुभाष चंद बोस को मतभेद होने के कारण कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया और एक अलग पार्टी फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना 1930 ई. में कर लिया।
- 1940 ई. में भड़काऊ भाषण के आरोप में बोस को जेल हो गया और 1941 ई. में जेल से रिहा भी हो गए। ये जर्मनी में हिटलर से मिले।
- हिटलर ने इन्हें नेताजी की उपाधि दिया तथा हिटलर ने जिन भारतीय सैनिकों को बंदी बनाया था। सुभाष चन्द्र बोस ने उन्हें इंग्लैंड के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया।
- इन सैनिकों को हथियार और प्रशिक्षण जापान के द्वारा दिया जा रहा था, साथ ही जापान ने सुभाषचन्द्र बोस को अंडमान और निकोबार द्वीप उपहार में दे दिया।
- सिंगापुर में इन सैनिकों को आजाद हिन्द फौज का हिस्सा बना दिया गया और महात्मा गांधी को राष्ट्पिता कहकर संबोधित किया गया।
- अपने सैनिकों में जोश भरत हुए जुबली हॉल में इन्होंने कहा कि–

''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा''।

- सुभाष चन्द्र बोस ने अडमान निकोबार का नाम शहीद एवं स्वराज नाम दिया।

आजाद हिन्द फौज

- इसके गठन का सर्वप्रथम विचार Indian Caiptain मोहन सिंह ने दिया था अर्थात यह कैप्टेन मोहन सिंह के दिमाग की उपज थी।
- आजाद हिन्द फौज के संस्थापक रासबिहारी बोस थे। 4 July, 1943 ई. को सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के कप्तान बनाई गयी।
- इन्हें इस फौज का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- 21 Oct. 1943 ई. को सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की।
- सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को लेकर मणिपुर पर आक्रमण किया और उस को अपने नियंत्रण में कर लिया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने **जय हिन्द** तथा **दिल्ली चलो** का नारा मणिपुर के इम्फाल से दिया था।
- 6 Aug तथा 9 Aug 1945 ई. को अमेरिका ने जापान पर परमाणु हमला कर दिया जिस कारण सुभाष चन्द्र बोस ने जापान छोड़ दिया किन्तु 18 Aug 1945 ई. को ताइबान (फार्मुसा) के समीप विमान दूर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई।
- जापान सरकार ने इनकी मृत्यु की घोषणा 22 Aug 1945 ई. को किया। इनकी मृत्यु के बाद आजाद हिन्द फौज की सैनिकों पर लाल किला में मुकदमा चलाया गया। इन सैनिकों की वकालत जवाहर लाल नेहरू, तेगबहादुर तथा K.N कुंजरू जैसे वकीलों ने किया।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

27. प्रमुख प्रस्ताव एवं सम्मेलन (Major Proposals and Conferences)

अगस्त प्रस्ताव

- द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजों का साथ देने से इंकार कर दिया तब अंग्रेजों ने भारतीयों को साथ में लाने के लिए वायसराय लिनलिथगो के द्वारा 8 अगस्त 1940 ई. को अगस्त प्रस्ताव लाया। इसमें निम्नलिखित बातें कही गयी–
  1. इसमें कहा गया कि अगर द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत अंग्रेजों का साथ देता है तो हम उनके लिए डोमेनियन स्टेट की बात करेंगे।
  2. वायसराय के परिषद में भारतीयों की संख्या को बढ़ाई जाएगी।
  3. संविधान बनाने के लिए संविधान सभा पर भी विचार किया जाएगा।
- अगस्त प्रस्ताव को कांग्रेस सहित मुस्लिम लीग ने भी अस्वीकृत कर दिया अत: यह प्रस्ताव असफल रहा। इसके जवाब में महात्मा गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया।
- पं. जहवार लाल नेहरू ने अगस्त प्रस्ताव के विषय में कहा ... जिस डोमेनियम स्टेट की स्थिति पर यह प्रस्ताव आ...रित है वह **'दरवाजे में जड़ी जंग लगी कील'** की त...ह है।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

- 17 अक्टूबर, 1940 ई. को गांधी जी ने पवनार (महाराष्ट्र) नामक स्थान से व्यक्तिगत सत्याग्रही शुरू ...
- इस सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्राही विनो... ...वे, दूसरे ...त्याग्रही पंडित जवाहरलाल नेहरू, तीसरी ...ाग्रही ...त ...
- इस आंदोलन को दिल्ली चलो ...ंदोल... ...भी कहा जाता है।

क्रिप्स प्रस्ताव

- द्वितीय विश्व युद्ध में ...रतीयों से सहयोग प्राप्त करने के लिए क्रिप्स प्रस्ताव भारत आ...
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री ... ...चिल ने भारत के राजनीतिक और वैधानिक गतिरोधों को दूर करने के लिए 23 मार्च, 1942 ई. को स्टैफर्ड ... के नेतृत्व में क्रिप्स मिशन भेजा।
- क्रिप्स ... ...े साथ कांग्रेस के अधिकारी वार्ताकार पंडित जवाह... लाल नेहरू और मौलाना आजाद थे।
- ... ...स्ताव 30 मार्च, 1942 ई. को प्रस्तुत किया गया।
- ...समें भारतीयों के आगे यह प्रस्ताव रखा कि यदि द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीय उनका साथ देंगे तो युद्ध के बाद एक भारतीय संघ बनाया जाएगा। राज्यों की स्वयत्तता दी जाएगी। वायसराय के परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ा... ...ी जाएगी। एक बार कौंसिल का गठन किया जा... ... ...में भारतीय भी होंगे।
- इस प्रस्ताव को कांग्रेस एवं मुस्लिम ... ...ों ने अस्वीकार कर दिया। अंतत: क्रिप्स प्र...ाव असफल हो गया।
- गांधीजी ने इसपर कहा कि यह एक आगे की तारीख की चेक (Post Dated Che...e) था।
- जवाहर लाल नेहरू न... ...े कहा कि यह एक आगे की तारीख का चेक था जिस... ...ा बैंक ...ष्ट होने वाला था।

भारत छोड़ो आंदोलन

- क्रिप... प्रस्ताव ... असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आ... ... का प्रस्ताव रखा इन्होंने इस आंदोलन की रूप ... ... करने की जिम्मेदारी जवाहर लाल नेहरू को दी।
- 1 अ... को तिलक दिवस पर इलाहाबाद में पण्डित नेहरू ने ..., **"हम आग के साथ खेलने जा रहे हैं। हम दोधारी तलवार का प्रयोग करने जा रहे हैं, जिसकी चोट उल्टे हमारे ऊपर पड़ सकती है"**।
- इस आंदोलन नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव 14 जुलाई, 1942 ई. को कांग्रेस के वर्धा अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया था।
- यह आंदोलन 8 अगस्त, 1942 ई. को मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान से प्रारंभ होना था किन्तु अंग्रेजों ने 9 अगस्त, को Operation Zero Hour के तहत सभी नेताओं को रात में ही गिरफ्तार कर लिया। अत: यह आंदोलन नेतृत्वविहिन हो गया।
- राजेन्द्र प्रसाद को पटना के बांकीपुर जेल में गिरफ्तार किया गया।
- जय प्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में गिरफ्तार किया गया किन्तु वे जेल का दीवार फांद कर भाग गए। तथा अन्य आंदोलनकारियों को संगठित कर **आजाद दस्ता** का गठन किया।
- महात्मा गाँधी तथा सरोजनी नायडू को आगा खाँ पैलेस में गिरफ्तार किया गया।
- आगा खाँ पैलेस में कैद के समय महात्मा गांधी के स्वास्थ्य में आमरण अनशन के कारण तेजी से गिरावट आ रही थी। चिकित्सकों के परामर्श पर भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा विचार किया गया कि अगर गांधीजी मर जाते हैं, तो बंबई सरकार, प्रांतीय सरकारों के पास 'रुबिकॉन' कूट शब्द भेज देगी। इसे ही ऑपरेशन रूबिकॉन कहते है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- भारत छोड़ो का नारा यूसूफ मेहर अली ने दिया था।
- इस आंदोलन के समय महात्मा गांधी के साथ अमेरिकी पत्रकार लूई फिशर थे।
- गुप्त रूप से मदन मोहन मालवीय ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया इन्हें महामना कहा जाता है।
- बम्बई तथा नासिक में भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई। उषा मेहता, राम मनोहर लोहिया एवं वी.एम. खाकर ने भूमिगत कांग्रेस रेडियों का संचालन किया।
- 9 अगस्त, 1942 ई. को महात्मा गाँधी ने करो या मरो का नारा दिया।
- भारत छोड़ो आंदोलन को अगस्त क्रांति भी कहा जाता है।
- इसी आंदोलन के दौरान 11 अगस्त, 1942 ई. को पटना सचिवालय पर तिरंगा झंडा लहराने के लिए विद्यार्थी का एक समूह आगे बढ़ा जिस पर पटना के जिलाधिकारी आर्यस ने गोली चलवा दी जिसमें सात विद्यार्थी शहीद हो गए।
- इस घटना को सचिवालय हत्याकाण्ड कहते हैं।
- इस आंदोलन के दौरान रेल पटरी उखाड़ने की सबसे ज्यादा घटना बिहार के मुंगेर में हुई थी।
- इसी आंदोलन के दौरान बलिया में चितु पाण्डेय ने अपनी स्वतंत्र सरकार की स्थापना कर दिया।
- इस आंदोलन के दौरान बड़े नेताओं के गिरफ्तारी के बाद मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में कांग्रेस का झंडा अरूणा आसफ अली ने फहराया था।
- कनकसता बरूआ (असम) भारत छोड़ो आंदोलन के समय गोहपुर पुलिस थाने पर तिरंगा फहराने के दौरान पुलिस गोलीबारी में शहीद हो गई थी।
- सतारा में नानापाटिल तथा वाई.बी. चौहान के द्वारा सरकार की स्थापना की गई जो सबसे लम्बे समय तक चलने वाली सरकार थी।
- इस आंदोलन में अरूणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, उषा मेहता आदि महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।
- इस आंदोलन में हिन्दू महासभा, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया, यूनियन पार्टी ऑफ पंजाब एवं मुस्लिम लीग ने भाग नहीं लिया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन के उपरांत सी. राजगोपालाचारी ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच संवैधानिक गतिरोध को दूर करने लिए 1944 ई. में 'दी वे आउट' नामक अपना प्रपत्र जारी किया था।
- इस आंदोलन के समय भारत के प्रधान सेनापति लॉर्ड वेवेल जबकि गवर्नर (वायसराय) लॉर्ड लिनलिथगो थे।
- इस समय के वायसराय लिनलिथगो ने भारतीयों के दमन के लिए हवाई जहाज से गोली चलाने का निर्णय लिया, परंतु यह आंदोलन स्वत: समाप्त हो गया।

वेवेल योजना

- लिनलिथगो के बाद भारत के वायसराय वेवेल बने इन्होंने 21 मार्च, 1945 ई. को भारत के सभी राजनीतिक दलों में आपसी समन्वय बनाने के लिए तथा भारत की स्थिति सामान्य करने के लिए 14 जून, 1945 ई. को एक योजना बनाई। इस योजना को ही वेवेल योजना कहते हैं। इस योजना के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल थे।

इस योजना के प्रमुख प्रावधान निम्न थे-

1. केन्द्र में एक नई कार्यकारी परिषद का गठन किया जाएगा। जिसमें वायसराय तथा कमांडर-इन-चीफ के अतिरिक्त शेष सदस्य भारतीय होंगे।
2. इसके कार्यकारी परिषद में हिन्दुओं एवं मुसलमानों की संख्या बराबर होगी।
3. कांग्रेस का नेता शीघ्र ही रिहा कर दिए जायेंगे।
4. गवर्नर जनरल बिना किसी कारण के निषेधाधिकार (वीटो) का प्रयोग नहीं करेगा।

- वेवेल योजना पर विचार विमर्श करने के लिए भारत के ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसे शिमला सम्मेलन कहते हैं।

शिमला सम्मेलन

- वेवल योजना के तहत् 25 जून से 14 जुलाई, 1945 ई. तक शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।
- इस सम्मेलन में विभिन्न राजनीतिक दलों के 21 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- मुस्लिम लीग की ओर से जिन्ना तथा कांग्रेस की ओर से अबुल कलाम आजाद ने भाग लिया।
- गांधीजी ने इस सम्मेलन में भाग नहीं लिए थे जबकि वे इस सम्मेलन के दौरान शिमला ही में थे।

इसमें वेवेल योजना के प्रावधानों को बताया गया जिसकी मुख्य बातें निम्नलिखित है–

(i) वायसराय के 14 सदस्यी परिषद में वायसराय तथा सेनापति का पद ब्रिटेन के पास रहेगा। शेष 12 पदों पर भारतीय रहेंगें।

(ii) परिषद में भारतीय 12 सदस्यों में 6 मुस्लिम तथा 6 हिन्दू सदस्य रहेंगे। अर्थात हिन्दू तथा मुस्लिम की संख्या समान रहेगी।

(iii) द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद भारतीय खुद का संविधान बनाएंगे।

➢ विवाद का कारण

- मुस्लिम लीग का कहना था की 6 मुस्लिम सदस्य का चुनाव मुस्लिम लीग से ही किया जाए, जिस पर कांग्रेस सहमत नहीं थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- जिस कारण 14 जुलाई, 1945 ई. को लॉर्ड वेवेल ने यह घोषणा कर दिया कि शिमला सम्मेलन विफल हो गया।
- अबुल कलाम आजाद ने कहा था कि शिमला सम्मेलन की विफलता भारत के राजनीतिक इतिहास में **'एक जल विभाजक'** की सूचक थी।
- इस सम्मेलन के विफलता के बाद मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवायी दिवस मनाया।

नौसेना विद्रोह

- INS तलवार के सैनिकों ने 18 फरवरी, 1946 ई. को भेदभाव के कारण विद्रोह कर दिया। देखते-ही-देखते विद्रोहियों की संख्या 5000 हो गई।
- इन सैनिकों ने आजाद हिंद फौज का बिल्ला (logo) लगाया तथा आजाद हिंद फौज का झंडा लहराया जिस पर दहाड़ता हुआ शेर का चिन्ह बना हुआ था।
- ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह का कठोरतापूर्वक दमन किया तथा **एडमिरल गोलफ्रेड** को आदेश दिया कि 'चाहे संपूर्ण नौ-सैनिक शक्ति नष्ट हो जाए, परंतु इसका दमन जल्द-से-जल्द कर दिया जाए'।
- सरदार पटेल के मध्यस्थता में 25 फरवरी, 1946 ई. को विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसे ही नौ सेना विद्रोह कहते हैं।

कैबिनेट मिशन

- इंग्लैंड के लेबर पार्टी के प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली ने यह घोषणा किया कि 1948 ई. तक ब्रिटिश हिन्दुस्तान छोड़ देंगे।
- इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए एटली ने अपने कैबिनेट मंत्रियों को भारत भेजा जिसे कैबिनेट मिशन कहते हैं।
- यह मिशन 29 मार्च, 1946 ई. को भारत आया था जिसमें 3 मंत्री थे।
  (i) सर स्टैफोर्ड क्रिप्स
  (ii) ए.वी. अलेक्जेंडर
  (iii) लॉर्ड पेथिक लारेंस

Trick :– KAL

- कैबिनेट मिशन के अध्यक्ष सर स्टैफोर्ड क्रिप्स, नौ सेना मंत्री ए.वी. अलेक्जेंडर तथा भारत सचिव लॉर्ड पेथिक लारेंस थे।
- कैबिनेट मिशन ने घोषणा की कि ''इस मिशन का उद्देश्य भारत की अंतरिम सरकार के गठन के लिए आवश्यक प्रबंध करना तथा संविधान का निर्माण करने के लिए एक कार्य-प्रणाली तैयार करना है।''

➤ **कैबिनेट मिशन में दो प्रावधान किए–**

(i) संविधान सभा– जिसमें 389 सदस्य थे।

(ii) अंतरिम सरकार (Provisional Government)– अंतरिम सरकार के अध्यक्ष लॉर्ड वेवेल थे। कैबिनेट मिशन ने पृथक पाकिस्तान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया जिस कारण भारत में साम्प्रदायिक दंगे बढ़ने लगे।

माउंटबेटन योजना

- 27 मार्च, 1947 ई. को लॉर्ड माउंटबेटन 34वें वायसराय बनाकर भारत भेजा एवं उन्हें यह विशेष हिदायत दिया गया कि यथासंभव भारत को संयुक्त रखा जाए।
- माउंटबेटन ने भारत को संयुक्त रखने का प्रयास किया किन्तु साम्प्रदायिक तनाव के कारण बालकन प्लान के तहत भारत का विभाजन कर दिया गया।
- 2 अप्रैल, 1947 ई. को लॉर्ड माउंटबेटन ने गांधीजी से मुलाकात की। गांधीजी ने सुझाव दिया कि जिन्ना को सरकार बनाने दिया जाए, कम-से-कम इससे देश का विभाजन तो रूक जाएगा, परंतु गांधीजी के इस सुझाव का जवाहरलाल नेहरू तथा वल्लभभाई पटेल ने विरोध किया।
- 3 जून, 1947 ई. को भारत विभाजन योजना प्रस्तुत कर दी जिसे **माउंटबेटन योजना** के नाम से जाना जाता है।
- जुलाई 1946 ई. में कैबिनेट-मिशन के अनुसार संविधान सभा का निर्वाचन हुए।
- 4 जुलाई 1947 ई. को भारत के स्वतंत्रता का विधेयक ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया।
- 18 जुलाई को भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पारित हो गया।
- 14 अगस्त को पाकिस्तान का निर्माण हुआ तथा 15 अगस्त को भारत को स्वतंत्रता मिली।

अंतरिम सरकार

- इसका निर्माण क्लीमेट एटली ने 2 सितम्बर, 1946 ई. में किया उस समय वायसराय लॉर्ड वेवेल थे।
- अंतरिम सरकार के अध्यक्ष लॉर्ड वेवेल थे तथा उपाध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे।

➤ **अंतरिम सरकार के मंत्री–**

(i) जवाहर लाल नेहरू - प्रधानमंत्री
(ii) सरदार पटेल - गृह, सुचना प्रसारण
(iii) राजेन्द्र प्रसाद - कृषि एवं खाद्य आपूर्ति
(iv) बलदेव सिंह - रक्षा मंत्री
(v) जान मेथाई - उद्योग मंत्री
(vi) लियाकत अली - वित्त मंत्री
(vii) अरुणा असफ अली - रेल मंत्री
(viii) होमी जहांगीर भाभा - ऊर्जा मंत्री
(ix) योगेन्द्र नाथ - कानून मंत्री
(x) राजगोपालाचारी - शिक्षा मंत्री
(xi) जगजीवन राम - श्रम मंत्री

Note :– 1951-52 ई. के चुनाव के फलस्वरूप बनने वाली पहली सरकार में विदेश मंत्री जवाहर लाल नेहरू तथा शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

भारतीय प्रेस का विकास

- भारत में प्रेस का प्रारंभ 1556 ई. में पुर्तगालियों ने गोवा से किया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1684 ई. में बंबई में अपना पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया।
- 1780 ई. में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने भारत का पहला अखबार द बंगाल गजट या द कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर नाम से प्रकाशित किया।
- 1780 ई. में ही प्रकाशित 'इंडिया गजट' दूसरा भारतीय पत्र था।
- सर्वप्रथम प्रेस सेंसरशिप लॉर्ड वेलेजली ने 1799 ई. में लागू की थी।
- किसी भी भारतीय द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित पहला समाचार-पत्र बंगाल गजट था, जिसका प्रकाशन गंगाधर भट्टाचार्य ने किया, जबकि हिन्दी में प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र उदंड मार्तंड था, जिसका प्रकाशन 1826 ई. में कलकत्ता से जुगल किशोर ने किया था।
- भारत में राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। जिन्होंने सप्ताहिक समाचार पत्र स[illegible]द कौमुदी (1821 ई.), फारसी भाषा में मिरातुल अखबार (1822 ई.) तथा अंग्रेजी भाषा में ब्रह्मनिकल का प्रकाश[illegible] किया।
- राजा राममोहन राय के सामाजिक तथा धार्मि[illegible] विचारों के विरोध में 1822 ई. में **'समाचार चंद्रिका'** [illegible] प्रकाशन भवानीचरण वन्द्योपाध्याय द्वारा कलकत्ता से कि[illegible] गया तथा बम्बई से 1822 ई. में गुजराती भाषा में दैनि[illegible] **[illegible] समाचार** का फर्दूनजी ने प्रकाश किया।
- 1851 ई. में दादा भाई नौरोजी [illegible] 'रस्[illegible]फता[illegible]' तथा 'अखबारे सौदागर' का प्रकाशन [illegible]जराती [illegible] किया गया।
- 'हिन्दुस्तानी' तथा 'एडवोकेट ऑफ इ[illegible]डया' का संपादन भी दादा भाई नौरोजी ने किया।
- 1853 ई. में हरिश्चन्[illegible] [illegible] ने हिन्दु पैट्रियाट का प्रकाशन कलकत्ता से कि[illegible]
- गणेश शंकर विद्यार्थी के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र **प्रताप** के माध्यम से वि[illegible]ह पथिक ने बिजौलिया आंदोलन पूरे भारत में च[illegible] [illegible]प्रिय बना दिया।
- क्रिस्टो[illegible]रदास पाल को भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार कहा जा[illegible]
- य[illegible]श्चन्द्र मुखर्जी के मृत्यु के बाद इनके पत्रिका हिन्दु पैट्रियाट का संपादक बना था।

अनुज्ञप्ति नियम (The Licensing Regulation)

- यह अधिनियम जॉन एड्मस द्वारा पारित किया गया था। इस अधिनियम के तहत मुद्रा तथा प्रकाशक को प्रिंटिंग प्रेस स्था[illegible] करने के लिए लाइसेंस लेना पड़ता था।
- इस अधिनियम के तहत 1823 ई. में मिरात-उल [illegible]ख़बार को प्रतिबंधित कर दिया गया था।

वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट

- 1878 ई. में लॉर्ड रिटन ने भारतीय [illegible]स का [illegible]ला घोटने वाला अधिनियम वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लाया।
- इस अधिनियम को मुँह बंद कर[illegible] वाला अधिनियम कहा गया है।
- इस एक्ट के त[illegible] जिला म[illegible]र को यह अधिकार था कि वह किसी भी भार[illegible] [illegible]षा के सम[illegible]चार पत्र से बॉण्ड पेपर पर हस्ताक्षर करवा ल[illegible] कि वह कोई भी ऐसी सामग्री नहीं छापेगा जो सरकार वि[illegible]ी हो।
- यह भारती[illegible] [illegible]षाओं म छपे जानेवाले अखबारों पर लागू होता था।
- इसक[illegible] [illegible] अखबार छापने से पहले अंग्रेजों से अनुमती लेनी होती थी।
- पत्रकारि[illegible] के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा सजा पाने वाले प्रथम भार[illegible]य बालगंगाधर तिलक थे।
- इस अधिनियम के द्वारा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की पत्रिका सोम प्रकाश को प्रतिबंधित कर दिया गया था।
- वर्नाक्यूलर एक्ट से बचने के लिए शिशिर कुमार घोष तथा मोतीलाल घोष ने अपनी अमृत बाजार पत्रिका को बंगाली से अंग्रेजी में कर लिया था।
- पाइनियर अखबार ने वर्नाक्यूलर एक्ट का समर्थन किया था। क्योंकि पाइनियर अंग्रेजी भाषा का अखबार था।
- लॉर्ड रिपन ने 1882 ई. में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया।
- चाल्स मेडकाफ को भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

समाचार पत्र अधिनियम

- यह अधिनियम कर्जन की अलोकप्रिय नीतियों को दवाने के लिए सरकार ने 1908 ई. में द न्यूज पेपर एक्ट (समाचार पत्र अधिनियम) पारित किया।
- इस अधिनियम के तहत यदि कोई प्रकाशक समाचार पत्र में हिंसा अथवा हत्या प्रेरित करने वाले तथ्य छापेंगे तो प्रकाशक की सम्पति एवं मुद्राणालय को जब्त कर लिया जायेगा।
- इस अधिनियम के तहत बंगाल में वन्दे मातरम्, संध्या तथा यूगांतर देशी समाचार पत्रों को बंद करके उनपर मुकदमा चलाया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

प्रमुख आधुनिक भारतीय समाचार पत्र

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ	भाषा	वर्ष	सम्पादक/संस्थापक
द बंगाल गजट	अंग्रेजी	1780	जेम्स ऑगस्टस हिक्की (आयरिश)
इण्डिया गजट	अंग्रेजी	1780	हेनरी विवियन डिरोजियो
बंगाल गजट	अंग्रेजी	1818	गंगाधर भट्टाचार्य
समाचार दर्पण	बंगाली	1821	जे.सी. मार्शमैन
संवाद कौमुदी	बंगाली	1821	राजाराम मोहन राय
मिरातुल अखबार	फारसी	1822	राजाराम मोहन राय
जाम-ए-जहाँनुमा	उर्दू	1822	राजाराम मोहन राय
बाम्बे समाचार	गुजराती	1822	फर्दूनजी मार्जबान
उदन्त मार्तण्ड	हिन्दी	1826	जुगल किशोर
दर्पण	मराठी	1832	बाल शास्त्री
बाम्बे टाइम्स	अंग्रेजी	1838	थामस बेनेट/राबर्ट नाइट
रास्त गोफ्तार	गुजराती	1851	दादा भाई नौरोजी
हिन्दू पैट्रियाट	अंग्रेजी	1853	गिरीश चन्द्र घोष बाद में हरिश्चन्द मुखर्जी
सोम प्रकाश	बंगाली	1859	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
टाइम्स ऑफ इण्डिया	अंग्रेजी	1861	रॉबर्ट नाइट
पायनियर	अंग्रेजी	1865	जॉर्ज ऐलन
अमृत बाजार प्रत्रिका	बांग्ला	1868	मोती लाल घोष एवं शिशिर घोष
केसरी	मराठी	1881	बाल गंगाधर तिलक
मराठी	अंग्रेजी	1881	बाल गंगाधर तिलक
युगान्तर		1906	बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त दादा भाई नौरोजी
संध्या		1906	ब्रह्मबांधव उपाध्याय
वन्देमातरम्	अंग्रेजी	1906	अरविन्द्र घोष तथा विपिन चन्द्र पाल
वन्देमातरम्	अंग्रेजी	1909	लाला हरदयाल
द लीडर	अंग्रेजी	1909	मदन मोहन मालवीय
कामरेड	अंग्रेजी	1911	मौलाना मु. अली
अल हिलाल	उर्दू	1912	मौ. अबुल कलाम आजाद
हमदर्द	उर्दू	1913	मौलाना मु. अली
प्रताप	हिन्दी	1913	गणेश शंकर विद्यार्थी
गदर	उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, पंजाबी, हिन्दी	1913	लाला हरदयाल
कामनवील	अंग्रेजी	1914	एनीबेसेंट
डॉन	अंग्रेजी	1917	मु. अली जिन्ना

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

न्यू इण्डिया	अंग्रेजी	1919	एनीबेसेंट
यंग इण्डिया	अंग्रेजी	1919	महात्मा गांधी
नवजीवन	हिन्दी-गुजराती	1919	महात्मा गांधी
आज	हिन्दी	1920	शिव प्रसाद गुप्ता
हिन्दूस्तान टाइम्स	अंग्रेजी	1922	के.एम. पणिक्कर
नवकाल	मराठी	1928	एन.आई. खांडेकर
हरिजन	गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी	1933	महात्मा गांधी
इन्कलाब	उर्दू	1937	खालिद अंसारी
नेशनल हेराल्ड	अंग्रेजी	1938	जवाहर लाल नेहरू

भारत में अंग्रेजो के द्वारा शिक्षा का विकास

- 1813 ई. की चार्टर एक्ट में शिक्षा के विकास हेतु 1 लाख रुपये तथा 1833 ई. के चार्टर एक्ट में 10 लाख के रुपये का प्रावधान किया गया।
- लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 1835 ई. में मैकाले की अध्यक्षता में शिक्षा के माध्यम के लिए एक आयोग का गठन किया गया।
- इस आयोग में मैकाले ने अंग्रेजी भाषा का पक्ष लिया।
- मैकाले आयोग के अनुशंसा के आधार पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाया गया।
- शिक्षा के विकास के लिए अधोगामी निस्पंदन (Down ward filtration theory) सिद्धांत को अपनाया गया।

➢ चार्ल्स बुड आयोग

- 1854 में चार्ल्स वुड का Educational despatch का रिपोर्ट आया। जिसमें प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा का वर्णन किया गया था।
- वुड का घोषणा पत्र को भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा भी कहा जाता है।
- इस समिति के अनुशंसा के आधार पर 1855 ई. में पाँच प्रातों में जन-शिक्षा विभाग का गठन किया गया।
- इस एक्ट के तहत 1857 ई. में कलकत्ता बंबई एवं मद्रास में तीन विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

➢ हंटर शिक्षा आयोग

- लॉर्ड रिपन के शासन काल में 1882 ई. में हंटर आयोग का गठन किया गया।
- हंटर आयोग ने प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के सुधार एवं विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत किया।
- 1882 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय तथा 1887 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
- लॉड कर्जन ने 1902 ई. में सर टामस रैले के नेतृत्व में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया।
- इस आयोग के अनुशंसा के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया है।
- 1906 ई. में बड़ौदा रिसासत में सर्वप्रथम अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान किया गया।
- 1916 ई. में जी.के. कर्वे ने पूना में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना करवाया।
- 1849 ई. में बैथ्यून (Bethune) ने कलकत्ता में पहली महिला विद्यालय की स्थापना करवाया और इसमें इसके सहायक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर थे।
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने 35 महिला विद्यालय की स्थापना करवाये थे।
- 1917 ई. में पटना विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की गई।
- 1917 ई. में सैडलर विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की गई।
- इस आयोग की अनुशंसा के आधार पर 12 वर्ष स्कूली शिक्षा के बाद विश्वविद्यालयी शिक्षा की अनुशंसा की गई (पहली बार ऑर्नस की शिक्षा)
- 1929 ई. में शिक्षा पर हार्टोग समिति का गठन किया गया।
- इस समिति के अनुशंसा के आधार पर विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा की अनुशंसा की गई।
- 1937 ई. में गांधीजी ने मूल शिक्षा (Basic educttion) पर वर्धा योजना को अपनी समाचार पत्र हरिजन में प्रस्तुत किया था।
- इस योजना का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ स्वावलंबन बनाना था। जिसके तहत हस्त उत्पादक कार्य का प्रशिक्षण देना था।
- मूल शिक्षा पर गठित आयोग के अध्यक्ष डॉ. जाकिर हुसैन थे।
- 1921 ई. में रविन्द्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना की थी।
- 1902 ई. में श्रद्धानन्द सरस्वती ने गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की थी।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- 1948 ई. में विश्वविद्यालय शिक्षा पर राधाकृष्णण आयोग का गठन किया गया। इस आयोग के अनुशंसा के आधार पर 1953 ई. में UGC (University Grant commisioson) का गठन किया गया।
- 1964 ई. में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में कोठारी आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने त्रिभाषा सूत्र और 10 + 2 + 3 के सिद्धांत की प्रतिपादन किया था।
- इस आयोग के अनुशंसा के आधार पर 1968 ई. में प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाया था।
- 42वीं संविधान संशोधन 1976 ई. द्वारा शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल किया गया।
- 1986 ई. में नई शिक्षा नीति लागू की गई।
- 86वीं संविधान संशोधन 2002 ई. द्वारा अनुच्छेद 21A के तहत शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया।
- 2009 ई. में शिक्षा के मौलिक अधिकार कानून संसद द्वारा पास किया गया जोकि 1 अप्रैल 2010 ई. से भारत में लागू किया गया।
- 34 वर्ष पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के स्थान पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. के कस्तुरी रंगन ने किया था। इस नई शिक्षा नीति के आधार पर शैक्षिक पाठ्यक्रम को 5 + 3 + 3 + 4 के आधार पर विभाजित किया गया।

भारत में बने कारखाना अधिनियम

- ब्रिटिश शासन काल में भारत में लंकाशायर के उद्योगपतियों के मांग पर 1875 ई. में प्रथम श्रम आयोग का गठन किया गया था। जिसका उद्देश्य भारतीय कारखानों में श्रमिकों के काम करने की परिस्थितियों का अध्ययन करना था।
- इस आधार पर ब्रिटिश सरकार ने भारत में कुल 6 कारखाना अधिनियम पारित किए–

➢ प्रथम कारखाना अधिनियम (1881 ई.)

- यह लॉर्ड रिपन के समय आया था।
- यह अधिनियम बालश्रम से संबंधित था, जिसमें 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में नहीं लगाया जा सकता था।
- इसके द्वारा 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों के काम करने की अवधि 9 घंटा निर्धारित की गई तथा कार्य अवधि में 1 घंटे का आराम एवं महिने में चार दिन छुट्टी की व्यवस्था निर्धारित की गई।

➢ द्वितीय कारखाना अधिनियम (1891 ई.)

- यह लॅसडाउन के समय आया था।
- इसके द्वारा कार्य करने की अधिकतम अवधि 11 घंटे निर्धारित की गई इसमें रात के समय महिलाओं के कार्य करने पर प्रतिबंध लगया गया था।
- इस अधिनियम के तहत कारखानों में स्वच्छ पेयजल के आपूर्ति एवं सफाई हेतु स्वयं नियम बनाने का प्रावधान किया गया।

➢ तीसरा कारखाना अधिनियम (1911 ई.)

- यह हार्डिंग द्वितीय के समय आया था।
- इसके द्वारा पुरुषों के कार्य करने की अधिकतम अवधि 12 घंटा निर्धारित की गई।
- इस अधिनियम में अल्पायु के बच्चों को कारखानों में 7 बजे संध्या से 5 बजे सुबह के बीच कार्य करने से प्रतिबंधित कर दिया गया।

➢ चौथा कारखाना अधिनियम (1922 ई.)

- यह लॉर्ड रिडिंग के समय में आया था।
- इसमें बच्चों की काम करने की अवधि 6 घंटे की गई।
- इस अधिनियम के तहत ओवर टाइम श्रम करने हेतु अतिरिक्त वेतन देने की व्यवस्था की गई।
- यह कारखाना अधिनियम केवल फैक्ट्रियों पर लागू होता था।

➢ पांचवां कारखाना अधिनियम (1934 ई.)

- यह अधिनियम लार्ड विलिंगटन के समय में आया था।
- इस अधिनियम के तहत मौसमी और गैर मौसमी कारखानों में [illegible] किया गया।
- इस अधिनियम के तहत बच्चों की कार्य अवधि 5 घंटे निश्चित की गई।
- इस अधिनियम में श्रमिकों के चिकित्सा एवं आराम की व्यवस्था का प्रबंध किया गया।

➢ छठां कारखाना अधिनियम (1946 ई.)

- यह अधिनियम लॉर्ड वैवेल के समय आया था।
- इस अधिनियम के तहत नियमित कारखानों में श्रमिकों की कार्य अवधि 9 घंटे निश्चित की गई।
- इस अधिनियम में कैण्टीन की व्यवस्था की गई।
- यह भारत का अंतिम कारखाना अधिनियम था।

Note :– स्वतंत्र भारत का प्रथम विस्तृत कारखाना अधिनियम 1948 ई. में लाया गया।

गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय

- गवर्नर अथवा गवर्नर जनरल का पद भारत में कंपनी के सर्वोच्च पदाधिकारी को प्रदान किया जाता था। गवर्नर जनरल ब्रिटिश भारत का एक सर्वोच्च होता था। यह पद केवल अंग्रेजों के लिए आरक्षित था।
- 1858 ई. तक गवर्नर जनरल को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के निर्देशकों द्वारा चयनित किया जाता था और वह उन्हीं के प्रति उत्तरदायी होता था। 1858 ई. के अधिनियम के द्वारा गवर्नर जनरल को वायसराय कहा जाने लगा। और अब उसकी नियुक्ति में ब्रिटेन के माहाराजा, ब्रिटिश सरकार और भारत के राज्य सचिव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

> **राबर्ट क्लाइव (1757–1760 ई.)**

- इसने बंगाल में द्वैध शासन प्रारंभ किया।
- इसने कंपनी के कर्मचारियों द्वारा उपहार लेने पर रोक लगा दी तथा सोसाइटी फॉर ट्रेड की स्थापना की।
- इसे 'भविष्य का अग्रदुत' एवं भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।

> **वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785 ई.)**

- वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का अंतिम गवर्नर तथा बंगाल का पहला गवर्नर - जनरल था।
- भारत में वारेन हेस्टिंगस को न्यायिक सेवा का जनक कहा जाता है। उसने प्रत्येक जिले में सर्वप्रथम एक दीवानी तथा एक फौजदारी न्यायालय की स्थापना की।
- इसके शासनकाल में ही 1773 ई. के रेग्यूलेटिंग एक्ट के तहत कलकत्ता में एक उच्चतम न्यायालय के स्थापना की गई।
- इसका मुख्य न्यायाधीश एलिजा इम्पे तथा तीन अन्य न्यायाधीश चैम्बर्ज, लिमैस्टर एवं हाइड थे।
- 1780 ई. में भारत का पहला समाचार-पत्र 'द बंगाल गजट' का प्रकाशन जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा किया गया।
- इसने 1781 ई. में कलकत्ता में प्रथम मदरसा स्थापित किया।
- इसके संरक्षण में चार्ल्स विलकिंस ने भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद तथा सर विलियम जोंस ने 1784 ई. में द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की।
- इसी ने क्लाइव के द्वैध-शासन को बंगाल से समाप्त कर दिया।
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-85) एवं द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84) हेस्टिंग्स के शासनकाल में ही लड़ा गया।
- यह बंगाली तथा अरबी भाषा का अच्छा जानकार था। जब यह लंदन लौट कर गया तो इसपर महाभियोग लाया गया किन्तु पारित नहीं हो पाया।

> **लॉर्ड कॉर्नवालिस (1786–93 ई.)**

- इसे नागरिक सेवा का जनक कहते हैं।
- कॉर्नवालिस को पुलिस सेवा का जन्म दाता कहा जाता है।
- इसने कर्मचारियों का वेतन बढ़ाया, स्थायी बंदोबस्त लाया। जमींदारों की शक्ति को कम किया, दारोगा का पद लाया तथा चल अदालत की स्थापना किया।
- इसने कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, ढाका और पटना में प्रांतीय न्यायालयों की स्थापना की।
- इसका मकबरा उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में है।

> **लॉर्ड वेलेजली (1798–1805 ई.)**

- लॉर्ड वेलेजली को भारत में सहायक संधि का जनक माना जाता है। इसके तहत सर्वप्रथम हैदराबाद को ब्रिटिश राज्य में मिलाया गया।
- यह स्वयं को बंगाल का शेर कहते थे।
- इसने सिविल सेवको के प्रशिक्षण हेतु बंगाल में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कलकत्ता में की थी।

> **लार्ड हेस्टिंग्स (1818–1823 ई.)**

- इसके समय नेपाल युद्ध हुआ इसने संगोली के संधि (1816 ई.) के द्वारा नेपाल को अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करवाया।
- इसी के समय 1822 ई. में बंगाल में काश्तकारी अधिनियम को लागू किया गया।
- इसने पिण्डारियों का अंत कर दिया तथा मद्रास में रैयतवाड़ी व्यवस्था लाया और शिक्षा पर प्रतिवर्ष 1 लाख रुपया खर्च करने का प्रावधान किया।

> **लॉर्ड एमहर्स्ट (1823–1828 ई.)**

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-वर्मा युद्ध (1824-26 ई.) हुआ जिसमें बर्मा पाराजित हुआ और 1826 ई. के मध्य दोनों के बीच यान्डबू (यांदबू) की संधि हुई।
- इन्होंने 1824 ई. में कालकाता में 'गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज' की स्थापना की।

> **विलियम बेंटिक (1828–1835 ई.)**

- 1833 ई. के चार्टर अधिनियम द्वारा बंगाल के गवर्नर-जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया जिसके तहत भारत का प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक बना।
- इसने राजा राममोहन राय के सहयोग से 1829 ई. में सती प्रथा को समाप्त किया।
- कर्नल स्लीमैन की सहायता से ठगी प्रथा को समाप्त कर दिया, शिशु एवं बालिका हत्या पर भी प्रतिबंध लगा दिया।
- नर बलि की प्रथा को भी बंद करा दिया।
- इसी ने कलकत्ता में एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना करवाई।
- बेंटिक का सबसे उल्लेखनीय सुधार नौकरियों में भारतीयों को उच्च स्थान प्रदान करना था।
- 1832 में बेंटिक ने दास प्रथा का अन्त कर दिया।

> **चार्ल्स मेटकॉफ (1835–1836 ई.)**

- चार्ल्स मेटकॉफ ने समाचार-पत्रों से प्रतिबंध हटा दिया, जिसके कारण इसे समाचार-पत्रों का मुक्तिदाता कहा जाता है।

> **लॉर्ड ऑकलैंड (1836–1842 ई.)**

- 1839 में कलकत्ता से दिल्ली तक शेरशाह सूरी मार्ग का पुनर्निर्माण किया गया और इसका नाम बदलकर ग्रैंड ट्रंक (G.T.) रोड कर दिया ग्या।
- इसने 'ब्लैक ऐक्ट' को पारित करवाया गया जिसके द्वारा काले एवं गोरे का विभेद खत्म कर दिया गया।
- तीर्थ यात्रा कर बन्द कर दिया गया। दुर्गा-पूजा पर लगे प्रतिबन्ध को भी हटा दिये गये।
- इसके समय सिंचाई के लिए अनेक नहरों का निर्माण किया गया।

> **लॉर्ड एलनबरो (1842–1844 ई.)**

- 1843 ई. के एक्ट-V के द्वारा दास-प्रथा उन्मूलन कानून को लागू किया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इसने कुशल अकर्मण्यता की नीति का पालन किया। इसलिए इसके कार्यकाल को कुशल अकर्मण्यता की नीति का काल कहा जाता है।

➢ लॉर्ड हार्डिंग प्रथम (1844–1848 ई.)

- इसी के शासन काल में 1844 ई. में नरबलि प्रथा का निषेध किया गया।
- 1845-46 ई. में प्रथम आंग्ल सिख युद्ध हार्डिंग के काल में हुआ था।

➢ लॉर्ड डलहौजी (1848–1856 ई.)

- इसे आधुनिक भारत का जनक कहते हैं।
- इसने 1848 में राज्य हड़पनीति (व्यपगत सिद्धांत / Doctring of Lapes) लाया। जिसके तहत सबसे पहले सतारा 1848 ई. में उसके बाद जैतपुर व संभलपुर 1849 ई. में,बघाट 1850 ई. में, उदयपुर 1852 ई. में, झाँसी 1853 ई. में तथा नागपुर को 1854 ई. में हड़प लिया गया।
- सबसे अंत में 1856 ई. में अवध के नवाब काजिद अली शाह पर कुशासन का आरोप लगाकर अवध को अंग्रेजी सम्राज्य में मिला लिया।
- भारत में पहली बार 16 अप्रैल, 1853 को बंबई से थाणे के बीच (34 किमी.) रेल इसी के शासन काल में चलाई गई।
- 1853 ई. में कलकत्ता से आगरा के बीच पहली बार बिजली से संचालित तार-सेवा की शुरूआत हुई।
- 1854 ई. में इन्होंने लोक निर्माण विभाग की स्थापना की गई जिसके अंतर्गत कई पुलों का निर्माण किया गया।
- इसने शिक्षा के क्षेत्र में 1854 ई. में Wood's Dispatch का नियम लाया, जिसे अंग्रेजी शिक्षा का मैगनाकांटा कहते हैं।
- इसने पंजाब पर अधिकार करके कोहिनूर हीरा इंगलैंड भेज दिया।

➢ लॉर्ड कैनिंग (1856–1862 ई.)

- कैनिंग कम्पनी के शासन के अधीन नियुक्त अन्तिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश क्राउन के अधीन नियुक्त प्रथम वायसराय था।
- इसी के समय में 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ तथा 1857 ई. में बंबई, मद्रास एवं कलकत्ता में एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- इसके समय में 1857 ई. का विद्रोह हुआ और इलाहाबाद के तहत ईस्ट इंडिया कम्पनी को समाप्त कर दिया गया।
- महालेखा परीक्षक पद का सृजन लॉर्ड कैनिंग के समय में 1857 ई. में हुआ था। स्वतंत्र भारत में इस पद का नाम नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कर दिया गया।
- 1861 ई. का भारतीय परिषद अधिनियम एवं भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम के तहत कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।

➢ लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862–1863 ई.)

- इसके समय वहावी आंदोलन का अंत हो गया जिसका मुख्य केंद्र पटना था।

➢ लॉर्ड मेयो (1869–1872 ई.)

- इसने पहली बार जनगणना प्रारंभ किया किन्तु अधूरा जनगणना किया।
- भारत में वित्तीय विकेंद्रीकरण का जनक लॉर्ड मेयो को माना जाता है। इसी ने अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना की।
- अंडमान यात्रा के दौरान इसकी हत्या एक अफगानी सैनिक ने कर दी।

➢ लॉर्ड नार्थब्रुक (1872–1876 ई.)

- इसके समय 1872 ई. में सिविल मैरिज एक्ट पारित हुआ, जिसके तहत अंतर्जातीय विवाह को मान्यता दी गई।
- पंजाब में कूका विद्रोह (1872 ई.) इसी के काल में हुआ।

➢ लॉर्ड लिटन (1876–1880 ई.)

- लॉर्ड लिटन एक प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं साहित्यकार था। साहित्यकारों में इसे **ओवन मैरिडिथ** के नाम से जाना जाता था।
- इसी के शासन काल में रिचर्ड स्ट्रैची के अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन किया गया।
- इसने आर्म्स एक्ट द्वारा भारतीयों को हथियार रखने पर रोक लगा दिया।
- इसने सिविल सेवा का आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया।
- इसने भारतीय प्रेस का गला दबाने के लिए 1878 ई. में भारतीय समाचार पत्र अधिनियम अर्थात् वर्नाक्यूलर एक्ट लाया जिसके तहत भारतीय भाषाओं में अखबार छापने पर पहले अंग्रेजों को दिखाना होता था। अन्यथा अंग्रेज उसकी अखबार के साथ संपत्ति जब्त कर लेते थे।
- इस अधिनियम के तहत सबसे पहले सोम प्रकाश समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगाया गया था।
- ऐंग्लो प्राच्य महाविद्यालय की स्थापना लार्ड लिटन ने अलीगढ़ में की थी।

➢ लॉर्ड रिपन (1880 - 1884 ई.)

- इसने लिटन की गलतियों को सुधारने का प्रयास किया।
- इसके समय 1881 ई. में पहली बार पुर्ण जनगणना हुई।
- 1818 ई. में ही प्रथम कारखाना अधिनियम लाया गया।
- शिक्षा के लिए 1882 ई. में विलियम हण्टर की अध्यक्षता में हण्टर आयोग का गठन किया गया।
- इसने आर्म्स एक्ट तथा 1882 ई. में वर्नाक्यूलर एक्ट को समाप्त कर दिया।
- रिपन ने सिविल सेवा में प्रवेश की आयु 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- स्थायी स्वशासन की शुरूआत लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में ही 1882 ई. में हुई थी।
- इसके समय इलबर्ट बिल पारित हुआ। जिसके तहत भारतीय जज अंग्रेजों को सजा सुना सकते थे। जिस कारण अंग्रेजों ने विरोध कर विद्रोह शुरू कर दिया जिसे श्वेत विद्रोह कहा जाता था। बाद में इस बिल को वापस ले लिया गया।
- खुद अंग्रेजों ने रिपन को 'भारत में ब्रिटिश राज्य का शत्रु' की उपमा प्रदान किया।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने लॉर्ड रिपन को भारत के उद्धारक की उपाधि दी।

  Note :– फ्लोरेंस नाइटिंगेल इटली की नर्स थी। इन्हें Lady with the Lamp कहा जाता है। यह क्रिमिया युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा करती थी।

➢ लॉर्ड डफरिन (1884 - 1888 ई.)

- इसके कार्यकाल में ही 1885 ई. में ए.ओ. ह्यूम के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।
- इसने कांग्रेस को मुट्ठी भर लोगों का संगठन कहा था।

➢ लॉर्ड लैंसडाउन (1888 - 1894 ई.)

- इसके समय में ही भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा-रेखा (डूरंड रेखा) का निर्धारण हुआ था।
- इसने 1891 ई. का एज ऑफ कंसेंट एक्ट पारित किया, जिसमें लड़कियों की विवाह की आयु को 12 वर्ष कर दिया गया।
- सप्ताह में एक दिन छुट्टी की व्यवस्था इसी के समय में की गई।

➢ लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894–1899 ई.)

- लॉर्ड एल्गिन द्वितीय ने कहा था कि "भारत को तलवार के बल पर विजित किया गया है और तलवार के बल पर ही इसकी रक्षा की जाएगी।
- इसके शासन काल में बिहार, बंगाल, उत्तरप्रदेश, पंजाब एवं मध्य प्रांत में एक भीषण अकाल पड़ा जिसके लिए लॉयल कमीशन के नाम से अकाल आयोग का गठन किया गया।

➢ लॉर्ड कर्जन (1899–1905 ई.)

- इसके समय अत्यधिक आयोग का गठन किया गया जैसे 1900 ई. में सर एन्टनी मैकडॉनल की अध्यक्षता में आकाल आयोग, 1901 ई. में सर कॉलिन स्कॉट मॉनक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग, 1902 ई. में एंड्रयू फ्रेजर के नेतृत्व में पुलिस सुधार आयोग तथा 1902 ई. में टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया गया जिस कारण इन्हें आयोगों का कार्यकाल कहा जाता है।
- कर्जन ने ही 1904 ई. में ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा एवं मरम्मत के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना की।
- इसके समय में ही 16 अक्टूबर, 1905 ई. में बंगाल का विभाजन प्रभावी हुआ जिसे बंगाल में **शोक दिवस** के रूप में मनाया गया।
- 1095 ई. में राबर्टसन की अध्यक्ष में रेलवे बोर्ड का गठन किया।
- इसके समय में ही कलकत्ता में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का निर्माण हुआ।
- लोक सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए लॉर्ड कर्जन के समय में मुस्लिम सदस्यों का 'खान बहादुर' जबकि हिन्दू सदस्यों को, राय बहादुर की उपाधियाँ प्रदान करने की परंपरा शुरू हुई।

➢ लॉर्ड मिण्टो-II (1905–1910 ई.)

- 1906 ई. में ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना लार्ड मिन्टो के काल में आगा खाँ एवं सलीम उल्ला खाँ के द्वारा की गई।
- 1909 ई. में भारत के राज्य सचिव मार्ले थे और इन्होंने मार्ले मिंटो सुधार लाए जिसे 1909 का भारत शासन अधिनियम कहते हैं।
- इसके द्वारा मुसलमानों का पृथक निर्वाचक क्षेत्र दे दिया गया।
- कांग्रेस ने भी इस प्रस्ताव को 1916 ई. में लखनऊ अधिवेशन में स्वीकार कर लिया।
- मिण्टो II को भारत में समप्रदायिकता का जनक कहते हैं।
- राजेंद्र प्रसाद ने लॉर्ड मिंटो को पाकिस्तान का जन्मदाता माना है।

➢ लॉर्ड हार्डिंग-II (1910–1916 ई.)

- इसके समय 12 दिसंबर, 1911 ई. में ब्रिटेन के सम्राट जॉर्ज पंचम भारत आये थे।
- भारत में सर्वप्रथम हवाई डाक सेवा का आरम्भ इलाहाबाद के नैनी से 1911 ई. को शुरू किया गया।
- इसने बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया और 1 जनवरी, 1912 ई. को भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थांतरित कर दिया।
- इसके समय 1914 ई. में प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ था।
- इसी के समय में मदन मोहन मालवीय ने 1915 ई. में अखिल भारतीय हिंदू महासभा तथा 1916 ई. में बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
- हार्डिंग को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति 1916 में बनाया गया था।

➢ लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–1921 ई.)

- 1916 ई. में पूना में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- इन्हीं के कार्यकाल में अप्रैल 1919 ई. में रौलेट एक्ट को लागू किया गया।
- चेम्सफोर्ड के समय 1919-20 ई. में खिलाफत आन्दोलन और 1920-22 ई. में असहयोग आन्दोलन प्रारंभ हुआ था।
- 1919 ई. में 'मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार' अधिनियम पारित हुआ जिसके तहत प्रांतों में द्वैध शासन की स्थापना की गई एवं भारतीय विधानमंडल को बजट संबंधी अधिकार दिया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

➢ लॉर्ड रीडिंग (1921–1926 ई.)

- लॉर्ड रीडिंग के समय में ही 1 नवंबर, 1921 ई. को प्रिंस ऑफ वेल्स का भारत आगमन हुआ तथा इस दिन संपूर्ण भारत में हड़ताल का आयोजन किया गया।
- इसने 1922 ई. से आई.सी.एस. की परीक्षा इलाहाबाद एवं लंदन दोनों जगह कराने का निर्णय लिया।
- इनके समय चौरी-चौरा (गोरखपुर) काण्ड हुई, जिस कारण असहयोग आंदोलन समाप्त हो गया।
- भारत में पहली बार (ICS / UPSC) की परीक्षा 1922 ई. में इलाहाबाद में हुई।

➢ लॉर्ड इरविन (1926–1931 ई.)

- इसके समय में देशी रियासतों के संबंध में 1927 ई. में हार्टोग बटलर की अध्यक्षता में बटलर समिति का गठन किया गया।
- इसके समय में ही 1927 ई. में साइमन कमीशन की स्थापना हुई। जो 3 फरवरी, 1928 ई. को साइनम कमीशन बम्बई पहुँचा और इसका काफी विरोध किया गया।
- अक्टूबर 1929 ई. के 'दीपावली घोषणा' में इरविन ने घोषणा की कि भारत को 'डोमिनियन स्टेट' का दर्जा दिया जाएगा।
- 23 मार्च, 1929 ई. को लाहौर जेल में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दी गई।
- 1930 ई. में शारदा एक्ट लागू हुआ, जिसमें लड़कियों के विवाह का न्यूनतम आयु 14 वर्ष एवं लड़कों की आयु 18 वर्ष कर दी गई।
- इसी के समय 5 मार्च, 1931 ई. को गाँधी-इरविन समझौता हुआ।
- दाण्डी मार्च (12 मार्च, 1930 ई.), सविनय अवज्ञा आंदोलन (6 अप्रैल, 1930 ई.), प्रथम तथा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1930 ई. एवं 1931 ई.) इसी के समय में हुआ।

➢ लॉर्ड वेलिंगटन (1931–1936 ई.)

- वेलिंगटन ने 1915 ई. में कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में हिस्सा लिया था, उस समय वह गवर्नर था।
- तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुआ जिसमें इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त, 1932 ई. को साम्प्रदायिक पंचाट (कम्यूनल एवार्ड) की घोषणा की थी।
- इसके समय भारत शासन अधिनियम 1935 ई. पारित हुआ जिसके तहत वर्मा को भारत से अलग किया गया।
- इसके शासन काल में 1936 ई. में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई।

➢ लॉर्ड लिनलिथगो (1936–1943 ई.)

- इसके समय में ही पहली बार प्रांतीय चुनाव 1937 ई., अगस्त प्रस्ताव 1940 ई., क्रिप्स प्रस्ताव 1942 ई., भारत छोड़ो आंदोलन 8 अगस्त, 1942 ई. तथा आजाद हिन्द फौज का गठन 21 अक्टूबर, 1943 ई. को किया गया।
- इसके समय में द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45 ई.) की शुरूआत हुई।
- इसने भारतीयों से पूछे बिना भारत को इस युद्ध में शामिल करने की घोषणा कर दी, जिसके कारण कांग्रेस मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दे दिया। जिसे मुस्लिम लीग ने **मुक्ति दिवस** के रूप में मनाया।

➢ लॉर्ड वेवेल (1943–1947 ई.)

- 25 जून 1945 ई. को शिमला सम्मेलन लार्ड वेवेल द्वारा आहुत किया गया, किन्तु मुहम्मद अली जिन्ना की हठधर्मिता के कारण यह सम्मेलन असफल रहा।
- इसी के शासन काल में 24 मार्च, 1946 ई. को कैबिनेट मिशन भारत आया था।
- 2 सितम्बर 1946 ई. को नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा अंतरिम सरकार का गठन किया गया, जिसका अध्यक्ष वेवेल था।
- इंग्लैण्ड में लेबर पार्टी के प्रधानमंत्री लार्ड क्लीमेंट एटली द्वारा 20 फरवरी, 1947 ई. को हाउस ऑफ कॉमंस में उद्घोषणा की गई कि जून, 1948 ई. तक भारतीयों के हाथ में भारत की प्रभुसत्ता हस्तांतरित कर दी जायेगी।

➢ लॉर्ड माउण्टबेटन (1947–1948 ई.)

- यह ब्रिटिश भारत का अंतिम एवं स्वतंत्र भारत का प्रथम वायसराय था।
- इसके शासनकाल में ही भारत स्वतंत्रत हुआ एवं भारत और पाकिस्तान नामक दो स्वतंत्र राष्ट्रो की घोषणा की गई।

Remark :– इसने 3 जून, 1947 ई. को माउण्ट बेटन प्लान की घोषणा की, जिसमें भारत विभाजन की योजना अन्तर्निहित थी।

- भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम विधेयक को ब्रिटिश संसद में 4 जुलाई, 1947 को प्रस्तुत किया गया और 18 जुलाई, 1947 ई. को पारित किया गया।

➢ सी राजगोपालाचारी (1948–1950 ई.)

- यह स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल थे। 26 जनवरी 1950 ई. में जब संविधान पूर्ण रूप से लागू हुआ तब यह पद स्वत: ही समाप्त हो गया और राष्ट्रपति को पद सर्वोच्च हो गया क्योंकि 26 जनवरी 1950 ई. को भारत प्रजातंत्र के साथ-साथ गणराज्य राष्ट्र के रूप में भी स्थापित हुआ था।

गवर्नर जनरल एवं वायसराय

- बंगाल का गवर्नर – रार्बट क्लाईव
- बंगाल का अंतिम गर्वनर – वारेन हेस्टिंग्स
- बंगाल का पहला गर्वनर जनरल – वारेन हेस्टिंग्स
- बंगाल का अंतिम गर्वनर जनरल – विलियम बेंटिक
- भारत का पहला गर्वनर जनरल – विलियम बेंटिक
- भारत का अंतिम गर्वनर जनरल – लार्ड कैनिंग
- भारत का पहला वायसराय – लार्ड कैनिंग
- भारत का अंतिम वायसराय – माऊण्टवेटेन
- स्वतंत्र भारत का पहला गर्वनर जनरल – माऊण्टवेटेन
- स्वतंत्र भारत का अंतिम गर्वनर जनरल – राज गोपालाचारी

Note :– राज गोपालाचारी एक मात्र भारतीय गर्वनर जनरल थे।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1885

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नामकरण दादाभाई नौरोजी ने किया था।
- अंग्रेजों ने इसकी स्थापना एक सुरक्षा वॉल्व के रूप में किया था।

कांग्रेस का अधिवेशन

प्रथम अधिवेशन (1885)

- कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 1885 ई. में बम्बई में हुई। इस अधिवेशन की अध्यक्षता W.C. बनर्जी ने किया था।
- प्रारंभ में इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय संघ था किन्तु दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कर दिया गया।

द्वितीय अधिवेशन (1886)

- कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन 1886 में कलकत्ता में हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने किया।

Note:– दादा भाई नौरोजी तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष की अध्यक्षता की। 1886 ई. के कलकत्ता अधिवेशन, 1893 ई. के लाहौर अधिवेशन तथा 1906 ई. के कलकत्ता अधिवेशन।

तृतीय अधिवेशन (1887)

- यह अधिवेशन 1887 ई. में मद्रास में हुई थी। इस अधिवेशन की अध्यक्षता बदरूद्दीन तैय्यब जी ने किया था। ये कांग्रे... के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे।

चतुर्थ अधिवेशन (1888 ई.)

- यह अधिवेशन 1888 ई. में इलाहाबाद में हुआ। इ... के अध्यक्षता जार्ज यूल ने की थी।
- ये पहले अंग्रेज थे जिन्होंने कांग्रेस की अध्यक्ष... ...ने।

पाँचवां अधिवेशन (1889 ई.)

- यह अधिवेशन 1889 ई. में बम्बई में हु... था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सर विलियम बेडरबर्न के द्वा... की ग...
- ये दो बार अध्यक्ष बनने वाला प...ला ...ेज था।

छठा अधिवेशन (1890 ई.)

- यह अधिवेशन 1890 ई. में कलकत्ता में हुआ था।
- इस अधिवेशन की अध्यक्ष... फिरो... शाह मेहता ने की थी।

सातवां अधिवेशन (1... ई.)

- यह अधिवेशन 189... ...में नागपुर में हुआ था इस अधिवेशन के अध्यक्षता पी.आनन्द चार्लू ने की थी।
- इसी अधि... में कांग्रेस के नाम में पहली बार राष्ट्रीय शब्द जोड़ा ... है।

1896 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- ...अधिवेशन की अध्यक्षता रहीमतुल्ला सयानी के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में पहली बार भारत का राष्ट्रीय गीत- 'वन्दे मातरम्' गाया गया। जो बंकिम चंद्र चटर्जी की पुस्तक आनंदमठ् से लिया गया है।
- इसी अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने धन निष्कासन का सिद्धांत पेश किया था।

1905 ई. का बनारस अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले ने कि... था। इसी अधिवेशन में स्वदेशी आंदोलन पारित हुआ...।
- इस अधिवेशन में लाला लाजपत राय ने प्रथ... ...पत्य... को अपनाने का सुझाव दिया था।

1906 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता भी दा... ...ाई नौ...जी ने किया था। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने भारतीय जनता का लक्ष्य के रूप में 'स्वराज' को अपनाया।

1907 ई. का ...रत ...

- इस अधिवेशन के ... कांग्रेस का विभाजन दो वर्गों में हो गया। एक गरम ...ल तथा ...सरा ...म दल।
- इस अधिवे... में ... इसिलिए हुआ कि गरम दल वाले लाला ला...पत रा... ...ो अध्यक्ष बनाना चाहते थे। जबकि नरम दल ...ले रा... ...ी बोस को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अंत में रासबिह... बोस ने इस अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- 1907 ई. के विभाजन का मुख्य कारण था कि अंग्रेजी सरकार के साथ नरमपंथियों की वार्ता करने की क्षमता के बारे में चरमपंथियों में विश्वास का अभाव होना।

1908 ई. का मद्रास अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता रासबिहारी बोस के द्वारा किया गया। इसी अधिवेशन में कांग्रेस के लिए संविधान का निर्माण किया गया।

1911 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित विशन नारायण धर के द्वारा किया गया था।
- इसी अधिवेशन में पहली बार राष्ट्रगान 'जन-गन-मन' गाया गया। जिसकी रचयिता रविन्द्र नाथ टैगोर हैं।

1912 ई. का बांकीपुर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता आर. एन. मुधोलकर मालक द्वारा बांकीपुर (पटना) में किया गया।

1916 ई. का लखनऊ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में गरम दल, नरम दल तथा मुस्लिम लीग तीनों एक हो गए।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता बालगंगाधर तिलक ने करवाए थे।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग समझौते के मुख्य शिल्पीकार बालगंगाधर तिलक एवं मोहम्मद अली जिन्ना को कहा जाता है।
- कांग्रेस ने प्रथम बार मुस्लिम समुदाय के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकार किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस अधिवेशन में तिलक ने– "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा" का नारा दिया था।
- दक्षिण अफ्रिका से वापस लौटने के बाद महात्मा गाँधी सर्वप्रथम इसी अधिवेशन में पहली बार भाग लिये थे।

➢ 1917 ई. का कलकत्ता अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमति ऐनी बेसेंट के द्वारा की गई। यह कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष थी।
- सर्वप्रथम तिरंगें झंडे को कांग्रेस ने इसी अधिवेशन में अपनाया था।

➢ 1918 ई. का दिल्ली अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय के द्वारा की गई।
- इस अधिवेशन में नरम पंथिओं ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था।

➢ 1918 ई. का बम्बई विशेष अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता हसन इमाम के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में कांग्रेस का द्वितीय विभाजन हो गया।
- इस अधिवेशन को विवादस्पद मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार योजना के संदर्भ में बुलाया गया था।
- यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला विशेष अधिवेशन था।

➢ 1920 ई. का नागपुर अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षत चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य ने किया था। इस अधिवेशन में कॉंग्रेस का संविधान पारित हुआ।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पेश किया तथा पहली बार देशी रियासतों के प्रति नीति घोषित की गई।

➢ 1920 ई. का कलकत्ता विशेष अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षत लाला लाजपत राय ने किया था।
- इस अधिवेशन में असहयोग का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

➢ 1922 ई. का गया अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता C.R. दास के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस का तीसरा सांकेतिक विभाजन हुआ। इसी अधिवेशन में स्वराज पार्टी की बात हुई।

➢ 1923 ई. का काकीनाडा अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता मोलाना मोहम्मद अली जोहर के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन के तहत अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना की गई।

➢ 1923 ई. का दिल्ली विशेष अधिवेशन
- इस अधिवेशन का अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया। जो सबसे युवा अध्यक्ष थे।
- यह अधिवेशन परिवर्तनवादियों और स्वराजवादियों में बढ़ती हुई कटुता को दूर करने के लिए बुलाया गया था।

➢ 1924 ई. का बेलगाम अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया था।
- महात्मा गाँधी कांग्रेस के इसी एकमात्र अधिवेशन के अध्यक्षता किए थे।

➢ 1925 ई. का कानपुर अधिवेशन
- इसी अधिवेशन की अध्यक्षता सरोजिनी नायडू के द्वारा किया गया। ये पहली भारतीय महिला थी जो कांग्रेस की अध्यक्ष बनी।
- इस अधिवेशन में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रयोग किया गया था।
- इस अधिवेशन में ही विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का गायन किया गया।

Remark :- सरोजिनी नायडू स्वतंत्र भारत के पहली महिला राज्यपाल (उत्तर प्रदेश) बनी।

➢ 1926 ई. का गुवाहाटी अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीनिवास अयंगर के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन के तहत सभी सदस्यों को खादी वस्त्र पहनना अनिवार्य कर दिया गया।

➢ 1927 ई. का मद्रास अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी के द्वारा किया गया। इस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता की मांग की गई लेकिन गांधी जी के विरोध पर वापस ले लिया गया।
- इसी अधिवेशन में साइमन कमिशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया गया।

➢ 1929 ई. का लाहौर अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया। उन्होंने इसी अधिवेशन में सर्वप्रथम पूर्ण स्वराज की घोषणा की।
- इसी सम्मेलन में रावी नदी के तट पर नेहरू ने सर्वप्रथम तिरंगा फहराया।
- इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा।
- इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी 1930 ई. को मनाया गया।

➢ 1931 ई. का कराची अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता सरदार पटेल के द्वारा किया गया।
- इसी अधिवेशन में कांग्रेस के मंच से मूल अधिकार की मांग किया गया। जबकि मूल अधिकार की संकल्पना पंडित जवाहरलाल नहेरू ने प्रस्तावित किया था।
- इस अधिवेशन में गांधी इरवीन समझौते का अनुमोदन किया गया।
- इसी अधिवेशन के विरोध करने पर गांधीजी ने कहा था गांधी मर सकता है लेकिन गांधीवादी नहीं

➢ 1933 ई. का कलकत्ता अधिवेशन
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता नलनी सेन गुप्ता के द्वारा किया गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- यह आजादी से पहले अध्यक्ष बनने वाली कांग्रेस की तीसरी महिला तथा भारतीय महिला के संदर्भ में यह दूसरी महिला थी।

➢ 1934 ई. का बम्बई अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेश में प्रांतीय कांग्रेस समितियों को भंग कर दिया गया तथा कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की गई।

➢ 1936 ई. का लखनऊ अधिवेशन

- इस अधिवेशन को अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया।
- यह इस अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू के समाजवाद के विचार को प्रश्रय दिया गया अर्थात् कांग्रेस का लक्ष्य समाजवाद निर्धारित किया गया।

➢ 1937 ई. का फैजपुर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया।
- यह अधिवेशन किसी गांव (फैजपुर, महाराष्ट्र) में होने वाला पहला अधिवेशन था। इसी में ग्रामसभा का गठन किया गया।

➢ 1938 ई. का हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन में राष्ट्रीय नियोजन समिति की स्थापना हुई। इस समिति के प्रथम अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू बनें।

➢ 1939 ई. का त्रिपुरी (मध्यप्रदेश) अधिवेशन

- इस अधिवेशन में पहली बार अध्यक्ष पद को लेकर महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस में विवाद हुआ क्योंकि महात्मा गांधी पट्टाभि सीतारमैया को अध्यक्ष बनाना चाहते थे।
- अंततः पहली बार इस अधिवेशन में अध्यक्ष पद को लकर चुनाव हुआ और सुभाष चन्द्र बोस इस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए लेकिन सुभाष चन्द्र बोस ने इस पद को त्याग दिए।
- इसके बाद कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बने।

➢ 1940 ई. का रामगढ़ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया। जो सबसे लंबे समय (1940-45 ई.) तक अध्यक्ष के पद पर बने रहे।
- बिहार में यह तीसरा अधिवेशन जबकि वर्तमान झारखंड का पहला सम्मेलन था।

➢ 1942 ई. का बम्बई विशेष अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया।
- इसी अधिवेशन में भारत छोड़ो आन्दोलन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया।

➢ 1946 ई. का मेरठ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता जे.बी. कृपलानी के द्वारा किया गया। इनके काल में ही अंग्रेजों द्वारा सत्ता हस्तांतरित किया।

Note :– आजादी के समय कांग्रेस अध्यक्ष जे.बी. कृपलानी थे।

- स्वतंत्रता के बाद 1969 ई. में कांग्रेस में विभाजन हो गया।
- कामराज के नेतृत्व में कांग्रेस O = Old तथा इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस R = Requasession / Requirement) भागों में विभक्त हो गई।
- चुनाव में कांग्रेस R की जीत हो गयी तथा कांग्रेस O अस्तित्वविहीन हो गई।

कांग्रेस पर की गई टिप्पणियाँ

1. कांग्रेस मुट्ठी भर लोगों का संगठन है। **–लॉर्ड डफरिन**
2. कांग्रेस अपने पतन की ओर लड़खड़ा रही है, मेरी इच्छा है कि उसके पतन में मदद करूं **–लॉर्ड कर्जन**
3. कांग्रेस में लोग पद के भूखे है **–बंकिम चंद्र चटर्जी**
4. बरसाती मेढ़क की तरह टर्र-टर्र चिल्लाने से स्वतंत्रता नहीं मिलेगी। **–बाल गंगाधर तिलक**
5. कांग्रेस शिक्षित लोगों का एक मेला है। **–लाला लाजपत राय**
6. कांग्रेस अधिवेशन तीन दिन का एक तमाशा है। **–अश्विनी**
7. कांग्रेस के लोग केवल याचना (विनती) करते हैं। **–विपिन चंद्र पाल**
8. कांग्रेस की आवाज पूरी जनता की आवाज नहीं है। **–फिरोज शाह मेहता**
9. मैं एक बुझे बालू से कांग्रेस से भी बड़ा संगठन बना सकता हूँ। **–महात्मा गाँधी**
10. कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही है **–लॉर्ड कर्जन**
11. भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद करूँ **–लॉर्ड कर्जन**
12. कांग्रेस सूक्ष्मदर्शी अल्पसंख्यकों की संस्था है **–डफरिन**
13. कांग्रेस भीख माँगने वाली संस्था है **–अरविंदो घोष**
14. काँग्रेस को अब समाप्त कर देना चाहिए। **–गाँधी**
15. कांग्रेस सम्मेलन शिक्षित भारतीयों के राष्ट्रीय मेले है **–लाला लाजपत राय**
16. कांग्रेस बुलबुले के साथ खेल रहा है **–विपिन चन्द्रपाल**

कांग्रेस की स्थापना से पूर्व भारत बने संगठन

1. लैंड होल्डर्स सोसाइटी (1838 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में द्वारकानाथ टैगोर के द्वारा किया गया।
- इसके भारतीय सचिव प्रसन्न कुमार ठाकुर थे। जबकि अंग्रेज सचिव विलियम काब्री थे।
- यह पहली राजनीतिक संस्था/संगठन थी, जिसने संगठित राजनीतिक प्रयासों का शुभारंभ किया तथा शिकायतों को दूर करने के लिए संवैधानिक उपचारों का प्रयोग किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

2. बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में जार्ज थॉम्पसन के द्वारा किया गया।
- इसके सचिव प्यारी चन्द्र मित्र थे।
- यह भारतीय तथा गैर सरकारी अंग्रेजों का सम्मिलित संगठन था।

3. ब्रिटिश इंडिया एशोसिएशन (1851 ई.)

- इसकी स्थापना कोलकत्ता में राधाकान्त देव के द्वारा किया गया।
- इस संस्था का निर्माण लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी एवं बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी को मिलाकर किया गया।
- ब्रिटिश इण्डिया, हिन्दू पैट्रियाट इस संस्था का मुख्य पत्र था।

4. बॉम्बे एशोसिएसन (1852 ई.)

- इसकी स्थापना बम्बई में दादाभाई नौरोजी ने किया।
- दादाभाई नौरोजी ने 'ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन' के कार्यों से प्रभावित होकर इसकी स्थापना की थी।

5. ईस्ट इंडिया एशोसिएसन (1866 ई.)

- इसकी स्थापना लंदन में दादा भाई नौरोजी ने किया। इस संगठन के द्वारा भारतीय समस्याओं को इंग्लैण्ड के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।
- 1869 ई. में इसकी एक शाखा बम्बई में स्थापित की गई। जिसका अध्यक्ष जमशेदजी, जीजीभाई और सचिव फिरोजशाह मेहता को बनाया गया।

6. पूना सार्वजनिक सभा (1870 ई.)

- इसकी स्थापना महादेव गोविन्द रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी द्वारा पूना में किया गया।
- यह संस्था मुख्यत: जमींदारों तथा व्यापारियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी क्योंकि इसके अधिकांश सदस्य उच्च जाति के थे।
- इस संस्था की एक त्रैयासिक पत्रिका 'क्वार्टली जनरल' थी।

7. इंडियन लीग (1875 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में शिशिर कुमार घोष ने किया।
- इस संस्था का विलय बाद में इण्डियन एशोसिएसन में कर दिया गया था।

8. इंडियन नेशनल एशोसिएसन (1876 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस ने किया।
- इस संस्था के सचिव आनन्द मोहन बोस बनाये गये जबकि अध्यक्ष मनमोहन घोष चुने गए।

9. मद्रास महाजनसभा (1884 ई.)

- सुब्रमण्यम अय्यर ने इस महाजनसभा की स्थापना मद्रास में किया।
- इस संस्था के अध्यक्ष वी. राघवाचारी तथा सचिव आनन्द चार्लू चुने गए।

10. बम्बई प्रेसिडेन्सी (1885 ई.)

- महाराष्ट्र के क्षेत्र में खासकर बम्बई में इस संगठन की स्थापना किया गया।
- इसके संस्थापक फिरोज शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी और के. टी. तैलंग थे।
- इस संस्था का मुख्य उद्देश्य लोगों के मध्य राजनीतिक विचारों को फैलाना था।
- कांग्रेस से ठीक पहले इसकी स्थापना की गई जब कांग्रेस का जन्म हुआ इस प्रकार के क्षेत्रीय संगठन का अस्तित्व समाप्त हो गया।

भूमि सुधार कानून

- भूमि सुधार कानून में अंग्रेजों ने स्वयं का लाभ को ध्यान में रखते हुए कानून बनाए थे।

➢ स्थायी बंदोबस्त

- इसे लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 ई. में लाया।
- यह बिहार बंगाल उड़ीसा, उत्तर प्रदेश तथा कर्नाटक में लागू था।
- यह भारत के 19% क्षेत्र पर लागू था।
- इसमें जमीन का मालिकाना हक जमींदार को दे दिया गया।
- अंग्रेज जितना कर को निर्धारित करते थे, उस कर में से 10/11 भाग (89%) अंग्रेज ले लेते थे जबकि 1/11 भाग (11%) जमींदार रखते थे।
- स्थायी बंदोबस्त के निर्धारण करने में कार्नवालिस का प्रमुख परामर्शदाता सर जॉन शोर तथा चार्ल्स जेम्स ग्राँट थे।
- स्थायी बंदोबस्त को **सूर्यास्त कानून** कहते हैं। क्योंकि इस कानून के द्वारा यह घोषित किया गया कि यदि पूर्व निर्धारित तिथि के सूर्यास्त तक सरकार को लगान नहीं दिया गया तो जमींदारों की जमींदारी निलाम हो जायेगी अर्थात् जमींदारों को सूर्यास्त से पहले हिसाब चुका देना होता था।

➢ रैयतवाड़ी

- रैयतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम कर्नल रीड ने 1792 ई. में मद्रास के बारहमहल जिले में लागू किया गया था।
- इसे टॉमस मुनरो ने 1820 में सम्पूर्ण मद्रास प्रेसिडेंसी में लागू किया।
- यह व्यवस्था मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम और कुर्ग में लागू की गई थी।
- यह व्यवस्था बम्बई प्रेसिडेंसी में 1825 ई. में लागू की गई थी।
- यह भारत के कूल क्षेत्र का 51% क्षेत्र पर लागू था।
- इस व्यवस्था में जमीन का मालिकाना हक किसानों का होता था।
- रैयतवाड़ी व्यवस्था ने जनता और सरकार के मध्य सीधा सम्पर्क स्थापित किया।
- किसानों को अपनी उपज का 33% से 55% तक कर के रूप में देना पड़ता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

➤ **महालवाड़ी व्यवस्था**

- महालवाड़ी व्यवस्था का प्रस्ताव सर्वप्रथम 1819 ई. में हॉल्ट मैकेंजी ने दिया था।
- इस व्यवस्था को 1830 ई. के बाद लॉर्ड विलियम बेंटिक के शासन काल में प्रभावी रूप से लागू किया गया।
- प्रथम बार खेतों के मानचित्रों प्रयोग इसी व्यवस्था के तहत मार्टिन बर्ड की देख-रेख में किया गया।
- मार्टिन बर्ड को उत्तरी भारत में भू-व्यवस्था का जनक कहा गया है।
- यह व्यवस्था उत्तर भारत (आगरा, अवध), मध्य प्रांत (मध्य प्रदेश) तथा पंजाब के कुछ भागो में लागू किया गया।
- यह भारत के 30% क्षेत्र पर लागू था।
- इसमें जमीन का मालिकाना हक गाँव का होता था।
- गाँव का मुखिया कूल उपज का 60% कर देता था।

Remark:– सबसे कठोर कानून स्थायी बंदोवस्त में था, सर्वाधिक क्षेत्रों पर रेवाड़ी लागू थी। जबकि जनसंख्या की सर्वाधिक मात्रा महालवाड़ी में था।

Remark :– लॉर्ड हेस्टिंग्स ने बंगाल के क्षेत्र में इजारेदारी व्यवस्था लागू की जिसमें अधिक बोली लगाने वाले को जमींदारी दी जाती थी।

मजदूर संघ

- 1870 ई. में बंगाल के शशिपाद बनर्जी ने मजदूरों के लिए एक क्लब की स्थापना की और भारत श्रमजीवी नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।
- भारत में गठित प्रथम श्रमिक संघ बंबई मिल हैंड्स एसोसिएशन था, जिनकी स्थापना 1890 ई. में एन.एम. लोखंडे ने की थी।
- 1908 ई. में क्रांतिकारी नेता बाल गंगाधर तिलक को 6 वर्ष की सजा होने पर बंबई के कपड़ा मजदूरों ने लगभग एक सप्ताह की हड़ताल कर दी, जो मजदूरों की पहली राजनीतिक हड़ताल मानी जाती है।
- भारत का पहला आधुनिक मजदूर संगठन मद्रास मजदूर संघ था। जिसकी स्थापना 1918 ई. में बी.पी. वाडिया द्वारा की गई थी।
- 1920 ई. में लाला लाजपत राय तथा एम एन. जोशी ने All India Trade Union Congress (AITUC) की स्थापना की।
- AITUC (अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस) का प्रथम सम्मेलन 1920 ई. में बंबई में आयोजित किया गया, इसके प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे।
- AITUC में विभाजन के बाद एन.एम. जोशी के नेतृत्व में 1929 ई. में भारतीय ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना हुई तथा वी.वी. गिरि इसके प्रथम अध्यक्ष बने।
- गांधी जी ने अहमदाबाद मिल मजदूरों की मांगों के लिए 1918 ई. में अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन की स्थापना की थी।
- हिन्दुस्तान मजदूर सभा संगठन की स्थापना 1938 ई. में सरदार पटेल एवं राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा की गई।
- मई 1947 ई. में AITUC से अलग होकर सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की गई।

भारतीय उद्योग (Indian Industry)

- अंग्रेजी शासन के दौरान भारतीय उद्योग का विकास नहीं हो सका क्योंकि अंग्रेजों ने भारत में पूंजी नहीं लगाई तथा भारतीय माल इंग्लैण्ड में जाते थे उस पर अंग्रेजों ने नियत कर लगा दिया। जिससे की वस्तुएं इंग्लैण्ड में महंगी हो गई।
- लखनऊ की प्रिंट वाले कपड़ा तथा मलमल के कपड़ों की मांग इंग्लैंड में अधिक थी। भारत से इंग्लैंड को जाने वाली वस्तुओं पर भारी कर लगाया जाता था, अतः भारतीय वस्तुएँ महँगी हो गई।
- इसके विपरित इंग्लैंड से आने वाली वस्तुओं पर कोई कर नहीं लगाया जाता था। जिस कारण इंग्लैण्ड के उद्योगों ने भारतीय उद्योग को ध्वस्त कर दिया।
- भारतीय उद्योग में सुती वस्त्र पहला उद्योग था जिसमें भारतीयों द्वारा पुंजी लगाई गई थी।
- भारत में आधुनिक स्तर की प्रथम सूती कपड़ा मिल 1818 ई. में कोलकाता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में लगाई गई थी जो असफल रही।
- भारत की प्रथम सफल सूती कपड़ा मिल बम्बई स्पिनिंग एण्ड विविंग कंपनी थी, जो 1853 ई. में मुम्बई में कवास जी.एन. डावर द्वारा स्थापित की गई थी।
- देश का प्रथम जूट कारखाना जॉर्ज ऑकलैण्ड द्वारा 1855 ई. में कोलकाता के निकट रिशंरा नामक सथान पर लगाया गया था।
- भारत में चीनी उद्योग सबसे पहले बिहार के बेतिया में 1840 ई. में लगाया गया था, जो 1931 ई. से कार्य करना शुरू किया।
- भारत में कागज का प्रथम आधुनिक कारखाना 1832 ई. में पश्चिम बंगाल के श्रीरामपुर में स्थापित किया गया था, जो असफल रहा।
- भारत में कागज उद्योग का प्रथम सफल कारखाना 1867 ई. में कोलकाता के बालीगंज में स्थापित किया गया।
- कालमार्क्स ने भारतीय के विषय में कहा था कि ''अंग्रेजों ने सूती वस्त्र के घर में सूती वस्त्र का अंबार लगा दिया''।

प्रमुख नारा तथा वक्तव्य

- सारे जहाँ से अच्छा **–मो. इकबाल**
- वन्दे मातरम् **–बंकिम चंद्र चटर्जी**
- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा **–श्यामलाल गुप्ता**
- वेदों की ओर लौटो **–दयानंद सरस्वती**

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- जय जगत —**विनोबा भावे**
- संपूर्ण क्रांति —**जयप्रकाश नारायण**
- मेरे शरीर पर पडी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत का कील साबित होगा। —**लाला लाजपत राय**
- स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार —**बालगंगाधर तिलक**
- सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। —**रामप्रसाद बिस्मिल**
- इन्कलाब जिन्दाबाद —**भगत सिंह**
- दिल्ली चलो —**सुभाषचन्द्र बोस**
- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा —**सुभाषचन्द्र बोस**
- जय हिन्द —**सुभाषचन्द्र बोस**
- हे राम —**महात्मा गाँधी**
- करो या मरो —**महात्मा गाँधी**
- भारत छोड़ो —**महात्मा गाँधी**
- हम घुटने टेक कर रोटी मागे किंतु उत्तर में हमें पत्थर मिला। —**महात्मा गाँधी**
- अराम हराम है। —**जवाहरलाल नेहरू**
- पूर्ण स्वराज —**जवाहरलाल नेहरू**
- Who Lives In India Die **जवाहरलाल नेहरू**
- समूचा भारत एक विशाल वंदी गृह है। -**चितरंजन दास**
- जन-गण-मन अधिनायक जय हे **रवीन्द्रनाथ टैगोर**

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

28. दिल्ली दरबार (Delhi Darabar)

दिल्ली दरबार (1876 ई.)

- 1876 ई. में शाही पद अधिनियम आया जिसमें महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया और 1 जनवरी, 1877 ई. में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया।
- इसे लार्ड लिटन ने आयोजित किया।
- सार्वजनिक तौर पर 1877 ई. में महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया। और साथ ही महारानी को **'कैसर-ए-हिन्द'** की उपाधि दिया गया।
- 1876-78 ई. में दक्षिण भारत में अकाल आया था, और इस दरबार में बेशुमार धन खर्च किया गया। इस कारण इसका विरोध होने लगा। इसमें कोई भी भारतीय जनता के हित में निर्णय नहीं लिया गया।
- महारानी विक्टोरिया का संदेश के अंश-कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल में दर्ज है। इसमें महारानी ने कहीं कि यह अवसर हमारे प्रजा और हमारे बीच में मधुर संबंध स्थापित करेगा।

दिल्ली दरबार (1903 ई.)

- इसे लार्ड कर्जन ने आयोजित किया।
- सम्राट एडवर्ड सप्तम् और महारानी एलेक्जेंड्रा को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। सम्राट स्वयं इस दरबार में न आकर अपने भाई **ड्यूक ऑफ कनॉट** को भेज दिया।
- यह सर्वाधिक **शानो शौकत** वाला दरबार था। सबसे खर्चीला दरबार यही था। यह दरबार केवल शक्ति प्रदर्शन का था। इस दरबार को एक सप्ताह तक आयोजन किया गया।
- इसमें अस्थाई नगर बसाया गया, अस्थाई रेल, सड़क, तार, पानी, बिजली, अस्तबल आदि।
- इसमें स्वयं लार्ड कर्जन और लेडी कर्जन ने नृत्य भी किया। इस दरबार में भी भारतीय जनता के हित में कोई निर्णय नहीं लिया गया।

दिल्ली दरबार (1911 ई.)

- इसे लार्ड हार्डिंग-II ने आयोजित किया।
- जार्ज पंचम और महारानी विलियम मेरी को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। इसमें सम्राट स्वयं उपस्थित थे।
- सम्राट को ... वाला एक मुकुट पहनाया गया जिसमें सैकड़ों हीरे जवाहरात जड़ित था।
- ... की रानी की तरफ से विलियम मेरी को हार उपहार स्वरूप दिया गया।
- दिल्ली के कोरोनेशन पार्क नामक जगह में दिल्ली दरबार लगाया जाता था।
- इस दरबार में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय सम्राट के द्वारा लिया गया। **जैसे–**

निर्णय - 1 : बंगाल का विभाजन रद्द।

- 16 अक्टूबर, 1905 ई. में लार्ड कर्जन के द्वारा बंगाल का विभाजन किया गया था। जिसे 1911 ई. में विभाजन रद्द कर दिया गया।
- बंगाल का पुनर्गठन लार्ड ... के समय किया गया।
  - बंगाल
  - उड़ीसा, बिहार
  - असम का कमिशनरी क्षेत्र

निर्णय - 2 : राजधानी को 1911 ई. में दिल्ली स्थानान्तरित करने का निर्णय।

- कलकत्ता से दिल्ली राजधानी
  - निर्णय - जॉर्जपंचम = 1911
  - 15 दिसम्बर 1911 को नई दिल्ली की नीव जॉर्जपंचम के द्वारा रखी गयी
  - 1912 में राजधानी दिल्ली स्थानन्तरित

नई दिल्ली

- दिल्ली के दक्षिण में 1911 ई. में नई दिल्ली की नीव पड़ी।
- नई दिल्ली की रूपरेख तैयार करने का कार्य ब्रिटेन के वास्तु विद एडविन लुटियन ने हरवर्ट बेकर के साथ मिलकर किया। और 1927 ई. में नई दिल्ली नाम दिया गया।
- 1931 ई. में नई दिल्ली का उद्घाटन वायसराय लॉर्ड इरविन के द्वारा किया गया।

'जन गण मन' विवाद

- सर्वप्रथम 1911 ई. में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जन-गण-मन गाया गया।
- इसी अधिवेशन में जार्ज पंचम के स्वागत का प्रस्ताव भी पारित हुआ था और बच्चों के द्वारा जार्ज पंचम के सम्मान में एक गीत 'बादशाह हमारा' गाया गया। इस गीत के रचयिता कवि रामभूज चौधरी थे।
- बंगाल के अंग्रेजी अखबार में यह छपा था कि कलकत्ता अधिवेशन में जार्जपंचम का स्वागत प्रस्ताव पारित हुआ और जन-गण-मन गाया गया। इस कारण विवाद हो गया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

29. नेहरू काल (Nehru Period)

- भारत 15 अगस्त, 1947 ई. को आजाद हुआ और पाकिस्तान का 14 अगस्त, 1947 ई. को निर्माण हुआ।
- भारत और पाकिस्तान के विभाजन में अंग्रेजों ने सबसे बड़ी गलती यह कर दी कि उन्होंने कहा जिन्हें पाकिस्तान में रहना है वो पाकिस्तान चले जाए और जिन्हें भारत में रहना है वो भारत में रह जाए।
- इसके अलावा उसने यह भी कहा था कि जिसको स्वतंत्र रहना है वह स्वतंत्र रह जाए। इसमें कश्मीर के राजा हरि सिंह की दूरदर्शिता नहीं थी।
- हरि सिंह के प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला थे। शेख अब्दुल्ला के कहने पर हरि सिंह कश्मीर को स्वतंत्र रखने के लिए तैयार हो गये। इसी बीच पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला कर दिया और वहाँ कबिलाई के भेष में आतंकवादियों को कश्मीर में भेज दिया। तब हरि सिंह नेहरू के पास मदद के लिए आये।
- सरदार पटेल ने हरि सिंह से 26 अक्टूबर, 1947 ई. को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कराए और सेना की जिम्मेदारी ब्रिगेडियर उस्मानी को देकर भेज दी गई।
- यह युद्ध 1948 ई. तक चली थी। जब तक भारतीय सेना वहाँ पहुँची तब तक पाकिस्तान कश्मीर का 30% हिस्सा पर कब्जा कर चुका था और वहीं से भारत पाक सीमा का निर्धारण हो गया।
- जवाहर लाल नेहरू ने इस मुद्दे को UNO में ले जाकर बहुत बड़ी गलती कर दिए। आज तक यह मुद्दा UNO में लटकी हुई है।
- शेख अब्दुल्ला के कहने पर हरि सिंह ने भारत से कश्मीर के लिए अलग संविधान बनाने की मांग की जिसमें बहुत सारी शर्तें रखी–
  - इसमें जम्मु-कश्मीर की सीमाएं भारत की सीमाएं हैं।
  - जम्मु-कश्मीर में भारत का कोई संविधान लागू नहीं होगा।
  - यहाँ राष्ट्रपति का शासन तथा राष्ट्रीय आपात लागू नहीं होगा।
  - दूसरे राज्य के लोग यहाँ आकर हमेशा के लिए नहीं बस सकते और न ही यहां जमीन खरीद सकते।
  - इस संविधान के एक शर्त यह भी था कि पाकिस्तान की कोई लड़की यदि जम्मू-कश्मीर में आकर शादी करती है, तो उसे जम्मू-कश्मीर की नागरिकता दे दी जाएगी लेकिन भारत की लड़की यदि जम्मू-कश्मीर में शादी करती है तो उसे जम्मू-कश्मीर की नागरिकता नहीं दी जाएगी।
- हरि सिंह की मृत्यु के बाद **जम्मू-कश्मीर की बागडोर शेख अब्दुल्लाह** ने संभाली। शेख अब्दुल्लाह के बाद उसके पुत्र फारूख अब्दुल्लाह ने कश्मीर की बागडोर संभाली।
- फारूख अब्दुल्लाह के बाद उसके पुत्र उमर अब्दुल्लाह ने कश्मीर की बागडोर संभाला।
- वर्तमान में जम्मु-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली धारा 370 को खत्म कर दिया गया। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर को जम्मू तथा लद्दाख नामक दो केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया।

भारत-चीन समझौता

- भारत को अंदेशा इस बात का था कि अगर चीन से युद्ध न हो तो सब कुछ सही हो जाएगा।
- जवाहरलाल नेहरू उस समय भारत के प्रधानमंत्री थे उन्होंने सोचा कि कैसे भी करके चीन के साथ युद्ध को टाला जाय। इन्होंने चीन के साथ एक समझौता किया जिसे पंचशील समझौता कहते हैं। यह **पंचशील समझौता 1954 ई.** में हुआ था। यह समझौता 8 वर्ष तक होनी थी, लेकिन चीन ने 6 साल तक का ही समझौता किया।
- यह समझौता जवाहरलाल नेहरू तथा चीन के राष्ट्रपति चाऊ मेन लाई के साथ हुआ था।

➢ **पंचशील समझौता के पाँच शर्तें–**

1. एक दूसरे की अखण्डता का ध्यान रखना है।
2. एक दुसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करना है।
3. सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी की एक दुसरे पर युद्ध नहीं करना है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर एक-दुसरे का सहायता करना है।
5. एक दुसरे को समान लाभ पहुँचाना है।

- इसी समझौता में **हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा** दिया गया था। इस समझौता का मुख्य उद्देश्य यही था कि किसी भी तरह युद्ध को रोका जाए और आपसी समन्व्य बनाया जाए।
- उस समय हमारे भारतीय वैज्ञानिक **होमी जहांगीर भाभा** थे। इन्हीं के पास भारत का परमाणु विभाग था। इन्होंने कहा था कि हम 20 साल में परमाणु बम बनाने में सक्षम हो जाएंगे।
- इसी बीच में नहेरू से एक बड़ी गलती हो गई-जब चीन तिब्बत पर कब्जा किया था तो नेहरू ने उसकी आंतरिक मामला कहा लेकिन यही बात जब जम्मु-कश्मीर पर आयी तो

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

चीन ने यह कह कर टाल दिया कि हम इसका आंतरिक रूप से अध्ययन करेंगे। उसके बाद अपना विचार रखेंगे। इसी बीच में **चीन ने 1959 ई. में तिब्बत पर** कब्जा कर लिया और भारत कुछ नहीं कर सका।

- **तिब्बत के धर्म गुरु दलाई लामा** भारत के हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में शरण लिए।
- 1960 ई. में चीन ने **Five Fingure Rule** लागू कर दिया। Five Fingure Rule के तहत चीन तिब्बत को हथेली मानता है और नेपाल, भूटान, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम एवं लद्दाख को उसकी ऊंगली मानता है।
- चीन बार-बार भारत में घुसपैठ करता था। चीन का पूरा प्लान 1962 ई. का था और इस बारे में नेहरू को थोड़ा-सा भी भनक नहीं लगा।
- चीन अपना घुसपैठ जारी रखा। चीन अपने आर्मी को तिब्बत में भेजने लगा और वहाँ से अरुणाचल प्रदेश और जम्मू-काश्मीर में।
- जब नेहरू नेपाल गये और काठमांडु एयरपोर्ट पर उतरे तो मिडिया ने उनसे पूछा कि आपकी पंचशील समझौता के बावजूद क्यों चीन ने भारत के क्षेत्र में प्रवेश किया, तो नेहरू ने कहा कि ऐसा कोई घटना नहीं हुई है। वैसे भी मैंने भारतीय सेना को आदेश दिया है कि कोई भी अगर भारत में घुसे तो उसे बाहर कर दिया जाए।
- चीन ने कहा कि यह युद्ध की धमकी है और अपनी सेना की ताकत झोंक दिया। भारतीय सेना बहुत बहादुरी से लड़ी।
- चीन ने अरुणाचल प्रदेश तथा कश्मीर के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया बाद में अरुणाचल प्रदेश का क्षेत्र चीन ने वापस कर दिया, लेकिन जम्मू-कश्मीर का 10% क्षेत्र चीन ने वापस नहीं किया और चीन उस क्षेत्र को **अक्साई चीन** कहता है।
- चीन अरुणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार बताता है और उसे दक्षिण तिब्बत कहता है।
- ताइवान एक स्वतंत्र देश है किंतु चीन इसे अपना राज्य बताता है। One China Policy के तहत जो देश चीन से संबंध रखना चाहते हैं उन्हें One China Policy स्वीकार करना पड़ता है।
- 1997 ई. में हांगकांग जो ब्रिटेन के अधीन था चीन ने उस पर अधिकार कर लिया।
- 2000 ई. में मकाऊ जो पुर्तगाल के अधीन था चीन ने उस पर अधिकार कर लिया।
- 2017 ई. में भूटान के चुम्बी घाटी में स्थित डोकलाम पर चीन अपना अधिकार बताने लगा किंतु भारत के विरोध के कारण उसे पीछे हटना पड़ा, क्योंकि भूटान की रक्षा की जिम्मेदारी भारत की है।

भारत पाक युद्ध

- पाकिस्तान ने 1948 ई. में कश्मीर के 30% क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जिसे POK कहते हैं।

Note :– POK = Pakistan Occupied Kashmir
(पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर)

- **1956 ई. में पाकिस्तान** ने खुद को इस्लामिक राष्ट्र घोषित कर लिया।
- 1966 ई. का **भारत-पाक युद्ध ताशकंद समझौता** के द्वारा समाप्त हुआ। यह एक शांति समझौता था यह समझौता भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के प्रधान मंत्री अयुब खान के बीच हुई थी। इस समझौते के अनुसार यह तय हुआ था कि ये दोनों देश अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे और अपने झगड़ों को शांति पूर्ण ढंग से तय करेंगे। ताशकंद वर्तमान में उज्बेकिस्तान में है।
- 1971 ई. में भारत-पाकिस्तान के बीच बांग्लादेश को लेकर पुनः युद्ध शुरू हुआ।
- बांग्लादेश पहले पूर्वी पाकिस्तान था किंतु भारत के सहयोग से शेख मुजिबुर्रहमान ने मुक्ति वाहिनी के द्वारा बांग्लादेश का निर्माण किया।
- इस युद्ध में पाकिस्तान के 93 हजार सेना भारतीय सेना के सामने आत्म समर्पण की थी।
- यह युद्ध 1972 ई. में हुए शिमला समझौता के तहत समाप्त हुआ। यह समझौता भारत के प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच हुई थी।
- 1972 ई. में पाकिस्तान ने बांग्लादेश को स्वतंत्र घोषित किया।
- 1984 ई. में पाकिस्तान ने विश्व के सबसे ऊँचा तथा सबसे ठंडा युद्ध का मैदान सियाचीन में घुसपैठ कर दिया। जिसके बदले भारतीय सेना ने ऑपरेशन मेघदुत तथा राजीव चलाया।
- 1999 ई. में पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कारगिल में घुसपैठ कर दिया। भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय चलाया जबकि, भारतीय वायु सेना ने ऑपरेशन सागर चलाया।
- 1984 ई. में स्वर्ण मंदिर में घुसे सिक्ख विद्रोहियों को निकालने के लिए ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया गया।
- 2008 ई. में ताज होटल में घुसे आतंकवादियों को निकालने के लिए ऑपरेशन ब्लैक टोरनाडो चलाया गया।

➢ कोरिया युद्ध

- इस युद्ध का प्रारंभ 25 जून, 1950 ई. को उत्तरी कोरिया से दक्षिण कोरिया पर आक्रमण के साथ हुआ।
- यह युद्ध कोरियाई प्रायद्वीप को दो भागों में बाँट दिया। उत्तरी कोरिया रूस के साथ हो गया जबकि दक्षिणी कोरिया अमेरिका के साथ हो गया। इन दोनों देशों ने एक-दूसरे पर हमला करना प्रारंभ कर दिया। इन दोनों देशों को हथियार की पूर्ति अमेरिका तथा रुस करते थे। इन दोनों के बीच 1950–53 ई. तक तीन सालों तक युद्ध चला। जिसे कोरियाई युद्ध कहा गया। इस युद्ध के फलस्वरूप 38° समानान्तर रेखा खींच दी गई। यही उन दोनों की सीमा रेखा है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

➤ **वियतनाम युद्ध**

☛ कोरिया संकट के बाद रुस तथा अमेरिका वियतनाम में प्रवेश कर गये और वियतनाम को दो भागों में बाँट दिए। इन दोनों ही भागों में आपसी वर्चस्व बनाने के लिए 1955 ई. में युद्ध प्रारंभ हो गया। जो 1975 ई. तक चला। इस युद्ध में अमेरिका ने वियतनाम के ऊपर काफी बम गिराया। वियतनाम की जनता हो चि मिन के नेतृत्व में एक हो गई तथा उत्तरी एवं दक्षिणी वियतनाम को अलग करने वाली 17° समानान्तर रेखा को समाप्त करके आपस में एक हो गए। हो-चि-मिन को Uncle-ho कहते हैं।

➤ **क्युबा संकट 1961 ई.**

☛ क्युबा अमेरिका का पड़ोसी देश है जहां रूस ने परमाणु मिसाइलें लगा दी थी। किन्तु अमेरिका ने वहां के फिडेल कास्त्रो की सरकार पर दबाव बना दिया। जिससे रुस को पिछे हटना पड़ा।

➤ **इराक-इरान युद्ध–(1980–88 ई.)**

☛ इराक इरान दोनों ही रुस के समर्थक थे। किन्तु दोनों में आपसी वर्चस्व को बनाये रखने के लिए एक-दूसरे से युद्ध कर लिये। यह युद्ध 1980 ई. से 1988 ई. तक चला। इस युद्ध में इराक विजयी हुआ।

➤ **कुवैत-इराक युद्ध**

☛ इराक ने तेल चोरी के कारण तथा कुवैत के कर्ज से बचने के लिए कुवैत पर हमला कर दिया। इराक ने 2 अगस्त, 1990 ई. को कुवैत पर आक्रमण किया और 4 अगस्त, 1990 ई. तक कुवैत को जीत लिया।

➤ **खाड़ी युद्ध (1990–91 ई.)**

☛ सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर अधिकार कर लिया था। अतः कुवैत के बचाव में UNO तथा अमेरिका के नेतृत्व वाली संयुक्त सेना ने Operation Deseart Storm के तहत इराक पर आक्रमण कर दिया और सद्दाम हुसैन की सत्ता का अंत कर दिया। इस युद्ध को खाड़ी युद्ध कहते हैं।

➤ **IC–814 विमान हाइजेक 1999 ई.**

☛ लस्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने नेपाल के त्रिभुवन एयर पोर्ट से एयर इंडिया का जहाज IC-814 का अपहरण कर लिया। आतंकी इसे काठमांडू से अमृतसर और लाहौर के बाद अफगानिस्तान के कंधार ले गए थे।

☛ लस्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने विमान को छोड़ने के बदले खुंखार आतंकवादी मौलाना मसूद अजहर तथा उसके दो साथियों को छुड़ा ले गये।

☛ लस्कर-ए-तैयबा तथा जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों ने 2001 में भारतीय संसद पर हमला किया। इस हमले के मुख्य अभियुक्त अफजल गुरु को 2012 ई. में फाँसी दे दिया गया।

☛ इसी आतंकवादी संगठन ने 26 नवम्बर, 2008 ई. को ताज होटल, नरीमन हाउस तथा CST स्टेशन पर हमला किया। जिसे NSG के कमांडो ने ऑपरेशन ब्लैक टोरनेडो द्वारा समाप्त कर दिया।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

30. विश्व का इतिहास (History of the World)

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

➢ मिस्र की सभ्यता

- मिस्र की सभ्यता का प्रारंभ 3400 ई.पू. में हुआ ।
- मिस्र को नील नदी की देन कहा गया है। मिस्र के बीच से नील नदी बहती है, जो मिस्र की भूमि को उपजाऊ बनाती है।
- यह सभ्यता प्राचीन विश्व की अति विकसित सभ्यता थी। इस सभ्यता ने विश्व की अनेक सभ्यताओं को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है।
- सामाजिक जीवन में सदाचार का महत्त्व इसी सभ्यता से प्रसारित हुआ है।
- सामाजिक जीवन की सफलता के लिए उन्होंने नैतिक नियमों का निर्धारण किया।
- मिस्र के राजा को फराओ कहा जाता था। उसे ईश्वर का प्रतिनिधि तथा सूर्य देवता का पुत्र माना जाता था ।
- मरणोपरान्त राजा के शरीर को पिरामिड नामक मंदिर में सुरक्षित रख दिया जाता था।
- पिरामिडों को बनाने का श्रेय फराओ जोसफ के वजीर अमहोटेप को है।
- मिस्रवासियों को मरणोत्तर जीवन में विश्वास था । इसीलिए मृतकों के शवों को सुरक्षित रखने के लिए शवों पर रसायनिक द्रव्यों का लेप लगाया जाता था। ऐसे मृतक शरीर को 'मम्मी' कहा जाता था।
- शिक्षा के क्षेत्र में सर्वप्रथम व्यवस्थित विद्यालयों का प्रयोग यहीं हुआ था और यहीं से अन्यत्र प्रचलित हुआ।
- विज्ञान के क्षेत्र में मिस्रवासी विश्व में अग्रणी समझे जाते थे। रेखागणित में जितना ज्ञान उन्हें था उतना विश्व के अन्य लोगों को नहीं था। कैलेण्डर सर्वप्रथम यहीं तैयार हुआ। सूर्य घड़ी एवं जल घड़ी का प्रयोग भी सर्वप्रथम यहीं हुआ । अमहोटेप चतुर्थ (1375 ईसा पूर्व से [illegible] ईसा पूर्व) मानव इतिहास का पहला सिद्धांतवादी शासक था। इसे आखनाटन के नाम से भी जाना जाता है।

➢ मेसोपोटामिया की सभ्यता

- वर्तमान इराक अनेक सभ्यताओं का जन्मदाता रहा है। मिस्र की सभ्यता के समकक्ष तथा समकालीन मेसोपोटामिया की सभ्यता विकसित हुई।
- यूनानी भाषा में मेसोपोटामिया का अर्थ नदियों के बीच की भूमि होता है। यह सभ्यता दजला एवं फरात नदियों के बीच के क्षेत्र में विकसित हुई।
- प्राचीन काल में दजला एवं फरात के बिल्कुल दक्षिणी भाग को सुमेर कहा जाता था। मेसोपोटामिया की सभ्यता का विकास सर्वप्रथम सुमेर प्रदेश में हुआ।
- सुमेर के उत्तर-पूर्व भाग को बेबीलोन कहा जाता था तथा नदियों के उत्तर की उच्च भूमि का नाम असीरिया था।
- सुमेर, बेबीलोन तथा असीरिया सम्मिलित रूप से मेसोपोटामिया कहलाते थे।

➢ सुमेरिया की सभ्यता

- सुमेरियनों ने एक [illegible] ही सुसंगठित राज्य की स्थापना की।
- प्रत्येक नगर राज्य का एक राजा था जिसे पुरोहित या पतेसी कहा जाता [illegible]।
- धर्म एवं मंदिरों के विशिष्ट स्थल थे।
- देव मंदिरों को जिगुरत कहा जाता था। राजा ही मंदिर का बड़ा पुरोहित होता था ।
- सुमेरियनों की महत्त्वपूर्ण देन लेखन कला है। उन्होंने एक लिपि का आविष्कार किया, जिसे कीलाकार लिपि कहा जाता है। इसे वे तेज नोक वाली वस्तु से मिट्टी की पट्टियों पर लिखते थे।
- उन्होंने ही समय मापने के लिए सर्वप्रथम 60 अंकों की कल्पना की तथा चन्द्र पंचांग का प्रयोग किया।
- वृत्त के केंद्र में 360 अंश का कोण बनता है। इस माप की कल्पना भी सर्वप्रथम सुमेर के लोगों ने ही की।

➢ बेबीलोन की सभ्यता

- सुमेरियन लोगों ने जिस सभ्यता का निर्माण किया उसी के आधार पर बेबीलोन की सभ्यता का विकास हुआ।
- निपुर इसका प्रमुख नगर था।
- बेबीलोन का प्रसिद्ध शासक हम्मुराबी (2124 ई.पू. से 2081 ई.पू.) था, जो एमोराइट राजवंश का था।
- हम्मुराबी की सबसे बड़ी देन कानूनों की संहिता है । हम्मुराबी विश्व का पहला शासक था, जिसने सर्वप्रथम कानूनों का संग्रह कराया।
- धर्म का महत्वपूर्ण स्थान था। लोग बहुदेववादी थे। मार्डुक सबसे बड़ा देवता समझा जाता था।

➢ चीन की सभ्यता

- हांग-हो नदी की घाटी में प्राचीन चीन की सभ्यता का विकास हुआ। यह स्थान चीन के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है।
- यह क्षेत्र विश्व के अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है। इसे 'चीन का विशाल मैदान' कहा जाता है।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- ह्वांग-हो नदी को पीली नदी भी कहते हैं, इसिलिए चीन की प्राथमिक सभ्यता को 'पीली नदी घाटी सभ्यता' भी कहा जाता है।
- इस दौरान चीन में वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई। कागज एवं छपाई का आविष्कार चीन की देन है। भूकम्प का पता लगाने वाले यंत्र सिस्मोग्राफ का आविष्कार चीनवासियों ने ही किया था।
- दिशासूचक यंत्र का आविष्कार चीन में ही हुआ।
- ह्वांग टी (लगभग 2700 ई.पू.) की पत्नी ली-जू (Lei-Zu) ने पहले-पहल चीनी लोगों को रेशम के कीड़ों का पालन करना सिखाया।
- रेशम के हल्के वस्त्रों का निर्माण एवं प्रयोग सर्वप्रथम चीन में ही हुआ ।
- शी- हांग टी (लगभग 247 ई.पू.) ने समस्त चीन को एक राजनैतिक सूत्र में आबद्ध किया।
- चीन वंश के नाम पर ही पूरे देश का नाम चीन पड़ा।
- यहां के राजा को वांग कहा जाता था।
- चीन में छठी शताब्दी ईसा पूर्व दार्शनिक चिंतन का उद्‌भव हुआ। इनमें से सबसे प्रमुख दार्शनिक कन्फ्युशियस (551 ई. पू. से 479 ई.पू.) थे जिसे कुंग जू या ऋषि कुंग के नाम से भी संबोधित किया जाता है।
- पुच्छल तारा सर्वप्रथम चीन में ही 240 ई. में देखा गया था।
- पेय पदार्थ के रूप में चाय का सर्वप्रथम प्रयोग चीन में ही [illegible] हुआ।

➢ यूनान की सभ्यता

- यूनान की सभ्यता को यूरोपीय सभ्यता का उद्‌ग[illegible] स्थल माना जाता है।
- क्रीट की सभ्यता प्राचीन यूनानी सभ्यता की जन[illegible] कही जाती है। क्रीट की राजधानी नासौस थी।
- 1200 ईसा पूर्व आर्यों की डोरियन शाख[illegible] यूनान में प्रवेश कर वहाँ अपना प्रभुत्व जमा लिया। यूना[illegible] को हेल[illegible] भी [illegible] जाता था। इसलिए उसकी पुरानी स[illegible]ता '[illegible]निक सभ्यता' भी कहलाती है।
- पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यूनान छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। विभिन्न नगर राज्यों में स्पार्टा और ऐथेन्स अधिक शक्तिशाली एवं प्रभावशा[illegible] स्पार्टा सैन्य तंत्रात्मक राज्य था।
- ऐथेन्स में गणतं[illegible] [illegible]ति का विकास हुआ था। ऐथेन्स में 600 ईसा पूर्व में [illegible]ी गणतांत्रिक शासन पद्धति के सफल प्रयोग हुए।
- 490 ई.पू. [illegible] [illegible]रस के राजा ने यूनान पर आक्रमण कर दिया। फलत: दोनों पक्षों में युद्ध शुरू हो गया, जो 448 ई.पू. तक [illegible]। पेरिक्लोज (469 ई.पू. से 429 ई.पू.) का युग [illegible] के इतिहास में स्वर्ण युग था।
- जिस युग में महान कवि होमर ने अपने दो महाकाव्यों इलियड तथा ओडिसी की रचना की उसे होमर युग कहा जाता है।
- सिकन्दर कालीन युग को हेलीनिस्टिक युग कहा जाता है।
- सिकन्दर मेसीडोनिया के राजा फिलिप का पुत्र था।
- अरस्तू ने सिकंदर को शिक्षा प्रदान की थी।
- सुकरात, प्लेटो और अरस्तू प्राचीन यूनान के प्रमु[illegible] [illegible]चारक और दार्शनिक थे।

➢ रोम की सभ्यता

- रोम की सभ्यता का विकास यूनानी सभ्यत[illegible] के विघ[illegible]न के बाद हुआ।
- यह यूनानी सभ्यता से प्रभावित थी
- रोमन सभ्यता का केंद्र रोम नामक नगर थ[illegible] [illegible] इटली में स्थित है।
- इटली में एक उन्नत सभ्य[illegible] को [illegible]कसित करने का श्रेय एट्स्कन नामक एक अ[illegible] जा[illegible]ति को है।
- रोम एवं कार्थेज [illegible] बीच (264 ई.पू. से 146 ई.पू.) एक शताब्दी से अधिक तक [illegible] चल[illegible] इस बीच तीन भीषण युद्ध हुए।
- इन युद्धों को प्यू[illegible]क युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में रोम क[illegible] [illegible]जय हुई। जूलियस सीजर रोम के साम्राज्य का बिन[illegible] [illegible] का बादशाह था। इसकी गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों [illegible] की जाती है।
- [illegible]स्टस (31 ई.पू. से 14 ई.पू.) का काल रोमन सभ्यता का स्वर्ण [illegible]ाल माना जाता है।
- [illegible]ुनिक अस्पतालों के संगठन की कल्पना रोमन सभ्यता की देन है।
- रोमन दर्शन एवं धर्म ने विश्व सभ्यता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। जहाँ तक धर्म का संबंध है, ईसाई धर्म का प्रसार रोम की ही देन है। रोम का पोप कालांतर में सम्पूर्ण यूरोप को राजनीति का संचालक बन गया। रोम की राष्ट्रभाषा 'लैटिन' की महत्ता उसके विस्तृत प्रभाव से स्पष्ट परिलक्षित होती है। अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य का जो स्वरूप आज उपलब्ध है, वह लैटिन भाषा की ही देन है।

पुनर्जागरण

- पुनर्जागरण का अर्थ होता है- 'किसी पुरानी व्यवस्था को छोड़कर नई रीति-रिवाज अपना लेना।'
- पुनर्जागरण शब्द फ्रांसिसी भाषा के रेनेसा शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है- दुबारा जाग उठना।
- पुनर्जागरण की शुरुआत इटली के शहर फ्लोरेंस से हुआ।
- इसकी शुरुआत प्रसिद्ध कवि दांते ने किया। उनकी पुस्तक डिवाइन कामेडी में स्वर्ग एवं नरक के काल्पनिक का वर्णन किया गया है।
- पुनर्जागरण इटली से ही प्रारम्भ हुआ क्योंकि इटली मध्य में पड़ता था जिस कारण उसे अत्यधिक व्यापारिक लाभ हुआ। अत: वहां के लोग धनी हो गए और उनके यहाँ विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

> **कुस्तुनतुनिया पर तुर्की का अधिकार**

- कुस्तुनतुनिया वेजेण्टाइन साम्राज्य की राजधानी थी जो इसाइयों का एक प्रमुख केन्द्र था।
- कुस्तुनतुनिया पर मुस्लिम राष्ट्र तुर्की ने अधिकार कर लिया। अतः कुस्तुनतुनिया के विद्वान लोग अपनी कला, संस्कृति, विज्ञान इत्यादि को बचाने के लिए इटली में ही शरण ले लिए, जिससे इटली के लोगों का नये विचारों से परिचित हुए।

> **यूरोप में पुनर्जागरण का कारण**

- मुस्लिम तथा इसाइयों के बीच धर्मयुद्ध हो गया जिसमें इसाई पराजित हो गये। अतः वे शरण लेने के लिए नई-नई जगहों की खोज करने लगे। जिनसे उनके विचारों में सुधार आया और उन्हें नए विचार मिलें।
- कुस्तुनतुनिया पर तुर्की का अधिकार होने के कारण यूरोपीय लोग शरण लेने के लिए नये-नये जगहों की खोज करने लगे।
- यूरोप में कई वैज्ञानिक उपकरण तैयार किये गये। जैसे- दिशा सूचक यंत्र, कम्पास इत्यादि।
- यूरोप में छापाखाना (Printing Press) की खोज की गई, जिससे विचारों को फैलाने में आसानी हुई।

> **पुनर्जागरण की विशेषता**

- लोग धार्मिक विषयों के स्थान पर विज्ञान, दर्शन, भूगोल जैसे विषयों को पढ़ने पर ध्यान दिए।
- लोग परलोकवाद तथा मोक्ष प्राप्ति के स्थान पर सामाजिक मुद्दे पर अत्यधिक ध्यान देने लगे।
- अंधविश्वास तथा रुढ़ीवाद से लोगों का विश्वास उठ गया।
- पुनर्जागरण के बाद लोग किसी के विचारों पर तर्क-वितर्क करते थे।

> **साहित्य के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

- दांते ने 'डिवाइन कामेडी' नामक पुस्तक लिखी।
- पेट्राक ने 'कैवेलियर टेलर्स' नामक पुस्तक लिखा।
- मैक्यावली ने 'द प्रिंस' तथा 'आर्ट वार' नामक पुस्तक लिखा।
- शेक्सपियर ने 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' नामी पुस्तक लिखा।
- बुकेशिये ने 'डेकामरान' कहानी लिखा।

> **स्थापत्यकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण।**

- सेन्ट पिटर गिरजाघर (रोम), सेंट पॉल गिरजाघर (लंदन), सेन्ट मार्क गिरजाघर (वेनिस) जैसे गिरजाघरों का निर्माण पुनर्जागरण के समय हुआ।

> **चित्रकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

- राफेल ने 'मेडोना' नामक चित्रकारी बनायी तथा लियोनार्दो-द-विंची ने 'मोनालिसा' तथा 'द लास्ट सपर' नामक चित्रकारी बनायी।
- जिओटो को चित्रकला का जनक माना जाता है।

> **विज्ञान के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

- टॉल्मी के विचार के अनुसार सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है किन्तु पुनर्जागरण के बाद इसके विचारों को काट दिया गया।

1. **कॉपरनिकस (Poland)**– इन्होंने बताया कि सूर्य स्थिर है। पृथ्वी सूर्य की चक्कर लगाती है।
2. **केप्लर (जर्मनी)**– इन्होंने ग्रहों के गति सम्बन्धी नियम दिया।
3. **न्यूटन (जर्मनी)**– इन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम दिया।
4. **गैलिलियो (इटली)**– इन्होंने दूरबीन बनाया।
5. **मार्कोपोलो (इटली)**– इन्होंने कुतुबनुमा (दिशा सूचक यंत्र, कम्पास) बनाया।
6. **रोजर मेकर (इंग्लैण्ड)**– इन्होंने सूक्ष्मदर्शी बनाया।

> **पुनर्जागरण का प्रभाव**

- पुनर्जागरण के बाद मान्यता में कमी आयी।
- लोग नए जगहों की खोज करने लगे। जिस कारण नये-नये उपनिवेश बनने लगे।
- इस्लाम धर्म पिछड़ने लगा और इसाई धर्म आगे बढ़ने लगा।।

धर्म सुधार आंदोलन

- पुनर्जागरण के बाद धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।
- धर्म सुधार आन्दोलन का कोई तात्कालिक कारण नहीं था। धर्म सुधार आन्दोलन इसाई धर्म में मौजूद बुराईयों के विरुद्ध एक आन्दोलन था।
- इसाई धर्म में कैथोलिक पोप के विरुद्ध सर्वप्रथम जर्मनी के निवासी मार्टिन लूथर किंग ने आवाज उठाया और 16वीं सदी में प्रोटेस्टेण्ट नामक एक इसाई धर्म की एक नई शाखा बना दी।
- मार्टिन लूथर किंग के कारण ही धर्म सुधार आन्दोलन सफल रहा।

> **धर्म सुधार आंदोलन के प्रभाव**

- चर्च के प्रभाव में कमी आयी।
- कैथोलिक धर्म को मानने वालों में कमी आयी।
- पोप की शक्ति में कमी आयी।
- राजा की शक्ति में वृद्धि हुई।
- चर्च की बुराई में कमी आयी।
- प्रोटेस्टेण्ट धर्म का उदय हुआ।

औद्योगिक क्रान्ति

- औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत 18वीं सदी में इंग्लैण्ड में हुई।
- औद्योगिक क्रांति में उत्पादन के संसाधन में अत्यधिक वृद्धि हुई। जिससे नए-नए उद्योग धंधे लगने लगे।

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति के कारण–

1. इंग्लैण्ड के उपनिवेश अधिक थे। जहाँ से इंग्लैंड को लोहा, कोयला इत्यादि आसानी से मिल जाता था।
2. इंग्लैंड अपने उपनिवेश से ही कच्चा माल प्राप्त कर लेता था।
3. इंग्लैंड के वैज्ञानिकों ने कई आविष्कार किये जिससे उद्योग को फ्लाइंग शटल, स्पीन, जैनी नामक यंत्र ने सूत काटना (धागा बनाने का कार्य) आसान कर दिया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

4. इंग्लैंड किसी भी युद्ध में उतना ही पड़ता था जिससे कि उसका व्यापारिक हित मिल सके।
5. इंग्लैंड के पूंजीपतियों के पास धन की कमी नहीं थी, जिस कारण उद्योग बढ़ते गये।
6. इंग्लैंड को बाजार के रूप में एवं इसके अपने ही उपनिवेश थे। उपरोक्त कारणों से ही इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हुई। उस समय इंग्लैण्ड को विश्व का उद्योग शाखा कहा जाता था।

➢ **औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव**

(1) कच्चा माल, सस्ता श्रम तथा बाजार के लिए यूरोपीय में नए-नए उपनिवेश बनाने की होड़ लग गयी।
(2) कृषि प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन हुआ।
(3) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि
(4) नए-नए यंत्र बनाने की होड़ शुरू हो गया।

➢ **औद्योगिक क्रान्ति के दौरान बने यंत्र**

☛ सूत काटने के लिए फ्लाइंग शटल यन्त्र की खोज, स्पीन जैनी, बाहर क्रेन आदि जैसे यंत्र की खोज हुयी।

☛ इसी क्रान्ति के दौरान स्टीमर, रेल इंजन तथ सिलाई मशीन की खोज हुई।

➢ **औद्योगिक क्रांति के लाभ**

1. लोगों की जीवनशैली तथा उत्पादन में वृद्धि हुई।
2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई।

➢ **औद्योगिक क्रान्ति के हानि**

1. समाज का नैतिक पतन हुआ।
2. छोटे किसानों का अन्त हो गया।
3. गृह व्यवसायी (कुटीर उद्योग) का अन्त हो गया।
4. **समाज दो वर्गों में बंट गया–**
   (i) पूंजीपति तथा (ii) श्रमिक

➢ **औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार**

☛ औद्योगिक क्रांति का विस्तार जर्मनी, फ्रांस, इटली, U.S.A होते हुए पूरे विश्व में फैल गया।

☛ औद्योगिक क्रान्ति से सर्वाधिक लाभ कपड़ा उद्योग को हुआ।

☛ औद्योगिक क्रान्ति में इंग्लैण्ड का प्रतिद्वंद्वी जर्मनी था। जिस कारण इंग्लैण्ड तथा जर्मनी में हमेशा विवाद होता रहता था और यही विवाद प्रथम विश्वयुद्ध का रूप ले लिया।

इंग्लैण्ड की क्रांति (1688)

☛ इंग्लैण्ड की क्रांति की शुरूआत 1688 ई. में हुआ। इंग्लैण्ड की क्रान्ति को शांतिपूर्ण क्रांति, गौरवपूर्ण क्रांति, रक्तहीन क्रांति तथा हसवापवने क्रांति के नाम से जानते हैं, क्योंकि इंग्लैण्ड की क्रांति में रक्त का एक बूंद भी नहीं बहा था।

☛ 11 वीं सदी में राजा हेनरी प्रथम ने सलाहकारों का एक परिषद (महापरिषद्) का गठन किया। जिसे क्यूरिया रेजिस कहा गया। 1215 ई. में राजा जॉन के नितियों से असन्तुष्ट होकर सामन्तों ने (वैरम) एक घोषणा पत्र (मैग्नाकार्टा) तैयार किया और उसे राजा जबरदस्ती स्वीकार करा लिया। इस घोषणा पत्र के अनुसार।

☛ राजा को सलाहकार परिषद के अनुसार ही कार्य करना था।

☛ 1485 से लेकर 1603 तक ट्यूडर वंश का शासन रहा।

☛ इस वंश का शासक अत्यन्त निरंकुश थे।

☛ इस वंश के शासकों ने जनता का दमन किया। इस कारण जनता मैग्नाकार्टा को भूल गयी।

☛ 1603 से 1714 ई तक स्टुअर्ट वंश का शासन रहा। इस वंश के पहले शासक जेम्स प्रथम (1603-1625) के समय राजा एवं संसद के बीच विवाद होने लगा क्योंकि इस अवधि में पुनर्जागरण हो चुका था। जनता तथा राजा के बीच विद्रोह बढ़ता गया। जनता राजा के निरंकुशता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।

☛ जेम्स प्रथम के बाद उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम राजा बना (1625-1649) चार्ल्स के समय जनता खुल के विद्रोह करने लगी क्योंकि चार्ल्स प्रथम नया नया कर लगाता था।

☛ जनता तथा राजा के बीच का विद्रोह गृह युद्ध का रूप लेने लगा। इंग्लैण्ड के इस गृह युद्ध में दो गुट बन गये ।
(i) सामंत, जमींदार तथा राजा एक गुट में थे जिन्हें कैवेलियर कहा जाता था।
(ii) जनता, व्यापारी तथा संसद एक गुट में थे जिन्हें Round Head कहा जाता था।

☛ जनता का नेतृत्व क्रॉमवेल कर रहा था और इस गृह युद्ध में जनता ने चार्ल्स प्रथम को पकड़कर 30 जनवरी, 1649 को फांसी दे दिया गया।

☛ चार्ल्स प्रथम के बाद इंग्लैण्ड का राजा क्रॉमवेल को बनाया गया। प्रारम्भ में क्रॉमवेल संसद के अनुसार कार्य कर रहा था किन्तु धीरे-धीरे क्रॉमवेल भी निरंकुश होने लगा। फलस्वरूप जनता शीघ्र ही क्रॉमवेल के शासन से उब गयी।

☛ क्रॉमवेल प्युरितल धर्म को मानता था और वह जनता पर जबरदस्ती इस धर्म को थोपने लगा। अत: जनता क्रॉमवेल को हटाकर चार्ल्स द्वितीय को राजा बना दिया। चार्ल्स द्वितीय प्रारम्भ में अच्छे से शासन करता था किन्तु वह भी धीरे-धीरे निरंकुश होने लगा।

☛ चार्ल्स द्वितीय के मृत्यु के बाद जेम्स द्वितीय राजा बना। जेम्स द्वितीय के शासक बनते ही वह निरंकुश हो गया और वह अपने विद्रोहीयाँ का दमन करने लगा।

☛ इंग्लैण्ड की संसद ने हॉलैण्ड के राजकुमार विलियम ऑफ ऑरेन्ज तथा जेम्स की पुत्री मेरी को संयुक्त रूप से England का शासक नियुक्त कर दिया।

☛ हॉलैण्ड का राजकुमार William of Orange अपने 15,000 सैनिकों के साथ इंग्लैंड में प्रवेश करने पर इंग्लैंड की जनता ने उनका स्वागत किया।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- जेम्स द्वितीय William of Orange के डर से England छोड़कर भाग गया। इस प्रकार 1688 ई. में बिना रक्त बहाए ही England की क्रांति सफल हो गयी।

➢ **इंग्लैण्ड की क्रान्ति का प्रभाव**

1. राजा तथा संसद के बीच के विवाद को समाप्त किया गया।
2. राजा को औपचारिक प्रधान बनाया गया।
3. राजा तथा संसद को अधिकारों को निर्धारित किया गया।

➢ **अधिकार घोषणा पत्र (1689)**

- इस घोषणा पत्र के अनुसार राजा संसद् बिना अनुमति ना कोई कानून बना सकता ना ही पुराने कानून को समाप्त कर सकता है। राजा बिना संसद के अनुमति नया कर नहीं लगा सकता।
- वित्त तथा सेना संसद के नियन्त्रण में होगी।

Note :– England की क्रांति विश्व की पहली राजनीतिक क्रांति थी।

Note :– England की क्रांति का मुख्य कारण राजा तथा संसद के बीच सत्ता प्राप्त करने का संघर्ष था।

अमेरिका की क्रांति

- अमेरिका की क्रान्ति का मुख्य कारण इंग्लैण्ड द्वारा उसका शोषण करना था।
- इंग्लैण्ड ने अमेरिका को अपना उपनिवेश बनाया था।
- इंग्लैण्ड ऐसा ही कानून बनाता था जिससे उसे लाभ हो तथा अमेरिका को हानि हो।

इसी समय दो घटनाएं हुई–

(i) स्टाम्प एक्ट

(ii) बोस्टन चाय पार्टी

➢ **स्टाम्प एक्ट (1765)**

- इसे U.S.A ने अस्वीकार कर दिया क्योंकि Parliament (संसद) में U.S.A का कोई प्रतिनिधि नहीं था। अत: उन्होंने कहा कि 'प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं' No tax without Tax Repersentitive

➢ **बोस्टन चाय पार्टी (16 दिसम्बर 1773)**

- इंग्लैण्ड ने अमेरिका भेजे जाने वाले चाय पर अत्यधिक कर लगाया था। जब चाय से भरा जहाज U.S.A के बोस्टन बन्दरगाह पर पहुँचा तो अमेरिका के लोगों ने सैमुअल एडम्स के नेतृत्व में कब्जा कर दिया और चाय से भरे बोरियों को समुद्र में फेंक दिया, जिस कारण इंग्लैण्ड की सेना ने उन पर गोली चला दिया। इस हत्या को बोस्टन चाय पार्टी की घटना कहते हैं।
- अमेरिकी स्वतंत्रता का संदेश तथा राष्ट्र प्रेम की भावना को जैफरसन, जॉन लॉक, जॉन मिल्टन, थामस बेन जैसे प्रमुख कवियों ने फैला दिये।
- 04 जुलाई 1776 को अमेरिका ने खुद को स्वतन्त्र घोषित कर लिया और आन्दोलन प्रारंभ कर दिया।
- अमेरिकी सेना का नेतृत्व जार्ज वाशिंगटन कर रहा था। यह युद्ध 1783 तक चला।
- इस युद्ध की समाप्ति 1783 के पेरिस समझौते के तहत सम्पन्न हुआ। इस समझौते के तहत इंग्लैण्ड ने अमेरिका को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

Remark :– अमेरिका ने स्वयं को 04 जुलाई 1776 को स्वतंत्र घोषित किया था किन्तु इंग्लैण्ड ने उसे 1783 में स्वतन्त्रता दिया।

- अमेरिका का स्वतन्त्रता दिवस 04 जुलाई को मनाया जाता है। अमेरिका का संविधान 1789 को बनकर तैयार हुआ।
- अमेरिका के क्रांति से प्रभावित होकर 1789 में फ्रांस की क्रांति की शुरुआत हो गया।
- अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन को बनाया गया।

स्वतन्त्रता के बाद अमेरिका में दो प्रमुख समस्या थी–

(i) रंगभेद

(ii) दास प्रथा

- अमेरिका में काले तथा गोरे लोगों के बीच रंगभेद की लड़ाई थी। इस रंगभेद को समाप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने निभाया।
- इन्हें ब्लैक गांधी तथा काला गांधी कहा जाता है।
- अमेरिका में दासों की खरीद बिक्री होती थी।
- अब्राहम लिंकन ने दास प्रथा का उन्मूलन कर दिया और उन्होंने लोकतंत्र का सिद्धान्त दिया और कहा कि 'जनता की सरकार' जनता के द्वारा तथा जनता के लिए होती है। यही लोकतंत्र है। "Government of the people by the people for the people"

फ्रांस की क्रांति

- फ्रांस की क्रान्ति की प्रेरणा U.S.A की क्रांति से मिली।
- फ्रांस का राजा निरंकुश था और वह फिजूल खर्च अत्यधिक करता था।
- राजा जनता पर नये-नये कर लगाने लगा, जिससे जनता विद्रोह कर दी।
- फ्रांस का राजा इतना निरंकुश था कि एक बार जब राजा लूई 16वीं तथा उनकी पत्नी अन्त्वानेत जब रथ यात्रा पर निकले तो भूखी जनता रोटी-रोटी कहकर भीख मांग रही थी तो रानी ने कहा कि रोटी के स्थान पर ब्रेड खा लो।
- राजा के इस व्यवहार से जनता विद्रोह करने लगी। राजा ने विद्रोहियों को पकड़कर वास्टिल नामक जेल में डाल दिया। फ्रांस की जनता का विद्रोह उग्र होता गया और यह विद्रोह रक्तपात के रूप ले लिया। इस रक्तपात की शुरुआत 14 जुलाई 1789 को वास्टिल दुर्ग (जेल) के पतन से प्रारम्भ हुई और 18 जून, 1815 के वाटर लू के युद्ध में जाकर समाप्त हुई।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

Note :– वाटर लू का मैदान बेल्जियम में है। इसी कारण बेल्जियम को यूरोप का अखाड़ा कहते हैं।

- फ्रांसीसी क्रांति में वाल्टेयर, मांटेस्क्यू एवं रूसो जैसे दार्शनिकों का महत्वपूर्ण योगदान था।
- 'सोशल कॉन्ट्रेक्ट' रूसो की रचना है।
- विधि की आत्मा की रचना मांटेस्क्यू ने की थी।
- स्टेट्स जनरल की शुरूआत 5 मई, 1789 ई. को हुई थी, इसी दिन फ्रांसीसी क्रांति का श्रीगणेश हुआ।
- 1804 ई. में नेपोलियन ने खुद को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया।
- नेपोलियन बोनापार्ट एक अन्य नाम लिट्स कारपोरल के नाम से भी जाना जाता है।
- नेपोलियन को आधुनिक फ्रांस का निर्माता माना जाता है।
- नेपोलियन का जन्म कोर्सिका द्वीप में हुआ था। इसके पिता का नाम कार्लो बोनापार्ट था, जो पेशे से वकील थे।
- 1800 ई. में नेपोलियन के बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना की।
- अक्टूबर 1805 में इंग्लैंड एवं फ्रांस के बीच ट्राफल्गर का युद्ध हुआ।

फ्रांस की क्रान्ति के कारण

1. राजा का निरंकुश होना।
2. असमान तथा अनिश्चित कानून
3. पादरी तथा सामन्त को कर से मुक्त रखना।
4. राजमहल में धन को पानी की तरह बहाना
5. इंग्लैण्ड के साथ लगातार युद्ध होना।
6. संसद में जनता का बात न सुना जाना।

फ्रांस की समाज तीन भागों में बटा था

(i) पादरी वर्ग
(ii) कुलीन वर्ग
(iii) जनसाधारण वर्ग

- फ्रांस की संसद को स्टेट जनरल कहा जाता था।

State General में तीन सदन थे–

1. एक सदन पादरी का जिसमें कुल 308 सदस्य थे।
2. दूसरा सदन कुलीन वर्ग का था जिसमें 285 सदस्य थे।
3. तीसरा सदन आम जनता का था जिसमें 621 सदस्य थे।

- जनता का सदन स्टेट जनरल में बायीं तरफ था और वे लोग सरकार का विरोध करते रहते थे। अत: तब से यह परम्परा प्रारम्भ हो गयी कि जो दल सरकार का विरोध करती है उसे Left कहते हैं।
- 1789 में राजा में एक नया कर लाया जो सिर्फ साधारण जनता पर लगाने का प्रस्ताव था। अत: तृतीय सदन (जनसाधारण) ने इस कर का विरोध किया। जिस कारण राजा लुई 16वाँ ने तृतीय सदन को भंग कर दिया।

टेनिस कोर्ट शपथ

- जैसे ही राजा ने तृतीय सदन को भंग किया तो तृतीय सदन के लोगों ने टेनिस कोर्ट के मैदान में आकर शपथ लिया कि वे राजा लुई 16वाँ के शासन का अंत कर देंगे।

बास्टिल दुर्ग का पतन

- राजा अपने विद्रोहियों को बास्टिल दुर्ग नामक जेल में डाल दिया। जनता ने बास्टिल दुर्ग को 14 जुलाई, 1789 को नष्ट कर दिया और कैदियों को स्वतन्त्र कर दिया।

Note :– 14 जुलाई को फ्रांस का राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है।

चुड़ैलों का धावा

- 05 अक्टूबर, 1789 को पेरिस की 10,000 महिलाएं ने पेरिस के वर्साय के महल की ओर मार्च की। इसी घटना को चुड़ैलों का धावा कहते हैं।

फ्रांस की क्रांति दो भागों में बंटे थे

(i) **जैकोबिन्स –** यह बहुसंख्यक थे तथा हिंसक थे।
(ii) **जिरोन्दिस्त –** यह अल्पसंख्यक थे तथा अहिंसक थे।

- फ्रांस की क्रांति का नारा था समानता, स्वतन्त्रता तथा बन्धुता।
- फ्रांस की क्रांति को रुसो मोण्टेस्क्यू तथा वाल्टेयर नामक दार्शनिकों ने बढ़ावा दिया।

इटली का एकीकरण

- इटली का एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा आस्ट्रिया थी। वह इटली का एकीकरण नहीं होने देना चाहता था।
- इटली 13 खण्डों में बंटा था।
- इटली के एकीकरण में सबसे पहले सीनिया राज्य आगे आया।
- इटली के एकीकरण का जनक जोसेफ मेजनी को माना जाता है।
- जोसेफ जनों ने कहा था कि समाज में क्रान्ति लानी है तो शासन युवाओं को सौंप दी जाए।
- काउण्ट डी. कैवोर ने 1854 ई. में क्रिमिया युद्ध में भाग ले लिया और इटली की समस्या का अंतर्राष्ट्रीकरण कर दिया। इन्हीं के प्रयासों से 1871 ई. में इटली का एकीकरण पूरा हुआ। काउण्ट डी. कैवोर को इटली का बिस्मार्क कहा जाता है।
- गैरी बाल्डी को इटली के एकीकरण का तलवार कहा जाता है। इसने एक विशेष प्रकार की सेना का गठन किया था, जिसे लाल कूर्ती सेना कहा गया।

Note :– Florence नाइटिंगल का सम्बन्ध क्रिमिया युद्ध से है।

- फ्लोरेंस नाइटिंगल को Lady with the lamp कहा जाता था।

जर्मनी का एकीकरण

- जर्मनी का एकीकरण का संदेशवाहक नेपोलियन को माना जाता है। इसी ने जर्मनी में राष्ट्रीयता की नींव रखी। जबकि फ्रांस जर्मनी के राइन लैण्ड पर अधिकार किये हुए था। अत: फ्रांस जर्मनी का एकीकरण नहीं होने देना चाहता था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने लौह एवं रक्त की नीति का अनुसारण करके किया।
- बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियम प्रथम का प्रधानमंत्री था।
- विलियम प्रथम ने बिस्मार्क को बाजीगर कहा था।

Note :– प्रशा ने विश्व में सबसे पहले शिक्षा का अनिवार्य बना दिया।

- 1848 ई. में जर्मनी में संविधान का निर्माण का गठन हुआ।
- जर्मनी के संविधान को विमर संविधान कहते हैं।
- जर्मनी के शासक को चांसलर कहा जाता है।
- जर्मनी के एकीकरण के दौरान आस्ट्रिया तथा प्रशा के बीच 1886 में युद्ध हुआ इस युद्ध में आस्ट्रिया पराजित हो गया और आस्ट्रिया को जर्मनी का अंग बना लिया गया।
- प्रशा तथा फ्रांस के बीच एकीकरण के लिए 1870 ई. में युद्ध हुआ। इस युद्ध में फ्रांस की पराजय हुयी। इस युद्ध के बाद 1871 ई. में फ्रैंकफर्ट की संधी द्वारा जर्मनी का एकीकरण सम्पन्न हो गया।
- बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण करने के बाद वहाँ के शासक (चांसलर) का राज्याभिषेक पेरिस के वर्साय के महल में किया।

रूस की क्रांति

- रूस की क्रांति 1917 ई. में हुई थी।
- रूस की क्रांति दो चरणों में हुयी।
- 1904-05 के युद्ध में जब रूस जापान से हार गया तो रूस की अर्थव्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हुयी।
- रूस के शासक को जार कहा जाता था।
- जार निरंकुश शासक था। 22 जनवरी, 1905 को मजदूरों का एक संघ राजमहल के सामने अपनी समस्या को लेकर पहुँचा। जिसपर राजा ने गोली चला दी। इस घटना को खुनी रविवार कहा जाता है।
- रूस की क्रांति को बोल्शेविक क्रांति के नाम से भी जानते हैं।
- रूस की क्रांति एक साम्यवादी क्रांति थी।
- रूस में साम्यवाद की स्थापना 1898 ई. में हुई थी।
- साम्यवादी शासन का पहला प्रयोग रूस में ही हुआ।
- कालांतर में वैचारिक मतभेदों के आधार पर यह दो भागों-बोल्शेविक तथा मेन्शेविक; में बंट गया।
- बहुमत वाला दल बोल्शेविक कहलाया। इसके नेताओं में लेनिन सर्वप्रमुख था।
- अल्पमत वाला दल मेनशेविक कहलाया। इसका प्रमुख नेता करेन्सकी था।
- रूस की क्रान्ति का सबसे बड़ा नायक लेनिन तथा ट्रॉटस्की था।
- रूस की क्रान्ति को कार्लमार्क्स ने भी समर्थन दिया।
- लेनिन ने चेको सेना का गठन किया जबकि ट्रॉटस्की ने लाल सेना का गठन किया।
- ट्रॉटस्की रूस में अस्थायी प्रगति का समर्थक था।
- लेनिन के नेतृत्व में मजदूरों को एक संघ का निर्माण किया गया। इस संघ को सोवियत संघ नाम दिया गया।
- लेनिन रूस के साही व्यवस्था (जार व्यवस्था) का कट्टर विरोधी था। उसने क्रांति के माध्यम से रूस के जार निकोलस द्वितीय के सत्ता का अन्त कर दिया।
- लेनिन की मृत्यु 21 जनवरी, 1924 को हो गई, हालांकि रूस की क्रांति 1917 में ही सफल हो गयी।
- आधुनिक रूस का निर्माता स्टालिन को कहा जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध

- प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत 28 जुलाई, 1914 ई. को हुई।
- प्रथम विश्व युद्ध में पूरा विश्व दो भागों में बंट गया था। एक भाग का नाम मित्र राष्ट्र तथा दूसरे का नाम धुरी राष्ट्र था।
- मित्र राष्ट्र के अन्तर्गत इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, जापान तथा अमेरिका था। इसका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था।
- धुरी राष्ट्र के अन्तर्गत जर्मनी, इटली आस्ट्रिया, तुर्की तथा हंगरी था। धुरी राष्ट्रों का नेतृत्व जर्मनी कर रहा था।
- इटली बाद में धुरी राष्ट्रों से अलग होकर मित्र राष्ट्रों की तरफ चला गया।
- मित्रो राष्ट्रों ने इटली को लालच दिया कि वे युद्ध समाप्ति के बाद इटली को कुछ भूमि देंगे किन्तु उन्होंने इटली को कुछ भी नहीं दिया।
- प्रथम विश्व युद्ध का तत्कालिक कारण आस्ट्रीया के राजकुमार फर्डिनेण्ड की 28 जुलाई, 1914 को बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में की गई हत्या थी।
- इसमें पहली बार कुल 37 देशों ने भाग लिया। पूरा विश्व इसमें भाग नहीं लिया किन्तु इसमें पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई। अत: इसे प्रथम विश्व युद्ध कहा जाता है।
- इस युद्ध की शुरुआत 01 अगस्त, 1914 को जर्मनी द्वारा रूस के आक्रमण से हुआ।
- जर्मनी एवं फ्रांस 03 अगस्त को युद्ध कर लिये। जर्मनी ने 8 अगस्त को इंग्लैण्ड पर भी हमला कर दिया।
- 26 अप्रैल, 1915 को इटली इस युद्ध में प्रवेश किया। इस युद्ध में सबसे अन्त में 06 अप्रैल, 1917 को अमेरिका प्रवेश किया क्योंकि अमेरिका के जलयान को जर्मनी ने डूबो दिया।

➢ **वर्साय की संधि (June 1919)–**

- यह संधि फ्रांस की पेरिस में स्थित वर्साय के महल में हुआ। यह संधि जर्मनी पर जबरदस्ती थोपी गयी थी। इस संधि की शर्तें निम्नलिखित हैं–

1. जर्मनी की सेना एक लाख से अधिक नहीं हो सकती।
2. जर्मनी कभी भी घातक हथियार नहीं रख सकता है।
3. जर्मनी को युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्र द्वारा किये गये खर्च का वहन करना पड़ा।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

4. जर्मनी का राईन लैण्ड रूर घाटी जैसे कोयला क्षेत्र को फ्रांस को 15 वर्षों के लिये दे दिया गया।

- यह संधी ही द्वितीय विश्व युद्ध जैसे विशाल वृक्ष के बीज के समान कार्य किया।
- इस युद्ध के उपरांत विश्व में शांति स्थापना के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था **राष्ट्र संघ** (League of Nations) की स्थापना की गई थी।

तुर्की गणराज्य

- तुर्की को यूरोप का मरीज कहा जाता है। यह एशिया तथा यूरोप दोनों में पड़ता है। यह एक मुस्लिम देश है।
- प्रथम विश्व युद्ध से पहले अंग्रेजों ने यह वादा किया था कि तुर्की का विभाजन नहीं होगा किन्तु प्रथम विश्व युद्ध के बाद सेवर्स के संधी द्वारा तुर्की को मित्र राष्ट्रों ने आपस में बांट लिया। इस संधी का मुस्तफा कमाल पासा ने विरोध किया। इस संधि के खिलाफ भारत में भी खिलाफत आंदोलन चलाया गया।
- अक्टूबर, 1923 को तुर्की को गणराज्य घोषित कर दिया गया। अर्थात् अब तुर्की में राजा न होकर चुनाव के द्वारा राष्ट्र प्रमुख की व्यवस्था की गयी।
- April, 1924 को तुर्की संविधान बनाया गया और मुस्तफा कमाल पासा को राष्ट्रपति बनाया गया।
- मुस्तफा कमाल पासा को आधुनिक तुर्की का राष्ट्रपति (आतातुर्क) कहा जाता है।

इटली में फासीवाद

- फासीवाद (फासिज्म) शब्द इतालवी मूल का है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम बेनितो मुसोलिनी के नेतृत्व में चलाये गए आंदोलनों के लिए किया गया था।
- फासीवाद कट्टर उग्र राष्ट्रीयता का एक रूप है यह प्रजातंत्र का विपरीत अर्थ रखता है। जो शासन प्रणाली के रूप में तानाशाही का परिचायक है।
- फासीवाद पार्टी के स्वयंसेवक काली कमीज पहनते थे।
- इटली में फासीवाद का जनक मुसोलिनी को माना जाता है। मुसोलिनी ने फासीवाद की शुरुआत इटली के मिलान शहर से किया।
- मुसोलिनी के पुत्र का नाम डोमिटो मुसोलिनी था। उसे ड्यूस कहकर बुलाया जाता था।
- मुसोलिनी अपने सेना अधिकारियों को डियाज कहकर बुलाता था।
- द्वितीय विश्व युद्ध में मुसोलिनी मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ा था।
- मुसोलिनी का कहना था कि विश्व शांति कायरों का सपना है। वह व्यक्ति जो युद्ध नहीं लड़ा है वह एक बांझ महिला के समान है।
- फासीवादी के मानने वाले लोग जाति के उच्चतर में विश्वास रखते है।
- 28 अप्रैल, 1945 को मुसोलिनी को कैद कर फांसी दे दी गयी। इस प्रकार इटली में फासीवाद का अन्त हो गया।

जर्मनी का नाजीवाद

- नाजीवाद फासीवाद का जर्मन रूप था।
- नाजी शब्द हिटलर द्वारा 1920 में स्थापित दल **नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी** के नाम से निकला है इसी दल को संक्षेप में नाजी पार्टी कहा जाता है।
- जर्मनी के नाजीवाद का जनक एडोल्फ हिटलर को माना जाता है।
- इसने 1920 ई. में नाजी दल की स्थापना की।
- 1923 ई. में हिटलर ने म्युनिख शासक का सत्ता पलट दिया किन्तु असफल रहा। जिस कारण हिटलर को बन्दी बना लिया गया।
- जेल में हिटलर ने अपना आत्मकथा मीनकैम्फ लिखी। जिसका अर्थ होता है मेरा संघर्ष (जर्मनी भाषा में)।
- 1933 ई. में जर्मनी का प्रधानमंत्री हिटलर बना और अप्रैल 1933 ई. में हिटलर ने जर्मनी के लिए एक सुरक्षा परिषद् का गठन किया और उसका अध्यक्ष बना।
- हिटलर ने एक गुप्तचर व्यवस्था प्रारम्भ किया। जिसे गेस्टापो कहते हैं हिटलर का नारा था– एक राष्ट्र नेता
- हिटलर यहूदी धर्म का कट्टर विरोधी था। अतः इसे फ्यूहर कहते हैं।
- R. हेन्स ने कहा है कि जर्मनी मतलब हिटलर और हिटलर मतलब जर्मनी, जो हिटलर के प्रति वचनबद्ध है वो जर्मनी के प्रति भी वचनबद्ध है। हिटलर ने वर्साय की सारी संधी तोड़ दिया। उसने अपने सेना का शस्त्रीकरण करने लगा। हिटलर के लड़ाकू जहाज को लुफत्वाफ कहते थे। हिटलर की पनडुब्बी को यू-बॉटम कहते थे। पनडुब्बियाँ में पेट्रोल भरनेवाली छोटी जहाज को Mikcow कहते थे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी मित्र राष्ट्रों की सेना में चारों ओर से घिर गया और 30 अप्रैल, 1945 को हिटलर अपनी पत्नी इवा ब्राउन के साथ आत्महत्या कर लिया। इस प्रकार जर्मनी से नाजीवाद का अन्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध

- द्वितीय विश्व युद्ध के शुरूआत 01 सितम्बर, 1939 को प्रारम्भ हुआ और 02 सितम्बर, 1945 तक चला। इस युद्ध में कुल 61 देशों ने भाग लिया।
- द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी का अपमान था।
- द्वितीय विश्व युद्ध का तत्कालिक कारण जर्मनी का पोलैण्ड पर आक्रमण था।

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

- इस युद्ध में 61 देश दो गुटों में बटे थे मित्र तथा धुरी राष्ट्र मित्र राष्ट्र में U.S.A इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा रूस थे।
- धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, इटली तथा जापान थे।
- जापान तथा चीन के बीच मन्चूरिया क्षेत्र पर अधिकार के लिए युद्ध हो गया। अत: चीन जापान के विरुद्ध रूप से चीन मित्र राष्ट्रों के साथ था।
- इस प्रकार प्रत्यक्ष इस युद्ध में जापान ने अमेरिका का हवाई द्वीप पर स्थित पर्ल हार्बर नामक नौसैनिक केन्द्र को तबाह ध्वस्त कर दिया। जिस कारण अमेरिका ने 06 अगस्त, 1945 जापान के हिरोशिमा पर यूरेनियम से बना Little boy नामक परमाणु बम गिरा दिया तथा 09 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने जापान के नागासाकी पर पोलोनियम से बना Fat man नामक परमाणु बम गिरा दिया।
- इस युद्ध में जर्मनी ने रूस से यह संधि किया था कि वे आपस में युद्ध नहीं करेंगे किन्तु जर्मनी ने इस संधि को तोड़कर रूस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु जर्मनी की अधिकतर सेना ठण्ड से मर गयी। दूसरी तरफ जर्मनी की नौसेना डेनमार्क इत्यादि पर हमला करने के दौरान नष्ट हो गयी।
- इंग्लैण्ड की शाही वायु सेना (RAF – Royal Air Force) ने जर्मनी के संधि से अधिक विमानों को मार गिरा दिया।
- जर्मनी ने फ्रांस पर अधिकार कर लिया था।
- इंग्लैण्ड की सेना जर्मनी में घूमने के लिए फ्रांस के नार..मी नामक स्थान पर प्रवेश की। जबकि इंग्लैण्ड की सेना बर्लिन (जर्मनी) पहुँचती उससे पहले ही रूस की सेना बर्लिन पहुँच चुकी थी और हिटलर आत्महत्या कर चुका था
- जर्मनी की राजधानी बर्लिन में एक दीवार खड़ा कर दी गयी जिसे बर्लिन की दीवार कही गयी। अब जर्मनी दो भागों में बट गया था। पूर्वी जर्मनी पर रूस का अधिकार हो गया जो साम्यवादी था (सबकुछ सरकारी) Communist जबकि पश्चिमी जर्मनी पर इंग्लैण्ड तथा U.S.A का प्रभाव हो गया।
- पश्चिमी जर्मनी पूंजीवादी था।
- 1989 में बर्लिन की दिवार गिरा दी गयी और जर्मनी का दुबारा एकीकरण हो गया।

  Note :– द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी के जनरल रोमेल को डेजर्ट फाक्स कहा जाता था।

  Note :– द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका का राष्ट्रपति रूजवेल्ट था। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल तथा जापान के सम्राट हिरो-हिती थे।
- अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा योगदान संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) का स्थापना था।

शीत युद्ध

- द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद 1947 से 1991 तक जो चाकयुद्ध चला उसे शीत युद्ध कहा जाता है। यह युद्ध अमेरिका तथा रूस के बीच हो रहा था।
- उस समय रूस 15 देशों का एक संगठन था जिसे सोवियत संघ कहा जाता था।
- 1991 में सोवियत संघ 15 देशों में टूट गया और शीत युद्ध की अंत हो गया।

चीन की क्रांति

- यह 1911 में प्रारम्भ हुई। इस क्रांति के नायक डॉ. सनयात सेन थे। इन्होंने चीन के मांचू वंश के शासन को उखाड़ फेंका।
- सनयात सेन ने 1912 में कुओमिनतांग पार्टी का गठन किया।
- 1927 में कुओमिंगतांग पार्टी से साम्यवादी (Communist) विचारधारा के लोग अलग हो गये। जिस कारण 1928 ई. में चीन में गृह युद्ध हो गया।
- गृह युद्ध के दौरान Communist का नेतृत्व माओत्से तुंग कर रहा था।
- माओत्सेतुंग एक कट्टर Communist नेता था। Communisto के दमन के लिए च्यांग काई शेक ने साम्यवादी Command Blue Shirt Army का गठन किया किन्तु यह Communisto को हरा नहीं सका और चीन के Reserve Bank का सोना लेकर वह फारमोसा द्विप भाग गया। फारमोसा द्वीप का वर्तमान नाम ताइवान है।
- वर्तमान समय में चीन ताइवान को ए क देश की मान्यता नहीं देता है।
- 01 अक्टूबर, 1949 को चीन को गणराज्य घोषित कर दिया।
- चीन गणराज्य का पहला अध्यक्ष माओत्से तुंग को बनाया गया।
- माओत्से तुंग ने बोला था कि समाजिक क्रांति बन्दूक की नली से निकलती है।
- माओत्से तुंग का कहना था जहाँ अधिक लोग रहेंगे वहां अधिक तरह के विचार भी आएंगे।
- चीन ने देंग श्याओपिंग के नेतृत्व में खुले द्वार की नीति अपनाया अर्थात् चीन ने देश को पूरे विश्व के व्यापार के लिए खोल दिया ऐसा करने वाला यह पहला कम्युनिष्ट देश था।

❑❑❑

www.myGKstudy.com

www.myGKstudy.com

31. प्रमुख ग्रंथ/पुस्तक एवं रचनाकार/लेखक (Major Books & Authors)

प्राचीन काल

	ग्रंथ/नाटक	कवि/लेखक
1.	रामायण	वाल्मीकी
2.	महाभारत	वेदव्यास
3.	भगवत गीता	वेदव्यास
4.	इंडिका ग्रंथ	मेगास्थनीज
5.	अर्थशास्त्र	कौटिल्य
6.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
7.	पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
8.	मृच्छकटिकम	शूद्रक
9.	कामसूत्र	वात्सायन
10.	कादम्बरी	बाणभट्ट
11.	बृहतकथा मंजरी	क्षेमेंद्र
12.	कथासरित सागर	सोमदेव
13.	महाभाष्य	पतंजलि
14.	अष्टाध्यायी	पणिनी
15.	गर्गी संहिता	गर्गमुनि
16.	दिव्यावदान	सोमेन्द्र
17.	महाविभाससूत्र	वसुमित्र
18.	बुद्ध चरित्रम्	अश्वघोष
19.	माध्यमिक सूत्र	नागार्जुन
20.	कृष्णचरित्र	समुद्रगुप्त
21.	सुश्रुत संहिता	सश्रुत
22.	पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर, वृहतसंहिता
23.	हर्षचरित, कादम्बरी	बाणभट्ट
24.	प्रियदर्शिका, नागानंद, रत्नावली	हर्षवर्धन
25.	ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, मालविकाग्निमित्रम, अभिज्ञान शाकुंतलम् मेघदूत	कालिदास
26.	तौलकापियम	तोलकापियर
27.	शिल्पादिकारम	इलांगेअदिगंल
28.	मणिमेकलै	सीतलैसतनार
29.	जीवक चिंतामणि	तिरूतकक देवर
30.	कुरल	तिरूवल्लुवर
31.	मत्तविलास प्रहसन	महेंद्रवर्मन प्रथम
32.	किरातार्जुनियम	भारवि
33.	कविराजमार्ग	अमोघवर्ष
34.	विज्ञानेश्वर, मिताक्षरा विक्रमांकदेवचरित	विल्हण
35.	दायभाग	जीमूतवाहन
36.	राजतरंगिनी	कल्हण
37.	पृथ्वी राजरासो	चंदबरदाई
38.	सरितसागर, ललितविग्रह	सोमदेव
39.	सूरसागर	सूरदास
40.	स्वप्नवासदत्ता	भास
41.	चरक संहिता	चरक
42.	मनुस्मृति	मनु
43.	दशकुमारचरितम्	दण्डी
44.	बुद्धचरितम्	अश्वघोष
45.	अमरकोष	अमर सिंह
46.	नीति-शतक, श्रृंगार-शतक	भर्तृहरि
47.	गीतगोविन्द	जयदेव
48.	मालती माधव, उत्तररामचरित	भवभूति
49.	सत्सहसारिका सूत्र	नागार्जुन
50.	सौंदरानन्द	अश्वघोष
51.	महाविभाषाशास्त्र	वसुमित्र
52.	नाट्शास्त्र	भरतमुनि
53.	देवीचंद्रगुप्तम	विशाखदत्त
54.	सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
55.	कर्पूरमंजरी	राजशेखर
56.	काव्मीमांसा	राजशेखर
57.	नवसहसांक चरित	पदम् गुप्त
58.	शब्दानुशासन	राजभोज
59.	नैषधचरितम	श्रीहर्ष
60.	कुमारपाल चरित	हेमचन्द्र सूरि
61.	रासमाला	सोमेश्वर
62.	गोडवाहो	वाकपति

मध्यकालीन

63.	रमैनी, सबद, साखी	कबीर दास
64.	पदमावत	मलिक मोहम्मद जायसी
65.	तारीख-उल-हिन्द	अलबरूनी
66.	तारीख-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी
67.	फुतुहात-ए-फिरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक
68.	तबकात-ए-नासिरी	मिन्हाज-उस-सिराज

www.myGKstudy.com